# प्रस्तावना

मुक्ति-जीवनमुक्ति सर्व आत्माओं की मूलभूत प्यास है। भले ही हम समझें या न समझें परन्तु सर्व योनियों की आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात शान्ति-सुख के लिए सदा प्रयत्नशील रहती हैं। मनुष्यों की अभिव्यक्ति को तो हम समझ सकते हैं परन्तु अन्य योनियों की आत्माओं की अभिव्यक्ति को उतना नहीं समझ सकते हैं परन्तु सभी आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् शान्ति-सुख की इच्छा रखते हैं। मनुष्य संसार का सबसे बुद्धिमान और चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए उसके संकल्प और कर्मों का पभाव सबसे अधिक इस भूमण्डल के वातावरण पर पड़ता है और उसके प्रभाव के आधार पर ही अन्य प्राणियों के स्वभाव-संस्कारों में परिवर्तन होता है, उसके आधार पर ही अन्य योनि की आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाती हैं। मनुष्य के कर्म-संस्कारों के आधार पर ही इस विश्व में भौगोलिक और ऐतिहासिक परिवर्तन होते हैं। मनुष्यों के कर्म-संस्कारों को परिवर्तन करने और उनकी मुक्ति-जीवनमुक्ति की इच्छा पूर्ण करने के लिए ही परमात्मा को इस धरा पर आना पड़ता है और वह ब्रह्मा तन में आकर मनुष्यात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज मार्ग बतलाता है। परमात्मा ज्ञान भी देता है और कर्म करके भी सिखलाता है। शिवबाबा ज्ञान का सागर है और ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है। दोनों मिलकर इस विश्व के नव-निर्माण का कार्य सम्पन्न करते हैं। इसलिए शिवबाबा सदा ही कहते हैं - 'फालो फादर' अर्थात् निराकार शिव बाप और साकार ब्रह्मा बाप को फॉलो करो तो तुम सहज ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगे। ये फॉलो करने की प्रक्रिया सहज और सफल कैसे हो, इसके लिए ही यहाँ कुछ पुरुषार्थ किया गया है।

ये ध्यान रखने योग्य है कि इस विश्व-नाटक के जो अनादि-अविनाशी (Eternal) सत्य हैं, वे सदा ही सत्य हैं। उनमें देश-काल-व्यक्ति के कारण कोई अन्तर नहीं हो सकता है। वे सभी को सर्वमान्य होते हैं और एकमत से स्वीकार्य होते हैं और होने भी चाहिए। इसमें आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियम और सिद्धान्त मुख्य हैं।

जो स्वेच्छिक विषय हैं, उनके विषय में वैचारिक भिन्नता अवश्यम्भावी है क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है। उनमें एक-दो के विचारों को सम्मान देकर यथार्थ सत्य का निर्णय करना ही यथार्थ है। उनमें देश-काल-परिस्थितियों के आधार पर किसी व्यक्ति के अपने ही विचारों में भिन्नता हो सकती है, वे परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई निश्चित (Hard Fast) सीमा-रेखा नहीं हो सकती है। इनमें धारणायें और सेवा के क्षेत्र विशेष हैं। बाबा की मुरली में भी कई विषयों पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग उत्तर होते हैं।

# बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण अर्थात् मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति

और

# पुरुषार्थ - ''फॉलो फादर''

## विषय सूची


मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति
मुक्ति-जीवनमुक्ति की परिभाषा
सम्पूर्णता और सम्पन्नता की परिभाषा
मुक्ति-जीवनमुक्ति, परमात्मा और आत्मायें
मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव
परमधाम की मुक्ति और सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्ति और संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में अन्तर
संगमयुग की जीवनमुक्ति का अनुभव और उससे सतयुग की जीवनमुक्ति का सम्बन्ध
मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख और उसके अनुभूति में बाधायें (Hinderances Disturbances)
मुक्ति-जीवनमुक्ति का अभीष्ट पुरुषार्थ
मुक्ति-जीवनमुक्ति के पुरुषार्थ के लिए आवश्यक साधन और साधना
ज्ञान -
आत्मा का ज्ञान
परमात्मा का ज्ञान
तीनों लोकों का ज्ञान
तीनों कालों का ज्ञान
सृष्टि-चक्र का ज्ञान
कल्प-वृक्ष का ज्ञान
स्वर्ग-नर्क का ज्ञान
कर्मों की गहन गति का ज्ञान
दैवी गुणों का ज्ञान और धारणा
पवित्रता
ब्राह्मण जीवन के नियम-संयम का ज्ञान
मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव और निश्चयबुद्धि स्थिति
मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए अभ्यास
मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति और विश्व-नाटक
मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव और विश्व-सेवा
फॉलो फादर अर्थात् फॉलो निराकार शिव बाप और साकार ब्रह्मा बाप

फॉलो शिव बाप अर्थात् शिव बाप के गुण-कर्तव्य-संस्कार
फॉलो ब्रह्मा बाप अर्थात् ब्रह्मा बाप के गुण-कर्तव्य-विशेषतायें
याद करने और फॉलो करने में अन्तर
मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाने के सिद्धान्त
संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का महत्व
मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति में स्थित आत्मा की परख
आदि सनातन देवी-देवता धर्म की जीवनमुक्ति और अन्य धर्मों की जीवनमुक्ति में अन्तर
मुक्ति-जीवनमुक्ति और भारत भूमि
विविधि प्रश्न
जीवन की पहेली का हल
सारांश
विविधि बिन्दु

# बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण अर्थात् मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति

''सपूत बच्चे वे हैं, जो मात-पिता को फॉलो कर तख्तनशीन बनें। ... श्रीमत पर नहीं चलते क्योंकि अन्दर सच्चाई नहीं है। दिल सच्ची हो तो श्रीमत पर चलते, बाप को याद करते रहें। श्रीमत पर ही तुमको दादे से वर्सा मिलता है।''

सा.बाबा 16.5.06 रिवा.

बाप समान बनना अर्थात् सर्वशक्तिवान शिवबाबा के समान सर्व गुणों और शक्तियों में सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना तथा ब्रह्मा बाप समान शिवबाबा को फॉलो करने का पुरुषार्थ करके, उनकी श्रीमत पर चलकर सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर फरिश्ता स्वरूप को इस जीवन में ही प्रत्यक्ष करना। शिवबाबा मुक्त स्थिति का प्रत्यक्ष स्वरूप है और ब्रह्माबाबा मुक्त और जीवनमुक्त स्थिति का स्वरूप है। शिवबाबा ज्ञान, गुण, शक्तियों का सागर है और ब्रह्मा बाबा सर्व अनुभवों के सागर है। दोनों मिलकर हमको आप समान बनाकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराते हैं, जो हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है।

''यह प्रभु-मिलन, यह परमात्म-प्यार, यह परमात्म-वर्सा, यह परमात्म-प्राप्तियाँ अभी ही प्राप्त होती हैं। 'अब नहीं तो कब नहीं' ... हर एक ब्राह्मण बच्चे के दिल में सम्पन्नता और सम्पूर्णता का झण्डा लहराया हुआ दिखाई दे।''

अ.बापदादा 11.11.2000

''बापदादा ने समान बनने को कहा है। क्या बनना है, कैसे बनना है? समान शब्द में ये दोनों ही क्वेश्चन उठ नहीं सकते। क्या बनना है? उत्तर है ना! बाप समान बनना है। कैसे बनना है? 'फालो फादर' - फुट स्टेप फादर-मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर।''

अ. बापदादा 25.11.2000

''क्यों बापदादा बार-बार याद दिलाता है। कारण? समय को देख रहे हो, ब्राह्मण आत्मायें स्वयं को भी देख रही हैं। मन जवान होता जाता है, तन बुजुर्ग होता जाता है। समय और आत्माओं की पुकार अच्छी तरह से सुनने में आ रही है?''

अ.बापदादा 25.11.2000

बाबा के इन महावाक्यों पर और समय प्रति समय उच्चारे महावाक्यों तथा ज्ञान के विभिन्न प्वाइन्ट्स पर जितना परसेन्ट निश्चय और धारणा होगी, मुक्ति-जीवनमुक्ति, सम्पूर्णता-

सम्पन्नता, बीजरूप स्थिति, बाप समान स्थिति, कर्मातीत स्थिति का उतना ही परसेन्ट में अनुभव होगा। ये सब स्थितियाँ प्राय: सम्पूर्णता की ही पर्यायवाची हैं।

''राज्य सत्ता अर्थात् स्वयं चलने की और औरों को चलाने की कला। ... श्रेष्ठ कर्म की सत्ता अर्थात् कर्म का वर्तमान फल खुशी और शक्ति अनुभव करना और साथ-साथ भविष्य फल जमा होने की अनुभूति होना। इसको कहते हैं कर्म के खज़ानों की सम्पन्नता के नशे की कला। सबसे बड़ा खज़ाना है श्रेष्ठ कर्मों का खज़ाना। ... चारो ही सत्ताओं का बैलेन्स ही है बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति है।''

अ.बापदादा 10.1.91

## मुक्ति-जीवनमुक्ति की परिभाषा

मुक्ति अर्थात् देह और देह की दुनिया से मुक्त अवस्था, सुख-दुख, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि दोनों से न्यारे परम शान्तिमय आत्मिक स्वरूप में स्थित। जीवनमुक्ति अर्थात् देह और देह की दुनिया में रहते देह, प्रकृति-पदार्थों के आकर्षण, दैहिक सम्बन्धों के बन्धन, विकारों के आकर्षण, दुख-दर्द से मुक्त सदा सुख-शान्ति की स्थिति। मुक्ति अर्थात् निर्संकल्प स्थिति और जीवनमुक्त अर्थात् निर्विकल्प स्थिति।

इस मुक्ति-जीवनमुक्ति को विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा देश-काल के आधार पर भिन्न रीति से या नामों से सम्बोधित किया गया है। भक्तों द्वारा सामाजिक परिस्थिति में रहते इसको शान्ति-सुख के रूप में जाना जाता है, योग मार्ग में इसे निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि के रूप में जाना जाता है और ज्ञान मार्ग में इसे मुक्ति-जीवनमुक्ति के रूप में जाना जाता है।

* मुक्ति अर्थात् निर्संकल्प, बीजरूप स्थिति, जहाँ राग-द्वेष, भय-चिन्ता, इच्छा-आकांक्षा कुछ भी न हो। यथार्थ मुक्ति में तो आत्मा सुख-दुख दोनों से न्यारी होकर परमशान्ति की स्थिति का अनुभव करती है, उसके लिए सुख-दुख दोनों ही समान हो जाते हैं। वह विश्व के हर दृश्य को साक्षी होकर देखती है और पार्टधारी के रूप में पार्ट बजाती है। मुक्ति की अनुभूति में आत्मा के कर्म भी बन्द हो जाते हैं परन्तु जीवनमुक्त स्थिति में आत्मा कर्म तो करती है परन्तु विकर्म नहीं करती, इसलिए उसके वे कर्म सुकर्म होते हैं और अपने सुकर्मों के फल स्वरूप सदा सुख का अनुभव करती है।

## सम्पूर्णता और सम्पन्नता की परिभाषा

सम्पूर्णता = इच्छा और प्राप्ति में पूर्ण बैलेन्स = 100 परसेन्ट सोल कान्शस = मुक्त स्थिति = बिन्दुरूप स्थिति = बीजरूप स्थिति = सम्पूर्ण पवित्र = निर्संकल्प स्थिति = शिवबाप समान = सम्पूर्ण शान्त।
सम्पन्नता = प्राप्ति और इच्छा में पूर्ण बैलेन्स = जीवनमुक्त स्थिति = इच्छामात्रम् अविद्या = सम्पूर्ण सुखी = निर्विकल्प स्थिति = सम्पूर्ण साक्षी = मान-अपमान ... में समान स्थिति।

ऐसे ही इस सम्बन्ध में अलग-अलग शब्दों की व्याख्या करें तो अनुभव होगा कि -
मुक्ति = देह में रहते देह से न्यारी स्थिति। आत्मिक स्वरूप सुख-दुख दोनों से न्यारा है अर्थात् आत्मिक स्वरूप की गहन अनुभूति में सुख-दुख दोनों का भान नहीं होता है।
जीवनबन्ध = देह में रहते देहभान या देहाभिमान के वशीभूत दुख-सुख दोनों की अनुभूति होती है लेकिन विकर्मों के फलस्वरूप दुख अधिक, सुख नाममात्र होता है।
जीवनमुक्त = देह में रहते देहभान से न्यारे अर्थात् आत्माभिमानी स्थिति जिसमें सुकर्मों के फलस्वरूप सुख की अनुभूति तो होती है लेकिन दुख नहीं होता।

Q. समय और स्थान अर्थात् मुक्तिधाम की मुक्ति एवं सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्ति तथा संगम की मुक्ति-जीवनमुक्ति में अन्तर क्या है?
''बापदादा समय के परिवर्तन की तीव्र रफ्तार को देख बच्चों के पुरुषार्थ की रफ्तार को भी देखते रहते हैं। बापदादा हर एक बच्चे को जीवनमुक्त स्थिति में सदा देखने चाहते हैं। आप सबका यह चेलेन्ज है कि बाप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा आकर लो। लेकिन आपको तो मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा मिल गया है ना! मिला है या नहीं मिला है?
(मिला है) मुक्तिधाम में या सतयुग में मुक्ति व जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है।''

अ.बापादादा 21.11.98

मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव संगमयुग पर ही होता है, जब हम साकार देह में होते हैं और हमको सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान होता है। परमधाम में जब देह ही नहीं तो मुक्ति के अनुभव का प्रश्न ही नहीं उठता और सतयुग में जीवन बन्ध का ज्ञान ही नहीं, अनुभव ही नहीं तो जीवनमुक्ति की स्थिति का अनुभव क्या और कैसा!

## मुक्ति-जीवनमुक्ति, परमात्मा और आत्मायें

परमात्मा सदा मुक्त है और वह सर्वात्माओं का अनादि पिता है, इसलिए मुक्ति-जीवनमुक्ति सर्वात्माओं का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है अर्थात् परमात्मा सर्वात्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है। सर्वात्मायें अपने पार्ट के अनुसार परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति पाती हैं परन्तु आदि सनातन देवी-देवता धर्मवंश की आत्माओं की मुक्ति-जीवनमुक्ति और अन्य धर्मवंश की आत्माओं की मुक्ति-जीवनमुक्ति में कुछ विशेष अन्तर है, वह भी परमात्मा ने बताया है। देवी-देवता घराने की आत्मायें जब जीवनमुक्ति में होती हैं तब सारी सृष्टि जीवनमुक्त होती है परन्तु जब अन्य धर्मवंश की आत्मायें जीवनमुक्ति में आती हैं तो उस समय कुछ आत्मायें जीवनमुक्ति के अनुभव में होती हैं तो कुछ आत्मायें जीवनबन्ध में भी होती हैं। ''नॉलेज से वर्सा लेना है। जीवनमुक्ति का वर्सा तो सबको मिलता है परन्तु स्वर्ग का वर्सा राजयोग सीखने वाले ही पाते हैं। गति-सद्गति तो सबकी होनी है ना। सबको बाप वापस ले जायेंगे।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

## मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव

मुक्ति-जीवनमुक्ति की चाहना हर आत्मा की मूलभूत प्यास या आकांक्षा है और समय अनुसार आत्माओं को इसका अनुभव होता भी है परन्तु पहचान से होने वाले अनुभव का विशेष महत्व होता है और उससे ही कार्य की सिद्धि होती है। दैहिक सम्बन्धों का ज्ञान होने के कारण शरीर छोड़ने पर दुख का अनुभव होता है, उसकी स्मृति आती है, भले ही वह आत्मा शरीर छोड़कर फिर से उसी घर में भिन्न नाम-रूप-सम्बन्ध से जन्म ले ले। इसमें देहाभिमान के कारण देह का महत्व हो गया है। ऐसे ही सतयुग-त्रेतायुग में आत्मा का ज्ञान और आत्मिक शक्ति होने के कारण देह त्याग का दुख नहीं होता है। परन्तु संगमयुग पर परमात्मा द्वारा आत्मा को तीनों लोकों, तीनों कालों, आत्मिक स्वरूप, सृष्टि-चक्र आदि का ज्ञान होने से आत्मा जीते जी दैहिक सम्बन्धों से बुद्धि से नष्टोमोहा हो जाती है और बुद्धि परमपिता परमात्मा के साथ जुट जाती है तो उस ज्ञान और परमात्मा के सम्बन्ध से जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है, वह विशेष महत्वपूर्ण है। ये ज्ञान और सम्बन्ध जितना ही स्पष्ट होगा और सम्बन्ध जितना ही प्रगाढ़ होगा, मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव उतना ही श्रेष्ठ और सुखमय होगा।

संगमयुग पर परमात्मा से यथार्थ आत्मिक ज्ञान मिलने से आत्मा देह से न्यारी

आत्मिक स्थिति में स्थित होती है और विश्व-नाटक का ज्ञान होने से यथार्थता का अनुभव होने से अनुभव करती है कि इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई हमारा मित्र है और न ही कोई हमारा शत्रु है, सब अपना-अपना निश्चित पार्ट बजा रहे हैं और पार्ट अनुसार मित्र-शत्रू, अपने-पराये बनते हैं - इस सत्य का अनुभव होने के कारण आत्मा सहज देह से न्यारी स्थिति में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति के स्थान और समय के अनुसार दो प्रकार के अनुभव हैं। परमधाम में आत्मा मुक्त स्थिति में रहती है और सतयुग-त्रेतायुग में जीवनमुक्त स्थित में रहती है तथा संगमयुग पर परमपिता परमात्मा आकर सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान देते हैं तो भी आत्मा को मुक्ति और जीवनमुक्ति का अनुभव होता है परन्तु परमधाम की मुक्ति और संगमयुग की मुक्ति में रात-दिन का अन्तर है। ऐसे ही सतयुग-त्रेतायुग की जीवनमुक्ति और संगमयुग की जीवनमुक्ति के अनुभव में रात-दिन का अन्तर है क्योंकि किसी चीज का अनुभव और निर्णय उसके विपरीत स्थिति की तुलना में ही होता है। सतयुग-त्रेता में जीवनबन्ध का दुख ही नहीं तो जीवनमुक्ति के सुख का यथार्थ अनुभव नहीं होता है, इसलिए संगमयुग का अनुभव ही यथार्थ अनुभव है और वह अनुभव अति न्यारा और प्यारा है।

''फरिश्ता का अर्थ ही है जिसका का पुरानी दुनिया, पुराने स्वभाव-संस्कार, पुरानी देह के प्रति कोई आकर्षण का रिश्ता नहीं। तीनों से मुक्त। वैसे भी ड्रामा में पहले मुक्ति का वर्सा है, फिर जीवनमुक्ति का है। ... जो मुक्त फरिश्ता बनेगा, सो जीवनमुक्त देवता बनेगा।''

अ.बापदादा 8.4.92

## परमधाम की मुक्ति का अनुभव

परमधाम में सभी आत्मायें मुक्त स्थिति में रहती हैं परन्तु वहाँ आत्माओं को मुक्ति का कोई अनुभव नहीं होता है क्योंकि वहाँ न देह है, न आत्मा में कोई संकल्प है, न मुक्त और बन्ध का कोई अनुभव है। जैसे सोये हुए व्यक्ति को सोने का अनुभव नहीं होता है। अनुभव वह तब करता है, जब वह जब जागता है। जागने के बाद ही उसको अनुभव होता है कि उसको नींद कैसी आई, जागने के बाद वह स्वयं में ताजगी अनुभव करता है। ऐसे ही परमधाम में आत्मा की स्थिति नींद में सोये हुए व्यक्ति के समान है। कोई भी अनुभव आत्मा देह के साथ ही कर सकती है। जब आत्मा देहाभिमान में आकर बन्धन का अनुभव करती है, तब उसको मुक्ति की वह स्थिति याद आती है।

## संगमयुग की मुक्ति का अनुभव

जैसे एक थका हुआ व्यक्ति गहरी नींद में सो जाता है तो उसको नींद की स्थिति में नींद के सुख का अनुभव नहीं होता है परन्तु नींद से जागने पर व्यक्ति को ताजगी का अनुभव होता है। यदि व्यक्ति को कोई मेहनत न करे, थकावट न हो तो गहरी नींद भी नहीं आयेगी और गहरी नींद के बाद जो ताजगी का अनुभव होता है, वह भी नहीं होगा। इसलिए थकावट और नींद दोनों का अनुभव व्यक्ति को ताज़गी का अनुभव कराता है। ऐसे ही दुख-अशान्ति के बन्धन के अनुभव के बाद परमात्मा के द्वारा मुक्ति का यथार्थ ज्ञान मिलता है और उस ज्ञान को धारण कर आत्मा देह और देह की दुनिया से न्यारी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, विश्व-नाटक का ज्ञान धारण कर निर्संकल्प स्थिति में स्थित होती है, बीज और झाड़ का ज्ञान पाने के बाद बीजरूप स्थिति में स्थित होती है तब उसको मुक्ति का जो अनुभव होता है, वह अनुभव ही मुक्ति का यथार्थ अनुभव है, जो परमधाम की मुक्ति से पद्मापद्म गुणा श्रेष्ठ है।

## सतयुग-त्रेता युग की जीवनमुक्ति का अनुभव

जीवनमुक्ति अर्थात जीवन में रहते दुख-अशान्ति से मुक्त रहना प्राणी मात्र का लक्ष्य है, जिसके लिए हर आत्मा अपने-अपने अनुसार कुछ न कुछ पुरुषार्थ अवश्य करता है परन्तु आत्माओं को यह नहीं मालूम कि जीवनमुक्त स्थिति कब थी और फिर हम कैसे बनेंगे। बाबा ने सृष्टि-चक्र का ज्ञान अभी दिया है, जिसके आधार पर हमने जाना है कि सतयुग-त्रेता है जीवनमुक्त दुनिया और द्वापर-कलियुग है जीवनबन्ध दुनिया तथा विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा को अपने पार्ट के समय अनुसार आधा समय जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव होता है और आधा समय जीवनबन्ध स्थिति का अनुभव होता है।

विश्व-नाटक के नियमानुसार सतयुग-त्रेता का जीवन जीवनमुक्त है क्योंकि वहाँ जीवात्मा को किसी प्रकार का दुख नहीं होता है। आत्मा को अपने आत्मिक स्वरूप का ज्ञान होता है, इसलिए देहाभिमान के वशीभूत कोई विकारी कर्तव्य नहीं होता है, इसलिए वहाँ आत्मा को किसी प्रकार का दुख नहीं होता है। प्रकृति भी मनवांछित फल देने वाली होती है, इसलिए आत्मा को किसी भी प्रकार की कमी नहीं होती है। परन्तु वहाँ आत्माओं को दुख क्या होता है, हमको भविष्य में दुखी होना है, इसका न ज्ञान होता है और न ही उसका अनुभव होता है क्योंकि आत्मायें पहले परमधाम से आती हैं तो उनमें दुख की अनुभूति का संस्कार नहीं होता

है, इसलिए वहाँ सुख की अनुभूति होते भी उसका विशेष महत्व नहीं होता है। यथार्थ अनुभव तब होता है, जब आत्मा को जीवनबन्ध का अनुभव और ज्ञान होते हुए जीवनमुक्त स्थिति हो।

## संगमयुग की जीवनमुक्ति का अनुभव

जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव संगमयुग पर ही होता है, जब बाबा के द्वारा हमको सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान मिलता है और हम पुरुषार्थ कर देह में रहते देह से न्यारे होकर जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं। इस अनुभव को ही भक्ति मार्ग में गाया जाता है।

बाबा ने हमको आत्मा-परमात्मा और सृष्टि-चक्र का जो ज्ञान दिया है और योग सिखाया है, उस ज्ञान के सारे राज़ हमारी बुद्धि में होंगे, उन पर निश्चय और उसका अनुभव होगा, उनकी जीवन में धारणा होगी, जिससे देह और देह की दुनिया भूली हुई होगी, आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी तब ही हम जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव कर सकेंगे। वह जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है। उस अनुभव की खुशी, नशा हमारे जीवन से अर्थात् हमारे बोल, कर्म, दृष्टि-वृत्ति से दूसरी आत्माओं को भी अनुभव होगा। जैसे हम ब्रह्मा बाबा के जीवन से अनुभव करते थे।

* जीवनमुक्ति अर्थात् ट्रस्टी भाव हो, खेल और खिलाड़ी की भावना हो, इच्छाओं और प्राप्तियों में बैलेन्स हो, आवश्यकताओं और प्राप्तियों में बैलेन्स हो, सबके प्रति अपनत्व की भावना हो, नाटक और पार्टधारी की दृष्टि हो। संगमयुग की जीवनमुक्ति में आत्मा को सुख-दुख का अनुभव तो होता है परन्तु वह दुख से भयभीत होकर कोई अकर्तव्य नहीं करती है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान होने के कारण साक्षी-दृष्टा बनकर ट्रस्टी रूप में विश्व कल्याण का पार्ट बजाती है। सबके प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना होती है।

वास्तव में किसी भी प्रकार के यथार्थ अनुभव के लिए दो विपरीत चीजों का या बातों का अनुभव आवश्यक है। सतयुग-त्रेता में आत्मा को कोई दुख या अप्राप्ति होती ही नहीं है, इसलिए वहाँ सुख क्या है वह भी अनुभव नहीं होता है। ये अनुभव तो अभी हम संगमयुग पर ही करते हैं, जब हमको सुख-दुख दोनों का ज्ञान है, उनका अनुभव है। दुख का भी अनुभव है तो सुख का भी अनुभव अति प्यारा लगता है। वास्तव में दुख का अनुभव ही सुख की अनुभूति कराता है।

## परमधाम की मुक्ति एवं सतयुग की जीवनमुक्ति और संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में अन्तर

वास्तव में मुक्ति तो मुक्ति धाम में ही मिलती है और जीवनमुक्ति सतयुग-त्रेता में होती है परन्तु मुक्तिधाम में देह न होने के कारण आत्मा को कोई संकल्प नहीं उठता है और जब संकल्प ही नहीं तो अनुभव कैसे हो सकता है। इसलिए परमधाम की मुक्ति का कोई विशेष महत्व नहीं है और सतयुग त्रेता में सुख के विपरीत दुख, जीवनमुक्ति के विपरीत जीवनबन्ध होता नहीं, न ही उसका ज्ञान होता है इसलिए उसके अनुभव का कोई विशेष महत्व नहीं है। जब द्वापर से जीवनबन्ध में आते, दुख-अशान्ति की अनुभूति होती तो उस समय सतयुग-त्रेता में अनुभव किये जीवनमुक्ति के सुख की जो सूक्ष्म स्मृति आत्मा में संचित रहती है, वह आत्मा को याद आती है और आत्मा उसके लिए पुरुषार्थ करती है। आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण सतयुग में जीवनमुक्त होते भी आत्मा की उतरती कला होती है।

सतयुग-त्रेता में जीवनमुक्ति के समय जो आत्मायें परमधाम से इस धरा पर आती हैं, वे जीवनमुक्ति के सुखों में तो होती हैं परन्तु परमधाम शान्त मूल स्वरूप से नये चक्र में आने के कारण आत्मा में जीवनबन्ध के अनुभव की कोई स्मृति संचित नहीं रहती है इसलिए उसका वह मज़ा अनुभव नहीं होता है, जो संगमयुग पर आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र के ज्ञान, मुक्ति-जीवनमुक्ति, जीवनबन्ध के ज्ञान के होते हुए मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है। इसलिए संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव विशेष है, उसका महत्व विशेष है।

मुक्तिधाम की मुक्ति निष्प्रभावी है अर्थात् उसका आत्मा के ऊपर कोई प्रभाव नहीं होता क्योंकि वहाँ कोई कर्म नहीं होता है। मन्सा-वाचा-कर्मणा किये गये कर्मों का ही आत्मा के ऊपर प्रभाव होता है, जिसके आधार पर ही आत्मा को सुख-दुख का अनुभव होता है। इसलिए परमधाम में न आत्मा की चढ़ती कला होती है और न ही उतरती कला होती है। आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित एकरस स्थिति में रहती है। वहाँ आत्मा चेतन होते भी जड़ के समान ही है। परन्तु संगमयुग में परमात्मा द्वारा आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान मिलने से और आत्मा पुरुषार्थ करके उसकी धारणा से जो मुक्ति का अनुभव करती और जितना समय उस अनुभव में रहती है, उसके आधार पर आत्मा की चढ़ती कला होती है, उससे आत्मा का ज्ञान-गुण-शक्तियों का खाता जमा होता है, उससे जो वायब्रेशन फैलता, वह अन्य आत्माओं को भी प्रभावित करता है, उनको भी सुख-शान्ति का अनुभव कराता है,

जिससे आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है।

इसी तरह सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्ति का अनुभव और आत्मा वहाँ जो सुख-साधनों का उपभोग करती है, वह आत्मा की उतरती कला का कारण बनता है अर्थात् आत्मा वहाँ जो सुख का उपभोग करती है, उससे आत्मा का जमा का खाता धीरे2 कम होता जाता है, खाता बढ़ता नहीं है। परन्तु संगमयुग की जीवनमुक्ति का अनुभव आत्मा की चढ़ती कला का आधार है क्योंकि संगमयुग पर हम जो जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं, उसका आधार स्थूल सुख-साधन नहीं लेकिन ईश्वरीय ज्ञान है। ज्ञान तो अविनाशी होता है और ज्ञान के लिए गायन है कि ज्ञान खर्चने से बढ़ता है अर्थात् जितना हम ज्ञान का उपयोग करते हैं, दान करते हैं, वह उतना बढ़ता जाता है। इस ईश्वरीय ज्ञान से मिलने वाला सुख अर्थात् जीवनमुक्ति के अनुभव में गहरा जाते हैं वह और ही सुखदायी होता जाता है। संगम पर आत्मा जितना जीवनमुक्ति के अनुभव में रहती अर्थात् सुख-शान्ति के अनुभव में रहती, निर्विकल्प अवस्था में रहती है, उससे आत्मा की शक्ति जमा होती है। संगमयुग पर जितना जीवनमुक्ति के अनुभव में रहते हैं, उससे जो वायब्रेशन प्रवाहित होते हैं, उनसे जो वातावरण बनता है, उससे अन्य आत्माओं को भी सुख-शान्ति का अनुभव होता है, ज्ञान के प्रति आकर्षण बढ़ता है और आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता जाता है। इस प्रकार संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव आत्मा की चढ़ती कला का आधार है और सर्वश्रेष्ठ है, जबकि सतयुग-त्रेतायुग की जीवनमुक्ति का अनुभव आत्मा की उतरती कला का कारण बनता है अर्थात् उससे आत्मा उतरती कला में जाती है। इस सत्य पर विचार करें तो संगमयुग की जीवनमुक्ति का अनुभव ही यथार्थ अनुभव है और अति महान है।

''कोई-कोई कहते - बाबा, यहाँ अजुन कब तक रहेंगे, हम जल्दी जायें ? यहाँ बहुत दुख है। आगे चलकर भी ऐसे-ऐसे कहेंगे। बाबा कहते हैं - ऐसे क्यों कहते हो ? अरे, इस समय तो तुम ईश्वर के सम्मुख हो, फिर तो डिग्री डिग्रेड हो जायेगी। जाकर दैवी सन्तान बनेंगे, अभी यह शीतल गोद अच्छी है।''

सा.बाबा 11.07.03 रिवा.

''मनुष्य का जन्म सबसे ऊंच गाया जाता है। वह कौन-सा ? ... वास्तव में तुम्हारा यह जन्म उत्तम है, जो बाप बैठ तुम्हारी सेवा करते हैं।''

सा.बाबा 12.07.03 रिवा.

''अतीन्द्रिय सुख संगम पर ही गाया जाता है, जब बाप आते हैं तो उनका संग होता है तो सुख भासता है।''

सा. बाबा 16.8.69 रिवा.

''इस संगमयुग का भी अभी तुमको पता पड़ा है। जबकि बाप पुरुषोत्तम बनाने आते हैं। तो

पुरुषोत्तम बनना ही है। मुक्ति में जावें तो भी पुरुषोत्तम, जीवनमुक्ति में जायें तो भी पुरुषोत्तम। यह नॉलेज आत्मा को मिलती है, आत्मा ही धारण कर संस्कार ले जाती है साथ में।''

सा.बाबा 11.1.69

सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्ति के अनुभव पर अर्थात् उपभोग पर अर्थशास्त्र का ''उपयोगिता ह्रास नियम (Law of diminishing utility)" प्रभावित होता है क्योंकि वहाँ का सुख विनाशी पदार्थों और विनाशी सम्बन्धों पर आधारित होता है परन्तु संगमयुगी जीवनमुक्ति के अनुभव अर्थात् उपभोग पर यह नियम लागू नहीं होता क्योंकि वह अनुभव अर्थात् सुख अविनाशी प्राप्तियों अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों पर आधारित होता है और अविनाशी बाप के संग से प्राप्त होता है। संगमयुगी जीवनमुक्ति के अनुभव और उपभोग में उपयोगिता उत्थान का नियम लागू होता है अर्थात् उसमें हम जितना गहरे जाते हैं, उसका उपभोग करते हैं, उतना उसका आनन्द बढ़ता जाता है और बढ़ते2 आत्मा परमात्मा बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बन जाती है।

इस संगमयुगी जीवन का सही लाभ उठाने के लिए उसका महत्व, उसकी श्रेष्ठता को समझना अति आवश्यक है। कई आत्मायें अज्ञानतावश संगम के सुख को भूलकर सतयुग के सुख की लालसा में जीते हैं। ऐसे संकल्प वाले संगमयुग के सुख से भी वंचित हो जाते हैं तो सतयुग के सुख से भी वंचित हो जाते हैं क्यों कि सतयुगी सुख तो इस संगमयुगी सुख की परछाई मात्र है या कहें कि इस संगम युग का प्रतिफल है। इसलिए दोनों सुखों का तुलनात्मक अध्ययन अति आवश्यक है।

* संगमयुग का सुख चढ़ती कला का सुख है अर्थात् आत्मा ऊपर चढ़ती है जबकि सतयुगी सुख उतरती कला का सुख है अर्थात् आत्मा की कलायें धीरे2 उतरती जाती है और समय की गति के साथ विश्व में सुख की कलायें भी गिरती जाती हैं। इसी सत्य का ज्ञान होने के कारण अभी ज्ञानी आत्माओं को कोई न कोई परिस्थितियां, कर्मभोग आदि होते भी परम सुख का अनुभव करते हैं। सतयुग-त्रेता में भले ही कोई दुख नहीं होगा, आत्माओं को उनकी आवश्यकता से अधिक साधन-सम्पत्ति होगी, इसलिए कमी अनुभव नहीं होगी परन्तु लॉ यह कहता है कि समयानुसार जनसंख्या वृद्धि के कारण साधन-सम्पत्ति की प्रति व्यक्ति जो कमी होती है, आत्माओं की जो कलायें गिरती जाती हैं, उसकी सूक्ष्म में महसूसता होनी ही चाहिए और आत्माओं में होती ही होगी। आत्मा ने अपनी सतोप्रधान स्थिति में जो सर्वोच्च सुख भोगा है, उसकी भेंट में आगे मिलने वाला सुख कम ही होगा, जिसकी सूक्ष्म महसूसता आत्मा में होनी ही चाहिए परन्तु उसको दुख नहीं कह सकते हैं परन्त् वह सुख की डिग्री कम होती है।

''सारी नालेज तुम्हारी बुद्धि में अभी है ... वहाँ यह मालूम हो फिर तो सुख की भासना ही न रहे। यही सोच रह जाये हम फिर नीचे गिरेंगे।''

सा. बाबा 11.1.69

''अभी ऐसा प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है। तो प्रत्यक्ष फल खाने वाले हो ना कि भविष्य के आधार पर सोच रहे हो। भविष्य तो है ही लेकिन भविष्य से भी श्रेष्ठ 'प्रत्यक्ष फल' है। प्रत्यक्ष को छोड़कर भविष्य के इन्तजार में नहीं रहना है। अभी बाप के बने हो और अभी फल भी मिला है।''

अ.बापदादा 14.4.77

मुक्ति-जीवनमुक्ति का वास्तविक अनुभव अभी संगमयुग में ही होता है, जब हमको तीनों लोको, तीनों कालों का ज्ञान, सुख-दुख, जीवनमुक्त-जीवनबन्ध आदि का सब ज्ञान होता है, जिस ज्ञान के आधार पर आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा को याद करती है, जिससे आत्मा की चढ़ती कला होती है। इस समय के सुख को अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है। यही एक ऐसा सुख है, जो भोगने से बढ़ता जाता है और तो दुनिया के सभी सुख भोगने से घटते हैं अर्थात् वे सुख के साधन भी भोगने से घटते जाते हैं और उनसे प्राप्त होने वाला सुख भी कम होता जाता है।

बाप ने जो दिया, वही हमारे काम का है। हम देह नहीं देह से न्यारी आत्मा हैं। देह से न्यारा होकर निर्संकल्प स्थिति में परमशान्ति का अनुभव करना, निर्विकल्प होकर बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा करने, ज्ञान धन का चिन्तन करने और ज्ञान धन दान करने से परमानन्द का अनुभव होता है तथा विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने से परम-सुख का अनुभव होता है और ये अनुभव करना और कराना ही जीवन की सार्थकता है। जो संगमयुग पर ही सम्भव होता है।

राग-द्वेष, भय-चिन्ता, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त ही निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में स्थित हो सकता है और निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति वाला ही सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकता है। निर्संकल्प स्थिति से मुक्ति का और निर्विकल्प स्थिति से जीवनमुक्ति का अनुभव करता है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान वाला सहज ही इस स्थिति में स्थित हो जाता है।

''बापदादा हर एक बच्चे को सदा जीवनमुक्त स्थिति में देखना चाहते हैं। ... सतयुग में या मुक्तिधाम में मुक्ति वा जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है।''

अ.बापदादा 21.11.98

''सेवा की और उसकी रिजल्ट में मेरी मेहनत या मैंने किया, यह स्वीकार किया अर्थात् सेवा का फल खा लिया। ... जमा की चाबी है - 'निमित्त भाव और निर्मान भाव'।... नि:स्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह।'' अ.बापदादा 31.12.2000

मुक्ति अर्थात् निर्संकल्प, बीजरूप, पूर्ण शान्ति की अवस्था। अभी यहाँ संगम पर उस अवस्था का अनुभव ही होता है, पूर्णशान्ति अर्थात् मुक्त तो शान्तिधाम में ही होते हैं। जीवनमुक्ति अर्थात् निर्विकल्प स्थिति, इसकी दो स्थितियाँ हैं एक तो फरिश्ता बन अर्थात् देह से न्यारा होकर फरिश्ता स्वरूप में बाप के साथ का अनुभव करना, सेवा करना और दूसरा इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखना और पार्ट बजाना।

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। परमधाम में तो सर्व आत्माओं को जाना है और मुक्त अवस्था में रहना है परन्तु यथार्थ दृष्टि से देखा जाये तो वहाँ पर आत्मा को किसी भी प्रकार का अनुभव नहीं होता है। अनुभव तो जब साकार देह में होते, संकल्प होता, महसूसता शक्ति होती तब ही होता है। इसलिए अभी बाप ने जो ज्ञान दिया है और रास्ता दिखाया है, जिससे हम सहज देह और देह की दुनिया को भूल देह से न्यारे होकर निर्संकल्प स्थिति में स्थित होकर इस देह और देह की दुनिया के सुख-दुख से परे होकर मुक्ति का अनुभव करते हैं वही सच्चा मुक्ति का अनुभव है, वही परमशान्ति का अनुभव है। परमात्मा तो सदा मुक्त, सुख-दुख से न्यारा है। बाबा कहता भी है कि हमारे में ज्ञान देने का पार्ट है, जो समय पर इमर्ज होता है, उसका अनुभव करना तुम देहधारियों का काम है। बाप सुख का अनुभव करे तो दुख का भी अनुभव करना पड़े। इसलिए वह सुख और दुख दोनों से परे है।

सतयुग-त्रेता में जो जीवनमुक्ति का अनुभव है, वह सुख का अनुभव है परन्तु यथार्थ अनुभव तो जब तुलना में उसके विपरीत स्थिति का भी ज्ञान होता है, अनुभव होता है, तब ही होता है। अभी संगमयुग में जब बाबा सतयुग-त्रेता का भी ज्ञान देते और ज्ञान के सभी राज़ों को बतलाते हैं तब हम मान-अपमान, निन्दा-स्तुति ... से परे हो जाते हैं, ईश्वरीय सेवा में विश्व-कल्याण की भावना से ओतप्रोत होते हैं, ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को जानकर साक्षीपन की स्थिति में स्थित होते हैं और ट्रस्टी बनकर कार्य करते हैं तब हमारी जो निर्विकल्प स्थिति बनती है फिर उस समय हमको जो परमानन्द और परमसुख का अनुभव होता है, वही सच्चा जीवनमुक्ति का अनुभव है। वह अनुभव सतयुग-त्रेता की जीवन मुक्ति से बहुत श्रेष्ठ और सुखदायी है, जिसे ही अतीन्द्रिय सुख, परमानन्द, योगानन्द आदि नामों से गाया हुआ है, जो अभी संगमयुग पर

आत्मा को अनुभव होता है। सभी धर्म शास्त्रों और ग्रन्थों में इसी सुख के अनुभव का वर्णन है। उस सुख के आगे सतयुग-त्रेता के सुख का वर्णन तो नाममात्र ही कहेंगे।

जब आत्मिक स्वरूप, निराकार बाप, निराकारी वतन की स्मृति में निमग्न होकर देह और देह की दुनिया को भूल जाते हैं तो आत्मा को मुक्ति का अनुभव अर्थात् परमशान्ति का अनुभव होता है तथा जब फरिश्ता स्वरूप बाप के मिलन, स्वर्गिक दुनिया की स्मृति, ज्ञान के चिन्तन में देह और देह की दुनिया भूल जाती उसके सुख में खो जाते हैं और देह से न्यारे हो जाते तो जीवनमुक्ति अर्थात् जीवन में रहते भी दैहिक दुख-दर्द, बन्धन, भय-चिन्ता से मुक्त परम-सुख का अनुभव करते हैं।

ऐसे मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने के लिए ज्ञान सागर बाप ने जो ज्ञान दिया है, मार्ग दर्शाया है, उसमें पूरा निश्चय चाहिए। 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति' कहा गया है। ज्ञान सागर बाप द्वारा दिये गये ज्ञान और उच्चारे हुए महावाक्यों में जितने प्रतिशत निश्चय होगा, उनका अनुभव होगा, उतना ही देह और दैहिक पदार्थों एवं साधनों के आकर्षण से, स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों के बन्धन से, दैहिक सम्बन्धों और बन्धनों से, प्रकृति अर्थात् पाँच तत्वों के प्रभाव से मुक्त होंगे और जितना ही इनसे मुक्त होंगे, उतना ही इस संगमयुगी जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति, सम्पूर्णता-सम्पन्नता, बीजरूप स्थिति, बाप समान स्थिति का अनुभव होगा। ये सब स्थितियाँ प्राय: सम्पूर्णता की ही पर्यायवाची अर्थात् समकक्ष अवस्था के नाम हैं। इस स्थिति का अनुभव बाबा ने हर ब्राह्मण आत्मा को कराया है, इसलिए बाबा कहते हैं कि बाबा हर ब्राह्मण आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा दिया है। बाबा ने भी सभी को इस स्थिति का अनुभव कराया है और हर आत्मा समय-प्रतिसमय इसका अनुभव अपने पुरुषार्थ से भी करती है, लेकिन इसको स्थाई बनाना है अर्थात् सारे समय में कम से कम 75 प्रतिशत समय तक इस स्थिति के अनुभव में रहना है। 75 प्रतिशत की बात बाबा ने इसी सन्दर्भ में कही है।

''अन्त में तुम्हारी यह अवस्था हो जायेगी। बस बाप को ही याद करते रहेंगे।''

सा.बाबा 1.12.2000 रिवा.

* वर्तमान का मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही भविष्य की जीवनमुक्ति का आधार है।

* परमधाम में देह नहीं, इसलिए संकल्प-विकल्प से मुक्त, सतयुग-त्रेता में देहाभिमान नहीं, विकर्म नहीं, इसलिए दुख-अशान्ति की कोई बात ही नहीं, इसलिए वहाँ आत्मायें विकल्पों से तो मुक्त रहती हैं लेकिन उनके संकल्प भी बहुत नहीं होते हैं। वहाँ पर नाममात्र ही संकल्प होते हैं। संगमयुग पर ज्ञान की चरमोत्कृष्ट अवस्था है, परमपिता परमात्मा से विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान मिला है, उसकी यथार्थ धारणा से अवस्था साक्षी होती है, जिससे संकल्प विकल्प नहीं

चलता और आत्मा को सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है। ये संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से भी अति श्रेष्ठ है। मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करने का यही समय है।

''भविष्य का ताज और तिलक इसी जन्म के प्राप्ति की प्रालब्ध है। विशेष प्राप्ति का समय वा प्राप्तियों की खान प्राप्त होने का समय अभी है। अभी नहीं तो भविष्य प्रालब्ध भी नहीं। इसी जीवन का गायन है - 'दाता के बच्चों को, वरदाता के बच्चों को अप्राप्त नहीं कोई वस्तु'। भविष्य में फिर भी एक अप्राप्ति तो होगी ना! बाप का मिलन तो नहीं होगा ना।... रोज अमृतवेले याद करो - मैं कौन।''

अ.बापदादा 14.12.83

''स्थान और समय को संख्या प्रमाण ही चलाना पड़ेगा।... फिर भी बाप के घर जैसा दिल का आराम कहाँ मिल सकेगा! इसलिए सदा हर हाल में सनतुष्ट रहना, संगमयुग की वरदानी भूमि के तीन पैर पृथ्वी सतयुग के महलों से भी श्रेष्ठ है। इतनी बैठने की जगह मिली है, यह भी बहुत श्रेष्ठ है। यह दिन भी फिर याद आयेंगे।''

अ.बापदादा 29.4.84

* जीवन में सच्चा सुख पाने के लिए, सच्ची जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए पवित्रता मुख्य शर्त है। सतयुग में आत्मिक शक्ति के आधार पर आत्मा विषय-भोग से मुक्त तो रहती हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान और परमात्मा का साथ न होने के कारण उतरती कला अवश्य होती है। संगमयुग में पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य की धारणा ईश्वरीय ज्ञान, परमात्म प्रेम, परमात्म-संग के आधार पर होती है, जिससे आत्मा की चढ़ती कला होती है। इसलिए संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही सच्चा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव है।

* सतयुग-त्रेता है जीवनमुक्त स्थिति। जैसे परमधाम में आत्मायें अशरीरी मुक्त अर्थात् संकल्प-विकल्पों, सुख-दुख आदि से मुक्त रहती हैं, उसी तरह सतयुग-त्रेता में आत्मायें जीवनमुक्त अर्थात् जीवन में रहते अर्थात् सुख-दुख दोनों के अनुभव से मुक्त (सुख का अनुभव करने के लिए दुख का अनुभव भी आवश्यक है क्योंकि दुख की भेंट में ही सुख का अनुभव होता है), संकल्प-विकल्पों से मुक्त पूर्ण शान्ति में रहती हैं। संकल्प-विकल्प, सत्य-असत्य, कृत्य-अकृत्य, पुण्य-पाप, सफलता-असफलता, अपना-पराया, प्राप्ति-अप्राप्ति आदि के विषय में यथार्थ निर्णय के लिए संदेह होने के कारण ही संकल्प-विकल्प चलता है। सतयुग में सुख-साधनों की बाहुल्यता होती है, आत्मिक शक्ति होती है इसलिए विकर्म होते नहीं, इसलिए वहाँ इन दोनों ही प्रकार की बातों का प्रश्न ही नहीं होगा तो संकल्प-विकल्प क्यों चलेगा। सदा ही निश्चिन्त होंगे। संकल्प-विकल्प चलने का मूल कारण देहाभिमान और

अनिश्चितता है।

* संगमयुगी जीवन जीना स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण के लिए है और खाना जीने के लिए है परन्तु सतयुग में जीना खाने-पीने अर्थात् इन्द्रीय सुखों के लिए है। इसलिए संगमयुग की जीवनमुक्ति, सतयुग की जीवनमुक्ति से बहुत महान और श्रेष्ठ है। सतयुग में स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण का कोई कर्तव्य नहीं होता है, इसलिए उससे संगमयुगी जीवन अति महान है। द्वापर-कलियुग में देहाभिमान के कारण इन्द्रीय सुखों के लिए अनेक विकर्म भी करते हैं, जो सतयुग में नहीं होते हैं। ये विकर्म ही आत्मा के दुख का कारण बनते हैं।

''शूद्र से अब तुम ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण बने हो। क्यों? वर्सा लेने के लिए। ब्रह्मा मुखवंशावली सिर्फ संगम पर ही बनते हैं। तुम्हारे लिए ही संगम है। ... अभी आत्मा को खुराक मिली है।... इन देवताओं में तो ज्ञान है नहीं। ज्ञान तुमको मिलता है, जिससे तुम देवता बनते हो। देवताओं को ज्ञानी नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 12.8.02 रिवा.

''यह ज्ञान की बातें अभी यहाँ ही चलती हैं, सतयुग में नहीं चलती हैं। वहाँ तो न ज्ञान है, न अज्ञान है। ज्ञान देने वाला वहाँ कोई है नहीं। ज्ञान से तो प्रालब्ध पा ली। अभी तुम ज्ञान से प्रालब्ध पा रहे हो।''

सा.बाबा 13.8.02 रिवा.

''सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही, लेकिन अभी के जवनबन्ध से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी ज्यादा श्रेष्ठ है। तो अभी भी अपने ज्ञान और योग की शक्ति से जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करते हो कि अभी भी बन्धन हैं? ... खेल समझने से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 5.12.78 पार्टी

* ज्ञान आत्मा को परम सुख देने वाला है, परमात्मा आत्माओं का परम सम्बन्धी है, मुक्ति-जीवनमुक्ति परमात्मा का आत्माओं को वर्सा है, जो परमानन्दमय है, साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखने का सुख परम सुख है। ये सब सुर-दुर्लभ प्राप्तियां त्रिलोक्य और त्रिकाल में कब और कहाँ भी उपलब्ध नहीं हैं। इस सुख को भूल कर सतयुग के सुख की लालसा में, उसकी प्रतीक्षा में जीनें वाले नादान हैं। सतयुग की प्राप्तियां तो इस संगमयुग की प्राप्तियों के आगे कुछ भी नहीं हैं, संगम की प्राप्तियों की परछाई मात्र हैं। इस सत्य को जानकर इस संगमयुग के परम भाग्य को अनुभव करने वालों का जीवन ही महान है, धन्य है। इस जीवन का ही गायन होता है।

* आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा परम-आनन्द का अनुभव करती है। वर्तमान को भूल कर

भविष्य की चिन्ता करना अज्ञानता का लक्षण है। भविष्य तो वर्तमान के कर्मों का फल है। जो वर्तमान में श्रेष्ठ कर्मों का बीज बोता है, उसका भविष्य स्वत: ही सुन्दर और सुखमय होता है। वर्तमान जीवन के महत्व को जानकर उसे सफल करो तो भविष्य अवश्य सुखमय होगा।

* विकर्मों से मुक्त विकर्माजीत स्थिति का भी अपना विशेष सुख है, जो संगमयुग पर ही आत्मा अनुभव करती है। आत्मा योग या भोग द्वारा विकर्मों का हिसाब-किताब समाप्त कर इस सुख का अनुभव करती है

संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति है, परमात्मा इसका अनुभव हर आत्मा को कराता है परन्तु हर आत्मा अपने पुरुषार्थ अनुसार इसको स्थाई बनाता है।

* परमात्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता कहा जाता है। परमात्मा अभी है तो उनका वर्सा मुक्ति-जीवनमुक्ति भी अभी ही होना चाहिए और है ही। संगमयुग ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का युग है। ड्रामा की अटल भावी और कर्म के अटल विधि-विधान और नियम-सिद्धान्त को जानने और निश्चय वाला किसी भी घटना से अप्रभावित आत्मा ही निर्भय-निश्चिन्त-निर्संकल्प होकर इस मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकता है। इसीलिए गायन है - जननी-जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयशी। बाप अभी है तो उसका प्यार स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।

* परमानन्द संगमयुग की परम प्राप्ति है, जो संगमयुग पर परमात्मा के सानिध्य और यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति और उसकी धारणा से व्यर्थ से मुक्त होने पर आत्मा को प्रापत होती है। ज्ञानयुक्त मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति ही परमानन्द की अनुभूति है।

संगमयुग की जीवनमुक्ति का अनुभव और उससे सतयुग की जीवनमुक्ति का सम्बन्ध

सतयुग-त्रेता की जो भी प्राप्तियां हैं, वे सब इस संगमयुग की प्राप्तियों की परछाई मात्र हैं। इसके लिए ही बाबा कहते हैं - सतयुग-त्रेता में बहुत काल की प्राप्ति का आधार है संगमयुग पर बहुत काल मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में रहेगा, वही बहुत काल के लिए सतयुग-त्रेता में जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करेगा, जो संगमयुग पर बहुत काल स्वराज्य अधिकारी बनकर रहेगा, वही सतयुग-त्रेता में बहुत काल के लिए राज्य-अधिकारी बनेगा, जो संगमयुग पर ज्ञान-रतनों से सम्पन्न बनेगा और दूसरों को भी दान करेगा, वही वहाँ स्थूल रतनों से सम्पन्न बनेगा।

''ये भाग्य की रेखायें स्वयं बाप ने हर एक के श्रेष्ठ कर्म की कलम से खींची हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य की रेखायें, जो अविनाशी है अर्थात् सिर्फ इस जन्म के लिए नहीं लेकिन अनेक जन्मों के लिए अविनाशी भाग्य की रेखायें हैं। अविनाशी बाप है और अविनाशी भाग्य की रेखायें हैं। इस समय के श्रेष्ठ कर्म के आधार पर सर्व रेखायें प्राप्त होती हैं। इस समय का पुरुषार्थ अनेक

जन्मों की प्रालब्ध बना देता है।'' अ.बापदादा 31.3.07

''बापदादा इस जन्म के पुरुषार्थ की प्रालब्ध की प्राप्ति अभी देखना चाहते हैं। सिर्फ भविष्य नहीं लेकिन अभी भी यह सब रेखायें सदा अनुभव में आयें क्योंकि अभी के यह दिव्य संस्कार आपका नया संसार बना रहा है।'' अ.बापदादा 31.3.07

''एक राज्य, एक धर्म और साथ में सदा सुख-शान्ति, सम्पत्ति, अखण्ड सुख, अखण्ड शान्ति, अखण्ड सम्पत्ति। वह है विश्व का राज्य और इस समय है स्वराज्य। तो चेक करो - अविनाशी सुख, परमात्म सुख अविनाशी अनुभव होता है ? कोई साधन वा कोई सेलवेशन के आधार पर सुख का अनुभव तो नहीं होता ? कभी दुख की लहर किसी भी कारण से अनुभव में नहीं आनी चाहिए।'' अ.बापदादा 31.3.07

''ज्ञान, गुण और शक्तियां स्वराज्य अधिकारी की सम्पत्तियां हैं। ... नये संसार में इन सब बातों का जो अभी स्वराज्य के समय अनुभव होता है, वह नहीं हो सकेगा। ...बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है कि बहुत काल का अभी का अभ्यास बहुत काल की प्राप्ति का आधार है।'' अ.बापदादा 31.3.07

''बहुत काल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुत काल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। ... जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबन्ध वाली आत्माओं का बन्धन समाप्त करेगा। यह सेवा नहीं करनी है क्या ? ... सब बन्धनों में पहला है देह-भान का बन्धन, उससे मुक्त बनो। ... ब्रह्मा बाप ने आत्मा का पाठ आदि से कितना पक्का किया।''
अ.बापदादा 18.1.97

''मुक्ति-जीवनमुक्ति जन्मसिद्ध अधिकार है। इसको आप लोगों ने पाया है ? ... मुक्ति-जीवनमुक्ति को यहाँ ही पा लिया है वा मुक्तिधाम में मुक्ति और स्वर्ग में जीवनमुक्ति लेना है। भविष्य में तो मिलना है लेकिन भविष्य के साथ-साथ अभी मुक्त-जीवनमुक्ति नहीं मिली है ?''
अ.बापदादा 11.7.72

## मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख और उसके अनुभूति में बाधायें

**(Hinderances Disturbances)**

मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख संगमयुग पर आत्मा की परम प्राप्ति है और परमपिता परमात्मा का आत्माओं को सर्वश्रेष्ठ वर्सा और वरदान है परन्तु अज्ञानता जनित देहाभिमान के कारण इन्द्रिय सुखों का उपभोग और इन्द्रिय सुखों का आकर्षण, मृत्यु-भय,

भूतकाल के कर्मों का पश्चाताप और भविष्य की चिन्ता आत्मा को उस सुख के अनुभूति से वंचित कर देती है और कर देती है। परमपिता परमात्मा से प्राप्त विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और परमात्मा की मधुर स्मृति ही इन बाधाओं से मुक्त करके मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव कराने वाली है। जो आत्मा इस सत्य को अनुभव कर लेती है, वह इनसे विरक्त होकर परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर चलकर मुक्ति-जीवनमुक्ति के परमसुख को अनुभव करती है और दूसरों को भी अनुभव कराती है।

* सम्पूर्णता के पुरुषार्थ के लिए अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुखद अनुभव के लिए किसी साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमधाम में कोई साधन-सम्पत्ति होती ही नहीं, सूक्ष्म वतन में भी कोई स्थूल साधन-सम्पत्ति नहीं होती और ब्रह्मा बाबा ने किसी साधन-सम्पत्ति के आधार पर अपनी सम्पूर्णता को नहीं पाया। उनके जीवन को देखें तो हम देखेंगे कि साधारण जीवन में रहते ही उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय, अटल विश्वास, सतत पुरुषार्थ के द्वारा सम्पूर्णता को पाया - इस सत्य को जानकर उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ करके हम सम्पूर्णता को प्राप्त करके मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुर-दुर्लभ परम सुख को अनुभव कर सकते हैं। सम्पूर्णता के लिए ज्ञान धन अर्थात् यथार्थ ज्ञान की धारणा ही आवश्यक साधन है और सतत पुरुषार्थ ही अभीष्ट धारणा है।

* किसी भी आत्मा को कोई पद, मान-शान, प्रतिष्ठा, साधन-सम्पत्ति प्राप्त होती है तो उसका कुछ आधार अवश्य होता है, भले हम उसको जाने या न जाने। उसके पीछे उसकी त्याग-तपस्या अवश्य होती है। इसलिए हमको किसी की प्राप्तियों से ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए, उनको देखकर अपने जीवन में कब हीनता नहीं लानी चाहिए और किसी कमजोर, इस प्राप्तियों से वंचित आत्मा को देखकर अहंकार भी नहीं आना चाहिए। यह विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है, इसलिए इसमें किसी की भी एक समान स्थिति सदा काल नहीं रहती है। आत्मा के कर्मातीत बनने में, मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख के अनुभव में इस मान-शान, पद-प्रतिष्ठा, साधन-सम्पत्ति का कोई अस्तित्व नहीं है। परमपिता परमात्मा की प्राप्ति जीवन की सवोच्च प्राप्ति है, उनसे प्राप्त ज्ञान-गुण-शक्तियां सर्वश्रेष्ठ धन है। कर्मातीत बनने के लिए, मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव करने के लिए आत्मा की स्व-स्थिति ही आधार है, उसमें ये हीनता-अहंकार की महसूसता मुख्य बाधा है, जो यथार्थ ज्ञान की धारणा से ही दूर हो सकती है।

अहंकार-हीनता की महसूसता, अशुभ की परिकल्पना आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख से वंचित कर देती है। परन्तु इस विश्व-नाटक में अहंकार-हीनता का कोई अस्तित्व नहीं है। परमपिता परमात्मा इस सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी विश्व-नाटक का पूर्ण

ज्ञाता है, ब्रह्मा बाबा ने अपने पुरुषार्थ से इस सत्य अनुभव करके, उसकी धारणा करके फरिश्ता बने हैं। दोनों ही मेरे-तेरे से भाव से सदा मुक्त हैं और उनकी छत्रछाया विश्व की सर्व आत्माओं समान रूप से है, उसका अनुभव करके मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख का अनुभव करो और कराओ।

''बापदादा हर एक बच्चे को जीवनमुक्त स्थिति में सदा देखने चाहते हैं। ... मुक्तिधाम में या सतयुग में मुक्ति वा जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगमयुग पर ही करना है। ... हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्ति बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से बनाये ... बनना तो आपको पड़ेगा ही। चाहे चाहो, चाहे नहीं चाहो, बनना तो पड़ेगा ही।''

अ.बापदादा 21.11.98

''जीवनमुक्ति का मज़ा तो अभी है। भविष्य में जीवन-मुक्त और जीवन-बन्ध का कन्ट्रास्ट नहीं होगा। ... परमधाम में तो पता ही नहीं पड़ेगा कि मुक्ति क्या है और जीवन-मुक्ति क्या है। दोनों का अनुभव तो अभी होता है। ... जीवनमुक्त, न्यारा और प्यारा बनने की विधि क्या है? तख्त-नशीन बनो।''

अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 3

''मुक्ति-जीवनमुक्ति जन्मसिद्ध अधिकार है। इसको आप लोगों ने पाया है? ... मुक्ति-जीवनमुक्ति को यहाँ ही पा लिया है वा मुक्तिधाम में मुक्ति और स्वर्ग में जीवनमुक्ति लेना है। भविष्य में तो मिलना है लेकिन भविष्य के साथ-साथ अभी मुक्त-जीवनमुक्ति नहीं मिली है?... जब बाप अभी मिला है तो वर्सा भी अभी मिला है। ... प्रैक्टिकल जो वर्सा है, वह अभी प्राप्त होता है। जीवन-बन्ध के साथ ही जीवनमुक्त का अनुभव होता है। वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं, वहाँ तो सिर्फ उसकी प्रारब्ध में होंगे।''

अ.बापदादा 11.7.72

''मुक्ति की अवस्था का अगर अनुभव करते हो तो मुक्त होने के बाद जीवन-मुक्ति का अनुभव ऑटोमेटिकली हो जाता है। ... मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अभी करना है न कि भविष्य में।... वह है श्रेष्ठ कर्मों की प्रारब्ध लेकिन श्रेष्ठ कर्म तो अभी होते हैं ना, तो प्राप्ति का भी अनुभव अभी होगा ना।''

अ.बापदादा 11.7.72

## मुक्ति-जीवनमुक्ति का अभीष्ट पुरुषार्थ

मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव करने के लिए देही-अभिमानी स्थिति की जितनी गहरी

धारणा होगी, अनुभव उतना ही सहज और दीर्घ-कालिक और स्पष्ट होता है। इसके लिए बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसको मनन-चिन्तन करके अच्छी रीति समझना, उस पर निश्चय करके देही-अभिमानी अवस्था बनाने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है। जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होगी तो देह और देह की दुनिया स्वत: भूल जायेगी और जीवन में परम शान्ति और परम सुख का अनुभव होगा अर्थात् उसको मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख का अनुभव होगा।

ज्ञान सागर सत्य परमात्मा पिता द्वारा दिये गये ज्ञान और उच्चारे हुए महावाक्य पर यथावत् पूर्ण निश्चय वाला ही बाप समान बन सकता है और संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कर सकता है। इसके लिए परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान के हर बिन्दु का गहराई से मनन-चिन्तन कर उनको समझना, उनका अनुभव करना और उन पर पूर्ण रूप से निश्चय करना अति आवश्यक है। इसीलिए ही ''निश्चयबुद्धि विजयन्ति'' कहा जाता है।

* सतयुग में देवतायें सदा शान्ति में रहते हैं, उनका खान-पान, बोलचाल, संकल्प बहुत ही सीमित होते हैं। यदि अभी हम उस स्थिति के अनुरूप शान्ति में रहें, कम और सत्य बोलें, व्यर्थ न सुनें, खान-पान संतुलित रखें, संकल्प, सोचना आदि कम हों तो अभी हम स्वर्ग से भी उच्च सुख का अनुभव कर सकते हैं क्योंकि अभी हमको तीनों लोकों, तीनों कालों का ज्ञान है और परमपिता परमात्मा का साथ भी है। अभी हमारा समय और शक्ति व्यर्थ बोलने, व्यर्थ सुनने, व्यर्थ खाने और पचाने में, व्यर्थ सोचने में चली जाती है, जिससे हम संगम के मुक्ति-जीवनमुक्ति के सच्चे सुख को अनुभव नहीं कर पाते हैं। जब इस जीवन के सच्चे सुख का अनुभव नहीं होता है तो आत्मा इस संगमयुगी जीवन से उब जाती है और उस को स्वर्ग के सुख का आकर्षण अधिक रहता है परन्तु सतयुग का सुख तो इस जीवन के सुख की ही परछाई है। जब हम यहाँ मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव करेंगे, तब ही हमको सतयुग में जीवनमुक्ति के सुख अनुभव होगा, वहाँ सुख मिलेगा।

* स्वर्ग की आशा में वर्तमान के मुक्ति-जीवनमुक्ति के सच्चे सुख के समय को गँवा देना भी एक प्रकार की अज्ञानता है। ज्ञानी आत्मा जिस समय जहाँ खड़ी है, वहीं अपने स्व-रूप में स्थित होकर उसका लाभ उठाती है, उसमें ही सच्चे सुख का अनुभव करती है। वर्तमान समय की जीवनमुक्ति के अनुभव पर ही भविष्य की जीवनमुक्ति का आधार है।

* अधिक बोलने, अधिक खाने, अधिक सोचने, अधिक संकल्प करने से आत्मा की शक्ति का तीव्रता से ह्रास होता है और शक्तिहीन आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति के सच्चे सुख को अनुभव कर नहीं सकती। कम बोलने, कम खाने, कम सोचने, कम सुनने, कम सोचने, कम संकल्प

करने से आत्मिक शक्ति का ह्रास कम होता है, जिससे आत्मा को एकाग्रता एवं एकान्त की आकर्षण होती है, उससे अवस्था शान्त रहती है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए मन का शान्त होना अति आवश्यक है। सतयुग में यही स्थिति आत्माओं को शान्ति और सुख का अनुभव कराती, शान्ति के लिए आकर्षित करती है परन्तु संगम पर ज्ञान होने से ये धारणायें परमपिता परमात्मा और परमधाम की ओर आकर्षित करती हैं, जिससे उनकी स्मृति से आत्मिक शक्ति बढ़ती है और आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है। यही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा अनुभव है।

* मुक्ति-जीवनमुक्ति के पुरुषार्थी को इस सत्य को कब भूलना नहीं चाहिए कि मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है। जब आत्मा पवित्र होगी तो उसे जीवन में होते भी मुक्ति-जीवनमुक्ति अवश्य अनुभव होगी। पवित्रता का एकमात्र साधन है परमपिता परमात्मा के साथ योग। आत्मा को योग के पुरुषार्थ में कोई साधन-सम्पत्ति या व्यक्ति न सहयोग कर सकता और न बाधा डाल सकता। ये हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है। जो इस सत्य को स्मृति में रखकर अभीष्ट पुरुषार्थ करता है, वह अभी भी मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव करता है और भविष्य में भी जीवनमुक्ति के परम सुख को पाता है। इसलिए किसी व्यक्ति से आश रखना या किसी व्यक्ति को अपने मार्ग में बाधक समझना अज्ञानता है। आत्मा को एक बाप का ही सहारा रखकर उनकी श्रीमत पर अभीष्ट पुरुषार्थ करके मुक्ति-जीवनमुक्ति के सच्चे सुख को अनुभव करना और कराना चाहिए। गायन है - करु बहिंयां बल आपनो छाड़ि बिरानी आश, जाके आंगन है नदी सो कस मरे प्यास। सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा का वरदानी हाथ तुम्हारे सिर है और उसका सदा साथ है, उसको अनुभव करो और उनके साथ योगयुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव करो, जो हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

* सुखी जीवन अर्थात् जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए तन, मन, धन, जन सब स्वस्थ चाहिए, जिसका आधार है स्वस्थ अर्थात् श्रेष्ठ कर्म। किसके लिए क्या और कैसा कर्म करना है, उसके लिए भी बाबा श्रीमत दी है, उसका विधि-विधान बताया है। जो जितना उनकी श्रीमत पर चलता है, उनके बताये विधि-विधानों का पालन करता है, वह उतना ही जीवनमुक्ति का अनुभव करता है।

''अभी बापदादा सिर्फ एक ही बात बच्चों से कराना चाहते हैं, कहना नहीं चाहते, कराना चाहते हैं। सिर्फ अपने मन में दृढ़ता लाओ। थोड़ी सी बात में संकल्प को ढीला नहीं कर दो। कोई इन्सल्ट करे, कोई घृणा करे, कोई अपमान करे, निन्दा करे परन्तु शुभ भावना मिट नहीं

जाये।''

अ.बापदादा 25.11.2000

''इन रूपों में ही मायाजीत बनना है। बात नहीं बदलेगी, सेन्टर नहीं बदलेगा, स्थान नहीं बदलेगा, आत्मायें नहीं बदलेंगी लेकिन हमें बदलना है। ... बदलकर दिखाना है, बदला नहीं लेना है।... माया और भी रॉयल रूप में आने वाली है। डरो मत। कोई दुश्मन चाहे हार खाता है, चाहे जीत होती है तो उसके पास जो भी छोटे-मोटे अस्त्र-शस्त्र होंगे, वे सब यूज करेगा।''

अ.बापदादा 25.11.2000

''बाप कहते हैं - एक सेकेण्ड में सभी अभी-अभी विदेही बन सकते हो। तो अभी एक सेकेण्ड में विदेही स्थिति में स्थित हो जाओ। .. अभी देह में आ जाओ।... अभी फिर विदेही बन जाओ। ऐसे सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकेण्ड भी मिले तो बार-बार यह अभ्यास करते रहो।''

अ.बापदादा 12.12.98

''बीच बीच में यह ड्रिल हर एक को करनी चाहिए। ... विदेही बनने में टाइम लग जाता है। बीच-बीच में यह अभ्यास होगा तो जब चाहें, उसी समय विदेही हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। अचानक के पेपर में पास होने के लिए यह विदेहीपन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।''

अ.बापदादा 12.12.98 दादियों के साथ

''देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव।... संगमयुग की प्रालब्ध है जीवनमुक्त की।... जीवनबन्ध के सूक्ष्म धागे मैजारिटी में हैं।... जीवनमुक्त की लास्ट स्टेज है - देह से न्यारे विदेहीपन की।... अभी से ही विदेही स्थिति का बहुत अनुभव चाहिए।''

अ.बापदादा 21.11.98

''चाहे प्रकृति के पांचो ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद् ऑनर होगा। ... अभी लास्ट समय को सोचते हो लेकिन लास्ट स्थिति को सोचो।'' (अभी से उस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो)

अ.बापदादा 21.11.98

''जब स्वयं सम्पन्न बनो तब ही विश्व परिवर्तन का कार्य भी सम्पन्न होगा। ... फरिश्ता का अर्थ ही है जिसका का पुरानी दुनिया, पुराने स्वभाव-संस्कार, पुरानी देह के प्रति कोई आकर्षण का रिश्ता नहीं। तीनों में पास चाहिए।''

अ.बापदादा 8.4.92

# मुक्ति-जीवनमुक्ति के पुरुषार्थ के लिए आवश्यक साधन एवं साधना

''शिवबाबा के डायरेक्शन तो जरूर साकार द्वारा ही मिलेंगे ... तुम अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो परन्तु यह जो सृष्टि-चक्र की नॉलेज मिलती है, वह कैसे सुनेंगे। यह समझने बिना सिर्फ याद कैसे कर सकेंगे। ... बाप कहते हैं - जो ऐसे घर बैठकर कर्मातीत अवस्था को पाने का पुरुषार्थ करे, तो हो सकता है कि वह मुक्ति में जाये। जीवनमुक्ति में तो जा न सके।''

सा.बाबा 11.12.06 रिवा.

ज्ञान सागर परमात्मा ने ज्ञान के जो राज़ समझाये, ज्ञान के उन सब राज़ों का अनुभव और निश्चय होगा तथा जो उन्होंने जो नियम-संयम का ज्ञान दिया है, उन पर निश्चय होगा और उनका पालन होगा तब ही हम बाप समान बन सकेंगे अर्थात् बाप समान कर्तव्य करने में समर्थ होंगे और जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेंगे। ज्ञान सागर परमात्म ने हमको जो ज्ञान के गुह्य राज़ समझाये हैं, उनमें मुख्य हैं:-

**ज्ञान -**

आत्मा का ज्ञान,
परमात्मा का ज्ञान,
तीनों लोकों का ज्ञान,
तीनों कालों का ज्ञान,
सृष्टि-चक्र का ज्ञान, कल्प-वृक्ष का ज्ञान,
स्वर्ग-नर्क का ज्ञान,
संगमयुग का ज्ञान,
कर्मों की गुह्य-गति का ज्ञान,
दैवी गुणों का ज्ञान और धारणा,
पवित्रता का ज्ञान,
योग का ज्ञान और अभ्यास के विधि-विधान का ज्ञान
ब्राह्मण जीवन के नियम-संयम का ज्ञान आदि आदि।

## 1. आत्मा का ज्ञान

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा की मूलभूत प्यास है अर्थात् चाहना है, जिसके लिए हर आत्मा सतत प्रयत्नशील है। परमात्मा ने आत्मा का यथार्थ ज्ञान देकर बताया है कि मुक्ति-

जीवनमुक्ति तो हर आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है अर्थात् हर आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति को अवश्य पाती है। परमात्मा ने इस सत्य को भी बताया कि आत्मा मन-बुद्धि-संस्कारों सहित एक चेतन सत्ता है, आत्मा में अनादि-अविनाशी संस्कार हैं, जिनके आधार पर आत्मा इस विश्व-नाटक में अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाती है। हर योनि की अपनी-अपनी निश्चित आत्मायें हैं, जो अपनी योनि में पुनर्जन्म लेकर पार्ट बजाती हैं। इसलिए मनुष्य आत्मा अपने कर्मों का फल भोगने के लिए पशु योनियों में जन्म नहीं लेती। हर योनि की आत्मायें ड्रामा के अपने पार्ट और कर्मों अनुसार अपनी योनि में ही जन्म लेकर सुख-दुख को भोगती हैं। अन्य योनि की आत्माओं के विषय में भी आवश्यकता अनुसार ज्ञान दिया है। आत्मा परमात्मा की वंशधर है, इसलिए आत्मा में भी परमात्मा के समान ही गुण-धर्म और शक्तियाँ हैं परन्तु आत्मा जब गर्भ से जन्म लेती है, तो वह ज्ञान प्राय: विस्मृत हो जाता है जिसके कारण आत्मा के मूलभूत गुण और शक्तियां क्षीण होने लगती हैं, जिनको पुन: जाग्रत करने के लिए ही परमात्मा का इस सृष्टि पर अवतरण होता है। आत्मायें कैसे एक जन्म के संस्कार दूसरे जन्म में ले जाती हैं अर्थात् एक जन्म के संस्कार-स्वभाव ही उसके दूसरे जन्म का आधार बनते हैं। आत्माओं को जब परमात्मा द्वारा आत्मा का यथार्थ ज्ञान मिलता है, तब ही आत्मा यथार्थ रूप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है।

## 2. परमात्मा का ज्ञान

परमात्मा सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है, वह जब आकर अपना, आत्मा का और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता है, तब ही आत्मायें परमात्मा के द्वारा मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा पाते हैं अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं। परमात्मा भी एक आत्मा हैं, उनका भी इस विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी पार्ट है।

संगमयुग पर ही परमात्मा का पार्ट चलता है। परमात्मा पिता ने अपने नाम, रूप, धाम, गुण, कर्तव्य, अवतरण का समय, परकाया प्रवेश का ज्ञान दिया है। जो आत्मा परमात्मा के नाम-रूप-गुण-कर्तव्य को जानकर, उस अनुसार उनको जानकर याद करती है, उनकी श्रीमत पर चलती है, वह जीवन के परम सुख को अनुभव करती है अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव करती है। परमात्मा के गुण-कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन आगे करेंगे।

## 3. तीनों लोकों का ज्ञान

तीन लोकों का वर्णन तो भक्ति मार्ग में भी करते हैं परन्तु उनको यथार्थ रीति जानते नहीं हैं, जो अभी परमात्मा ने बताये हैं। मूल वतन आत्माओं का घर है, जहाँ आत्मायें अपने मूल रूप अर्थात् निराकारी स्थिति में निवास करती हैं। आत्माओं की दुनिया क्या है, कैसी है, कैसे आत्मायें वहाँ निवास करती हैं।

सूक्ष्म वतन क्या है, कैसे आत्मायें सूक्ष्म वतन में जाती हैं, वहाँ सूक्ष्म शरीर की क्या प्रक्रिया होती है, सूक्ष्म वतन की इस विश्व-नाटक में क्या भूमिका है। उसके विषय में भी परमात्मा ने ज्ञान दिया है, उसका साक्षात्कार आदि भी कराया है और अभी तो प्यारे ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म वतन में रहकर अपना पार्ट बजा रहे हैं।

सारा खेल इस स्थूल वतन में चलता है। आत्मायें मूलवतन से आकर इस स्थूल वतन में देह धारण कर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं। यह स्थूल वतन एक ड्रामा स्टेज है, जहाँ आत्माओं का पार्ट चलता है, सूर्य-चान्द, तारे इस ड्रामा स्टेज को प्रकाशित करने वाली बत्तियां हैं। मूलवतन से कैसे आत्मायें आकर इस स्थूल वतन में अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाती हैं, कैसे इस स्थूल वतन का नाटक आदि से अन्त तक चलता है, फिर कैसे परमात्मा आकर इसकी कलम लगाते हैं, आदि-आदि के विषय में यथार्थ ज्ञान परमात्मा ने दिया है। दुनिया में तो कोई इस विश्व-नाटक की स्थापना, विनाश और पालना के विषय में विवेकात्मक और विवेचनात्मक ज्ञान देने में समर्थ नहीं है। सभी धर्मों में अपनी-अपनी मान्यतायें हैं, जो एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं।

''जो देरी से आते हैं, वे ऊपर शान्ति में रहते हैं। ... ये बड़ी समझने की बातें हैं। कोई तो झट समझ जाते हैं, किसकी तकदीर में नहीं है तो समझ नहीं सकते हैं। जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध दोनों इस स्थूलवतन की ही बात है। ... अभी सबका कयामत का समय है, फिर अपने-अपने समय पर आयेंगे। ये सब प्वाइन्ट धारण करनी है, नोट करनी हैं।''

सा.बाबा 13.4.07 रिवा.

''बाप तुमको मुक्तिधाम, जीवनमुक्तिधाम में ले जायेंगे, फिर तुमको इस पतित दुनिया में आना ही नहीं है।... यह है मुक्तिधाम की यात्रा। तुम वहाँ जा रहे हो, जहाँ के तुम रहवासी हो।''

सा.बाबा 21.5.07 रिवा.

''पहले बाप को जानें तब बुद्धियोग बाप से लगे। बाप से वर्सा लेना है। मुक्तिधाम से फिर जीवन-मुक्तिधाम में जाना है। यह है पतित जीवनबन्ध।''

सा.बाबा 5.6.07 रिवा.

## 4. तीनों कालों का ज्ञान,

मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ अनुभव के लिए तीनों कालों का ज्ञान अति आवश्यक है, इसके लिए ही ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको तीनों कालों का ज्ञान दिया है। आत्मा के पार्ट के तीनों कालों का ज्ञान, सृष्टि-चक्र के तीनों कालों का ज्ञान, एक काल का दूसरे काल से सम्बन्ध, उनमें मनुष्यों के जीवन-व्यवहार आदि क्या होंगे आदि आदि का ज्ञान परमात्मा ने दिया है, जिससे हम सहज मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकते हैं। वर्तमान समय क्या है और उसका भूतकाल और भविष्य से क्या सम्बन्ध है। तीनों कालों का यथार्थ ज्ञान मिलने पर ही आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती हैं और अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए वर्तमान के कर्मों को सुधारने का पुरुषार्थ करती हैं।

## 5. सृष्टि-चक्र का ज्ञान,

मुक्ति-जीवनमुक्ति के सफल अनुभव के लिए सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान अति आवश्यक है। सृष्टि की रचना के विषय में विश्व में अनेक प्रकार के मत-मतान्तर हैं, जिससे आत्मा किसी यथार्थ निर्णय पर नहीं पहुँच पाती है और सदा भटकती रहती है। अभी परमात्मा पिता ने सृष्टि-चक्र के विषय में विवेकात्मक और तर्कसंगत ज्ञान दिया है, जिससे आत्मा की भटकना बन्द हो गई है। आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध के विषय में यथार्थ ज्ञान मिलने से आत्मा यथार्थ पुरुषार्थ करके मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकती है और हम आत्मायें कर रहे हैं। ये विश्व-नाटक एक अनादि-अविनाशी ड्रामा है, जो 5000 वर्ष के बाद हू ब हू पुनरावृत्त होता है। सृष्टि-चक्र में सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग में सृष्टि की क्या स्थिति होती है। संगमयुग क्या है और इस विश्व-परिवर्तन का कार्य संगमयुग पर कैसे चलता है। विश्व-नाटक के विषय में यह सब यथार्थ ज्ञान होगा तो सहज ही आत्मा संकल्प-विकल्प से मुक्त होकर निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में स्थित होकर सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकती है क्योंकि मुक्ति के अनुभव के लिए निर्संकल्प और जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए निर्विकल्प स्थिति परमावश्यक है।

''बाप है बिन्दी रूप, उसमें बरोबर सारा पार्ट नूँधा हुआ है। भक्ति मार्ग में भक्तों की भावना पूरी करते हैं। यह सारी ड्रामा में नूँध है। जिस समय जिसकी जो भावना है, वह ड्रामा में पहले से ही नूँधी हुई है। तुम्हारी ये पढ़ाई भी ड्रामा में नूँध है। आत्मा में जो पार्ट नूँधा हुआ है, वह पार्ट रिपीट हो रहा है। यह समझने की बात है ना।... इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को समझना है।''

सा.बाबा 24.09.03 रिवा.

* विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा की कसौटी है - निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति अर्थात् निरन्तर मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति। आत्मा के यथार्थ अस्तित्व को जानकर संकल्प-विकल्प से मुक्त निर्संकल्प होकर सच्ची मुक्ति का अनुभव करो। अंशमात्र का संकल्प-विकल्प सच्ची मुक्ति का अनुभव करने नहीं देगा। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर आत्मा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त निर्विकल्प स्थिति में स्थित होकर सच्ची जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकती है। अंशमात्र का विकल्प भी सच्ची जीवनमुक्ति का अनुभव करने नहीं देगा। इस सत्य को और समय के महत्व को जानकर सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना और कराना ही इस जीवन की परम प्रापति है।

* परमधाम में देह नहीं, इसलिए संकल्प-विकल्प से मुक्त, सतयुग-त्रेता में देहाभिमान नहीं, कोई दुख-अशान्ति की बात ही नहीं, इसलिए संकल्प-विकल्प से मुक्त। संगमयुग पर ज्ञान की चरमोत्कृष्ट अवस्था है, परमपिता परमात्मा से विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान मिला है, उसकी यथार्थ धारणा से अवस्था सहज साक्षी होकर इस विश्व-नाटक की हर घटना को देखती है, जिससे संकल्प-विकल्प नहीं चलता और आत्मा को सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है। ये संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से भी अति श्रेष्ठ है। यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करने का यही समय है।

* ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा ही हमको निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में मदद करती है। कर्मों का यथार्थ ज्ञान हमको विकर्मा से बचाता है और सुकर्मों के लिए प्रेरित करता है, आत्मा का ज्ञान अपने मूल स्वरूप में स्थित होने के लिए प्रेरित करता है। परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसका यथार्थ ज्ञान और उसकी याद हमको ज्ञान की धारणा कर अपने मूल स्वरूप में स्थित होने में मदद करती है, जिससे हम सहज ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकते हैं।

''बाप द्वारा तुम निमित्त बने हो सबको रावण के चम्बे से छुड़ाकर जीवनमुक्त बनाने के लिए। तुम्हारा नाम बाला है - शिव शक्ति सेना। तुम्हारा नाम इस ड्रामा में पिछाड़ी में बहुत ऊंचा होना है।'' सा.बाबा 13.4.07 रिवा.

''यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, जिसको कोई नहीं जानते हैं। नई दुनिया सो फिर पुरानी कैसे बनती है, ड्रामा कहाँ से शुरू होता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, फिर स्थूलवतन, फिर यहाँ यह चक्र कैसे फिरता रहता है।... जो आत्मायें पहले पावन थीं, वे पतित कैसे बनीं, फिर पावन कैसे बनेंगी - यह सब यहाँ समझाया जाता है।'' सा.बाबा 9.4.07 रिवा.

## 6. कल्प-वृक्ष का ज्ञान

मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में कल्प-वृक्ष का ज्ञान भी बहुत मदद करता है क्योंकि कल्प-वृक्ष के ज्ञान से हमारा विश्व की सर्वात्माओं से क्या सम्बन्ध है, उनके प्रति हमारा क्या कर्तव्य है, वह सब पता चलता है, जिससे आत्मा के व्यवहार में शुद्धता आती है और आत्मा राग-द्वेष से मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है। गीता में सृष्टि को एक उल्टा वृक्ष कहा गया है, वह कैसे है, सृष्टि में विभिन्न धर्मों की स्थापना, आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना, विभिन्न धर्मों की इस सृष्टि रंगमंच पर क्या भूमिका है, विभिन्न धर्मों का आपस में क्या सम्बन्ध, परमपिता परमात्मा द्वारा इस कल्प-वृक्ष की कलम कैसे लगती है आदि आदि बातों का अर्थात् कल्प-वृक्ष के स्थापना, विनाश, पालना का पूरा ज्ञान परमात्मा से मिला है, जिसको धारण कर हम सहज मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं।

''आप ब्राह्मण आत्मायें आदि देव की आदि रचना हो। इसलिए ब्राह्मण कल्प-वृक्ष में फाउण्डेशन अर्थात् जड़ में दिखाये गये हैं।... आप डायरेक्ट मात-पिता की रचना हो। आप आदि रचना और अन्य धर्म आत्माओं की रचना में अन्तर है। आप परमात्म-रचना अपने रचता मात-पिता दोनों को अच्छी तरह से जानते हो।'' अ.बापदादा 8.4.92

## 7. स्वर्ग-नर्क का ज्ञान

मुक्ति-जीवनमुक्ति के सफल अनुभव के लिए जीवनबन्ध का ज्ञान और अनुभव भी आवश्यक है। यथार्थता को देखें तो जीवनबन्ध में आने पर ही आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति की चाहना करती हैं। इसलिए ही गाया हुआ है - दुख में सुमिरण सब करें, सुख में करे न कोई। स्वर्ग-नर्क क्या है, कब और कैसे यह दुनिया स्वर्ग होती हे, फिर कब और कैसे नर्क बनती और फिर कब और कैसे परमात्मा आकर नर्क से स्वर्ग बनाते हैं। स्वर्ग का जीवन व्यवहार क्या है, नर्क का जीवन व्यवहार क्या है।

''स्वर्ग में नर्क का नाम-निशान भी नहीं रहेगा। धरती भी उथल-पाथल कर नई बन जाती है। ... सतयुग में तो इतने सब मनुष्य होंगे ही नहीं। और सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जायेंगीं, जिसके लिए इतनी भक्ति करते हैं।'' सा.बाबा 1.4.07 रिवा.

## 8. संगमयुग का ज्ञान

संगमयुग क्या है, कब होता है, संगमयुग की महानता क्या है और क्यों है आदि आदि बातों का परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं, तब ही आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव

करने का यथार्थ पुरुषार्थ करती है और अनुभव करने में सफल होती है। संगमयुग का सृष्टि रचना में क्या महत्व है, संगमयुग का आत्मा-परमात्मा के सम्बन्ध में क्या महत्व है आदि-आदि बातों का परमात्मा ने अभी ज्ञान दिया है, तब ही हम सुर-दुर्लभ मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कर रहे हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करने का यही संगमयुग है। मुक्तिधाम में आत्मा को कोई अनुभव नहीं होता है और सतयुग में जीवनबन्ध का न ज्ञान और आत्मा परमधाम से आती है, इसलिए उसमें जीवनबन्ध के ज्ञान की कोई अनुभूति नीहित नहीं होती है, इसलिए सतयुग की जीवनमुक्ति का इतना महत्व नहीं है, जितना इस संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का है।

## 9. **कर्मो की गुह्य गति का ज्ञान,**

मुक्ति, जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध के लिए आत्मा के अपने कर्म ही मूल कारण बनते हैं। संगमयुग पर परमात्मा आकर जब कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं, तब ही आत्मा यथार्थ पुरुषार्थ करके मुक्ति का अनुभव करती है, जीवनमुक्ति को पाने के लिए सुकर्मों का खाता जमा करती है और जीवनबन्ध में किये गये कर्मों के संचित खाते को भस्म करने का अभीष्ट पुरुषार्थ करती है। आत्मा का जितना विकर्मों का खाता खत्म होगा, सुकर्मों का खाता जमा हो, ज्ञान-योग के द्वारा आत्मिक शक्ति संचित होगी, उतना ही आत्मा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेगी। सुकर्म, अकर्म, विकर्म क्या है और कैसे आत्मा पर प्रभावित होते हैं, सुकर्म कैसे हों, कैसे आत्मा के जमा के खाते पर इनका प्रभाव पड़ता है। ये सब ज्ञान अभी परमात्मा ने दिया है, जिस ज्ञान को धारण कर आत्मा विकर्मों से मुक्त होकर श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है।

* कर्म के नियम और सिद्धान्तों के विषय में मनन-चिन्तन के द्वारा उनकी सत्यता को जाना और अनुभव किया जा सकता है। जिस बात का अनुभव हो जाता है, उसके विषय में निश्चय सहज हो जाता है और जैसा निश्चय वैसा कर्म भी स्वत: होता है। इसलिए सुकर्मों के लिए कर्मों के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान परमावश्यक है।

''जो बात अच्छी न लगे वह करनी नहीं चाहिए। अच्छे-बुरे को तो अब समझते हो, आगे नहीं समझते थे। ... अब अच्छी रीति पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना है।''

सा.बाबा 11.12.2000 रिवा.

* हम दूसरे के लिए अशुभ या बुरा सोचते हैं, हीन भावना रखते तो उसका असर हमारे ऊपर भी अवश्य होगा।

''बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति समझाते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।'' सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

* ये कर्म क्षेत्र है, यहाँ कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म कर्म के बिना रह नहीं सकती। गायन है - ''तुलसी ये तन खेत है, मन्सा भया किसान, पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो जस बुवै सो तस लुनै निदान।''

* यह विश्व-नाटक ''कर्म - फल - कर्म'', ''पुरुषार्थ - प्रालब्ध - पुरुषार्थ'' पर आधारित एक घटना-चक्र है। इस सत्य को जानने वाला कर्मों से विमुख न होकर श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होगा।

* अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा में कृत्य का संकल्प स्वत: उत्पन्न होता है, उसकी शुभ कर्म में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वभाविक होती है इसलिए कोई चिन्ता न करके वर्तमान में परमात्म-स्मृति में रहकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही आत्मा का परम कर्तव्य है।

* संकल्प भी एक कर्म है और उससे भी आत्मा प्रभावित होती है, उसका भी फल आत्मा को भोगना होता है। संकल्पों का प्रभाव एक दिशाई भी होता है और चहुँ दिशाई भी होता है, जिसको बाबा ने सर्च लाइट और लाइट हाउस से तुलना की है।

* जो जिसका चिन्तन करता है, वह वैसा बन जाता है। निराकार बाप को याद करने से निराकारी स्थिति अर्थात् मुक्त स्थिति का और अव्यक्त फरिश्ता रूप को याद करने से जीवनमुक्त अर्थात् अव्यक्त फरिश्ता बन जाते हैं।

* कर्मातीत बनने के बाद कोई आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती है। कर्मातीत अर्थात् मुक्त स्थिति। मुक्त स्थिति के बाद ही जीवनमुक्त स्थिति में आती है। हठयोग में भी पहले निर्संकल्प समाधि और फिर निर्विकल्प समाधि की सिद्धि होती है अर्थात् मुक्ति के अनुभव के बाद जीवनमुक्ति का अनुभव होता है क्योंकि मुक्त अर्थात् बीजरूप स्थिति के सफल अभ्यास से जब आत्मा का विकर्मों का खाता भस्म हो जाता है तब ही जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव होता है।

* लक्ष्य, भावना और कर्म के आधार पर जीवन की दिशा निश्चित होती है और उस अनुसार ही आत्मा को सुख-दुख का अनुभव होता है।

* आत्म-स्थिति में स्थित आत्मा को परमात्मा की याद सहज रहती।

* परमात्मा की याद से आत्मा सुकर्म करने में समर्थ होती है, जिससे आत्मा की चढ़ती कला होती है और जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव होता है।

## 10. दैवी गुणों का ज्ञान और धारणा

जब आत्मा इस धरा पर आती है तो पहले जीवनमुक्त होती है। उस समय आत्मा में सर्व दैवी गुणों की धारणा होती है, जो धीरे-धीरे आत्मा से विलुप्त होते जाते हैं। परमात्मा अभी आकर जब हमको दैवी गुणों का ज्ञान देते हैं और जीवन में उनका महत्व बताते हैं, जब आत्मा उनको धारण कर जीवनमुक्त स्थित का अनुभव करती है। दैवी गुणों से सम्पन्न आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, अहंकार-हीनता आदि विकारों से मुक्त होने के कारण संकल्प-विकल्पों से मुक्त होने के कारण सहज मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है। इसलिए मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए दैवी गुणों का ज्ञान और उनकी धारणा अति आवश्यक है। इसलिए परमात्मा पिता ने अभी हमको दैवी गुणों का ज्ञान देकर, उनकी धारणा के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कराया है, जिससे हम यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं और कर सकते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति के सफल अनुभव के लिए ही परमात्मा ने देवता, असुरों और मनुष्यों में क्या अन्तर बताया है। अभी दैवी गुण क्या है, कैसे उनकी धारण हो आदि आदि का ज्ञान परमात्मा ने दिया है।

## 11. पवित्रता

मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए पवित्रता की धारणा अति आवश्यक है। दैवी गुणों में भी पवित्रता मुख्य गुण है। सच्ची पवित्रता क्या है, पवित्र-आत्मा की क्या पहचान है, पवित्रता का मानव-जीवन में क्या महत्व है, पवित्रता की धारणा कैसे हो, आदि आदि बातों का परमात्मा ने ज्ञान दिया है, जिससे अभी हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकते हैं। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि-वृत्ति।

## 12. ब्राह्मण जीवन के नियम-संयम का ज्ञान

परमात्मा ने हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देने के लिए शूद्र से ब्राह्मण बनाया है और ब्राह्मण जीवन के नियम-संयम कर, खान-पान, रहन-सहन, जीवन व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञान, अन्न और संग की परहेज आदि आदि का ज्ञान दिया है। जो आत्मायें श्रीमत पर चलकर उन नियम-संयम का पालन करते हैं, वे सहज ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं।

''अब स्नेह के साथ ज्ञान का फाउण्डेशन ज़रा भी ढीला हुआ तो बच्चों पर वायुमण्डल का असर बहुत सहज हो सकता है, इसलिए हर एक बच्चे को अपनी चेकिंग करनी है।... वायुमण्डल का असर हमारे पर न हो और हमारा असर वायुमण्डल पर हो तब कायदे मुजीब

मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए ऊपर लिखी बातें, जिनका ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा ने ज्ञान दिया है, उन सब बातों का मनन-चिन्तन करके, उनको समझना, उनका अनुभव करना और निश्चय करना आवश्यक है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के सतत अभ्यास करना। जितना इन सब बातों की समझ होगी, उनका अनुभव होगा, उतना ही इस जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव होगा, इसलिए ही परमात्मा ने ये सब ज्ञान दिया है और परमात्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता कहा जाता है।

ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के गुह्य रहस्यों का, तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान दिया है। ब्रह्मा बाबा ने उन सभी बातों पर निश्चय किया, अपने जीवन में धारण किया और सदा समर्पण बुद्धि रहे ऐसे बाप समान उन सब बातों को अच्छी रीति समझना और उनका अनुभव करने वाला ही मुक्ति-जीवनमुक्त का सही रीति अनुभव कर सकता है और बाप समान सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव कर सकता है अन्यथा उसकी बुद्धि कहाँ न कहाँ, किस न किस बात में अटकी रहेगी, मन भटकता रहेगा, उसका चिन्तन चलता रहेगा और उनको जानने की इच्छा रहेगी। जब तक इच्छा और संकल्प है तब तक कोई भी यथार्थ रीति मुक्ति का अनुभव नहीं कर सकता है। मुक्ति के अनुभव के लिए तो सर्व प्रकार के चिन्तनों और संकल्पों से पार होना आवश्यक है, जिसको निर्संकल्प अवस्था कहा जाता है परन्तु जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए संकल्पों से मुक्त निर्संकल्प होने के बजाये व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होकर, शुभ संकल्पों की धारणा करना है इसलिए उस अवस्था को निर्विकल्प अवस्था कहा जाता है। इन संकल्पों और विकल्पों से मुक्त यथार्थ ज्ञान की धारणा वाला ही ''निश्चयबुद्धि - विजयन्ति'' हो सकता है जीवन में सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव कर सकता है।

* भूल के भी पश्चाताप में समय नहीं गँवाना है, उसे भूल कर आगे के लिए पुरुषार्थ करना है। पश्चाताप में भी भूल की याद पक्की होती है, इसलिए बाबा कहते हैं एक सेकेण्ड पीछे की बात को भी याद नहीं करना है। ड्रामा की भावी समझकर उसको भूलकर आगे के लिए पुरुषार्थ करेंगे तब ही हम मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव कर सकेंगे। इसलिए पश्चाताप के संकल्प-विकल्प से भी मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में रहना है परन्तु इसका अर्थ ये नहीं कि अलबेला बन जाना है।

* शिवबाबा ज्ञान का सागर है, उसमें इस विश्व नाटक के सर्व राजों का ज्ञान है इसलिए वह सदा मुक्त है और सर्व को मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग प्रदर्शित करने वाला है। ब्रह्मा बाबा ने

शिवबाबा के साथ रहकर, उनको फॉलो करके जीवन में ज्ञान की पराकाष्टा को धारण किया, जिसके कारण उन्होंने सदा ही जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव किया और अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वालों को उसका अनुभव कराया और अभी भी अव्यक्त रूप में अनुभव करा रहे हैं। शिवबाबा की मुक्त स्थिति तो स्वभाविक है परन्तु ब्रह्मा बाबा ने अपने अटल निश्चय और अथक पुरुषार्थ के द्वारा इस स्थिति को बनाया, अनुभव किया और बच्चों को भी अनुभव कराया, इसलिए हमको शिवबाबा के समान बनने के लिए पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा को ही फॉलो करना होगा। ब्रह्मा बाबा निराकार शिवबाबा और साकार ब्रह्मा बाबा दोनों के गुण-कर्तव्यों का प्रतीक है, इसलिए उनको फॉलो करने में साकार और निराकार दोनों के समान बन जायेंगे।

* सुख-शान्ति, मुक्ति-जीवनमुक्ति का निर्णायक बिन्दु सुख-साधनों की प्राप्ति, धन-सम्पत्ति का प्राप्त होना ही नहीं परन्तु सुख-साधनों में धन-सम्पत्ति, शुद्ध पवित्र स्वस्थ मन-बुद्धि, स्वस्थ शरीर, स्वस्थ सम्बन्ध, उच्च चरित्र ... ज्ञान-गुण-शक्तियाँ, श्रेष्ठ संग आदि सब आवश्यक हैं। परमपिता परमात्मा संगम पर मिला है और उससे जो ज्ञान-गुण-शक्तियां प्राप्त हुई हैं, उनसे जो सम्पन्नता, सम्पूर्णता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है वही वास्तविक मुक्ति-जीवनमुक्ति है। अपने को चेक करो और उनको भरपूर करके सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो। ये देह पंच तत्वों से निर्मित है, जीवन में शुद्ध पंच तत्वों की प्राप्ति भी बड़ी प्राप्ति है। इसलिए परमात्मा सदा ही कहते हैं साधनों का प्रयोग साधना में रहकर करो, साधना को भूलकर साधनों का प्रयोग करने वाला कभी भी संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकता है।

* ये जीवन कल्प का फूल और फल है, इसके वास्तविक रहस्य और प्राप्तियों को जानकर जीवन में सच्ची शान्ति, परमानन्द और परम-सुख का अनुभव करो और कराओ। देह से न्यारी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा ही इस सत्य का अनुभव कर और करा सकती है। अज्ञानता जनित व्यर्थ संकल्प ही इसमें मुख्य बाधा हैं, सत्य ज्ञान से उनका निराकरण कर दो और सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो और कराओ।

* मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव संगम युग की परम प्राप्ति है और परमपिता परमात्मा का परम उपहार है। उसका अनुभव करना और कराना हमारा परम कर्तव्य है। जो स्वयं उस अनुभव में होगा, वही दूसरों को भी उसका अनुभव करा सकता है। इस नश्वर देह और परिवर्तनशील जगत की यथार्थता को अनुभव करके उनसे ममत्व निकाल एक परमात्मा की मधुर स्मृति में रहने वाला ही सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर और करा सकता है।

अभी सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने और कराने वाला ही अपने सुखमय वर्तमान और कल्याणमय भविष्य का निर्माण करता है।

दूसरों की साधन-सम्पत्ति को देखकर ईर्ष्या करने वाला कभी भी जीवन में सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख का अनुभव नहीं कर सकता है। अपनी साधन-सम्पत्ति का सदुपयोग कर अभीष्ट पुरुषार्थ करने वाला ही सदा सुखी रहता है और सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख का अनुभव करता है। परमपिता परमात्मा ने जो ज्ञान धन दिया है, वह विश्व की किसी भी साधन-सम्पत्ति से मूल्यवान है, समर्थ है, सुख-शान्ति को देने वाला है। जो इसके महत्व को समझता है और समझकर उसका सदुपयोग करता है, वह सदा ही मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को पाता है। उसके जीवन में हीनता या अभिमान आ नहीं सकता। परमपिता का हाथ हमारे सिर पर है और सदा उसका कल्याणकारी साथ है, इसको सदा अनुभव करना जीवन की परम प्राप्ति है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए आत्मा की निश्चिन्त, निर्भय, निर्वैर, निर्संकल्प, निर्विकल्प, निर्मान स्थिति परमावश्यक है। परमात्मा ने अभी जो ज्ञान दिया है, उससे ही आत्मा ये स्थिति सहज धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकती है।

## मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव और निश्चयबुद्धि स्थिति

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है परन्तु उसके अनुभव के लिए निश्चय का महत्वपूर्ण स्थान है अर्थात् परमात्मा पिता ने हमको जो ज्ञान दिया है और विश्व-नाटक के जो राज़ समझाये हैं, उन पर पूरा निश्चय होगा, तब ही हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कर सकेंगे। परमात्मा सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है, उसके अनुभव के लिए ही परमात्मा ने ये सारा ज्ञान दिया है, अनेकानेक विधि-विधान बताये हैं और उसको अनुभव करने के लिए साधना बताई है।

''तुम बच्चे निश्चय करते हो कि परमपिता परमात्मा हमारा बाप भी है, सहज राजयोग और ज्ञान की शिक्षा भी दे रहे हैं और फिर साथ भी जायेंगे। इस निश्चय में ही तुम बच्चों की विजय है।'' सा.बाबा 30.5.07 रिवा.

''इस समय कब्रिस्तान है, यही फिर परिस्तान बनेंगा। यह खेल है कब्रिस्तान और परिस्तान का। बाप परिस्तान स्थापन करते हैं, जिसको सब याद करते हैं। ... जब तक बाप को नहीं जाना है तब संशयबुद्धि ही रहेंगे। संशयबुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''आने वाले और लाने वाले दोनों को नॉलेजफुल होना चाहिए। ... जिस आत्मा का जो वर्सा है, वह उसको प्राप्त होना ही है। वर्से से वंचित कोई नहीं रह सकता। चाहे साकार में सम्मुख हैं चाहे अपने स्थान पर मन्मनाभव रहते। हर आत्मा को वर्सा अवश्य प्राप्त होना है।''

अ.बापदादा 1.4.92

## मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए अभ्यास

मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ अनुभव के लिए आवश्यक साधन अर्थात् ज्ञान ज्ञान-सागर परमात्मा ने हमको दिया है और परमात्म का साथ एवं सहयोग भी हमको प्राप्त है। उस सत्य ज्ञान और परमात्मा का साथ होने के साथ-साथ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव अभिलाषी को उसका निरन्तर अभ्यास भी परमावश्यक है।

जब निरन्तर अभ्यास करेंगे तब ही वह अनुभव निरन्तर होगा। परमात्मा ने हमको ये भी बताया है बहुत काल का अभ्यास और मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही भविष्य सतयुग-त्रेता की बहुत काल की जीवनमुक्ति की प्राप्ति का आधार है। जो अभी संगमयुग पर बहुत काल जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगे, वे ही सतयुग में बहुत काल की जीवनमुक्ति प्राप्त कर सकेंगे। दोनों का बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है या यह कहें कि यह सृष्टि का एक विधि-विधान है कि जो अभी जितना जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते हैं, वे उतना ही सतयुग-त्रेता में जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते हैं।

मुक्ति का अनुभव और अभ्यास अर्थात् अपने को आत्मा समझ बाप और घर की याद में लीन हो जाना और देह और देह की दुनिया को भूल जाना। निर्संकल्प अवस्था ही मुक्ति के अनुभव का एकमात्र आधार है। हठयोगी उसका अभ्यास हठ से करते हैं परन्तु ज्ञानी ज्ञान के रहस्यों को समझकर निर्संकल्प स्थिति में स्थित होकर मुक्ति का अनुभव करते हैं। इस अनुभव के लिए ज्ञान के गुह्य राज़ों को समझने का अभ्यास और योग स्थिति में स्थित होने का सतत अभ्यास दोनों अति आवश्यक है। जब दोनों का अभ्यास करेंगे और जितनी सफलता को पायेंगे, उतना ही मुक्ति का अनुभव अच्छा और दीर्घकालिक होगा।

ऐसे ही जीवनमुक्ति का अनुभव और अभ्यास अर्थात् बाप के साथ ज्ञान के चिन्तन में, विश्व कल्याण की सेवा में, बाप समान साक्षी बनकर इस विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाने में निमग्न रहना और उसकी खुशी-आनन्द में देह और देह की दुनिया को भूल जाना। जीवनमुक्ति की सफल अनुभूति देह के सर्व दुख-दर्द, बन्धनों को भी भूला देती

है। इसके लिए इस विश्व-नाटक के सर्व राज़ों को समझने का अभ्यास और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाने का निरन्तर अभ्यास करेंगे तब ही जीवनमुक्ति का अनुभव निरन्तर होगा। साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने के लिए इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान परमावश्यक है। जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए ब्रह्मा बाबा का उदाहरण हमारे सम्मुख है। उनके समान सतत अभ्यास करके हम जीवनमुक्ति के अनुभव का सफल अभ्यास कर सकते हैं।

मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव और अभ्यास के लिए ज्ञान के सर्व राज़ों को समझ निश्चिन्त, निर्भय स्थिति अर्थात् निर्संकल्प, निर्विकल्प स्थिति में स्थित होने का अनुभव और अभ्यास करना। कार्य करते भी बीच-बीच में समय निकाल कर ये अभ्यास करेंगे तब ही इसमें अच्छी सफलता होगी।

इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझने से देह की नश्वरता, दैहिक पदार्थों की नश्वरता एवं दैहिक सम्बन्धों की परिवर्तनशीलता को समझने से सहज उनसे बुद्धि हट जाती है और आत्मा नष्टोमोहा होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाती है। इस वास्तविकता को जानकर जितना देह और देह की दुनिया से बुद्धि निकालकर न्यारेपन का अभ्यास करेंगे उतना मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेंगे।

सदा बुद्धि में रहे कि ये अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इस विश्व नाटक में हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और उसका फल भोग रही है, जीवात्मा अपना आप ही मित्र और अपना आप ही शत्रु है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति एवं आत्मिक स्मृति और आत्मिक दृष्टि-वृत्ति। जहाँ पवित्रता होगी वहाँ सर्व सुख, सर्व प्राप्तियाँ स्वत: होंगी, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति होगी, सर्व सम्बन्धों में मधुरता होगी, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होगी। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होगा। मन सदा शान्त होगा अर्थात् मन में कोई द्वन्द नहीं होगा। उसको कृत्य का संकल्प स्वत: आयेगा, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होगी, इसलिए उसके लिए कोई चिन्तन की आवश्यकता नहीं होगी। उसकी सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना होगी, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना शुभ कामना अवश्य होगी, इसलिए वह सदा निर्भय-निश्चिन्त होगा। इस विश्व-नाटक में न कोई

अपना है, न पराया; न कोई शत्रु है, न कोई मित्र है; न कोई कुछ दे सकता है, न कोई कुछ ले सकता है; न किसी ने कुछ दिया है और न ही किसी ने हमारा कुछ लिया है; हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है फिर हमको किसी से राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा क्यों ? परमात्मा पिता ही हमारा सर्व सम्बन्धी है और उसने जो दिया है, वही सत्य है और वही हमारे जीवन के लिए आवश्यक एवं पर्याप्त है, उसकी यथार्थ धारणा ही सुख-शान्तिमय जीवन अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए आवश्यक है और वही बाप समान स्थिति बनाने वाला है। बाप की छत्रछाया सदा हमारे ऊपर है और उसका वरद हस्त हमारे ऊपर है। उसको अनुभव कर हमको निर्संकल्प होकर मुक्ति का और निर्विकल्प अर्थात साक्षी होकर जीवनमुक्ति का अनुभव करना है। यही संगमयुग की परमप्राप्ति है और संगम युग की मुक्ति-जीवनमुक्ति यथार्थ अनुभव है, जो मुक्तिधाम की मुक्ति और सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्ति से कोटि-कोटि गुणा श्रेष्ठ है और महत्वपूर्ण है।।

इस सत्य को जानकर इस देह से न्यारे होकर इस देह और दुनिया को देखने का अभ्यास करना परन्तु ये याद रहे कि ये पुरुषार्थ है, अवस्था नहीं है। जब अवस्था बन जाती है तो पुरुषार्थ की बात समाप्त हो जाती है। पुरुषार्थ वह अवस्था नहीं है लेकिन उस अवस्था को बनाने के लिए प्रयत्नमात्र है, उस अवस्था में स्थित हो जाना ही मुक्ति-जीवनमुक्ति की प्राप्ति की स्थिति है। इस अभ्यास को निरन्तर करते रहना है, तब ही अन्तिम सफलता प्राप्त होगी अर्थात् जीवन में सतत मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होगा, जैसे ब्रह्मा बाबा का रहा।

निर्संकल्प हो परमधाम की स्मृति में खो जाना ही मुक्ति अर्थात् परमशान्ति का अनुभव करना और निर्विकल्प हो ब्रह्मा बाप समान सूक्ष्म देह धारण कर सर्व आत्माओं के कल्याण के प्रति संकल्प करना और वायब्रेशन्स फैलाना और जीवनमुक्ति का अनुभव करना। ज्ञान की यथार्थ धारणा कर साक्षी हो इस विश्व-नाटक को देखना, पार्ट बजाना और निर्विकल्प हो अर्थात् शुभ-संकल्प धारणकर विश्व-कल्याण के अर्थ सेवा करना ही जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास और अनुभव करना है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, निन्दा-स्तुति, वासना का नाम भी न हो क्योंकि यदि इनका अंशमात्र भी होगा तो संकल्प अवश्य चलेगा, कोई न कोई वस्तु या व्यक्ति अवश्य ही स्मृति में आयेगा, जिससे बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति का अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव हो नहीं सकेगा।

* ज्ञान की हर प्वाइन्ट और उसके रहस्य का ज्ञान हमारी बुद्धि में होगा तब ही हमारी

निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति होगी, तब ही हमारा आत्मिक स्वरूप का अभ्यास होगा और जब आत्मिक स्थिति होगी तब ही बाप समान मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होगा।

* एक सेकेण्ड में देह की दुनिया से परे होकर निराकारी बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाना, एक सेकेण्ड में फरिश्ता स्वरूप धारण कर ब्रह्मा बाप के साथ आकारी रूप धारण कर विश्व-कल्याण की सेवा करना और एक सेकेण्ड में साकारी वतन में साकार शरीर में रहते साक्षी-दृष्टा बनकर विश्व-कल्याण की सेवा का पार्ट बजाना। सेकेण्ड में अपने सतयुगी जीवन को याद कर उसमें खो जाना, सेकेण्ड में अपने पूज्य स्वरूप को याद कर उसमें स्थित हो जाना - ये अभ्यास निरन्तर करना है। यही अभ्यास हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का सतत अनुभव करायेगा और अचानक के पेपर में पास करायेगा अर्थात् अन्त समय इस स्थिति में देह का त्याग कर सकेंगे।

''सर्व सदा स्नेह में समाई हुई आत्माओं को, सदा स्नेह के साथ अनुभव करने वाली आत्माओं को, सदा एक बाप दूसरा न कोई ऐसे समीप समान आत्माओं को, संगमयुग के श्रेष्ठ प्रालब्ध स्वर्ग के अधिकारी आत्माओं को, सदा कर्मयोगी जीवन की श्रेष्ठ कला के अनुभव करने वाली विशेष आत्माओं को, सदा सर्व हद के आकर्षण से मुक्त लवलीन आत्माओं को बाप का सर्व सम्बन्धों से स्नेह-सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।''

अ.बापदादा 13.2.92

''बापदादा यह भी डायरेक्शन दिया कि सारे दिन में बीच-बीच में 5 मिनट भी मिले तो उसमें मन की एक्सरसाइज़ करो ... मन को परमधाम में लेकर जाओ, सूक्ष्मवतन में फरिश्ते रूप को याद करो, फिर अपने पूज्य रूप को याद करो, फिर ब्राह्मण रूप को याद करो, फिर देवता रूप को याद करो। पांच मिनट में पांच एक्सरसाइज़ करो और चलते-फिरते भी करते रहो।''

अ.बापदादा 17.3.07

''जैसे शरीर की एक्सरसाइज़ आवश्यक है, वह भले करो, उसकी मना नहीं है लेकिन यह मन की ड्रिल, एक्सरसाइज़ मन को सदा खुश रखेगी, उमंग-उत्साह में रखेगी, उड़ती कला का अनुभव करायेगी। तो अभी-अभी यह ड्रिल परमधाम से देवता तक की सभी शुरू करो।''

अ.बापदादा 17.3.07

परमधाम की स्मृति अर्थात् देह से न्यारी निराकारी स्थिति में स्थित होकर परम-शान्ति की अनुभूति करना, और विश्व में परम शान्ति का वायबेंशन फैलाना अर्थात् मुक्त स्थिति का अनुभव करना और कराना।

सूक्ष्म वतन की स्मृति अर्थात् फरिश्ता स्वरूप की स्थिति, उड़ती कला की स्थिति,

देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारी स्थिति में स्थित होकर परमानन्दमय का अनुभव करना और विश्व में परमानन्द का वायब्रेशन फैलाना अर्थात् जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करना और कराना।

ब्राह्मण स्वरूप की स्थिति अर्थात् ब्रह्मा बाप समान परमात्मा से मिले ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न स्थिति में स्थित होकर साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखते हुए अतीन्द्रिय सुख अनुभूति में रहना और अतीन्द्रिय सुख का वायब्रेशन विश्व में फैलाना, जिससे सर्व आत्माओं का कल्याण हो अर्थात् जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करना और उसके वायब्रेशन विश्व में फैलाना।

भविष्य देवता स्वरूप की स्थिति अर्थात् सतोप्रधान प्रकृति से सम्पन्न, डबल ताजधारी, सुख-शान्ति सम्पन्न स्थिति की अनुभूति में स्थित होना, जिससे पवित्रता-सुख-शान्ति का विश्व में वायब्रेशन फैले अर्थात् जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करना।

पूज्य स्वरूप स्मृति अर्थात् स्मृति में आये कि हमारे जड़ चित्र भी भक्तों की कितनी मनोकामनायें पूर्ण कर रहे हैं, पवित्रता, शान्ति की अनुभूति करा रहे हैं, ऐसी अनुभूति में स्थित होना।

ये ड्रिल ही संगमयुगी जीवन के महत्व को अनुभव करायेगी और अभी उड़ती कला का, खुशी का अनुभव करायेगी अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करायेगी और अन्त समय विजयी बनायेगी।

Q. बाबा ने इस ड्रिल पर इतना जोर दिया, उसका भाव अर्थ क्या है?

ये ड्रिल ही अभी उड़ती कला का, खुशी का अनुभव करायेगी और अन्त समय विजयी बनायेगी। इस ड्रिल के द्वारा हमको इस ब्राह्मण जीवन की महानता अनुभव होगी और अनुभव होगा कि इस जीवन के समान महान जीवन तीनों लोकों और तीनों कालों में नहीं है और न हो सकता है। इसलिए हमको सदा-सर्वदा और हर परिस्थिति और स्थिति में हमारे जीवन में किसी प्रकार की दुख की अनुभूति न हो। सदा हमारे जीवन से पवित्रता, ज्ञान, सुख-शान्ति, आनन्द की अनुभूति होती रहे और ऐसा वायब्रेशन सदा विश्व में फैलता रहे, जिससे अन्य आत्मायें भी उससे लाभान्वित हों। यही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव और अभ्यास है। इस ड्रिल को निरन्तर करने से इस ब्राह्मण जीवन का महत्व अनुभव होगा।

''सब अचानक होना है। आज एक घण्टे बाद भी हो सकता है। इतना एवररेडी रहना है। ... आप समय का इन्तजार नहीं करो, अभी समय आपका इन्तजार कर रहा है। ... इन हद की बातों का आधार नहीं लो, एवररेडी रहो। निराधार, एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। ... इन्तजार

नहीं, सम्पन्न बनने का इन्तजाम करो।''

अ.बापदादा 16.12.2000

''अभी समय तो अचानक होना है। एक घण्टा पहले भी बापदादा एनाउन्स नहीं करेगा, नहीं करेगा, नहीं करेगा। अगर अचानक नहीं होगा तो पेपर कैसे होगा। पास विद् ऑनर का फाइनल सर्टीफिकेट तो अचानक में ही होना है।''

अ.बापदादा 16.12.2000

* यथार्थ सत्य को समझकर इन्द्रिय सुखों के आकर्षण और देह अहंकार से मुक्त हो जायें तो ये जीवन परमानन्दमय है, जिसके आगे सतयुग का सुख कुछ भी नहीं है। उदाहरणार्थ कपड़ा सिलते2 अगर कोई सो जाये तो जब जागेगा तो वहीं से सिलेगा जहाँ से वह सोया था तो अभी संगम युग पर आत्मा जिस सुख का अनुभव करेगी, जिस अनुभव में देह का त्याग करेगी, उस अनुसार ही सतयुग में जाकर वहाँ के सुख की अनुभूति करेगी और वह भी उतरती कला का सुख होगा। सुख-शान्ति-आनन्द का चरमोत्कर्ष या चोटी ये संगम युग ही है।

* एक सेकेण्ड में निराकारी, आकारी, साकारी अपने को आत्मा बिन्दी समझना दूसरे को भी आत्मा बिन्दी देखना। चलते-फिरते अपने को एक्टर समझना। ये अभ्यास निरन्तर और दृढ़ता से करना है।

''सिर्फ एक बात करो - अपने नैनों में बिन्दी को समा दो, बस। एक बिन्दी से तो देखते हो और दूसरी बिन्दी भी समा दो। तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जैसे आत्मा, आत्मा को देख रही है। आत्मा, आत्मा से बोल रही है। आत्मिक वृत्ति और आत्मिक दृष्टि बनाओ। समझा - क्या करना है?''

अ.बापदादा 17.10.03

इस सत्य को जानकर अभीष्ट पुरुषार्थ करना है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में रहना है। अनुभव करना है और दूसरों को भी कराना है।

''साधारण लोग हलचल में आयेंगे लेकिन अलौकिक मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें खेल देखते अपने विश्व-कल्याण के कार्य में बिज़ी रहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा तो घबरायेंगे। ... बिजी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा। ... साइन्स के साधनों से समाचार नहीं पहुँचेगा लेकिन बापदादा का डायरेक्शन क्लियर बुद्धि से क्लियर कैच होगा।''

अ.बापदादा 13.2.99

''साधनों को यूज़ करो लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। साइन्स के साधन होते भी यूज़ नहीं कर सकेंगे। इसलिए साइलेन्स का साधन काम में आयेगा, उससे जहाँ भी होंगे, जैसी भी परिस्थिति होगी वह बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन

अपनी बुद्धि की लाइन क्लियर रखना।'' अ.बापदादा 13.2.99

''अभी सभी एक सेकेण्ड में पॉवरफुल संकल्प से, दृढ़ता से पुराने वस्तुओं को, पुराने वर्ष को, पुरानी बातों को सदा के लिए विदाई दो। एक सेकेण्ड सभी - 'दृढ़ता सफलता की चाबी है'- इस दृढ़ संकल्प में स्थित हो जाओ।'' अ.बापदादा 31.12.98

## मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति और विश्व-नाटक

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। इसलिए हर आत्मा को अपने पार्ट के समय अनुसार मुक्ति-जीवनमुक्ति अवश्य मिलती है। संगमयुग पर परमात्मा आकर हर आत्मा को ये मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देते हैं और अनुभव कराते हैं।

साकार विश्व में मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए आत्मा का संकल्प-विकल्प से मुक्त होना अति आवश्यक है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान और उसकी धारणा से सहज ही आत्मा को संकल्प-विकल्पों से मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने में समर्थ होती है।

विश्व-नाटक एक ड्रामा स्टेज है, जहाँ पर आत्मायें अपने घर मुक्तिधाम से आकर पार्ट बजाती हैं और पार्ट बजाकर कल्पान्त में अपने घर मुक्तिधाम वापस जाती हैं। कोई भी आत्मा जब पहले पार्ट बजाने आती है तो पूर्ण सुख का अर्थात् जीवनमुक्ति का अनुभव करती है और जब पार्ट बजाते-बजाते देहाभिमान के वश होकर विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है, तब जीवनबन्ध का दुख भोगती है। परमात्मा सदा मुक्त होते भी इस विश्व-नाटक में पार्टधारी है, जो संगमयुग पर आकर आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति, जीवनबन्ध और इस विश्व-नाटक के विधि-विधानों, नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान देकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग बताते हैं, जिससे आत्मायें पुन: मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती हैं और मुक्तिधाम में जाती है। विश्व-नाटक में मूक्ति, जीवनमुक्ति, जीवनबन्ध का आनादि-अविनाशी खेल चलता रहता है। विश्व-नाटक में कोई आत्मा न सदा काल के लिए न मोक्ष में रह सकती, न जीवनमुक्ति में रह सकती और न ही जीवनबन्ध में रह सकती है। हर आत्मा को 5000 वर्ष के सृष्टि-चक्र में इन तीनों स्थितियों से पार होना ही पड़ता है। इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझने वाला ही इसका परमानन्द अनुभव करता है अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम आनन्द को पाता है।

विश्व-नाटक के इन अटल सत्यों के ज्ञान को समझने वाले और निश्चय वाले ही

मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख की अनुभूति कर और करा सकते हैं।

''कलियुग है जीवनबन्ध, सतयुग है जीवनमुक्त। रामराज्य में यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब जीवनमुक्त हैं। रावणराज्य में यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब जीवनबन्ध में हैं। ... शान्तिधाम से पहले-पहले जीवनमुक्त में आते हैं।''

सा.बाबा 13.4.07 रिवा.

''मुक्ति अर्थात् विर्वाणधाम में सबको बाप ले जाते हैं। पहले सब मुक्ति में जायेंगे, फिर जीवनमुक्ति में नम्बरवार धर्म अनुसार आयेंगे। ऐसे नहीं कि सतयुग में जो नहीं आते तो जीवनमुक्त नहीं कहला सकते। पहले-पहले जो भी आते हैं, वे जीवनमुक्ति में हैं।''

सा.बाबा 13.4.07 रिवा.

''सूक्ष्मवतन क्या है, वहाँ कौन जा सकते हैं। वहाँ वार्तालाप भी मूवी में होता है। ... यह है ड्रामा की नूँध। ... अन्त में दुनिया वाले आपस में लड़ते-झगड़ते रहेंगे और तुम साक्षात्कार करते रहेंगे।''

सा.बाबा 9.4.07 रिवा.

''अन्त में हाहाकार मच जायेगा, उस समय घबराना नहीं है। घबराने से भी नापास हो जाते हैं। ... अन्त में तुम्हारा बहुत प्रभाव निकलेगा, तब तो कहेंगे - अहो प्रभू तेरी लीला ... जितनी पिछाड़ी होती जायेगी तो बाबा बुद्धि का ताला खोलता जायेगा। ... ये सारी समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 12.4.07 रिवा.

## मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव और विश्व-सेवा

ये सृष्टि का नियम है कि जिसके पास जो होगा, वही वह दूसरों को दे सकेगा, जैसा स्वयं है, वैसा ही दूसरों को भी बना सकेगा। ऐसे ही परमात्मा के द्वारा दिये गये यथार्थ ज्ञान को समझकर जो जितना स्वयं मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति में रहेगा, वह उतना ही दूसरों को भी अनुभव करा सकेगा। उसके अधिक कोई अनुभव करता है तो वह उसका अपना पुरुषार्थ है। ब्रह्मा बाबा ने इस सत्य को अच्छी रीति समझा और स्वयं भी अपने जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव किया तथा हम सबको कराया। ब्रह्मा बाबा अभी भी अपने फरिश्ता स्वरूप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करा रहे हैं। शिवबाबा ने मुक्ति-जीवनमुक्ति का जो ज्ञान दिया, ब्रह्माबाबा ने उस अनुसार पुरुषार्थ करके परम पद को पाया, जिससे उनका जीवन विश्व के लिए आदर्श बन गया, उनके जीवन के नियम-संयम विश्व के लिए नियम और सिद्धान्त बन गये। उनके पद-चिन्हों का अनुसरण करने वाले ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम

सुख अनुभव कर सकते हैं और अपने जीवन से अन्य आत्माओं को करा सकते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना और कराना ही सच्ची विश्व-सेवा है।

''जब स्वयं मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभवी होंगे तब ही अन्य आत्माओं को मुक्ति अर्थात् अपने घर और जीवनमुक्ति अर्थात् स्वर्ग के गेट में जाने के पास दे सकेंगे। जब तक आप ब्राह्मण किसी भी आत्मा को गेट पास नहीं देंगे तो वह पास ही नहीं कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 24.10.71

''अगर अपनी ही मुक्ति-जीवनमुक्ति को प्राप्त करने की आश अभी तक पूर्ण न करेंगे तो दूसरों की कैसे करेंगे! मुक्ति-जीवनमुक्ति का वास्तविक अनुभव क्या होता है, वह क्या मुक्तिधाम वा जीवनमुक्तिधाम में अनुभव करेंगे? मुक्ति में तो अनुभव करने से परे होंगे और जीवनमुक्ति में जीवनबन्ध क्या होता है, वह अविद्या होने के कारण हम जीवनमुक्ति में हैं, वह भी क्या अनुभव करेंगे! बाप द्वारा जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त होता है, उसका अनुभव तो अभी ही कर सकते हैं।''

अ.बापदादा 24.10.71

## फॉलो फादर अर्थात् फॉलो निराकार शिव बाप और साकार ब्रह्मा बाप

फॉलो फादर में दोनों बाप अर्थात् निराकार और साकार को फॉलो करने की बात आ जाती है। अचानक के पेपर में पास होने के लिए शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों को फॉलो करना है। दोनों को फॉलो करने से ही बाप समान मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेंगे। ब्रह्मा बाप ने शिव बाप को स्थिति में फॉलो किया और उनकी श्रीमत पर चलकर वह स्थिति बनाई और हमारे लिए मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। जैसे ब्रह्मा बाप ने पुरुषार्थ कर शिव बाप को फॉलो किया, और पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता को पाया, अव्यक्त फरिश्ता बनें। हम भी उनके जैसा पुरुषार्थ करेंगे तो शिव बाप समान मुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे और ब्रह्मा बाप समान बनकर जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगे। ब्रह्मा बाप ने साकार जगत में कर्म करते हुए भी जीवनमुक्त अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप का साक्षात्कार कराया।

''साथ-साथ मन की एक्सरसाइज बार-बार करो। जब बाप समान बनना है तो एक है निराकार और दूसरा है अव्यक्त फरिश्ता। जब भी जो समय मिलता है सेकेण्ड में बाप समान निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ। बाप समान बनना है तो निराकारी स्थिति बाप समान है। कार्य करते फरिश्ता बनकर कर्म करो। फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट, कार्य का बोझ नहीं हो। कार्य का

बोझ अव्यक्त फरिश्ता बनने नहीं देगा।'' अ.बापदादा 14.11.02

बाबा ने शिव पिता और ब्रह्मा माँ को फॉलो करने के लिए कहा है। शिव पिता और ब्रह्मा माँ अर्थात् निराकार और साकार दोनों का कर्तव्य एक ही तन द्वारा चलता है, उनके गुण-कर्तव्य इतने ओतप्रोत हैं कि उनको अलग करना सागर की थाह पाना या आसमान की सीमा को पार करने जैसा है परन्तु बाबा ने शिव पिता और ब्रह्मा माँ को फॉलो करने के लिए कहा है तो उनको फॉलो करने के लिए उनके गुण-कर्तव्यों का ज्ञान और उनका अनुभव करना परमावश्यक है। इस लक्ष्य से ही इसके विषय में यहाँ विचार कर रहे हैं, जिससे हम सहज फॉलो फादर करके मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकें।

''जो बाप की मर्जी, वह मेरी मर्जी। बाप की मर्जी क्या है? हरेक आत्मा सदा शुभ-चिन्तन करने वाली, सर्व के प्रति सदा शुभ-चिन्तन में रहने वाली स्व-कल्याणी और विश्व-कल्याणी बनें।... यह व्यर्थ चिन्तन की ऑख बन्द कर बाप की मर्जी अर्थात् बाप के कदम के पीछे कदम रखते चलो।... तो ऐसे सदा फॉलो फादर करो। फॉलो सिस्टर-ब्रदर्स - यह नया स्टेप नहीं उठाओ, इससे मंजिल से वंचित हो जायेंगे।''

अव्यक्त बापदादा 6.4.82

''फॉलो फादर' कहा जाता है। जैसे बाप (ब्रह्माबाबा) याद करते हैं, ऐसे याद करो। यह (शिवबाबा) तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं। ये करते हैं, इसलिए इनको फॉलो करने वाले ही ऊंच पद पाते हैं।'' सा.बाबा 4.12.68

## फॉलो शिव बाप

शिव बाप समान अर्थात् मास्टर ज्ञान सागर, अशरीरी, विश्व-कल्याणकारी, निष्कामी, निस्वार्थ सेवाधारी, साक्षी-दृष्टा, निर्संकल्प, सदा मुक्त, सम-दृष्टि, बीज रूप स्थिति बनाने में शिव बाप को फॉलो करना है।

* याद या योग - जैसी स्मृति वैसे स्थिति और जैसा संग वैसा रंग। साकार ब्रह्मा बाप साकार और निराकार दोनों का संगम है, इसलिए उनकी याद से उनके साथ से ईश्वरीय गुण-कर्तव्य और साकार बाप के दैवी गुण-कर्तव्यों की याद और धारणा सहज होती है क्योंकि उनकी याद में साकार और निराकार दोनों की याद समाई हुई होती है, इसलिए उस याद से आत्मा की सदा ही चढ़ती कला होती है। उनको फॉलो करने से मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव सहज हो सकता है।

देवताओं के जड़ चित्रों की याद से दैवी गुणों की स्मृति तो होती है परन्तु यथार्थ ज्ञान

न होने से यथार्थ रीति धारणा नहीं हो सकती है और चित्र जड़ होने के कारण प्रकृति के नियमानुसार बुद्धि में जड़ता अर्थात् अज्ञानता आती जाती है और संसार की हर वस्तु सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है अर्थात् सतत उतरती कला में जाती है, ऐसे ही जड़ मूर्तियों की भी स्थिति है, इसलिए उनकी याद से भी आत्मा की सतत उतरती कला ही होती है।

भक्ति में निराकर रूप में परमात्मा को याद करने से निराकार के गुण - निर्संकल्पावस्था और ब्रह्मलोक की याद तो होती है या खींचती है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने से यथार्थ धारणा नहीं होती, इसलिए आत्मा की उतरती कला ही होती है। भक्ति में शिव परमात्मा को भी याद करने से यथार्थ मुक्त स्थिति का अनुभव हो नहीं सकता अर्थात् उससे कभी भी आत्मा मुक्ति को पा नहीं सकती। उस पुरुषार्थ से आत्मा को अल्पकाल की शान्ति का अनुभव अवश्य होता है।

ज्ञान मार्ग में केवल निराकार रूप की याद से निराकारी गुणों अर्थात् निर्संकल्पावस्था तो होती, उससे विकर्म विनाश भी होते परन्तु दैवी गुणों की धारणा और निराकार बाप के संगमयुगी गुण-कर्तव्यों की धारणा नहीं होती इसलिए उसको यथार्थ याद नहीं कह सकते और उससे यथार्थ रूप में मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव भी नहीं होता परन्तु साकार ब्रह्मा बाप में निराकर बाप की याद से दोनों ही प्राप्तियां अर्थात मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव होता है, जो ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है।

* मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसको पाने के लिए याद ही एकमात्र साधन है। याद निराकार और साकार दोनों बाप को करना आवश्यक है। निराकार के साथ साकार की याद चाहिए क्योंकि निराकार का ज्ञान और अनुभव साकार के द्वारा ही हुआ और निराकार साकार द्वारा ही कर्म करके अनुभव कराता है। यदि साकार न हो तो निराकार भी कुछ कर नहीं सकते। ऐसे ही साकार के साथ निराकार की याद चाहिए क्योंकि साकार ने निराकार की याद और साथ से इतनी ऊंच स्थिति को बनाया, मानव जीवन में फरिश्ता बने। यदि निराकार बाप न होता तो साकार बाप भी अव्यक्त फरिश्ता नहीं बन सकते। दोनों की याद ही आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करा सकती है। वास्तव में देखा जाये तो शिवबाबा ज्ञान का सागर है परन्तु शिवबाबा को कोई सुख या दुख का अनुभव नहीं होता है, इसलिए वह किसके सुख-दुख से प्रभावित नहीं होता है। वह इस विश्व-नाटक की सारी घटनायें देखते-सुनते भी साक्षी रहता है। ब्रह्मा बाबा को शिवबाबा की प्रवेशता से पहले सृष्टि का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है परन्तु उनमें सारे कल्प के सुख और दुख का अनुभव सार रूप में नीहित है, उनमें वे सभी संस्कार भरे हुए हैं। नयी सृष्टि के रचना के लिए ज्ञान और अनुभव दोनों ही परमावश्यक हैं इसलिए यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव

और नये विश्व की रचना में सहयोगी बनने के लिए निराकार बाप और साकार बाप दोनों के गुण-कर्तव्यों जानना, उनको धारण करना, उनको फॉलो करना अति आवश्यक है।

''अब एक को याद करेंगे तो वर्सा पा सकेंगे। नहीं तो राजाई का वर्सा पूरा पा नहीं सकेंगे। फिर प्रजा में चले जायेंगे। बाप आकर राजाई का सुख देते हैं।... यह तो राजधानी स्थापन कर रहे हैं गुप्त वेष में।'' सा.बाबा 19.09.03 रिवा.

(केवल शिवबाबा को याद करने से शिवबाबा का ज्ञान, गुण, शक्तियों का वर्सा मिलेगा अर्थात् मुक्ति का वर्सा मिलेगा और ब्रह्मा बाबा को याद करने से स्वर्ग का वर्सा मिलेगा अर्थात् जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा क्योंकि ब्रह्मा बाबा शिवबाबा की मत पर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। इस ब्रह्मा तन में शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों का कर्तव्य चल रहा है, दोनों के गुणों का अनुभव होता है। दोनों को ही फालो करना है)

जब मुक्ति-जीवनमुक्ति के मूलाधार शिव परमात्मा और उनके साकार माध्यम ब्रह्मा बाबा के गुणों, कर्तव्यों का ज्ञान होगा तब ही उनको फॉलो करने की शक्ति आयेगी और फॉलो कर सकेंगे और जब फॉलो करेंगे तब ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव कर सकेंगे। इसलिए यहाँ दोनों के गुण-कर्तव्यों में क्या-क्या विशेषतायें हैं, क्या-क्या समानतायें हैं, उनका विस्तार से अलग-अलग अध्ययन कर रहे हैं।

''कोई कितना भी अवगुणधारी हो लेकिन मुझे अपने जीवन द्वारा, कर्म द्वारा, सम्पर्क द्वारा गुणदान करना है अर्थात् सहयोगी बनना है। इसमें दूसरे को नहीं देखना है। ... ब्रह्मा बाप ने सी (See) शिव बाप किया। अगर देखना है तो ब्रह्मा बाप को देखो। ... ब्रह्मा बाप का श्लोगन था - 'जो ओटे सो अर्जुन',... ब्रह्मा बाप अर्जुन नम्बरवन बना। जो दूसरे को देखेंगे वे नम्बरवन नहीं बन सकेंगे।'' अ.बापदादा 31.12.2000

परमात्मा सदा लाइट हाउस है, क्योंकि उसकी सर्व शक्तियाँ सर्व आत्माओं के लिए समान रूप से सदा बरस रही हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा लाइट हाउस और सर्चलाइट दोनों का काम करते है क्योंकि ब्रह्मा बाबा साकार में होने के कारण किसको समय पर विशेष शक्ति की आवश्यकता है, वह अपने अनुभव से जानते हैं, इसलिए वे सर्च लाइट का काम भी करते है और ब्रह्मा तन में दोनों आत्मायें काम करती हैं, इसलिए ब्रह्मा बाबा लाइट-हाउस और सर्च-लाइट दोनों ही है।

''बापदादा ने बाप समान बनने को कहा है। क्या बनना है, कैसे बनना है। समान शब्द में ये दोनों ही क्वेश्चन उठ नहीं सकते। क्या बनना है, उत्तर है ना - बाप समान बनना है। कैसे बनना

है - फॉलो फादर, फुट स्टेप फादर-मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर।''

अ.बापदादा 25.11.2000

''अब फॉलो किसको करना चाहिए। गायन है ना फॉलो फादर। जैसे यह बाप को याद करते हैं, पुरुषार्थ करते हैं, इनको फॉलो करो। पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है, वह तो पुरुषार्थ करते नहीं, पुरुषार्थ कराते हैं।''

सा.बाबा 5.11.04 रिवा.

''आपका डायरेक्ट बीज के साथ सम्बन्ध है। ... आप सभी रुहानी नशे से कहेंगे कि हम परमात्म-सन्तान हैं। ... अन्य धर्म वंश की आत्मायें डायरेक्ट शिव-वंशी वा आदि देव ब्रह्मा की रचना नहीं कहलायेंगी। ... धर्मपिता और परमपिता में कितना अन्तर है।''

अ.बापदादा 8.4.92

## फॉलो शिव बाप अर्थात् शिव बाप के गुण कर्तव्य

''बाप समान बनना है तो बाप निराकार और फरिश्ता है। ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फरिश्ता स्टेज में रहना। जैसे फरिश्ता रूप साकार में देखा। बात सुनते, बात करते, कारोबार करते अनुभव किया कि जैसे बाप शरीर में होते भी न्यारे हैं। ... लेकिन कार्य करते, समय निकाल अशरीरी, पॉवरफुल स्टेज का अनुभव करते रहो। ... एग्जॉम्पुल ब्रह्मा बाप को देखा। असम्भव नहीं है। देखा, अनुभव किया। ... ब्रह्मा बाप की नई नॉलेज, नई जीवन, नई दुनिया बनाने की जितनी जिम्मेवारी थी, उतनी अभी किसकी भी नहीं है। तो सबका लक्ष्य है ब्रह्मा बाप समान बनना और शिव बाप समान बनना अर्थात् निराकार स्थिति में स्थित होना।''

अ.बापदादा 18.1.03

''किसी बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के प्रमाण दिये जाते हैं लेकिन सभी प्रमाण से श्रेष्ठ 'प्रत्यक्ष प्रमाण' ही है। तो ऐसे बने हो, जो कोई भी देखे तो अनुभव करे कि इन्हें पढ़ाने वाला वा बनाने वाला सर्वशक्तिवान बाप है।''

अ.बापदादा 14.4.77

शिवबाबा के गुण और कर्तव्यों का, उनकी स्थिति का ज्ञान होगा तब हम उनको जीवन में अपनाकर अर्थात् उनको फालो कर उनके समान सम्पूर्ण मुक्त स्थिति का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए सच्ची मुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए शिवबाबा के गुण-कर्तव्यों का जानना, उनका अनुभव करना अति आवश्यक है। इस लक्ष्य से ही निराकार ज्ञान-सागर परमात्मा शिव बाप के मुख्य गुणों और कर्तव्यों पर यहाँ विचार कर रहे हैं।

ज्ञान के सागर
प्यार के सागर
सर्वशक्तिवान
सर्व आत्माओं के अनादि पिता अर्थात् परमपिता परमात्मा
सर्व आत्माओं के पतित पावन
सर्व आत्माओं के मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता
सर्व आत्माओं के बाप, शिक्षक, सत्गुरु
सदा मुक्त
सदा पावन
सदा पूज्य
सदा निराकार, विदेही अर्थात् अशरीरी
सदा निर्भय-निर्वैर-निर्संकल्प
अयोनि
सदा निष्काम कर्म करने वाले
धर्मराज - न्यायकारी, समदर्शी
सदा अभोक्ता-असोचता
अभोक्ता अर्थात् कर्म करते भी कर्म-फल के प्रभाव से मुक्त
सुख-दुख दोनों से न्यारे
सर्व आत्माओं को दुख से मुक्त कर सुख देने वाले सर्व के दुखहर्ता-सुखकर्ता
सृष्टि के बीज रूप
सृष्टि-चक्र के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर
सदा न्यारे और सर्व के प्यारे
निन्दा-स्तुति, मान-अपमान से परे अर्थात् दोनों में समान
निन्दक को भी गले लगाने वाले
आनन्द के सागर
सत्-चित्-आनन्द स्वरूप
सर्व के कल्याणाकारी
गीता ज्ञान दाता
विश्व-नाटक के साक्षी-दृष्टा

**अन्तर्यामी, जानी-जाननहार**
**अयोनि**

## ज्ञान के सागर

निराकार परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है, उन्होंने ब्रह्मा तन से हमको तीनों लोकों, तीनों कालों, सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त, कर्मों की गहन गति, सहज राजयोग, आत्मा और स्वयं के गुण-कर्तव्यों आदि का सब ज्ञान दिया है। परमात्मा में ये सब ज्ञान के संस्कार अविनाशी हैं परन्तु ड्रामा के विधि-विधान अनुसार पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही ये ज्ञान देने के संस्कार इमर्ज होते हैं। वह सदा अशरीरी हैं, इसलिए सदा मुक्त स्थिति में रहते हैं। हमको भी आप समान मुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए ये सब ज्ञान दिया है। मुक्त स्थिति के अनुभव के लिए ये ज्ञान अति आवश्यक है। परमात्मा के द्वारा दिये गये इस ज्ञान की जितनी अच्छी समझ होगी, उस पर निश्चय होगा, उसकी धारणा होगी, वह उतना ही परमात्मा के समान मुक्त स्थिति का अनुभव कर सकेगा। इसीलिए परमात्मा कहते हैं - मैं तुमको भी अपने समान मास्टर ज्ञान सागर बनाता हूँ। जब संगमयुग पर परमात्मा आकर ये सब ज्ञान देते हैं, तब ही आत्मा सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है।

''तुम बच्चों के सिवाए और कोई भी ऐसा विद्वान, पण्डित नहीं है, जो ब्रह्माण्ड, सूक्ष्मवतन और सृष्टि-चक्र के राज़ को जानता हो। ... अभी शिवबाबा हमको ज्ञान देते हैं। अगर वह ज्ञान नहीं दे तो उनकी ज्ञान-सागर महिमा कैसे गाई जाये।''

सा.बाबा 7.4.07 रिवा.

''निराकार बाप ने साकार सृष्टि की रचना के निमित्त ब्रह्मा को बनाया। ... ब्रह्मा का अवतरण होना अर्थात् बुरे दिन खत्म हो बड़े दिन शुरू होना। ... बाप ज्ञान रतनों की थालियां भर-भर कर देते हैं।''

अ.बापदादा 25.12.85

## प्यार के सागर

प्रेम आत्मा का निजी संस्कार है। परमात्मा प्रेम का सागर है क्योंकि उसमें प्रेम का अखुट भण्डार है। परमात्मा ने प्रेम से हम आत्माओं को अपना बनाया और मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज रास्ता बताया। उनकी प्रेम भरी दृष्टि हमको सहज ही देह से न्यारा करके मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराती है। जिस अनुभव को करके हम आगे के लिए पुरुषार्थ कर उस मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव को आगे बढ़ाते और अविनाशी बना सकते हैं। परमात्मा का प्रेम सर्व आत्माओं पर समान रूप से बरस रहा है परन्तु हर आत्मा उसको अपने पुरुषार्थ, ड्रामा के पार्ट अनुसार अनुभव करती है। परमात्मा का प्यार सर्व आत्माओं के ऊपर है,

इसलिए हर आत्मा उनको प्यार से याद करती है।
''पहले हम सभी कांटे थे। कोई छोटे, कोई बड़े ... अब बाप का प्यार तो सभी के साथ है। गायन भी है तेरे काँटों से भी प्यार, तेरे फूलों से भी प्यार। पहले किससे प्यार होगा ? जरूर कहेंगे काँटों से प्यार है। इतना प्यार है जो काँटों से फूल बना देते हैं।''

सा.बाबा 23.3.69 रिवा.

## सर्वशक्तिवान

परमात्मा सर्व शक्तिवान है, उनकी शक्ति से ही आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर माया पर विजय प्राप्त करती है और आधा कल्प के लिए आत्मा माया से मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है। परमात्मा आत्मिक शक्ति का मूल स्त्रोत है, इसलिए आत्मा उनकी याद से ही शक्ति को प्राप्त करती है या कहें की उनकी याद से ही आत्मा की आत्मिक शक्ति जाग्रत होती है। परमात्मा में सर्व प्रकार की शक्तियाँ अपने सम्पूर्ण डिग्री में हैं और सर्व शक्तियां उनके संकल्प करते ही हाजिर हो जाती हैं। परमात्मा ने हमको भी ज्ञान दिया है कि आत्मा में भी ये शक्तियां हैं परन्तु वे सुसुप्तावस्था में हैं, उनको तुम मेरी याद से जाग्रत करो। जितना-जितना हम उनको याद करते हैं, उतनी हमारी शक्तियां जाग्रत होती हैं। इसलिए बाबा सदैव कहते तुम अपनी स्व-स्थिति में स्थित रहो तो सर्व शक्तियाँ तुम्हारे सामने सदा जी हाजिर करेंगी अर्थात् समय पर हाजिर होंगी।

## सर्व आत्माओं के अनादि पिता अर्थात् परमपिता परमात्मा

वैसे तो आत्मा और परमात्मा अनादि-अविनाशी हैं परन्तु हर आत्मा को परमात्मा से पवित्रता, सुख, शान्ति का वर्सा मिलता है, इसलिए वे सर्व आत्माओं के अनादि पिता हैं। सर्व धर्म वंश की आत्मायें उनको अपनी अपनी भाषा में पिता कहकर याद करती हैं। भल सन्यासी परमात्मा को पिता नहीं मानते हैं परन्तु वे किसी न किसी रूप में उनको याद अवश्य करते हैं। हर तत्व का ये मूल स्वभाव है कि वह स्वतन्त्र होने पर अपने मूल तत्व की ओर स्वत: आकर्षित होता है, ऐसे ही आत्मा का भी ये स्वभाव है कि वह देहाभिमान से मुक्त होने पर अपने मूल तत्व परमात्मा की ओर अवश्य आकर्षित होती है या दुख-अशान्ति के समय अनायास ही उनको याद करती है।

## सर्व आत्माओं के पतित पावन

परमात्मा सर्व आत्माओं के पतित पावन हैं। परमात्मा के महावाक्य हैं - न केवल चैतन्य आत्मायें लेकिन मैं तत्वों को भी पावन बनाता हूँ। मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने

के लिए आत्मा में पवित्रता की धारणा अति आवश्यक है। पतित-पावन परमात्मा की याद से ही आत्मा पावन बनती है और मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है। जब आत्मायें पावन बनती हैं, तो उनके वायब्रेशन्स से जड़ तत्व भी पावन बनते हैं।

## सर्व आत्माओं के मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, जो अधिकार परमात्मा पिता सर्व आत्माओं को संगमयुग पर देते हैं, इसलिए ही उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता कहा जाता है। उनके द्वारा दिये गये ज्ञान की धारणा और उनकी मधुर स्मृति से आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव करती है।

''मैं तो हद-बेहद के पार चला जाता हूँ। मैं रहने वाला भी वहाँ का हूँ, तुम भी हद-बेहद के पार चले जाओ। संकल्प-विकल्प कुछ भी न आये। इसमें मेहनत चाहिए।''

सा.बाबा 21.12.68

''बाप समझाते हैं - मैं आकर सब बच्चों को मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों ही देता हूँ। ... मुक्ति के बाद सब जीवनमुक्ति में आते हैं, फिर पीछे है जीवनबन्ध।... बाप सभी को सुख का वर्सा देते हैं, फिर किसी का एक जन्म भी सुख का होगा। आया थोड़ा सुख पाया और मरा। उनका ड्रामा में इतना ही पार्ट है।'' सा.बाबा 13.4.07 रिवा.

''हर एक को ड्रामा अनुसार पहले मुक्ति में जाना है, फिर जीवनमुक्ति में आते हैं।... हम भगवान के बच्चे हैं तो भगवान से स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए।''

सा.बाबा 30.3.07 रिवा.

''सभी धर्म वालों का बाप एक ही है। सभी बाप से वर्सा पाने के हकदार हैं। ... बाप कौनसा वर्सा देते हैं? मुक्ति और जीवनमुक्ति का। ... देवतायें देही-अभिमानी होने से जानते हैं - हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं, परन्तु परमात्मा को नहीं जानते हैं। परमात्मा को जाने तो फिर सारे सृष्टि-चक्र को जान जायें। त्रिकालदर्शी तुम ब्राह्मण ही हो।''

सा.बाबा 22.5.07 रिवा.

''स्वयं वर्सा लेने की उमंग में आयें। ... बापदादा आये हैं सब बच्चों को वर्सा देने के लिए। चाहे मुक्ति का चाहे जीवनमुक्ति का। लेकिन वर्सा सबको मिलना जरूर है।''

अ.बापदादा 18.1.97

''मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा मार्ग तो भगवान ही दिखाते हैं। तुम जानते हो - अब यह ड्रामा पूरा होता है। जो पास्ट हुआ सो ड्रामा। इसे समझने में भी बड़ी बेहद की बुद्धि चाहिए।...

परमात्मा ही नॉलेजफुल है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी पतित-पावन नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 12.6.07 रिवा.

''बाप सभी को सुख-शानति देता है। बाप के तो सभी बच्चे हैं। ऐसे थोड़ेही कि कोई को दे और कोई को न दे। बाप तो सभी को माया की जंजीरों से छुड़ाने वाला है, इसलिए सब उनको याद करते हैं। तुमको जीवनमुक्ति मिलती है, बाकी सबको मुक्ति में भेज देते हैं।''

सा.बाबा 21.6.07 रिवा.

## सर्व आत्माओं के बाप, शिक्षक, सत्गुरु

परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं के बाप, शिक्षक और सत्गुरु हैं क्योंकि परमात्मा शिव के द्वारा ही सर्व आत्माओं को अपने पार्ट के समय अनुसार जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है, शिवबाबा के द्वारा परोक्ष या अपरोक्ष हर आत्मा को कुछ न कुछ ज्ञान की शिक्षा भी मिलती ही है, भले उसके लिए माध्यम धर्म विशेष के धर्मपिता बनते हैं और अन्त में शिवबाबा ही सर्वात्माओं को मुक्तिधाम ले जाते हैं। किन्हीं आत्माओं के बाप, शिक्षक, सत्गुरु प्रत्यक्ष में बनते हैं तो किनके अप्रत्यक्ष में बनते हैं परन्तु बनते जरूर हैं सबके, इसलिए ही सर्वात्मायें उनको याद करती हैं।

''कहते हो बाबा आप हमारे बाप भी हो, टीचर भी हो और सत्गुरु भी हो। बाप के रूप में विश्व की बादशाही का वर्सा, शिक्षक के रूप में सारे ब्रह्माण्ड और दुनिया के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हो और सत्गुरु के रूप में हमको मुक्तिधाम में साथ ले जायेंगे, फिर जीवनमुक्ति में भेज देंगे।''

सा.बाबा 21.3.07 रिवा.

''तुम इन ऑखों से तो इस शरीर को देखते हो परन्तु बुद्धि से जानते हो - हमको पढ़ाने वाला शिवबाबा है। ... ब्रह्मा का बाप है शिव। वर्सा शिवबाबा से मिलता है, याद उनको करना है। अभी हमको जाना है विष्णुपुरी। यहाँ से तुम्हारा लंगर उठा हुआ है।''

सा.बाबा 6.6.07 रिवा.

## सदा मुक्त

आत्मायें मुक्त भी बनती हैं तो बन्धन में भी आती हैं परन्तु परमात्मा सदा मुक्त हैं क्योंकि वे कभी गर्भ से देह को धारण नहीं करते, इसलिए वे कभी बन्धन में नहीं आते हैं। परमात्मा सदा मुक्तिधाम में रहते हैं, यहाँ आते भी वे मुक्तिधाम में रहते हैं अर्थात् उनमें इतनी

शक्ति है कि वे जब यहाँ आते हैं तो भी मुक्तिधाम में उनका अनुभव हो सकता है। ये आत्मा की विशेष शक्ति है कि वह किसी स्थान पर बिना समय के बन्धन में आ-जा सकती है। इसलिए परमात्मा सदा ही कहते - तुम मुझे परमधाम में याद करो। परमधाम में याद करने से ही तुम्हारे पाप भस्म होंगे। ये प्रकृति का सिद्धान्त है कि जो व्यक्ति या वस्तु जिस गुण वाली होती है, उसको याद करने से याद करने वाले को भी उस गुण का अनुभव अवश्य होता है। परमात्मा सदा मुक्त हैं, इसलिए जो उनकी यथार्थ याद में रहता है, उसे भी मुक्त स्थिति का अनुभव अवश्य होता है।

## सदा पावन / सदा पूज्य

परमात्मा सदा पावन हैं, इसलिए वे सदा पूज्य हैं। आत्मा देह के बन्धन में आने से ही पतित बनती है। परमात्मा तो कभी गर्भ से जन्म नहीं लेते, किसी तन में सदा काल के लिए नहीं बैठते, इसलिए उन पर तन का कोई हिसाब-किताब प्रभावित नहीं होता है अर्थात् वे कभी पतित या तमोप्रधान नहीं बनते, इसलिए वे सदा पावन हैं और जो पावन होता है, वही पूज्य होता है अर्थात् उसकी ही पूजा होती है। सर्व आत्मायें उनको याद करती हैं अर्थात् कोई बाहर से पूजा करता है और कोई उनकी मन में पूजा करता है, उनकी महिमा गाता है।

## सदा निराकार, विदेही अर्थात् अशरीरी

परमात्मा शिव सदा निराकार है अर्थात् उनका अपना कोई साकारी या आकारी शरीर नहीं है, इसलिए वे विश्व-नाटक की किसी घटना से कभी प्रभावित नहीं होते हैं। परमात्मा इस विश्व-नाटक के सुख और दुख दोनों के अनुभवों से न्यारे हैं परन्तु वे ज्ञान सागर होने के कारण ज्ञान सबका देते हैं। आत्मायें भी परमात्मा के वंशधर हैं अर्थात् निराकार हैं परन्तु उनको विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए गर्भ से देह धारण करनी होती है, इसलिए उन पर विश्व-नाटक का सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का नियम प्रभावित होता है परन्तु परमात्मा इस नियम के बन्धन से मुक्त हैं।।

## सदा निर्भय-निर्वैर-निर्संकल्प

परमात्मा निर्भय और निर्वैर हैं, इसलिए वह सदा मुक्त स्थिति में रहते हैं क्योंकि भय और वैरभाव से आत्मा संकल्प-विकल्पों के जाल में फंस जाती है, जिससे वह कभी भी

निर्संकल्प और निर्विकल्प होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर नहीं सकती। परमात्मा के द्वारा यथार्थ ज्ञान मिलने और उनकी स्मृति से आत्मा में भी निर्भयता और निर्वैरपन का गुण आ जाता है, जिससे वह निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति को धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव करती है। भय और वैर का मूल कारण देहभान और देहाभिमान है, परमात्मा को अपनी देह न होने के कारण ये दोनों ही नहीं हैं। वह हमको भी अपने समान विदेही बनाकर निर्भय-निर्वैर-निर्संकल्प बनाते हैं, जिससे हम उनके समान सदा मुक्त स्थिति का अनुभव कर सकते हैं। हमको मुक्त स्थिति के साथ जीवनमुक्त् स्थिति का भी अनुभव होता है।

''बाप है निराकार, निर्भय, निर्वैर,... उनका कोई के साथ वैर नहीं है। तुम्हारा भी कोई के साथ वैर नहीं है। तुम सबके कल्याणकारी हो। अगर किसका किससे वैर है तो उसको हॉफ कास्ट कहेंगे।... आत्मा को कोई थोड़ेही मार सकते हैं। निर्भय होने की बड़ी समझ चाहिए।''

सा.बाबा 24.09.03 रिवा.

''जितना याद की यात्रा में रहेंगे, उतना निडर-निर्भय रहेंगे। बाप को थोड़ेही भय होगा। बाप तुमको भी आप समान निर्भय बनाते हैं।''

सा.बाबा 1.8.68

## अयोनि

परमात्मा का इस विश्व में अवतरण होता है, इसलिए भारत में उनकी जयन्ति भी मनाई जाती है परन्तु वे कभी गर्भ से जन्म नहीं लेते, इसलिए उनको अयोनि कहा जाता है। वे परकाया प्रवेश कर अवतरित होते हैं। गर्भ से जन्म न लेने के कारण उनको अपना शरीर नहीं है, इसलिए वे ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं। हमको भी बाबा यही शिक्षा देते हैं कि तुम भी अपने को आत्मा निश्चय करो और मैं इस देह में अवतरित हुई हूँ, ईश्वरीय कर्तव्य करने के लिए - ऐसे समझकर कर्म करो तो सदा मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे।

''बाप अकेला अवतरित नहीं होते लेकिन ब्रह्मा, ब्राह्मण बच्चों के साथ दिव्य जन्म लेते अर्थात् अवतरित होते हैं।... यह अलौकिक जन्म बाप का भी न्यारा है तो आप बच्चों का भी न्यारा और प्यारा है। ... ऐसे जन्मदिन एक बाप के सिवाए न किसी का हुआ है और न होना है। ... परकाया प्रवेश से होता है।''

अ.बापदादा 24.2.98

## सदा निष्काम कर्म करने वाले

परमात्मा कर्म तो करते हैं परन्तु उनको उसके फल की कामना नहीं रहती, इसलिए

उनको निष्काम कर्म करने वाला कहा जाता है और वे जो कर्म करते हैं, उसके फल से भी प्रभावित नहीं होते हैं। इसलिए परमात्मा के कर्मों को अकर्म कहा जाता है। कामना देहधारियों को ही होती है क्योंकि वे देहधारी होने के कारण सुख-दुख से प्रभावित होते हैं, सुख-दुख का अनुभव करते हैं। संगमयुग परमात्मा हमको भी आप समान निष्काम कर्म करने का पाठ पढ़ाते हैं। जो उसके महत्व को समझकर निष्काम कर्म करने का अभ्यास करते हैं, वे सहज ही संकल्प-विकल्पों से मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं।

''तुम शिवबाबा को थैंक्स देंगे ? नहीं, ड्रामा अनुसार मैं पढ़ाने आता हूँ ... थैंक्स भक्ति मार्ग में देते हैं। टीचर कहेंगे अच्छी रीति पढ़ते हैं तो हमारा नाम बाला होगा।''

सा.बाबा 19.6.69 रिवा.

## धर्मराज - न्यायकारी, समदर्शी

परमात्मा को धर्मराज भी कहा जाता है क्योंकि वह हर आत्मा के कर्मों का यथोचित फल देता है। अभी परमात्मा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उसके अनुसार समझ में आया है कि कर्म और फल पर आधारित ये विश्व-नाटक स्वचालित है, जिसके अनुसार हर आत्मा को उसके अच्छे-बुरे कर्मों का फल स्वत: मिलता है। परमात्मा ज्ञान का सागर, विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह इसके विधि-विधानों का ज्ञान देता है, जिन विधि-विधानों को समझकर अपने भूतकाल के बुरे कर्मों का खाता खत्म करते हैं और बुरे कर्मों से विमुख होकर अच्छे कर्मों में प्रवृत्त होते हैं, जिससे अपने सुखमय भविष्य का निर्माण करते हैं और वर्तमान में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं। परमात्मा का ये शिक्षा देने का कर्तव्य भी किसी भी प्रकार के भेदभाव से सदा मुक्त होता है। परमात्मा हमको भी समदर्शी-न्यायकारी बनने का पाठ पढ़ाकर आप समान बनाते हैं।

''दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि लॉ कौन सा है ? ड्रामा प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना . यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता है कि इस कर्म का यह फल वा इस कर्म की ये सजा है। लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है।... इसलिए गाया हुआ है - 'कर्मों की गति अति गुह्य है'।''

अ.बापदादा 3.5.77

## सदा अभोक्ता-असोचता

## अभोक्ता अर्थात् कर्म करते भी कर्म-फल के प्रभाव से मुक्त

अभोक्ता शब्द दो अर्थ में प्रयोग होता है - एक अभोक्ता अर्थात् स्थूल इन्द्रियों से किसी चीज का उपयोग न करने वाला और दूसरा सूक्ष्म इन्द्रियों अर्थात् मन-बुद्धि से किसी प्रकार की मान-शान, महिमा, स्तुति से प्रभावित न होने वाला। शिवबाबा दोनों से परे हैं क्योंकि उनको अपना स्थूल या सूक्ष्म शरीर नहीं है। वे हमको आप समान निराकार बनाकर घर वापस ले जाते हैं, इसलिए हमको भी इनसे परे रहने की प्रेरणा देते हैं।

शिवबाबा अभोक्ता है और वे बच्चों को भी कहते कि कभी आसक्ति के वशीभूत होकर किसी चीज का उपभोग मत करो। ये आसक्ति ही आत्मा के बन्धन का कारण है, जो आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने नहीं देती है। परमात्मा किसी वस्तु की वासना भी नहीं लेते हैं क्योंकि वासना लेना भी भोग ही है। परमात्मा कर्म करते भी अकर्ता है क्योंकि कोई भी कर्म उनको प्रभावित नहीं करता है। हमको भी अभोक्ता-अकर्ता का पाठ पढ़ाते हैं क्योंकि आत्मा भी परमधाम में जब रहती है तो अभोक्ता-अकर्ता की स्थिति में होती है और अभी हमको अपनी उस स्थिति में जाना है, इसलिए हमको भी भोग-वासना से मुक्त होना ही पड़ेगा। जो अपने पुरुषार्थ से इससे मुक्त हो जाते हैं, वे अभी मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव करते हैं और जो अन्त में सजायें खाकर इस स्थिति को प्राप्त करते हैं, वे वर्तमान के मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुखद अनुभव से वंचित रह जाते हैं।

परमात्मा भी इस कर्मक्षेत्र पर आकर कर्म करते हैं परन्तु वे कर्म करते भी अकर्ता हैं अर्थात् उनको कर्म का कोई फल प्रभावित नहीं करता है क्योंकि वह निराकार हैं, इसलिए उनको किसी भी प्रकार के भोग की इच्छा-आकांक्षा नहीं है। परमात्मा ने हमको भी यही पाठ पढ़ाया है कि तुम अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर कर्म करो तो तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ होंगे, जिनके फल स्वरूप तुमको भविष्य में जीवनमुक्ति तो मिलेगी ही लेकिन वर्तमान में भी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगे।

## सुख-दुख दोनों से न्यारे

सुख-दुख दोनों की अनुभूति इस देह के साथ ही होती है। परमात्मा को अपनी देह ही नहीं है, इसलिए वे सुख और दुख दोनों से न्यारे हैं। परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का यह नियम भी बता दिया है कि जो सुख का अनुभव करेगा, उसको दुख का भी अनुभव

अवश्य ही करना होगा। परमात्मा हमको भी देह से न्यारे होने का अभ्यास कराते हैं, जिससे हम भी सुख-दुख से न्यारे हो सकें क्योंकि अभी हमको भी परमात्मा के साथ परमधाम जाना है, जहाँ आत्मा दोनों से मुक्त होती है। इस देह में रहते देह से न्यारी स्थिति का अभ्यास करने वाले सुख-दुख दोनों से न्यारी मुक्त स्थिति का अनुभव कर सकते हैं। जो इस मुक्त स्थिति का अनुभव करते हैं, वे ही जीवनमुक्त स्थिति का भी अनुभव कर सकते हैं।

''बाप को तो खुशी और गम की दरकार नहीं है। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। तुमको भी न खुशी और न गम होना चाहिए। बाप मिला और क्या चाहिए, उनकी मत पर चलना चाहिए। इस समय स्वर्ग से भी अधिक खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 22.8.68

## सर्व आत्माओं को दुख से मुक्त कर सुख देने वाले सर्व के दुखहर्ता-सुखकर्ता

परमात्मा ही सर्व आत्माओं को दुख से मुक्त कर सुख देने वाला है, इसलिए उनको दुख हर्ता, सुख कर्ता कहते हैं। इसलिए बाप कहते हैं तुम दुख-हर्ता सुख-कर्ता बाप के बच्चे हो तो तुमको भी सबको सुख देना है। कभी किसको दुख देने का ख्याल भी नहीं आना चाहिए। जो दूसरों को सदा सुख देते हैं, उनको उनकी दुआयें मिलती हैं, उन दुआओं के बल से वे सहज व्यर्थ से मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकते हैं।

''तुमको किसको दुख देने का ख्याल भी नहीं आना चाहिए। ... श्रीकृष्ण की आत्मा जो सुख में थी, वह अब दुख में है। भगवान के लिए ऐसे नहीं कहेंगे ना क्योंकि वह तो दुख-सुख से न्यारा है। ... अगर तुम किसको दुख देंगे तो कौन कहेगा कि यह दुख हर्ता सुख कर्ता की सन्तान हैं। ख्यालात पहले मन्सा में आते हैं, फिर एक्ट में आते हैं।''

सा.बाबा 18.4.07 रिवा.

## सृष्टि के बीज रूप

परमात्मा सृष्टि का बीजरूप हैं। तने का बीज के साथ घनिष्ट सम्बन्ध होता है। इसलिए बाबा कहते हैं - तुम भी बीजरूप स्थिति में स्थित होकर अपने विकर्मों को भस्म करो। जितना बीजरूप बाप को याद कर बीजरूप स्थिति का अभ्यास करेंगे, उतना ही हम इस जीवन में मुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे और जब मुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे तो जीवनमुक्त स्थिति का भी सहज अनुभव कर सकेंगे क्योंकि मुक्ति के बाद जीवनमुक्ति है ही है। बीजरूप परमात्मा विश्व का कल्याण करने आया हुआ है, हम भी जितना बीजरूप स्थिति में स्थित रहेंगे,

उतना विश्व का कल्याण करेंगे अर्थात् परमात्मा पिता के कार्य में सहयोगी बनेंगे।

''बीजरूप स्टेज सबसे पॉवरफुल स्टेज है, उसके बाद सब नम्बरवार स्टेज है। ... जैसे बीज द्वारा स्वत: ही सारे वृक्ष को पानी मिल जाता है, ऐसे जब बीजरूप स्टेज में स्थित रहते हो तो ऑटोमेटिकली विश्व को लाइट-माइट का पानी मिलता रहता है। ... विश्व का परिवर्तन करने के लिए पहले स्वयं का परिवर्तन करो। हर संकल्प में स्थृति रहे कि विश्व का कल्याण हो।''

अ.बापदादा 6.1.79 पार्टी

''शिवबाबा को कहा जाता है - मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, सत्, चित्, आनन्द स्वरूप, ज्ञान का सागर।... इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ की उत्पत्ति कैसे होती है, यह सिर्फ बीजरूप बाप ही जानते हैं।''

सा.बाबा 21.4.07 रिवा.

## सृष्टि-चक्र के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर

परमात्मा इस सृष्टि का अर्थात् नये चक्र का क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर है। वह हमको भी ज्ञान देकर अपने साथ सहयोगी बनाते हैं।

## सदा न्यारे और सर्व के प्यारे

## निन्दा-स्तुति, मान-अपमान से परे अर्थात् दोनों में समान

शिवबाबा अभोक्ता होने के कारण सुख-दुख, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति ... सबसे न्यारे होने के कारण सर्व के प्यारे हैं। वे सदा एकरस स्थिति में रहते हैं, इसलिए उनकी स्मृति में रहने वाला भी मान-अपमान, निन्दा-स्तुति ... से मुक्त एकरस स्थिति में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता है।

* किसी व्यक्ति विशेष को देखकर, मिलकर, आगे बढ़ता देखकर या किसके दुखी होने में दुखी होना या खुशी होना भी अपने भावी बन्धनों का कारण बनता है, भविष्य सम्बन्धों का निर्माण करता है। आध्यात्मिक मार्ग के पथिक को सुख-दुख दोनों से न्यारा साक्षी होकर रहना चाहिए तब ही एक परमात्मा की याद रहेगी और मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव कर सकेंगे। बाबा में न्यारे और प्यारे पन का अद्वितीय सन्तुलन (Balance) है और वे हमको भी ये सन्तुलन रखना सिखाते हैं। बैलेन्स से ब्लेसिंग्स मिलती हैं और ब्लेसिंग्स मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

## निन्दक को भी गले लगाने वाले

परमात्मा निराकार है और विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए उन पर निन्दा-स्तुति का कोई प्रभाव नहीं होता है। वह निन्दा-स्तुति दोनों से परे हैं। निन्दा-स्तुति का प्रभाव देहधारी पर होता है। देहाभिमानी मनुष्य सबसे अपनी स्तुति की इच्छा रखता है, इसलिए उसको किसी और की स्तुति अर्थात महिमा भाती नहीं है। वह कोई गलत कार्य करता है तो भी उसको अपनी निन्दा भाती नहीं है। परमात्मा न स्तुति की इच्छा रखते हैं और न ही उनको निन्दा प्रभावित करती है। परमात्मा निन्दा-स्तुति दोनों से परे हैं। परमात्मा को निन्दा करने वाला भी उतना ही प्यारा है, जितना स्तुति करने वाला, इसीलिए गायन है - निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोये। इस सत्य पर हम विचार करें तो यथार्थता समझ में आती है क्योंकि जो परमात्मा की निन्दा करता है, उसको भी परमात्मा की याद अवश्य रहती है, इसलिए वह याद भी कल्याण का काम करती है। इस सत्य को समझाने के लिए कर्म-सिद्धान्त के मनीषियों ने शास्त्रों में भी अनेक उपाख्यान देकर समझाने का पुरुषार्थ किया है। शिवबाबा ने भी स्वयं ब्रह्मा मुख से ऐसे अनेक महावाक्य उच्चारण किये हैं। यथा -

''निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सोये ... सबसे जास्ती ग्लानि भी तुम बच्चों ने की है, वही अभी मित्र बने हो।'' सा.बाबा 11.8.68

## सदा आनन्द के सागर / सत्-चित्-आनन्द स्वरूप

परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है और आत्मा भी सच्चिदानन्द स्वरूप है क्योंकि आत्मा भी परमात्मा की वंशधर है। परन्तु आत्मायें गर्भ से जन्म लेने के कारण देहभान और देहाभिमान के वश होकर अपने इस गुण को भूल जाती हैं। परमात्मा आकर हमको इस सत्य ज्ञान देते हैं, जिससे हम आत्मायें अपने सच्चिदानन्द स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करके सुद-दुर्लभ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं।

## सर्व के कल्याणाकारी

परमात्मा प्राणी मात्र के कल्याणकारी हैं, इसलिए उनको सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता कहा जाता है। वे हमको ज्ञान देकर आप समान बनाकर विश्व-कल्याण का कर्तव्य सिखाते हैं और हमसे कराते हैं। हमको भी मास्टर विश्व-कल्याणकारी बनाते हैं।

## गीता ज्ञान दाता

गीता में है भगवानुवाच अर्थात् भगवान आकर गीता ज्ञान देते हैं, जिससे हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। परमात्मा हमको भी कहते हैं कि तुम गीता ज्ञान का स्वरूप बनकर सबको बाप का सन्देश दो। सबको बाप के कर्तव्य का अनुभव कराओ।

''यहाँ तो स्वयं भगवान बैठ नॉलेज सुनाते हैं। गीता में सिर्फ एक भूल कर दी है जो गीता ज्ञान दाता का नाम बदली कर दिया है और समय भी दूसरा लिख दिया है।... सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान और कोई शास्त्र में नहीं है।''

सा.बाबा 18.4.07 रिवा.

## विश्व-नाटक के साक्षी-दृष्टा

परमात्मा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वे इसको साक्षी-दृष्टा होकर देखते हैं अर्थात् वे इसकी किसी भी घटना से प्रभावित नहीं होते हैं, इसलिए वे सदा निर्संक्लप होकर रहते हैं अर्थात् सदा मुक्त स्थिति में रहते हैं। बाबा हमको भी कहते हैं तुम भी मनन-चिन्तन करके इस विश्व-नाटक को अच्छी रीति समझो तो तुम भी इसके साक्षी-दृष्टा बन जायेंगे, जिससे निर्संकल्प और निर्विकल्प होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगे। इस विश्व-नाटक के सभी गुण-धर्मों, विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त को जानने वाला ही इसका साक्षी-दृष्टा हो सकता है। इसके लिए ही परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का सारा ज्ञान दिया है।

## अन्तर्यामी, जानी-जाननहार

शिवबाबा सर्वशक्तिवान है, वे इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं और उनमें किसी आत्मा के अन्दर उठने वाले संकल्प को भी जानने की शक्ति है परन्तु बाबा कहते - मुझे यह सब जानने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं तो तुमको ज्ञान देने आया हूँ और हर आत्मा को अपने कर्मानुसार फल मिलता ही है।

''बाप तो जानते हैं कि हंगामा होगा जरूर। न जाने तो युक्तियाँ क्यों रचें कि चिट्ठी ले आओ कि हमको ज्ञान-अमृत पीने जाना है। जानते हैं कि यह झगड़ा होने की भी ड्रामा में नूँध है। ... बाप तो बिल्कुल सहज बात समझाते हैं। हंगामा तो होगा, डरने की कोई बात नहीं है।''

सा.बाबा 1.3.04 रिवा.

# फॉलो ब्रह्मा बाप अर्थात् ब्रह्मा बाप के गुण-कर्तव्य-संस्कार

भारत में परमात्मा के साकार और निराकार दोनों स्वरूपों का समान महत्व है। अब प्रश्न है कि निराकार परमात्मा का साकार स्वरूप क्या है, उसको कोई नहीं जानते। इस राज़ को अभी परमात्मा ने स्वयं स्पष्ट किया है कि निराकार परमात्मा साकार तन में प्रवेश होकर अपना ज्ञान देने, पुरानी सृष्टि को नया बनाने का कर्तव्य करते हैं। जिस तन में प्रवेश करते हैं, उसे प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है। ब्रह्मा न निराकार परमात्मा का स्वरूप है और न ही दादा लेखराज का स्वरूप है। निराकार परमात्मा ने अपने कर्तव्य के लिए दादा लेखराज के तन में प्रवेश कर उनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा, इसलिए ब्रह्मा निराकार और साकार दोनों का संगठित रूप है अर्थात् दोनों के गुण-कर्तव्यों का प्रतीक है अर्थात् दोनों के गुण-कर्तव्य ब्रह्मा तन द्वारा अनुभव होते हैं। निराकार बाप साकार तन में आते हैं तब उनके गुणों और कर्तव्यों का यथार्थ रूप में अनुभव होता है।

सम्पूर्णता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के पुरुषार्थ के लिए किसी साधन-सम्पत्ति, महल-माड़ी, व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता नहीं है। उसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और दृढ़ पुरुषार्थ की आवश्यकता है। इस पुरुषार्थ में कोई व्यक्ति या वस्तु बाधक भी नहीं बन सकती है और न ही साधक है। ब्रह्मा बाबा ने अपने पुरुषार्थ और सम्पूर्णता की स्थिति से इस बात की सत्यता को सिद्ध करके दिखाया है। अनेक प्रकार की बाधायें आते भी बाबा ने अथक पुरुषार्थ कर सम्पूर्णता को पाया, अपने जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव स्वयं भी किया और दूसरों को भी कराया। बाबा ने किन्हीं स्थूल साधनों को भी आधार नहीं बनाया।

''बापदादा समय प्रमाण अब यही चाहते हैं कि एक शब्द सदा स्मृति में रखो - बाप से मिली हुई सर्व प्राप्तियों का, स्नेह का, सहयोग का रिटर्न करना है। रिटर्न करना अर्थात् बाप समान बनना। दूसरा - अब हमारी रिटर्न जर्नी है। एक ही शब्द 'रिटर्न' सदा याद रहे। इसके लिए बहुत सहज साधन है - हर संकल्प, बोल और कर्म को ब्रह्मा बाप से टेली करो। बाप का संकल्प क्या रहा, बाप का बोल क्या रहा, बाप का कर्म क्या रहा ? इसको ही कहा जाता है - फॉलो फादर।''

अ.बापदादा 30.11.2002

''हर कर्म करने के पहले सोचो कि जो मैं ब्राह्मण आत्मा कर्म कर रही हूँ, कर रहा हूँ, क्या यह ब्रह्मा बाप समान है ? ... अगर ब्रह्मा के हर कदम समान कदम पर कदम रख फॉलो करते चलेंगे तो एक तो सदा अपने को सहज पुरुषार्थी अनुभव करेंगे और सदा सम्पूर्णता की मंजिल समीप अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 12.12.98

ब्रह्मा बाप निराकार बाप और साकार बाप दोनों के गुणों और कर्तव्यों का प्रतीक है। ब्रह्मा बाबा हमारा अलौकिक बाप भी है तो अलौकिक माँ भी है क्योंकि शिवबाबा ने हमको ब्रह्मा माँ के द्वारा ये दिव्य जन्म दिया है। ब्रह्मा बाबा में दोनों के गुणों का समावेश है, उन्होंने ब्रह्मा तन द्वारा बाप समान भी हमारी पालना की है और माँ के समान प्यार-दुलार देकर भी पालना की। ब्रह्मा माँ के द्वारा ही हमने शिव बाप को पहचाना।

ब्रह्मा बाबा के जीवन को देखें तो देखते हैं वे सदा बाप समान सदा जागती ज्योति, निमित्त-निर्मान, निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति में स्थित मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में खोये हुए, सहनशील, निराकार बाप समान निर्भय-निर्वैर, निश्चिन्त, शिव बाप को अपने कर्मों और स्वरूप से प्रत्यक्ष करने वाले, सत्यता की अथॉर्टी, सत्यता को सभ्यता और प्रेम से प्रत्यक्ष करने वाले, सदा एक बल एक भरोसे एक आश-विश्वास की धारणा में, एक बाप दूसरा न कोई, बेपरवाह बादशाह, सम-दृष्टि, बालक सो मालिक, चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप दिखाई दिये। ब्रह्मा बाबा ने पुरुषार्थ करके ऐसी बाप समान स्थिति को बनाया है, जीवन में रहते मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव किया भी और कराया भी। तो ऐसे फॉलो ब्रह्मा बाबा अर्थात् ब्रह्मा बाप समान पुरुषार्थ कर निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति बनानी है अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना और कराना है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अर्थात् बाप समान सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करने के लिए शिव बाप और ब्रह्मा माँ को फॉलो करना है। ब्रह्मा बाप को फॉलो करें तो शिवबाबा के समान सहज ही बन जायेंगे क्योंकि ब्रह्मा बाबा ने शिव बाबा के समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनकर दिखाया और शिव बाप को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया। ब्रह्मा बाबा के द्वारा ही हमने शिवबाबा को जाना, अनुभव किया, उसके गुणों का अनुभव किया। इसलिए ब्रह्मा बाबा के कदम पर कदम रखने से ही हम ऐसे बन सकते हैं और बाप समान मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकते हैं।

ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखने के लिए उनके गुण-कर्तव्यों का ज्ञान होना, उनके कदमों का ज्ञान होना, उनकी धारणाओं का ज्ञान होना, उनके पुरुषार्थ के विषय में ज्ञान होना अति आवश्यक है क्योंकि मनुष्य जो जानता है, उसका चिन्तन स्वत: ही चलता है और जिसका चिन्तन करता है, उसका उसके जीवन पर प्रभाव अवश्य होता है। जिन बातों का ज्ञान होता है, उस पर निश्चय होता है, उसका अनुभव होता है, जिससे वह उन बातों को सहज ही जीवन अपना सकता है। वैसे तो जैसे शिवबाबा गुणों का सागर है, वैसे ब्रह्मा बाबा के गुण और कर्तव्य भी सागर के समान हैं, उनकी धारणायें और पुरुषार्थ भी सागर के समान है, जिसकी

थाह पाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है परन्तु फिर भी उनको फॉलो करने के लिए, मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने के लिए, सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने के लिए अपनी बुद्धि, समय और शक्ति के अनुसार उनके विषय में जानना, उसका अनुभव करना अति आवश्यक है। जब जानेंगे, अनुभव करेंगे तब ही उनको फालो कर सकेंगे।

इस विषय में ज्ञान, उसका अनुभव, उस पर निश्चय तीन प्रकार से किया जा सकता है। एक जिन्होंने उनको प्रत्यक्ष में देखा है, उनके अंग-संग रहकर उनके गुण-कर्तव्यों का अनुभव किया है तो प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर। दूसरा उन्होंने जो कर्तव्य करके दिखाया, जिनको ऐसा बनाया, जिस यज्ञ की स्थापना की, उसकी विशालता और दिव्यता को देखने के आधार पर अर्थात् अनुभव के प्रमाण के आधार पर निश्चय। तीसरा जिन्होंने उनको देखा, अनुभव किया उनके द्वारा उन गुण कर्तव्यों को सुनकर भी उनका अनुभव कर सकते हैं, उनके विषय में निश्चय होता है। जब अनुभव करेंगे, उन बातों पर निश्चय होगा तब ही उनको फॉलो कर सकेंगे।

वैसे तो जिन्होंने साकार में ब्रह्मा बाबा को नहीं देखा है परन्तु अभी अव्यक्त बापदादा के रूप में उनके गुणों और कर्तव्यों का प्रत्यक्ष में अनुभव कर रहे हैं। उनका भी ये बड़ा सौभाग्य है कि वे इन सुर-दुर्लभ दृश्यों को प्रत्यक्ष में देख भी रहे हैं और अनुभव भी कर रहे हैं। जैसे शिवबाबा के गुण-कर्तव्य सागर के समान हैं वैसे ही ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्य भी सागर के समान है, जिनकी गिनती करना, उनका वर्णन करना अपनी सामर्थ से परे है और सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है, फिर भी अपने और सर्व के कल्याणार्थ ब्रह्मा बाबा के कुछ कदमों पर यहाँ विचार कर रहे हैं, जिन पर हमारा ध्यान होना अति आवश्यक है, जिससे हमारे पुरुषार्थ में तीव्र गति आ सके।

* ये संगमयुग परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है। सत्य आत्मिक स्वरूप सुख-दुख, अहंकार-हीनता, प्राप्ति-अप्राप्ति आदि सबकी फीलिंग से मुक्त है। यथार्थ परमात्मा का साथ अहंकार-हीनता, दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता, अपने-पराये की फीलिंग से मुक्त, जीवनमुक्त परमानन्दमय है। यथार्थ ज्ञानयुक्त जीवन साक्षी स्थिति भी अहंकार-हीनता, जय-पराजय, दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता, अपने-पराये की फीलिंग से मुक्त, जीवनमुक्त प्राप्ति-स्वरूप, परम सुखमय है। ऐसे इस संगमयुगी जीवन का सुख अनुभव करो और कराओ, यही इस संगमयुगी जीवन की सफलता है, बाप समान स्थिति है, मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है।

साकार ब्रह्मा बाप समान पुरुषार्थ कर इस जीवन की परम प्राप्तियों का अनुभव करो। जैसे ब्रह्मा बाबा ने इस जीवन की प्राप्तियों का अनुभव कर यथार्थ पुरुषार्थ के द्वारा आदि से

अन्त तक निरन्तर चढ़ती कला में आगे बढ़ते गये। ब्रह्मा बाबा के न पुरुषार्थ में कब और कहाँ उतार आया और न इस जीवन की परम प्राप्तियों की फीलिंग में उतार आया। निरन्तर चढ़ती कला रही, जिस चढ़ती कला का स्वयं भी अनुभव किया और दूसरों को भी कराया। ऐसे इस जीवन के महत्व को अनुभव कर चढ़ती कला का पुरुषार्थ कर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो।

निराकार परमात्म के बाद ब्रह्मा का स्थान है अर्थात् शिव परमात्मा के बाद दूसरी आत्मा (Next to God) ब्रह्मा बाबा की है। शिव परमात्मा सर्व गुणों एवं शक्तियों का सागर है तो ब्रह्मा में भी अवश्य ही परमात्मा के समान ही गुण और शक्तियाँ होंगी, तब उनका स्थान भगवान के बाद माना जाता है। ब्रह्मा ही श्रीकृष्ण बनता है। श्रीकृष्ण सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण है तो ब्रह्मा में भी वे सभी गुण अवश्य होने चाहिए और हैं भी। सत्यता तो ये है कि ब्रह्मा बाबा में श्रीकृष्ण के समान सर्व गुण और विशेषतायें तो है ही और साथ में शिव परमात्मा के समान गुण और शक्तियां भी हैं। ब्रह्मा बाबा का जीवन दोनों के गुण और शक्तियों का संगम है। इसलिए ही ये संगमयुगी जीवन सर्वोच्च माना जाता है और इस जीवन में जो अनुभव होता है वह त्रिलोक्य और त्रिकाल में कहाँ और कभी नहीं हो सकता है। ब्रह्मा बाबा के जीवन की विशेषताओं और समय के ऐसे महत्व को जानकर उनका अनुसरण करके जीवन में सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना और कराना ही मानव जीवन की महानता है। ब्रह्मा बाबा का जीवन परमात्मा के गुणों और श्रीकृष्ण के गुणों का संगम है।

''परमात्मा नई सृष्टि रचते हैं तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। सूक्ष्मवतन वाला तो यहाँ आ न सके। वह है सम्पूर्ण अव्यक्त। यहाँ तो साकार ब्रह्मा चाहिए। ... ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात गाई जाती है।''

सा.बाबा 20.10.03 रिवा.

''ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष किया अर्थात् बापदादा को साथ-साथ प्रत्यक्ष किया क्योंकि ब्रह्मा बना ही तब, जब बाप ने अपना बनाया (प्रवेश किया) तो बाप में दादा और दादा में बाप समाया हुआ है। ऐसे ब्रह्मा बाप को फॉलो करना अर्थात् लवलीन आत्मा बनना।''

अ.बापदादा 13.2.92 दादियों से

''तुमको पुरुषार्थ कराने वाला शिवबाबा है। देहधारी सब पुरुषार्थ करते हैं। यह भी देहधारी है, इनको भी शिवबाबा पुरुषार्थ कराते हैं। ... तुमको श्रीमत देने वाला शिवबाबा है। यह ब्रह्मा की मत नहीं है। यह तो पुरुषार्थी है परन्तु इनका पुरुषार्थ जरूर इतना ऊंच है, तब तो नारायण बनते हैं। तो बच्चों को पुरुषार्थ में इनको फॉलो करना है।''

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

''प्रजापिता ब्रह्मा को कहते हैं। प्रजापिता अर्थात् प्रजा को रचने वाला। परन्तु उनको भगवान नहीं कह सकते। भगवान प्रजा नहीं रचते हैं। भगवान के तो सब आत्मायें अविनाशी बच्चे हैं। ... तुमको भगवान ने ब्रह्मा बाप द्वारा एडॉप्ट किया है। ... इनको प्रजापिता ब्रह्मा तब कहते हैं, जब इनमें शिवबाबा ने प्रवेश किया है।''

सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

ब्रह्मा बाप को फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान गुण एवं विशेषतायें धारण करना और कर्तव्य करना। इसके लिए ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्य-विशेषताओं से कुछ का अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर यहाँ वर्णन करते हैं।

फॉलो-फादर में नम्बरवन
शिवबाबा के सपूत बन सबूत देने वाले
तुरत दान महापुण्य के प्रत्यक्ष स्वरूप
तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क से सम्पूर्ण समर्पण कर समान बनने वाले
सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित
साकार लोक में साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप
पहले मानव जो पुरुषार्थ करके मानव से फरिश्ता बने
सर्व प्रकार के अनुभवों के सागर
नव-विश्व के रचता अर्थात् नव-विश्व के रचता परमात्मा के साथ नव-विश्व की रचना में सहयोगी
निश्चयबुद्धि विजयन्ति के प्रत्यक्ष स्वरूप
सदा एक परमात्मा पिता की श्रीमत पर चलने वाले
अटल निश्चय और दृढ़ विश्वास रखने वाले
सर्वंश एवं सर्वस्व त्यागी
त्याग में भाग्य की अनुभूति करने वाले
सदा सारथी बनकर कर्मेन्द्रियों को चलाने वाले स्वराज्य अधिकारी
साक्षी और साथीपन की निरन्तर अनुभूति में रहने वाले
साक्षी और ट्रस्टी स्थिति वाले
ड्रामा के पट्टे पर अटल-अचल, निश्चयबुद्धि
आदि से अन्त तक एकरस स्थिति में रहने वाले अर्थात् जीवन में उतार-चढ़ाव से मुक्त सदा एकरस चढ़ती कला में रहने वाले

विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा के जाग्रत स्वरूप से 'नथिंग न्यू' का पाठ पक्का करके सदा निश्चिन्त
ज्ञान की पराकाष्ठा और निर्मानता के स्तम्भ
ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा को अपने तन में धारण करने वाले ज्ञान-मानसरोवर, भागीरथ शिवबाबा की मुरली से अगाध प्यार और बच्चों में भी मुरली के प्रति प्यार जाग्रत करने वाले
निरन्तर स्टूडेण्ट लाइफ में
एक भरोसा, एक बल, एक आश-विश्वास की प्रतिमूर्ति
नष्टोमोहा - स्मृति स्वरूप के स्तम्भ अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई
एक धक से विनाशी कमाई को सच्ची अविनाशी कमाई में परिवर्तन करने वाले
तन-मन-धन को ट्रस्टी बन सम्भालने और कार्य में लगाने वाले
तन-मन-धन को परमात्मा के पास पूरा इन्श्योर करके पूरा राज्य-भाग्य पाने वाले
निर्संकल्प होकर तन-मन-धन सब परमात्मा को विल करके विल पॉवर धारण करने वाले
सत्यता और शालीनता (Reality Royality) की प्रतिमूर्ति अर्थात् प्रत्यक्ष स्वरूप
योग की निरन्तर शक्तिशाली स्थिति में स्थित रहने वाले
सदा बाप के स्नेह में समाये हुए
सदा सर्व को सहयोग करने वाले
सदा दाता बन सर्व को खुशी, ज्ञान-धन, सहयोग, स्नेह, शक्ति ... देने वाले
निराकारी - निर्विकारी - निरहंकारी स्थिति के प्रत्यक्ष स्वरूप
सदा निराकारी - आकारी - साकारी स्थिति के सहज अभ्यासी
बेहद की वैराग्य वृत्ति के प्रतिमूर्त
दृढ़ संकल्प एवं दृढ़ प्रतिज्ञ
सदा बालकपन और मालिकपन का बैलेन्स रखने वाले
पहले आप का पाठ पक्का रखकर सदा बच्चों को आगे बढ़ाने वाले
मन्सा-वाचा-कर्मणा अखण्ड महादानी
सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ जोड़ने और जुड़ाने वाले
एक बाप के साथ सर्व सम्बन्धों के अनुभवों में रह सर्व को अनुभव कराने वाले
सर्वात्माओं की परमपिता परमात्मा के साथ सगाई अर्थात् सौदा कराने वाले दलाल
पवित्रता की धारणा के चरमोत्कृष्ट स्वरूप
पूर्वजपन के स्वरूप से विश्व-प्रेम की भावना सदा जाग्रत रखने वाले

बच्चों को माइक बनाकर आगे करके पीछे से माइट बन शक्ति देने वाले
सत्यता की शक्ति का स्तम्भ (Authority of Reality and Truth)
सत्यता को सभ्यता और प्रेम से सिद्ध करने वाले
सम्पूर्णता और सम्पन्नता की प्रतिमूर्ति
प्रेम और शक्ति के बैलेन्स में स्थित
रमणीकता और गम्भीरता के बैलेन्स के साकार स्वरूप
सदा निर्भय और निश्चिन्त
अदम्य साहसी
धैर्यवान और समय की धैर्य से प्रतीक्षा करने वाले परन्तु पुरुषार्थ में निरन्तर सतर्क
निर्मानता से निर्माण के कर्तव्य में निरन्तर संलग्न
सदा निमित्त और निर्मान भाव वाले
दृष्टि में दिव्यता, कर्मों में कुशलता, वाणी में मधुरता की धारणा-मूरत
विद्यार्थीपन और शिक्षकपन के बैलेन्स के धारणा-स्वरूप
तपस्या का निरन्तर जाग्रत स्वरूप अर्थात् निरन्तर तपस्वीमूर्त
त्याग-तपस्या और सेवा के प्रतिमूर्ति
निरन्तर चढ़ती कला की स्थिति में
रूप में सादगी और चलन में दिव्यता, भरपूरता और शालीनता
सदा विश्व-महाराजन बनने का नशा और विश्व-सेवाधारीपन की निर्मानता और कर्तव्य का बैलेन्स रखने वाले
मान-अपमान, निन्दा-स्तुति .. में सदा एकरस
न काहू से दोस्ती, न काहू से वैर की यथार्थ धारणा वाले निर्भय और निर्वैर
सर्व के प्रति रहमदिल
अपकारी पर भी उपकार करने वाले
मुख द्वारा सदा वरदानी बोल बोलने वाले
माया के युद्ध में सफल योद्धा
प्यार के अखुट भण्डार
कर्मभोग में भी कर्मयोग का अनुभव करने और कराने वाले
कर्मयोग अर्थात् योगबल से कर्मभोग पर विजय पाने वाले
सर्व के प्रति सम-दृष्टि, सम-भावना रखने वाले

सहनशीलता और प्रेम की प्रतिमूर्ति
सदा सर्व के प्रति कल्याण की भावना वाले
विघ्नों को भी परीक्षा समझकर पार करने और पास करने वाले
पुराने स्वभाव-संस्कार का एक धक से सम्पूर्ण परिवर्तन करने वाले
अपने जीवन के लिए आवश्यक समय, शक्ति, साधन भी सेवा में लगाने वाले
गम्भीरता - रमणीकता का सन्तुलन रख निरन्तर एकान्तवासी स्थिति में स्थित
सदा एक के अन्त में खोये हुए एकान्तवासी स्थिति में रहने वाले
सदा सर्वशक्तिवान बाप को अपने जीवन से प्रत्यक्ष करने वाले
साक्षात् बाप समान अर्थात् बाप का साक्षात्कार कराने वाले
कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होयेगी बहुरि करोगे कब - के प्रत्यक्ष स्वरूप
दृष्टि से ही आत्माओं के भाग्य को परखने वाले सफल पारखी
भृगु ऋषि के समान सर्व की जन्म-पत्री को देखने वाले सच्चे भृगु ऋषि
अचानक के पेपर में सदा पास होने वाले
परमात्म-प्रेमी और सर्व को परमात्म-प्रेमी बनाने वाले
दूसरे के दुख-दर्द को अपना समझकर सर्व के दुख दूर करने के संकल्प वाले
अपने स्वमान में रहते सर्व के प्रति सम्मान रखने वाले
गिरे हुओं और गरीबों को भी गले लगाकर गरीब-निवाज को प्रत्यक्ष करने वाले
गुणग्राही और गुणों का दान करने वाले
सदा सर्व की विशेषताओं को देखने और उनकी विशेषताओं को सेवा में लगाने वाले
जाति-पांति, धर्म, भाषा भेद से ऊपर सर्व प्रति समान दृष्टि और सर्व को गले लगाने वाले
विश्व-नाटक के ज्ञान को यथार्थ रीति धारण कर सर्व के प्रति निर्दोष दृष्टि वाले
सर्व के दिलों को जीतने वाले मास्टर-दिलाराम
निस्वार्थ और निष्काम सेवाधारी
निन्दक को भी गले लगाने वाले अर्थात् अपकारी पर भी उपकार करने वाले
अथक पुरुषार्थी, अथक सेवाधारी और निद्राजीत
गुप्त पुरुषार्थी
कर्मयोगी जीवन के प्रत्यक्ष स्वरूप
कर्म में सदा एक्यूरेट एवं पुरुषार्थ में सदा अलर्ट

दूरांदेशी बुद्धि वाले
सदा संकल्प, दृष्टि-वृत्ति, संग से देह और देह की दुनिया से न्यारे, सदा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने और कराने वाले।
स्वयं भी सदा मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रह औरों को भी उस स्थिति का अनुभव कराने वाले
सर्व पर दया करने वाले
स्वयं धारणा कर दूसरों को शिक्षा देने वाले अर्थात् योग्य शिक्षक
स्वयं भी देह से न्यारे परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप में स्थित और दूसरों को भी उस स्थिति का अनुभव कराने वाले
नाम, मान, शान के भिखारीपन से सदा मुक्त
सदा आशावान
सदा सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्ट और प्रसन्नता की स्थिति में स्थित
इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में
सदा अपने अभीष्ठ लक्ष्य पर मन-बुद्धि से एकाग्र रखने वाले अर्जुन
सदा अपने धर्म-पथ पर अडिग रहने वाले धर्मराज युधिष्ठिर
सदा सर्व उत्तरदायित्व को निभाते भी विदेही स्थिति में स्थित विदेही जनक
सर्वात्माओं की परमपिता परमात्मा के साथ सगाई अर्थात् सौदा कराने वाले दलाल
शिवबाबा को अपना रथ देने वाले भागीरथ,
ईश्वरीय पढ़ाई के क्लास के सफल मानीटर
सदा इन्द्रियजीत
निरन्तर चिन्तनशील
सर्वस्व सफल कर सफलतामूर्त बनने वाले और दूसरों को भी सफल करने की प्रेरणा देने वाले प्रेरणा स्रोत
बाप पर बलिहार होकर विजय माला के प्रथम विजयी रत्न
सदा लव एण्ड लॉ के बैलेन्स से बच्चों की पालना करने वाले
सदा न्यारे और प्यारेपन के बैलेन्स वाले अर्थात् कमलासनधारी
स्वयं को इस दुनिया में मेहमान समझकर महान बनने वाले
कर्मातीत स्थिति के अनुभव में रहने और दूसरों को भी कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराने वाले

वाणी और मन्सा सेवा साथ-साथ वाले
सदा स्वयं को तन-मन से स्वस्थ अनुभव करने और दूसरों को भी ऐसी ही महसूसता देने वाले
सदा निष्पक्ष भाव धारण कर सर्व को निष्पक्षता का अनुभव कराने वाले
निर्संकल्प स्थिति के सफल अभ्यास से सदा निर्विकल्प स्थिति में रहने वाले
परमात्मा के बगीचे के सर्वश्रेष्ठ सुगन्धित फूल और सफल माली
सदा दर्शनीय मूर्त
आलराउण्ड पार्टधारी
सदा दुआयें देने और दुआयें लेने वाले दुआओं के अखुट भण्डार
सदा सागर के समान गम्भीर अर्थात् सब बातों को समाने वाले
सदा धैर्य से विघ्नों का सामना कर सर्व को विघ्नमुक्त बनाने वाले
मृत्यु पर विजय पाकर अमरत्व को पाने वाले
यथार्थ पुरुषार्थी जीवन के एग्जाम्पुल
त्याग से मिले भाग्य का भी त्याग करने वाले
स्थूल और अविनाशी ज्ञान-रतनों के सफल जौहरी
सदा बाप, टीचर, सत्गुरु के आज्ञाकारी अर्थात् फरमान बरदार, वफादार
ईश्वरीय ज्ञान के प्रत्यक्ष प्रमाण
विश्व के स्नेही और विश्व के सहयोगी
सर्व धर्मों का आदि पिता
मानवता के आदि पिता
साकार में होते अव्यक्त रूप का और अव्यक्त होते भी साकार के समान मिलन का अनुभव कराने वाले
सदा समर्थ बन मेहनत से मुक्त होकर, सर्व को समर्थ और मेहनत से मुक्त बनाने वाले
परमात्मा पिता के साथ रुद्र ज्ञान यज्ञ के रचता
रुद्र ज्ञान यज्ञ के प्रथम ब्राह्मण अर्थात् रक्षक
अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से वायब्रेशन और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनाने वाले
प्रभावशाली प्रतिभा वाले अर्थात् प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले
साधन होते भी साधना के जाग्रत स्वरूप में रहने वाले
परमात्मा के वारिस बनने के राज़ को समझकर, परमात्मा पिता के पूरे वर्से के वारिस बनने वाले

परमात्मा के विश्व-परिवर्तन के कार्य में सदा सहयोगी
स्थापना के कार्य में सदा परमात्मा के सहयोगी
सर्वशक्तिवान बाप पर पूरा बलिहार होकर बलवान बनने वाले
गीता ज्ञान के प्रत्यक्ष स्वरूप

## फॉलो-फादर में नम्बरवन

ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को फॉलो कर उनके समान मास्टर सर्वगुण सम्पन्न बनें, सम्पूर्ण और सम्पन्न बनें। जो ब्रह्मा बाप को अच्छी रीति फॉलो करता है, वह शिव बाप और ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बन ही जाता है।

''बाप तो बिल्कुल साधारण है। ड्रेस आदि सब वही है। कुछ भी फर्क नहीं। ... सिर्फ बाप ने प्रवेश किया और कोई फर्क नहीं। जैसे बाप बच्चों को प्यार से सम्भालते हैं, पालन-पोषण करते हैं, वैसे यह भी करते हैं। कोई अहंकार की बात नहीं है। ... बाप तो चुम्बक है।''

सा.बाबा 1.3.04 रिवा.

''सम्पूर्ण स्थिति का चित्र साकार में देखा है? ... उनके हर गुण, हर कर्म को अपने कर्म और वाणी से भेंट करो तो मालूम पड़ जायेगा कि कितना पुरुषार्थ करना है।''

अ.बापदादा 20.3.69

## शिवबाबा के सपूत बन सबूत देने वाले

ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा का सपूत बनकर उनके समान बनने का सबूत दिया अर्थात् उनके समान निराकारी, निरहंकारी बनकर दिखाया।

''आज के दिन ब्रह्मा ने बच्चे के रूप में सपूत बच्चा बनने का सबूत दिया, स्नेह के स्वरूप का सबूत दिया, समान बनने का सबूत दिया। अति प्यारे और अति न्यारेपन का सबूत दिया, बाप समान कर्मातीत अर्थात् कर्म के बन्धन से मुक्त, न्यारा बनने का सबूत दिया।''

अ.बापदादा 18.1.87

## तुरत-दान महापुण्य के प्रत्यक्ष स्वरूप
## तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क से सम्पूर्ण समर्पण कर समान बनने वाले

ब्रह्मा बाबा ने अपने तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क को एक धक से शिवबाबा को समर्पित करके उनके वर्से के अधिकारी बन गये। संकल्पमात्र भी सोचा नहीं, किसी प्रकार का विचार नहीं किया। ब्रह्मा बाबा को उनके इसी दान के फलस्वरूप शिवबाबा का पूरा वर्सा

मिला। शिवबाबा भी कहते हैं - इस समय तुम अपना तन-मन-धन मेरे को दान करते हो, उसके एवज़ में मैं तुमको स्वर्ग का वर्सा देता हूँ। इसमें जो जितना, जिस भावना और विधि से करता है, उस अनुसार उसको फल मिलता है।

''याद है ब्रह्मा बाप ने आदि में कितने समय में सब सफल किया ? अन्त तक अपना समय सफल किया। चाहे कर्मातीत भी बन गये फिर भी कितने पत्र लिखे ! समय सफल किया ना। लास्ट दिन भी मुख से महावाक्य उच्चारण किये। लास्ट दिन तक सब सफल किया, इसीलिए सफलता को प्राप्त हो गये। तो फालो फादर।... ब्रह्मा बाप ने विशेषता क्या दिखाई ? जो सोचा वह सेकेण्ड में किया। सिर्फ सोचा नहीं , सिर्फ प्लेन नहीं बनाया लेकिन प्रैक्टिकल में करके दिखाया। ऐसे फालो फादर।''

अ.बापदादा 31.12.02

''अभी बाबा पीस स्थापन करते हैं तो तुम बच्चे शिवबाबा को क्या प्राइज देते हो ? वह तुमको 21 जन्म स्वर्ग की राजधानी की प्राइज़ देते हैं, तुम बाबा को क्या देते हो ? जो जितनी प्राइज़ बाप को देते हैं, उतनी फिर बाप से लेते भी हैं। पहले-पहले इसने प्राइज़ दी। शिवबाबा तो दाता है।... इस दादा ने अपना सब कुछ दिया है, इसलिए फुल प्राइज़ भी ले रहे हैं।''

सा.बाबा 2.12.03 रिवा.

''साथ कैसे रहेंगे, समान बनने से। समानता कैसे लायेंगे ? साकार बाप के समान बनने से। अभी बापदादा कहते हो ना। उनमें समानता कैसे आई ? समर्पणता से समानता सेकेण्ड में आई। ऐसे समर्पण करने की शक्ति चाहिए।''

अ.बापदादा 1.11.70

''यह ड्रामा में नूँध है कि जो जितना करते हैं, वह उतना पाते हैं। अभी सब कुछ नई दुनिया में ट्रान्सफर करना है। इनको देखो, कितनी बहादुरी की। ... बाबा ने तो फट से दे दिया, सोचा नहीं। फुल पॉवर दे दी।... बच्चों आदि का कुछ भी ख्याल नहीं किया। देने वाला ईश्वर है तो फिर हम किसी का रेस्पान्सिबुल थोड़ेही रहे।''

सा.बाबा 13.4.05

''साथ रहना है, साथ चलना है - यह वायदा पक्का है ना सभी का। दृढ़ संकल्प वाले सदा सफलता को पाते हैं। दृढ़ता सफलता की चाबी है। जहाँ दृढ़ता सदा है, वहाँ सफलता सदा है। दृढ़ता कम तो सफलता भी कम। ... ब्रह्मा बाप की विशेषता क्या देखी ? यही देखी ना कि तुरत दान महापुण्य। ... यह एक ही महान आत्मा है, जिसकी बाल रूप से युवा रूप नारायण के रूप में पूजा है।''

अ.बापदादा 24.3.85

## सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित

आत्मिक स्वरूप की गहन और दीर्घकाल की स्थिति अर्थात् अनुभूति का पुरुषार्थ ही यथार्थ पुरुषार्थ है। ब्रह्मा बाबा ने आदि से ही आत्मिक स्वरूप का गहन अभ्यास किया और अभीष्ठ लक्ष्य को प्राप्त किया अर्थात् सदा काल उस स्थिति में स्थित होकर रहे। ब्रह्मा बाबा ने आत्मा का पाठ इतना पक्का किया जो देह भूल गई, विदेही बन गये। आत्मिक स्वरूप की स्थिति ही सर्व समस्याओं का हल और सर्व प्राप्तियों की अनुभूति का साधन है। शास्त्रों में राजा जनक का उदाहरण ब्रह्मा बाबा के इसी पुरुषार्थ और स्थिति का है।

* आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, ये विश्व-नाटक का ज्ञान परम सुखमय है, ये भूमि (परमात्मा की कर्मभूमि) परम पावन है, ये ब्राह्मण जीवन सर्वश्रेष्ठ है, ये ब्राह्मणों का संग परम श्रेष्ठ है, इस ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य सर्वोच्च है और सर्वोत्तम फल देने वाला है। ऐसे इस संगमयुगी जीवन के महत्व को जानकर इसका सुख लो और दो अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो और कराओ - यही जीवन है। ब्रह्मा बाबा ने इस स्थिति में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का परमसुख अनुभव किया और सर्वात्माओं को भी कराया। ऐसे फॉलो फादर करने वाले ही संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव कर सकते हैं और करते हैं।

''जैसे देहाभिमान नेचर और नेचुरल रहा उसी प्रकार देही-अभिमानी स्थित भी नेचुरल और नेचर हो। ... जब देहाभिमान की नेचर को नेचुरल बनाया है तो क्या बाप समान नेचर को नेचुरल नहीं बना सकते हो! ... यथार्थ नेचर बाप समान बनने की है, इसमें मेहनत क्यों ? तो बापदादा अभी सभी बच्चों की देही-अभिमानी रहने की नेचुरल नेचर देखना चाहते हैं। ब्रह्मा बाप को देखा चलते-फिरते, कोई भी कार्य करते देही-अभिमानी स्थिति नेचुरल नेचर थी।''

अ.बापदादा 15.12.02

* देह में रहते देह से न्यारे होकर परम शान्ति का अर्थात् मुक्ति का अनुभव परम अनुपम है और देह में रहते दैहिक दुनिया के व्यर्थ से मुक्त सदा समर्थ स्थिति में स्थित जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव परम सुखमय है। परमपिता परमात्मा को अपनी देह है नहीं, इसलिए वह सदा न्यारा है, उसके लिए इस मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव कर प्रश्न ही नहीं, वह तो सदा मुक्त है। मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का प्रश्न उसके लिए जिसको जीवनबन्ध का अनुभव हो। ब्रह्मा बाबा ने दोनों का अनुभव किया है, जिसके आधार पर अभी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर और करा रहे हैं। ऐसे फॉलो फादर।

* ये ईश्वरीय जीवन केवल पुरुषार्थ के लिए ही नहीं है बल्कि इसका अपना विशेष आनन्द है, जो त्रिलोक्य और तीनों कालों में मिलना सम्भव नहीं है। जो इस रहस्य को जान लेता है वही इसका आनन्द अनुभव करता है, जो सुर-दुर्लभ है। इस विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति के इस परम आनन्द को अनुभव करना ही इस ब्राह्मण जीवन की परम प्राप्ति है।।

* आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा के लिए जीवन और मृत्यु समान सुखदायी होते हैं, उसको देह और देह की दुनिया प्राय: भूली हुई ही होती है। वह सदा ही मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभवों में खोया हुआ रहता है। ब्रह्मा बाबा ने ये अनुभव किया और अपने जीवन से अनुभव कराया। अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात बिन्दु रूप में स्थित होना और सर्व को बिन्दु रूप में देखना यही सम्पूर्णता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के अभिलाषी आत्मा का अभीष्ट पुरुषार्थ है। इसी के सफल अभ्यास द्वारा ब्रह्मा बाबा ने मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव किया और सम्पूर्ण बनकर अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप को प्राप्त किया। हमको भी ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्णता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को पाना है तो उनके इन कदमों पर कदम रखकर इस स्थिति को पक्का करना है अर्थात् बाप समान बनना है। दैहिक दृष्टि ही आत्मा के पतन का मूल कारण है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख के अनुभव में मुख्य बाधा है। आत्मिक दृष्टि-वृत्ति आत्मा के उत्थान और मुक्ति-जीवनमुक्ति का मूलाधार है

## साकार लोक में साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप

ब्रह्मा बाबा को जिसने भी देखा, उसने उनको साकार लोक में फरिश्ता स्वरूप में देखा और अनुभव किया। उनको देखकर अनेकों को श्रीकृष्ण का साक्षात्कार होता था। किसको उनके ही सम्पूर्ण स्वरूप का अर्थात् फरिश्ता स्वरूप का साक्षात्कार होता था। ब्रह्मा बाबा सदा ही इस लोक से उपराम स्थिति में रहते थे। उनको देखकर दूसरों को भी उपराम होने की प्रेरणा आती थी।

''प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ चाहिए ना। जब यह सम्पूर्ण बन जाते हैं तो सूक्ष्मवतन में फरिश्ता बन जाते हैं। तुम भी फरिश्ता बन जाते हो।''

सा.बाबा 24.09.03 रिवा.

''एकाग्रता की शक्ति, मालिकपन की शक्ति सहज निर्विघ्न बना देती है, युद्ध नहीं करनी पड़ती है। एकाग्रता की शक्ति से स्वत: एक बाप दूसरा न कोई - यह अनुभूति होती है। स्वत: होगी, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही एकरस फरिश्ता स्वरूप की

अनुभूति होती है। ब्रह्मा बाप से प्यार है ना, तो ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फरिश्ता बनना।''

अ.बापदादा

एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही सर्व प्रति स्नेह, कल्याण, सम्मान की वृत्ति रहती ही है क्योंकि एकाग्रता अर्थात् स्वमान की स्थिति। फरिश्ता स्थिति स्वमान है।

''जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, वर्णन भी करते हो। जैसे सम्पन्नता का समय समीप आता रहा तो क्या देखा ? चलता-फिरता फरिश्ता रूप, देह-भान रहित। देह की फीलिंग आती थी ? सामने जाते रहे तो देह देखने में आती थी या फरिश्ता रूप अनुभव होता था ? कर्म करते भी, बातचीत करते भी, डायरेक्शन देते भी, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति की। कहते हो ना कि ब्रह्मा बाबा बात करते-करते ऐसे लगता था कि जैसे बात कर भी रहा है लेकिन यहाँ नहीं है। देख रहा है लेकिन दृष्टि अलौकिक है। यह स्थूल दृष्टि नहीं है। देह-भान से न्यारा अर्थात् दूसरे को भी देह का भान नहीं आये, न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है - देह में रहते फरिश्ता स्वरूप।''

अ.बापदादा

''जो होगा, वह देखने और सुनने का लक्ष्य है वा ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनने का है ? ... आप अपनी स्थिति की तैयारी में लगे हुए हो वा क्या होगा, क्या होगा - इस सोचने में लगे हो ?... यह हो गया - आप इन्हीं नज़ारों के समाचारों में बिज़ी होंगे वा सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो किसी भी प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करेंगे ?''

अ.बापदादा 12.12.98

''फरिश्ता बनना अर्थात् फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाप से प्यार हो। जिसका फरिश्ते स्थिति से प्यार नहीं तो ब्रह्मा बाप नहीं मानता कि उसका मेरे से प्यार है। प्यार का अर्थ ही है समान बनना। ... अगर बाप से सच्चा प्यार है तो इस वर्ष में फरिश्ता समान बनकर दिखाओ।''

अ.बापदादा 8.4.92

## पहले मानव जो पुरुषार्थ करके मानव से फरिश्ता बने

ब्रह्मा बाबा विश्व में पहले मानव हैं, जो पुरुषार्थ करके मानव से फरिश्ता बने और साकार रूप में भी अपने जीवन से फरिश्ता स्वरूप को प्रत्यक्ष किया और कराया तथा आज भी सूक्ष्म वतन से फरिश्ता स्वरूप में कर्तव्य कर रहे हैं। अनेकों को उनके फरिश्ता स्वरूप का साक्षात्कार होता है, उनसे प्रेरणायें मिलती हैं।

''जैसे ब्रह्मा बाप को देखा। ... ऐसे बच्चों में भी सम्पूर्णता के समीप आने की निशानी स्वयं भी समीपता का अनुभव करेंगे और औरों को भी अनुभव होगा। व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की

अनुभूति करेंगे। जिससे सामने आने वाली आत्मायें भी व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी। यह है समीपता की निशानी।''

अ.बापदादा 18.11.81

''फिर आओ मनुष्य सृष्टि पर, उसमें ऊंच किसको रखें ? प्रजापिता। यह तो कोई भी समझ सकते हैं कि मनुष्य सृष्टि का जो झाड़ है, उसमें ब्रह्मा हो गया मुख्य। शिव तो है आत्माओं का बाप। ब्रह्मा को रचता कह सकते हैं मनुष्यों का परन्तु किसकी मत पर करते हैं ? बाप कहते हैं मैं ही ब्रह्मा को एडॉप्ट करता हूँ। ... प्रजापिता ब्रह्मा तो नई सृष्टि रचते हैं। न्यू मैन द्वारा नई सृष्टि बनाते हैं। वास्तव में सतयुग का पहला बच्चा जो होता है, उनको ही न्यू कहेंगे। ... पुराना मैन ब्रह्मा को न्यू मैंन बनाता हूँ।''

सा.बाबा 10.11.03 रिवा.

''कहावत है ना कि फरिश्तों के पांव पृथ्वी पर नहीं होते। तो अभी यह बुद्धि पृथ्वी अर्थात् प्रकृति के आकर्षण से परे हो जायेगी फिर कोई भी चीज नीचे नहीं ला सकती है।''

अ.बापदादा 1.11.70

''बच्चों को व्यक्त में रहते अव्यक्त फरिश्ता बनना है। ... अन्त में आप सब बच्चों को व्यक्त में अव्यक्त फरिश्ता बन विश्व-कल्याण के सेवा की रफ्तार तीव्र कर समाप्ति और सम्पन्न होना है और करना है।''

अ.बापदादा 12.12.98

''आदि देव कहा जाता है क्योंकि ब्रह्मा ही आदि कर्मातीत फरिश्ता बनता है। ब्रह्मा सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता . सब में नम्बरवन। ऐसा नम्बरवन क्यों बने। ... सब रूप से समर्पण बनकर दिखाया। दूसरा कदम - सहनशीलता का।... अत्याचार हुए लेकिन सहनशीलता के गुण से वा सहनशीलता की धारणा से सदा मुस्कराते रहे, कभी मुरझाये नहीं।''

अ.बापदादा 30.1.88

''अगर ब्रह्मा बाप से प्यार है तो समान (फरिश्ता अर्थात् अव्यक्त) बनकर मिलो, महान अन्तर से नहीं मिलो। समान बनकर मिलन में बहुत मज़ा है। ... समान बनकर मिलन बहुत-बहुत प्यारा है, उसका अनुभव करो।''

अ.बापदादा 8.4.92

''यह ब्रह्मा देखो ऊपर में खड़ा है और फिर यह नीचे तपस्या में बैठे हैं। इनके ही फीचर्स तुम सूक्ष्मवतन में देखते हो। यह जाकर फरिश्ते बनते हैं।... बाबा ही आकर पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाते हैं। यह बड़ी रमणीक नॉलेज है।''

सा.बाबा 5.6.07 रिवा.

## सर्व प्रकार के अनुभवों के सागर

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, वैसे ही ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है क्योंकि उनकी आत्मा सृष्टि के आदि काल में आती है और आदि से लेकर अन्त तक इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाती है, इसलिए उनको इस सृष्टि चक्र की सभी प्रकार की घटनाओं का, सुख-दुख, पुरुषार्थ में आने वाली बाधाओं और उनको पार करने आदि का सभी अनुभव है। उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति, जीवनबन्ध दोनों का भी पूरा ही अनुभव है, जो हम बच्चों के आगे वर्णन करते हैं और हम उनके अनुभवों का लाभ उठाकर यथार्थ पुरुषार्थ करने में समर्थ होते हैं। जो बच्चे ब्रह्मा बाबा के अनुभवों का लाभ उठाकर अपने जीवन को परिवर्तन करते हैं, वे ही अभी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं। परमात्मा ज्ञान का सागर है और ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है, दोनों मिलकर नई सृष्टि का निर्माण करते हैं अर्थात् पुरानी दुनिया को बदल कर नया बनाते हैं क्योंकि जीवन परिवर्तन के लिए दोनों की आवश्यकता है।

''आगे फीमेल पढ़ती नहीं थीं। मुसलमानों के राज्य में एक आंख खोलकर बाहर निकलती थीं। यह बाबा बहुत अनुभवी है। बाप कहते हैं - मैं यह सब नहीं जानता, मैं तो ऊपर में रहता हूँ। यह सब बातें यह ब्रह्मा तुमको सुनाते हैं। यह अनुभवी है। मैं तो मन्मनाभव और सृष्टि-चक्र का राज़ समझाता हूँ, जो यह नहीं जानते।''

सा.बाबा 5.11.04 रिवा.

''गांधी भी गीता पढ़ते थे, वह भी गाते थे - हे पतित-पावन सीताओं के राम। हम भी गाते थे। एक वर्ष खादी का कपड़ा आदि पहना। बाप बैठ समझाते हैं कि यह भी गांधी का फालोअर बना था, इसने तो सब कुछ अनुभव किया। फर्स्ट सो लास्ट बन गया, अब फिर फर्स्ट बनना है।''

सा.बाबा 19.8.04 रिवा.

## नव-विश्व के रचता अर्थात् नव-विश्व के रचता परमात्मा के साथ नव-विश्व की रचना में सहयोगी

शिवबाबा को नव-विश्व का रचता कहा जाता है तो ब्रह्मा को भी नव-विश्व का रचता कहा जाता है। निराकार शिवबाबा ही ज्ञान का सागर है। निराकार शिवबाबा ब्रह्मा के तन का आधार लेकर नये विश्व की रचना करते हैं, इसलिए दोनों ही नव-विश्व के रचता हो गये। परन्तु ब्रह्मा बाबा ने ब्राह्मणों की रचना और पालना में जो योगदान किया, वह स्मरणीय और अवर्णनीय है। ब्रह्मा बाबा का वह योगदान ही नव-विश्व की रचना का आधार है। जैसे कोई भी सिक्का एक पहलू का नहीं होता है। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। इसी तरह नव-विश्व की

रचना में निराकार बाप और साकार ब्रह्मा बाप दोनों का समान सहयोग है और दोनों का ही समान महत्व है। दोनों के सहयोग के आधार पर ही इस ब्राह्मण जीवन की सफलता है। इसीलिए गायन है - गुरु-गोविन्द दोनों खड़े ... जो गोविन्द दियो मिलाय। भारत में परमात्मा के दो रूप गाये हुए हैं - साकार और निराकार। दोनों का ही समान महत्व है।

परमात्मा को भी विश्व का रचता कहा जाता है और ब्रह्मा को भी विश्व का रचयिता कहा जाता है। विश्व एक है तो एक विश्व के दो रचता कैसे हैं, ये एक गुह्य पहेली है। वास्तव में नये विश्व स्वर्ग की रचना का ज्ञान देना शिवबाबा का काम है परन्तु उसकी रचना करना ब्रह्मा बाबा का काम है क्योंकि रचना वही कर सकता है, जिसको उसका अनुभव हो। शिवबाबा ने ये भी कहा है कि नये विश्व की जो रचना करेगा, उसमें जो सहयोगी बनेगा, वह उसकी पालना करेगा और वही उसके सुख का उपभोग भी करेगा। शिवबाबा को सुख का उपभोग करना ही नहीं है क्योंकि वह अभोक्ता है। इसलिए वह स्वर्ग की रचना नहीं रचता परन्तु स्वर्ग की रचना का ज्ञान देता है। किसी कर्म की सफलता में ज्ञान और अनुभव दोनों की आवश्यकता होती है। शिवबाबा ज्ञान का सागर है और ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है। ब्रह्मा बाबा को कल्प के आदि से अन्त तक का और सुख-दुख दोनों का ही पूर्ण अनुभव है।

''ब्रह्मा की रचना दो प्रकार की गाई हुई है। एक ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले और दूसरी रचना - ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची। तो ब्रह्मा बाप ने कितने समय से श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प किया! ... तो ब्रह्मा ने विशेष श्रेष्ठ संकल्प से आवाह्न किया अर्थात् रचना रची। ... कइयों को अनुभव भी है कि जैसे बुद्धि को विशेष कोई प्रेर कर समीप ला रहा है। ब्रह्मा के शक्तिशाली संकल्प के कारण ब्रह्मा के चित्र को देखते ही चेतन्यता का अनुभव होता है।''

अ.बापदादा 29.3.86

## निश्चयबुद्धि विजयन्ति के प्रत्यक्ष स्वरूप

निश्चय केवल ज्ञान का ही नहीं परन्तु हर बात के विषय में निश्चय होता है और वह निश्चय हर बात में काम करता है। अगर किसी बात में निश्चय है और उसमें दृढ़ विश्वास कि ये बात अवश्य होगी, तो वह अवश्य होती है क्योंकि निश्चय दृढ़ होने के कारण उसके अनुरूप ही संकल्प और कर्म होते हैं, जिनके परिणाम स्वरूप उसमें सफलता अवश्य होती है। इसीलिए 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति' कहा जाता है। ब्रह्मा बाबा को जिस दिन साक्षात्कार हुआ, उसी दिन से उनको दृढ़ निश्चय हो गया कि मैं अवश्य नारायण बनूँगा।

उसके बाद शिवबाबा ने जो ज्ञान दिया, जो श्रीमत दी, उसमें ब्रह्मा बाबा को दृढ़ निश्चय रहा कि ये सत्य है और ये बात अवश्य होगी। ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान की हर बात पर

पक्का निश्चय रखा, ड्रामा के पट्टे पर खड़े होकर सारा कार्य किया और हर बात में सफलता प्राप्त की। यज्ञ के बेगरी पार्ट के समय या समय-समय पर यज्ञ में आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों के समय भी निश्चय रखा कि यज्ञ बाप का है बाप अवश्य सम्भालेगा, अहित हो नहीं सकता और उस निश्चय के परिणाम स्वरूप स्वयं भी निश्चिन्त रहे और बच्चों को भी निश्चिन्त रखा और सफलता प्राप्त की। अपने निश्चय, विश्वास और अथक पुरुषार्थ के आधार पर ही बाबा ने कर्मातीत बनकर फरिश्ता स्वरूप धारण किया और अभी भी फरिश्ता स्वरूप से यज्ञ की सम्भाल कर रहे हैं। बिना निश्चय और विश्वास के आत्मा निश्चिन्त नहीं रह सकती और यथार्थ पुरुषार्थ नहीं कर सकती।

''बाबा खुद वण्डर खाता था कि इतने सब कैसे भागे हैं। निश्चय बात बिल्कुल और है। इसमें बहाना चल न सके। बाप से वर्सा लेकर फिर मरे। इसको कहा जाता है निश्चय। विश्व का मालिक बनाने वाला आ जाये, उनसे मिलने से कोई रोक न सके। निश्चय हो तो वह रात को भी टिकट ले भागे। बाबा को बाबा मिला तो झट सब कुछ छोड़ दिया ना।''

सा.बाबा 27.5.71 रिवा.

''जिसको कल्याण करने की आदत पड़ जायेगी, वह फिर कल्याण करने बिगर रह न सकेंगे। बाप सर्विस की युक्तियाँ बतलाते हैं। ज्ञान और योग पूरा है तो कोई भी बेइज्जत कर न सकेंगे, योग न है तो माया का थप्पड़ लगता है।''

सा.बाबा 5.3.69 रिवा.

* जब हम निश्चयबुद्धि होकर सच्ची दिल से बाबा के बन जाते हैं, उनकी श्रीमत पर चलते हैं तो संगमयुग की परम प्राप्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अवश्य होता है और ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है। ब्रह्मा बाबा का उदाहरण हमारे सामने हैं कि कैसे उन्होंने सच्चे दिल से अपना सबकुछ बाबा के अर्पण कर दिया और बाबा का बनते ही मुक्ति-जीवनमुक्ति की परम प्राप्ति का अनुभव किया और निरन्तर उसमें उन्नति का अनुभव किया। यदि इस मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति में कोई कमी है तो ये स्पष्ट है कि हमारे निश्चय और सच्ची दिल में कहाँ न कहाँ कोई कमी अवश्य है।

''तीसरा भाग्य का सितारा है - सर्व प्राप्तियाँ। गायन है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। याद करो अपने खज़ानों को। ... दिल से कहा मेरा बाबा और खज़ाने हाजिर। इसलिए इतना श्रेष्ठ भाग्य सदा स्मृति में रहें - इसमें नम्बरवार हैं। अभी बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा जब कोटों में कोई है तो सब बच्चे नम्बरवार नहीं, नम्बरवन होने हैं। जो इतने निश्चयबुद्धि हैं कि हम सदा जैसे बाप ब्रह्मा नम्बरवन, ऐसे फॉलो ब्रह्मा बाप नम्बरवन हैं और

रहेंगे, वे हाथ उठाओ।''

अ.बापदादा 15.12.03

''साहूकार अपने को स्वर्ग में समझते हैं, वह सब उनकी बुद्धि से निकल नहीं सकता। यहाँ तो बाप कहते हैं - सब कुछ भूल जाओ, बेगर बन जाओ। ... सब एक जैसे निश्चयबुद्धि नहीं हैं। जैसे बाबा ने किया, बाबा को फॉलो करना चाहिए।''

सा.बाबा 7.4.04 रिवा.

## सदा एक परमात्मा पिता की श्रीमत पर चलने वाले

ब्रह्मा बाबा के तन में जब से शिवबाबा ने प्रवेश किया और ब्रह्मा बाबा को ज्ञान मिला और बाबा ने शिवबाबा को पहचाना, तब वे सदा ही बाबा की श्रीमत पर चले। यद्यपि उनके तन में शिवबाबा की प्रवेशता थी फिर भी बाबा अनेक बार संदेशी बहनों के द्वारा अपने संकल्प की यथार्थता को भी शिवबाबा से से पुष्टि कराते थे और उस अनुसार ही कर्म करते थे। बाबा का हर कर्म शिवबाबा की श्रीमत अनुसार होता था। शिवबाबा ज्ञान का सागर है वह ब्रह्मा तन से मुरली चलाते थे और ब्रह्मा बाबा उस मुरली को अपने कर्म के द्वारा प्रत्यक्ष करते थे।

इस ब्राह्मण जीवन में कोई अकृत्य करते, श्रीमत का उलंघन करते या करके छिपाते तो वह हमारे संकल्प को डिस्टर्व अवश्य करता है, जिससे हम इस जीवन की परम प्राप्ति अर्थात मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति के परम सुख से वंचित हो जाते हैं क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का मूलाधार है - निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति।

''बाबा को यह सब पढ़ने का बहुत शौक रहता था। छोटेपन में वैराग्य आता था। फिर एक बार बाइसकोप देखा, बस वृत्ति खराब हुई, साधूपना बदल गया।... बाबा ने इसमें प्रवेश किया तो कितनी गाली खाई। ... बाबा ने कहा - इतनी बड़ी स्थापना करनी है, सब इस सेवा में लगा दो। एक पैसा भी किसको देना नहीं है। नष्टोमोहा इतना चाहिए।''

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''ब्राह्मण बच्चों के लिए इस नव युग में हर घड़ी नई है, हर स्वांस नया है, हर संकल्प नया है ... सदा दिलखुश मिठाई बांटते रहना। ... आपने बांटी लेकिन किसी ने न ली तो भी आपका आज्ञाकारी बनने का चार्ट बापदादा के पास जमा हो गया। ... नाराज़ हो गया। वह राज़ को नहीं जानता इसलिए नाराज़ हो गया। आप तो राज़ को जानते हो ना कि यह हिसाब-किताब वा समस्या के वश है।''

अ.बापदादा 31.12.98

## अटल निश्चय और दृढ़ विश्वास रखने वाले

ब्रह्मा बाबा का अज्ञानकाल में भी परमात्मा में दृढ़ विश्वास था, जो ज्ञान मार्ग में और सुदृढ़ हो गया। परमात्मा में, परमात्मा के हर बोल, परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान में, परमात्मा के कर्तव्य में ब्रह्मा बाबा का निश्चय और विश्वास सदा दृढ़ रहा, उसमें कभी भी और किसी भी परिस्थिति में अंशमात्र भी कमी नहीं आई। जिस निश्चय और विश्वास के आधार पर वे सदा हर कर्म में विजयी रहे, सदा आगे बढ़ते रहे और उनके प्रतिद्वन्दियों ने भी उनका लोहा माना। उनके अटल निश्चय ने अनेक आत्माओं में भी निश्चय को दृढ़ किया और उन्होंने श्रेष्ठ जीवन बनाने की बाबा से प्रेरणा ली।

''अभी तुम समझते हो हम हैं ब्राह्मण कुल के, हम शूद्र कुल के मेम्बर कैसे बन सकते हैं व हम अपने को विकारी कुल में कैसे रजिस्टर्ड कर सकते हैं, इसलिए ना कर देते। हम हैं आस्तिक, वे हैं नास्तिक। वह हैं ईश्वर को न मानने वाले, हम हैं ईश्वर से योग रखने वाले।''

सा.बाबा 20.11.03 रिवा.

## सर्वंश एवं सर्वस्व त्यागी

त्याग, भाग्य का प्रथम कदम है। त्याग से भाग्य का गायन है। ब्रह्मा बाबा ने जो त्याग किया, वह सबके लिए उदाहरण बन गया और उसके परिणाम स्वरूप ही उन्होंने इतना श्रेष्ठ भाग्य पाया और नये विश्व में प्रथम नारायण पद पाया। त्याग करने के बाद ब्रह्मा बाबा ने संकल्प मात्र भी उसकी ओर नहीं देखा। त्याग चाहे धन-सम्पत्ति का हो, मान-शान का हो, चाहे विकारी स्वभाव-संस्कारों का हो, सम्बन्धों का हो, सबको ब्रह्मा बाबा ने अंश और वंश सहित एकधक से त्याग कर दिया। बाबा ने त्याग करने के बाद कभी संकल्प भी नहीं आया कि मैंने त्याग किया और कभी भी अपने त्याग का वर्णन भी नहीं किया। सदा अपने भाग्य का गुणगान किया कि उनको शिवबाबा से क्या भाग्य मिला है। बाबा तो कहते थे - मैंने गधाई को छोड़कर राजाई ली है। बाबा ने समर्पित होने के बाद पैसे को स्पर्श भी नहीं किया।

''जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया। स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा। बच्चों की विस्मृति के कारण दुख का अनुभव सो अपना दुख समझा। बच्चों की गलती भी अपनी गलती समझ बच्चों को सदा राइटियस बनाया। इसको कहा जाता है परोपकारी।''

A.B.D. 12.12.78 दीदी के साथ

''जैसे आदि में ब्रह्मा बाप ने स्थूल धन विल किया बच्चों को, ऐसे आज के दिन अपनी अलौकिक प्रॉपर्टी बच्चों को विल की। तो आज का दिन बच्चों को विल करने का दिवस है। ... वह विल पॉवर प्रत्यक्ष फल दिखा रही है।''

अ. बापदादा 18.1.82

''देही-अभिमानी को धारणा अच्छी रीति हो सकती है। इसलिए कहा जाता है फॉलो फादर। एक्ट में भी फादर आते हैं। फादर तो दोनों हो जाते हैं। यह कौनसा फादर कहते हैं, सो तुमको थोड़ेही पता पड़ता है क्योंकि बाप-दादा दोनों इस शरीर में हैं। एक जो एक्ट में आते हैं, उसे फॉलो किया जाता है। बाप समझाते हैं - बच्चे, देही-अभिमानी बनो। ... बाबा अपने पास कभी भी ऊंची वस्तु नहीं रखते।'' सा.बाबा 27.11.03 रिवा.

## त्याग में भाग्य की अनुभूति करने वाले

त्याग तो दुनिया में अनेक लोग करते भी हैं और किया भी है परन्तु त्याग में भी भाग्य की अनुभूति हो अर्थात् त्याग भी सुखदायी अनुभव हो, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण ब्रह्मा बाबा का देखा। बाबा के मुख या स्वरूप से कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि बाबा के अन्दर त्याग का कोई नशा या त्याग की कोई फीलिंग हो या त्याग के रिटर्न में कोई इच्छा है। नहीं, सदा ही ब्रह्मा बाबा को अपने भाग्य के नशे में देखा।

''त्याग करो तो भाग्य आपही आपके पीछे आयेगा। इच्छा, अच्छा कर्म समाप्त कर देती है। इसलिए इच्छामात्रम् अविद्या कहा जाता है। ... किसी भी प्रकार के मांगने वाला स्वयं को तृप्तात्मा अनुभव नहीं करेगा। तो सदा सर्व प्राप्तियों से तृप्तात्मा बनो। ब्राह्मण जीवन का स्लोगन है - 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु मास्टर सर्वशक्तिवान के खज़ाने में'।''

अ.बापदादा 27.11.78

''त्याग को त्याग न समझ भाग्य अनुभव करना, इसको कहा जाता है - सच्चा त्याग। अगर संकल्प में, वाणी में भी इस भावना का बोल निकलता है कि मैं ने यह त्याग किया, तो उसका भाग्य नहीं बनता है।'' अ.बापदादा 28.1.77

## सदा सारथी बनकर कर्मेन्द्रियों को चलाने वाले स्वराज्य अधिकारी

ब्रह्मा बाबा ने पहले भी बहुत पुरुषार्थ कर अपनी कर्मेन्दियों को नियन्त्रण में रखा और शिवबाबा के बनने के बाद तो अपनी स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों के राजा बन गये और मन-बुद्धि-संस्कार सहित सर्व कर्मेन्द्रियों को अपने नियन्त्रण में रखकर स्वराज्य अधिकारी बन गये। बाबा बच्चों को भी कहते थे - जो जितना यहाँ स्वराज्य अधिकारी बनेंगा, वही भविष्य में विश्व का राज्य अधिकारी बनेगा।

''स्व के संस्कार ही स्वराज्य को खण्डित कर देते हैं। उसमें भी विशेष संस्कार व्यर्थ सोचना, व्यर्थ समय गँवाना, व्यर्थ बोल-चाल में आना ... एक तरफ व्यर्थ के संस्कार और दूसरी

तरफ अलबेलेपन के संस्कार स्वराज्य को खण्डित कर देते हैं।''

अ.बापदादा 15.3.99

''मन अर्थात् सूक्ष्म शक्ति कन्ट्रोल में आनी चाहिए। लाना ही है। ऑर्डर करो - स्टॉप तो स्टॉप हो जाये, सेवा का सोचो तो सेवा में लग जाये। परमधाम में चलो तो परमधाम में चला जाये ... जो सोचो, वह ऑर्डर में हो। अभी इस शक्ति को बढ़ाओ।''

अ.बापदादा 15.3.99

## साक्षी और साथीपन की निरन्तर अनुभूति में रहने वाले

ब्रह्मा बाबा के तन में शिवबाबा की प्रवेशता तो थी ही लेकिन बाबा ने पुरुषार्थ करके बाबा को सदा साथ रखा अर्थात् बाबा की याद सदा जाग्रत रखी और बाप समान इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाते हुए इसको साक्षी होकर देखा। बाबा कभी भी ड्रामा के पट्टे से नीचे नहीं आये। यज्ञ में अनेक प्रकार के विघ्न आये, मित्र-सम्बन्धी विरोधी बन गये, अनेक प्रकार के हंगामें हुए लेकिन ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को साथी बनाकर, उनके समान साक्षी बनकर सबको सदा पार किया। मम्मा, भाऊ विश्वकिशोर जैसे सहयोगियों ने भी इस पार्थिव देह का त्याग किया तो भी बाबा ने उसको साक्षी होकर देखा और बच्चों को सान्त्वना दी, सम्भाला। यज्ञ के बेगरी पार्ट को भी साक्षी होकर देखा और बाबा को साथ रखकर पार किया। आज भी साक्षी होकर सूक्ष्मवतन से सारा पार्ट देख रहे हैं और बच्चों को आगे बढ़ने की शिक्षा और सहयोग दे रहे हैं।

''ब्रह्मा बाप नम्बरवन बना। क्या विधि अपनाई, जो इस सिद्धि को प्राप्त किया ? विधि है - सदा अपने को सारथी और साक्षी समझकर चलना।''

अ.बापदादा 9.12.89

''थोड़ी सी चीज न मिलने से दुख होता है। पाई पैसे की चीज न मिलने से मुरझा जाते हैं। यह सब है देहाभिमान का रोला। बाप कहते हैं - मैं साक्षी होकर देखता हूँ। कितने बच्चे विनाश को पाते हैं। कहेंगे यह भी ड्रामा। हम अशरीरी हैं, जैसे मरे पड़े हैं, दुनिया भी मरी पड़ी है। हमारा इस दुनिया से कोई काम नहीं है, हमारा काम है स्वीट होम से। अपनी अवस्था को जमाना है।'' सा.बाबा 1.11.73 रिवा.

''शिवबाबा की जादूगरी थी। बच्चों को बहलाने के लिए कब्रिस्तान बनाते थे। यह भी पार्ट था, जो बन्द हो गया है। बचपन, युवा, वृद्ध का अलग-2 पार्ट बजता है। जो हुआ सो ड्रामा। उसमें कुछ संकल्प आदि नहीं चलता। यह तो ड्रामा बना हुआ है ना।''

सा.बाबा 24.5.69 रिवा.

## साक्षी और ट्रस्टी स्थिति वाले

ट्रस्ट और ट्रस्टियों की यथार्थता पर विचार करें तो देखेंगे कि ट्रस्ट का लक्ष्य या एम एण्ड आब्जेक्ट किसी न किसी रूप में किसी न किसी का कल्याण करने का ही होता है, इसलिए ट्रस्टियों को अपनी सेवा के प्रतिफल के रूप में कोई स्थूल वस्तु या धन की इच्छा नहीं रहती है। किसी का कल्याण हो, उसमें ही उनको खुशी होती है, सन्तुष्टि होती है। ब्रह्मा बाबा को अपना कोई स्वार्थ न होकर आत्माओं को सुख देने में ही खुशी होती थी, इसलिए वे सदा ट्रस्टी होकर यज्ञ को सम्भालते थे और कहते थे - यह यज्ञ बाबा का है, मैं तो ट्रस्टी हूँ।

## ड्रामा के पट्टे पर अटल-अचल, निश्चयबुद्धि

जैसे शिवबाबा को ड्रामा का पूरा ज्ञान है, वैसे ब्रह्मा बाबा ने भी ज्ञान को समझकर अटल-अचल, निश्चयबुद्धि बनकर ड्रामा के पट्टे पर खड़े हो गये। बाबा को ड्रामा का ज्ञान ऐसा पक्का था, जो किसी भी घटना में ज़रा भी व्यर्थ संकल्प नहीं चलता था। हर बात में जो हुआ, सो ड्रामा, अब आगे क्या करना है, उसका पुरुषार्थ करना है।

''हमको सभी बात पसन्द है क्योंकि यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है। हार-जीत का खेल है। जो होता है सो ठीक। क्रियेटर को ड्रामा पसन्द तो होगा ना। जरूर क्रियेटर के बच्चों का भी ड्रामा में पार्ट है। ड्रामा सारा अच्छा है। ड्रामा को बुरा क्यों कहेंगे, ड्रामा का राज़ बुद्धि में है।... बहुत सुन्दर नाटक बना हुआ है। नाटक में सुख-दुख सभी पार्ट को देख खुशी होती है। यह भी बेहद का खेल बड़ा फाइन बना हुआ है। सो तो पसन्द ही आना चाहिए। ... बहुत फर्स्ट क्लास खेल है। इसको जानने से बुद्धि पूर हो गई है। हम इस खेल को जान गये तो समझते हैं मज़ा ही मज़ा है। ... सारा दिन बुद्धि में यह ख्याल चलना चाहिए - कैसा वण्डरफुल खेल है।... इस वण्डरफुल ड्रामा को भी नहीं जानते। जो अच्छी रीति जानते हैं, समझते हैं और समझाते हैं, उनको जरूर खुशी का पारा चढ़ता होगा। जो बहुत दान करते हैं, उनको नशा भी होगा ना।''

सा. बाबा 21.4.72 रिवा.

''ज्ञान कितना सहज है परन्तु पूरी धारणा नहीं कर सकते हैं। बाबा को देखो ड्रामा पर कितना निश्चय है। जो पास हुआ सो ड्रामा। ऐसे नहीं कहना चाहिए कि ऐसा होता तो यह न करते .... आगे के लिए भल पुरुषार्थ करो, जो कोई भूल न हो।''

सा. बाबा 22.2.69 रिवा.

''इतनी हिम्मत भी तो चाहिए ना। इस बाप के सामने कितने हंगामें हुए, बाबा को कभी रंज हुआ देखा! ...'नथिंग न्यू', यह तो कल्प पहले मुआफिक होता है, इसमें डर की बात क्या है।

हमको तो अपने बाप से वर्सा लेना है। ... बाप समझाते हैं कि बच्चे कोई भी बात में डरो मत। डरने से इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 10.10.01 रिवा.

## आदि से अन्त तक एकरस स्थिति में रहने वाले अर्थात् जीवन में उतार-चढ़ाव से मुक्त सदा एकरस चढ़ती कला में रहने वाले

ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ में कब उतार-चढ़ाव नहीं दिखाई दिया। वे सदा एकरस स्थिति में रहते हुए अपनी चढ़ती कला में आगे बढ़ते रहे।

''बच्चों का लक्ष्य सूर्यवंशी बनने का है। नम्बरवन सूर्यवंशी की निशानी है सदा विजयी। सूर्य की कलायें कम या ज्यादा नहीं होती हैं। तो सूर्यवंशी की निशानी है सदा एकरस और सदा विजयी। ... नम्बरवन अर्थात् फॉलो ब्रह्मा बाप।''

अ.बापदादा 12.12.98

## विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा के जाग्रत स्वरूप से 'नथिंग न्यू' का पाठ पक्का करके सदा निश्चिन्त

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा की कसौटी है - निर्संकल्प, निर्विकल्प और निश्चिन्त स्थिति अर्थात् निरन्तर मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति।

''बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है। पक्के रहेंगे तो उस ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।''

सा.बाबा 23.12.68 रात्रि क्लास

* ड्रामा के यथार्थ ज्ञान और आत्मा के यथार्थ अस्तित्व को जानकर संकल्प-विकल्प से मुक्त निर्संकल्प होकर ही सच्ची मुक्ति का अनुभव कर सकते हैं। अंशमात्र का संकल्प-विकल्प सच्ची मुक्ति का अनुभव करने नहीं देगा। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर व्यर्थ संकल्पों से मुक्त निर्विकल्प स्थिति में स्थित होकर ही सच्ची जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकते हैं। ड्रामा के इस सत्य को और समय के महत्व को जानकर सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना और कराना ही इस जीवन की परम प्रापति है।

## ज्ञान की पराकाष्टा और निर्मानता के स्तम्भ

गायन है विद्या ददाति विनयम्। फलों से भरपूर वृक्ष झुक जाता है। भरे हुए तर्तन में

पानी उछलता नहीं है, शान्त रहता है। सागर के तले में रतन होते हैं, वहाँ जल शान्त होता है आदि आदि बातों की सत्यता पर विचार करते हैं तो समझ में आता है ज्ञान की पराकाष्टा आत्मा में निर्मानता लाती है।

ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा के समान ही अपने में ज्ञान को धारण किया, जिस धारणा से वे निर्मान बन गये। उनमें रिंचक मात्र भी ज्ञान का अहंकार दिखाई नहीं देता था। उन्होंने सदैव बच्चों के साथ और बाहर के व्यक्तियों के साथ निर्मान होकर ही व्यवहार किया। शिवबाबा तो निराकार है परन्तु ब्रह्मा बाबा के साकार होते भी उनमें कभी मान की इच्छा नहीं देखी। बाबा ने सदैव शिक्षा दी कि दूसरों को मान देने से मान मिलेगा, मांगने से मान नहीं मिलता है। जैसे फलों से भरपूर वृक्ष झुक जाता है वैसे ही बाबा की नम्रता, उनमें ज्ञान, गुण, शक्तियों की भरपूरता को प्रदर्शित करती थी। ब्रह्मा बाबा ज्ञान की अथॉरिटी होते भी सदा नम्रता से व्यवहार करते थे।

''मुरलियों को सुनते हुए कोई भी अभिमान नहीं कहेगा, अथॉरिटी से बोलते हैं, यह कहेंगे।... ऐसे एक सर्वव्यापी की बात रखें, दूसरा नाम-रूप से न्यारे की रखें, तीसरा ड्रामा की प्वाइन्ट बुद्धि में रखें। ... अनुभव और प्राप्ति के आधार से स्पष्ट करते जायें, जिससे समझें कि इस सत्य ज्ञान से ही सतयुग की स्थापना हो रही है।''

अ.बापदादा 12.3.85

## ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा को अपने तन में धारण करने वाले ज्ञान-मानसरोवर, भागीरथ

ज्ञान सागर परमात्मा हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा ने ज्ञानसागर परमात्मा अपने तन में धारण कर, उनके गुण-कर्तव्यों को अपने कर्मों के द्वारा प्रत्यक्ष किया और परमात्मा के द्वारा दिया गया ज्ञान जल स्वयं में धारण कर औरों को भी धारण करने की प्रेरणा दी। ब्रह्मा बाबा ही सच्चे-सच्चे ज्ञान-मानसरोवर और भागीरथ हैं। भागीरथ अर्थात् भाग्यशाली रथ और भागीरथ अर्थात् एक रथ के शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों भागीदार हैं।

''मनुष्य मानसरोवर का अर्थ भी नहीं समझते हैं। मानसरोवर अर्थात् निराकार परमात्मा ज्ञान सागर मनुष्य के तन में आकर यह ज्ञान सुनाते हैं। ... जानते भी हो हमारे मम्मा-बाबा बहुत अच्छी रीति पुरुषार्थ करते हैं, तो क्यों नहीं हम भी ऐसा पुरुषार्थ कर बाप से वर्सा लेवें।''

सा.बाबा 19.10.03 रिवा.

''यह ज्ञान-मानसरोवर है, परमपिता परमात्मा इस मनुष्य तन में आकर इन द्वारा ज्ञान सुनाते हैं, इसलिए इनको मानसरोवर कहा जाता है। ... प्रजापिता ब्रह्मा है सर्व मनुष्यात्माओं का बाप, फिर उनसे और सब बिरादरियाँ निकलती हैं, नाम बदलते जाते हैं।''

सा.बाबा 17.11.03 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम हमारी मत पर चलेंगे तो ऐसा लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। ... यह बाबा भी उस निराकार से ही मत लेते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर तुमको मत देते हैं। ... शिवबाबा इस मुख द्वारा तुम आत्माओं से बात करते हैं।''

सा.बाबा 23.3.07 रिवा.

## शिवबाबा की मुरली से अगाध प्यार और बच्चों में भी मुरली के प्रति प्यार जाग्रत करने वाले

ब्रह्मा बाबा को शिवबाबा की मुरली का कितना कदर था और मुरली से कितना प्यार था, वह बाबा के निम्नलिखित महावाक्यों से स्पष्ट प्रतीत होता है।

''बच्चों को एक दिन भी मुरली मिस न करनी चाहिए। बच्चे बाबा के पास मिलने आते हैं तो बाबा पहले पूछते हैं कि आज की मुरली सुनी है? नहीं सुनी है तो पहले मुरली सुनों फिर मिलूँगा। बच्चों में शौक होना चाहिए।... कोई समय ऐसी अच्छी प्वाइन्ट निकलती है जो झट कोई को तीर लग जाये।... वास्तव में तुम बच्चों की खुशी का सारा आधार इस पर है। कमाई भी इसमें है। गाया भी हुआ है कि अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। गोप-गोपियाँ तुम हो।... बाकी कृष्ण ने किसको सुख नहीं दिया।''

सा. बाबा 16.4.72 रात्रि क्लास रिवा.

कई बार बाबा ने मुरली में कहा है कि कोई बीमार है तो भी मुरली अवश्य सुननी है। नहीं बैठ सकता है तो क्लास में लेटकर भी मुरली सुनें।

बाबा कहते थे - मुरली आत्मा के लिए भोजन है। जैसे भोजन के बिना जीना असम्भव है, वैसे ही मुरली के बिना ये ईश्वरीय जीवन जीना असम्भव है, मुरली के बिना ये जीवन नीरस है।

ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी पर विचार करें तो देखते हैं बाबा ने अपने साकार जीवन के अन्तिम दिन भी मुरली चलाई। बाबा का रथ जब कभी बीमार होता था तो भी बाबा लिखकर बच्चों को मुरली देते थे। शिवबाबा ने भी कहा है कि मैं मुरली चलाता हूँ तो पहले इनके कान सुनते हैं। बाबा की इसी धारणा के कारण बाबा नम्बर वन में गये।

वास्तव में ये मुरली ही हमारी मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का आधार है। जिसको मुरली से प्यार नहीं वह कब भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा अनुभव कर नहीं सकता और मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा की मूलभूत प्यास है, चाहना है।

''बाबा कितनी गुह्य बातें सुनाते हैं। जो रोज़ नहीं सुनते, वे कोई न कोई बातें मिस कर देते हैं। मुरली रोज सुनने वाले कभी फेल नहीं होंगे। उनके मैनर्स भी अच्छे रहेंगे।''

सा.बाबा 29.5.07 रिवा.

## निरन्तर स्टूडेण्ट लाइफ में

ब्रह्मा बाबा को सदा ही स्टूडेण्ट लाइफ में देखा अर्थात् जैसे अच्छे स्टूडेण्ट पढ़ाई में अलर्ट रहते हैं और सदा उनमें सीखने की इच्छा रहती है, ऐसे ही ब्रह्मा बाबा को भी सदा शिव बाबा के ज्ञान को धारण कर जल्दी से जल्दी सम्पूर्ण होने की इच्छा बलवती रही। जैसे अच्छे स्टूडेण्ट सदा चाहते हैं कि जल्दी परीक्षा हो और हम पास होकर आगे के क्लास में जायें, ऐसे बाबा को भी सदा यही संकल्प रहा कि अचानक का पेपर कभी भी हो सकता है इसलिए हमको सदा उसके लिए तैयार रहना है और पास होकर दिखाना है। अपनी इसी धारणा के आधार पर उन्होंने इस साकार जीवन का अन्तिम पेपर पास करके दिखाया।

''बाबा है सिखलाने वाला। यह तो जानते हो कि यह बाबा अच्छी धारणा कर अच्छी मुरली सुनाते हैं। अच्छा, समझो इसमें शिवबाबा है, वह तो है ही मुरलीधर परन्तु यह बाबा भी तो जानता है ना। नहीं तो इतना ऊंच पद कैसे पाते हैं? बाबा ने समझाया है कि हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं। शिवबाबा की याद में रहने से तुम्हारा भी कल्याण हो जायेगा।''

सा.बाबा 24.11.03 रिवा.

## एक भरोसा, एक बल, एक आश-विश्वास की प्रतिमूर्ति

ब्रह्मा बाबा ने सदैव एक शिवबाबा का ही आधार लिया। कभी भी किसी मित्र-सम्बन्धी आदि से आश नहीं रखी, किसी साधन-सामग्री को आधार नहीं बनाया। यज्ञ के बेगरी पार्ट में भी एक शिवबाबा के सिवाए और किसी के सहारे की संकल्पमात्र भी आश नहीं रखी।

''सदा स्नेही आत्मा की स्थिति का ही गायन है - 'एक बाप दूसरा न कोई'। स्नेही आत्मायें न्यारी हैं, प्यारी भी हैं लेकिन बाप समान शक्तिशाली-विजयी नहीं हैं। लवलीन नहीं लेकिन स्नेही हैं। उन्होंका स्लोगन है -'तुम्हारे हैं, तुम्हारे रहेंगे।'(स्नेह के साथ ज्ञान-योग की भी धारणा हो)''

अ.बापदादा 27.3.86

''अब एक को याद करेंगे तो वर्सा पा सकेंगे। नहीं तो राजाई का वर्सा पूरा पा नहीं सकेंगे। फिर प्रजा में चले जायेंगे। बाप आकर राजाई का सुख देते हैं।... यह तो राजधानी स्थापन कर रहें हैं गुप्त वेष में।''

सा.बाबा 19.09.03 रिवा.

(केवल शिवबाबा को याद करने से शिवबाबा का ज्ञान, गुण, शक्तियों का वर्सा मिलेगा अर्थात् मुक्ति का वर्सा मिलेगा और शिवबाबा के साथ ब्रह्मा बाबा को याद करने से शान्ति और स्वर्ग का वर्सा मिलेगा अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों का वर्सा मिलेगा क्योंकि ब्रह्मा बाबा शिवबाबा की मत पर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। इस ब्रह्मा तन में शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों का कर्तव्य चल रहा है, दोनों के गुणों का अनुभव होता है।)

## नष्टोमोहा - स्मृति स्वरूप के स्तम्भ अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई

ब्रह्मा बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता होते ही अपनी देह और दैहिक सम्बन्धों, वस्तुओं और व्यक्तियों से नष्टोमोहा बन गये और शिवबाबा के ऊपर बलि चढ़ गये, जिसके परिणाम स्वरूप वे निरन्तर स्मृति स्वरूप बन गये और निरन्तर स्मृति स्वरूप होने के कारण सदा समर्थी स्वरूप में रहे और सर्व को भी अनुभव कराया। किसी भी बात में कभी भी बाबा के चेहरे और चलन में असमर्थता के चिन्ह नहीं दिखाई दिये। जो भी शिवबाबा ने कहा है, वह हमको करना ही है और वह अवश्य होगा ही - ये दृढ़ निश्चय रखा और उसको दृढ़ता से किया और वह करके ही दिखाया। नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप कहा गया है और जो सर्वशक्तिवान परमात्मा की स्मृति में होगा वह समर्थी स्वरूप अवश्य होगा।

''यह बाप कहे भ्रष्टाचारी को वर्सा मिल न सके। शादी करना चाहते हो तो वर्सा नहीं मिलेगा। प्रैक्टिकल में इनका ही मिसाल देखा ना। ऐसे बहुत मुश्किल निकलते हैं। ... बाप कहते हैं कि इस मार्ग में नष्टोमोहा अच्छा चाहिए।''

सा. बाबा 25.11.72 रिवाइज

''अगर आपको कहते कि छुट्टी लेकर आओ तो क्या आप बच्चों को छोड़ सकते थे या बच्चे आपको छोड़ सकते थे? आप अर्जुन का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा - स्मृतिस्वरूप ही रहे। ... दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज फादर का पार्ट ड्रामा की नूँध थी। इसको कहते हैं 'वाह ड्रामा वाह', सेवा का परिवर्तन नूँधा हुआ था।''

अ.बापदादा 18.1.2002

''गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो। ... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन

पढ़ाना। ... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।''

अ.बापदादा 18.1.87

''सुदामा मिसल जो ट्रान्सफर करना है वह भी करते रहो। यह भी बहुत बड़ा व्यापार है। बाबा व्यापार में बहुत फ्राकदिल थे। रुपये से एक आना धर्माऊ निकालते थे। ... वह था भक्ति मार्ग, यहाँ तो सब-कुछ बाप को दे दिया। बाबा यह सब-कुछ लो। बाप कहते हैं - तुमको सारे विश्व की बादशाही देता हूँ। सब-कुछ बाप को दे दिया तो जरूर एक बाप ही याद आयेगा।''

सा.बाबा 19.3.04 रिवा.

## एक धक से विनाशी कमाई को सच्ची अविनाशी कमाई में परिवर्तन करने वाले

भक्तिमार्ग में एक धक से बलि होने वाले का गायन है। बाबा ने प्रक्टिकल में यह करके दिखाया। जैसे ब्रह्मा बाबा ने लौकिक कमाई में निरन्तर उन्नति को पाया, ऐसे ही अपने जीवन की सारी कमाई को बाबा को समर्पित करके इस अलौकिक कमाई में पुरुषार्थ किया और निरन्तर चढ़ती कला में गये और सम्पन्न बनकर दिखाया। बाबा ने विनाशी कमाई को एक धक से शिवबाबा से भविष्य प्राप्ति का अधिकार जमा किया और अपने तन-मन को अथक बनकर सेवा में लगाकर कमाई को बढ़ाया भी। ब्रह्मा बाबा ने जो विनाशी कमाई शिवबाबा को समर्पित की, उसको ट्रस्ट बनकर पूरा सफल भी किया, जिसके फलस्वरूप यह यज्ञ इस उन्नति को पाया है अर्थात् फलीभूत हुआ है।

''बाप आते हैं जीते जी मरना सिखाने, मरना तो सारी दुनिया को है। तुमको पावन बनकर मरना है।... इसमें सच्ची कमाई होती है, फिर झूठी कमाई को क्या करेंगे। उस झूठी कमाई को सच्ची कमाई से बदली करना है। बाप ने करके दिखाया ...।''

सा.बाबा 3.6.69 रिवा.

''अब बाबा आया है, तुम्हारे से दान लेने के लिए। यह पुरानी दुनिया का सबकुछ सड़ा हुआ है, यह मुझे दे दो और इससे ममत्व मिटाओ।... बदले में नई दुनिया में सबकुछ नया मिलेगा। जिसमें मैंने प्रवेश किया है, उसने सबकुछ देकर सौदा किया। अब देखो, बदले में कितना राज्य-भाग्य मिलता है।... बाबा तो दाता है, वह तुमसे क्या लेंगे। जो कुछ लेते हैं, वह तुम्हारी सेवा में लगा देते हैं।''

सा.बाबा 28.4.07 रिवा.

''अभी लौकिक वर्से को पारलौकिक वर्से के साथ एक्सचेन्ज करो। कितना अच्छा व्यापार है।... तुम अभी लौकिक बाप का वर्सा एक्सचेन्ज करते हो, पारलौकिक वर्से से। जैसे इसने किया। कहा भी जाता है - फॉलो फादर। ... भगवान को दे दो। भगवान फिर तुमको कहते हैं - तुम ट्रस्टी बनो। भगवान ट्रसटी नहीं बनेगा, ट्रस्टी तुम बनते हो। फिर पाप तो करेंगे नहीं।''

सा.बाबा 22.4.04 रिवा.

## तन-मन-धन को ट्रस्टी बन सम्भालने और कार्य में लगाने वाले

बाबा ने अपने तन-मन-धन को समर्पण कर दिया, फिर उसमें संकल्प मात्र भी अपनत्व की भावना नहीं रखी। शिवबाबा की अमानत समझकर तीनों को ट्रस्टी बन कर अच्छी रीति सम्भाला और कार्य में लगाकर सफल किया। बाबा के मुख से सदैव यही शब्द निकलते थे कि सेठ तो शिवबाबा है मैं तो ट्रस्टी हूँ, यज्ञ को सम्भालने के लिए। शिवबाबा की श्रीमत के बिना बाबा ने एक पैसा भी खर्च नहीं किया और न किसी लौकिक सम्बन्धी को दिया। इसके विषय में यज्ञ में अनेक उदाहरण हैं। तन-मन के भी ट्रस्टी बन गये और तन-मन को भी ट्रस्टी बनकर सफल किया। एक सेकेण्ड और एक स्वांस भी व्यर्थ नहीं किया। सब शिवबाबा की श्रीमत अनुसार सफल किया।

''बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम अगर बीज नहीं बोयेंगे तो तुम्हारा पद कम हो जायेगा। फॉलो फादर। तुम्हारे सामने यह दादा बैठा है। बिल्कुल ही शिवबाबा और शिव-शक्तियों को ट्रस्टी बनाया। शिवबाबा थोड़ेही बैठ सम्भालेंगे। यह अपने पर थोड़ेही बलि चढ़ेगा। इनको माताओं पर बलि चढ़ना पड़े।''

सा.बाबा 10.12.03 रिवा.

''तुम जानते हो हम बेगर टू प्रिन्स बनेंगे।... यह बाबा तो है सबसे बड़ा बेगर। इसमें पूरा बेगर बनना होता है।... निश्चयबुद्धि ही जानते हैं - हमारा जो कुछ है, वह बाबा को दे दिया।... यह तो ट्रस्टी है। बाबा का इनमें कोई मोह नहीं है। इसने अपने पैसे में ही मोह नहीं रखा, सब कुछ शिवबाबा को दे दिया तो फिर शिवबाबा के धन में मोह कैसे रखेंगे। यह ट्रस्टी है।''

सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

## तन-मन-धन को परमात्मा के पास पूरा इन्श्योर करके पूरा राज्य-भाग्य पाने वाले

ब्रह्मा बाबा ने अपना तन-मन-धन सर्वांश सहित शिवबाबा के पास इन्श्योर कर दिया, जिसके

फलस्वरूप शिवबाबा से उनको सम्पूर्ण विश्व की बादशाही का वर्सा अपने सम्पूर्ण स्वरूप मेगं मिला, जिसके लिए बाबा कहते हैं सुख-शान्ति-पवित्रता की शत प्रतिशत स्थिति तो सृष्टि के आदि के पहले जन्म में ही होगी और उसमें ब्रह्मा बाबा का ही प्रथम जन्म श्रीकृष्ण के रूप में होगा और वे ही प्रथम राजाई के प्रथम विश्व-महाराजा बनेंगे। उसके बाद जो आत्मायें उनको फॉलो करके जितना अपना तन-मन-धन शिवबाबा के पास इन्श्योर करते हैं, वे उस अनुसार राज्य-भाग्य पाते हैं।

''अभी बॉम्बस निकाले हैं, नहीं तो सारी दुनिया का विनाश कैसे हो। उसके साथ फिर नेचुरल केलेमिटीज़ भी हैं।... अभी तुम्हें अपना सब कुछ इन्श्योर करना है बाप के पास। ... अभी तुम डायरेक्ट इन्श्योर करते हो। जो सबकुछ इन्श्योर करेगा, उनको बादशाही मिल जायेगी। यह बाबा अपना बताते हैं - सबकुछ शिवबाबा को दे दिया। फुल इन्श्योर कर लिया तो फुल बादशाही मिलती है।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

## निर्संकल्प होकर तन-मन-धन सब परमात्मा को विल करके विल पॉवर धारण करने वाले

जो परमात्मा के नाम पर जितना और जिस भावना तथा जिस स्थिति में विल करता है, वह उतना ही विल पॉवर सम्पन्न बनता है। ब्रह्मा बाबा ने निर्संकल्प होकर परमात्मा के नाम पर सब माताओं और बहनों के नाम विल कर दिया, जिसके रिटर्न में उनको परमात्मा से सम्पूर्ण विल पॉवर मिल गई अर्थात् उनके संकल्प, बोल और कर्म परमात्मा के समान ही प्रभावशाली, सफलता सम्पन्न हो गये। ब्रह्मा बाबा जो संकल्प करते थे, वह सफल होता था, जिसको जो शब्द बोलते थे, वे सफल होते थे। उनका हर कर्म सफलता सम्पन्न था और बच्चों के लिए आदर्श था, प्रेरणादायक था। आदर्श था ही नहीं बल्कि आदर्श है अर्थात् अब भी वे अव्यक्त रूप में कर्म कर रहे हैं और करा भी रहे हैं।

''विल पॉवर कैसे आ सकेगी ? विल पॉवर आने का साधन कौनसा है ? ... साकार में कर्म करके दिखाया। पहला-पहला कदम कौनसा उठाया ? सभी कुछ विल कर दिया, विल करने में देरी तो नहीं की। ... अगर कोई सोच-सोच कर विल करता है तो उसका इतना फल नहीं मिलता।''

अ.बापदादा 18.1.70

## सत्यता और शालीनता (Reality Royality) की प्रतिमूर्ति अर्थात् प्रत्यक्ष स्वरूप

बाबा की अन्तर्भावना और बाह्य व्यवहार एक समान रहा। अज्ञानकाल में भी बाबा का जीवन राजसी ठाठबाट का था और ज्ञान मार्ग में आने से और भी ज्ञान धन और दिव्य गुणों से जीवन भरपूर हो गया। जिससे उनके जीवन में चार चाँद लग गये। बाबा ने कभी भी अपने हाथ को किसी के हाथ के नीचे नहीं किया। बाबा ने कभी दूसरे धर्म, सम्प्रदाय के ज्ञान का उपहास भी नहीं किया, बल्कि सभी के प्रति सम्मान प्रगट किया। वर्तमान में ज्ञान धन का और भविष्य में राजकुमार और महाराजा बनने का नशा सदा ही बाबा के जीवन में जाग्रत रहा। बाबा के जीवन में कभी भी लोभ-वृत्ति, संग्रह-वृत्ति नहीं देखी। अपने तन-मन-धन को तो सफल किया ही लेकिन अन्य आत्माओं को भी सफल करने की प्रेरणा दी, उनका तन-मन-धन भी सफल कराया। यज्ञ में आई धन-सम्पत्ति को भी सफल किया। बाबा की सदा ही ये भावना रही कि यज्ञ में दिया और सफल नहीं हुआ तो देने वाले के भाग्य में अन्तर पड़ जायेगा, इसलिए उसको यथा शक्ति शीघ्र सेवा में लगाकर सफल किया। बाबा ने बच्चों को भी अपने स्वाभिमान में रहकर शालीनता के संस्कार भरने की प्रेरणा दी, पाठ पढ़ाया।

''बाप रास्ता बताते हैं। अपने ऊपर कृपा, रहम करना है। टीचर तो पढ़ाते हैं, आशीर्वाद तो नहीं करेंगे। आशीर्वाद, कृपा, रहम आदि माँगने से मरना भला। कोई से पैसा भी नहीं माँगना चाहिए। बच्चों को सख्त मना है। कोई से पैसा मांगना, यह भी पाप है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार, जिन्होंने कल्प पहले बीज बोया है, वर्सा पाया है, वे आप ही करेंगे। कोई भी काम के लिए मांगो नहीं। न करेगा तो न पायेगा।... जिसको करना होगा, वह आप ही करेगा। तुमको माँगना नहीं है। कल्प पहले जितना जिन्होंने किया है, ड्रामा उनसे करायेगा। मांगने की क्या दरकार है। कई बुद्धू बच्चियाँ हैं, जो मांगती हैं। बाबा तो हुण्डी भरते रहते हैं सर्विस के लिए।''

सा.बाबा 29.10.69 रिवा.

''अपना स्वभाव भी बहुत अच्छा रखना है।... यज्ञ से जो कुछ मिले वह अंगीकार करना चाहिए। बाबा अनुभवी है। भल कितना भी बड़ा जवाहरी था, कहाँ आश्रम में जायेंगे तो आश्रम के नियमों पर पूरा चलेंगे। वहाँ ऐसे नहीं मांगा जाता कि हमको फलानी चीज दो। वहाँ बड़ा रॉयल्टी से भोजन पाया जाता है। जो सभी को मिलता है वही खाया जाता है। इस ईश्वरीय आश्रम में तो बड़ी शान्ति चाहिए।''

सा.बाबा 10.3.72 रिवा.

## योग की निरन्तर शक्तिशाली स्थिति में रहने वाले

बाबा की योग की स्थिति ऐसी थी कि कोई भी ज्ञानी अथवा अज्ञानी उनके सम्पर्क में आते थे तो बाबा के वायब्रेशन और वातावरण से वे भी आते ही अपने को भी अशरीरी अनुभव करते थे। उनको भी अशरीरीपन का अलौकिक सुख का अनुभव होता था। ब्रह्मा बाबा के चारो ओर का वातावरण इतना शक्तिशाली होता था कि कोई भी मनुष्य आत्मा तो क्या पशु-पक्षी भी उसमें शान्ति का अनुभव करते थे और उनके हाव-भाव से उनके अलौकिक सुख का अनुभव होता था।

ब्रह्मा बाबा के गहन पुरुषार्थ और परमपिता परमात्मा के सानिध्य से ये पंच तत्व भी पावन बन गये और ये पंच तत्व का शरीर पंच तत्वों में विलीन होकर उनको भी पावन बनाते हैं। ब्रह्मा बाबा के पार्थिव देह के दाह संस्कार के बाद अव्यक्त बापदादा ने ये रहस्योद्घाटन किया।

## सदा बाप के स्नेह में समाये हुए

बाबा सदा शिवबाबा के स्नेह में समाये हुए दिखाई देते थे। जब भी बाबा को देखो तो अनुभव होता था कि बाबा इस देह में रहते हुए भी देह में नहीं हैं, किसी अलौकिक लोक में हैं। बाबा का शिवबाबा के साथ अटूट स्नेह था और है भी, उनके सानिध्य में जो भी आता था, उसको भी शिवबाबा के स्नेह की अनुभूति होती थी और उसका भी शिवबाबा के साथ स्नेह जुट जाता था।

''सदा स्नेह में समाये रहो तो मेहनत का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ेगा। समाने में ही मजा है। ब्रह्मा बाप ने सदा बाप का स्नेह दिल में समाया, इसका यादगार कलकत्ता में दिखाया है।''

अ.बापदादा 18.1.2002

''याद की आदत पड़ जाती है, बुद्धि में बैठता है तो खुशी का पारा चढ़ा रहता है। ... याद में बैठेंगे तो बहुत गद-गद हो जायेंगे। बाबा भी इस खुशी में बैठे हैं। बाप को यहाँ की कोई बात याद ही नहीं। बाबा याद करते हैं वहाँ की बातें। बाबा और राजाई जैसे कि दर पर खड़े हैं।''

सा.बाबा 10.1.04 रिवा.

## सदा सर्व को सहयोग करने वाले

सदा दाता बन सर्व को खुशी, ज्ञान-धन, सहयोग, स्नेह, शक्ति ... देने वाले

बाबा की ज्ञानी-अज्ञानी सभी आत्माओं के प्रति सहयोग और कल्याण की भावना रहती थी।

बाबा के मुख से कभी भी किसी के अहित का शब्द नहीं सुना गया। यज्ञ में कितने भी विघ्न डालने वाले आये लेकिन बाबा ने सदैव उनकी बातों को सहन करते हुए उनके कल्याण की भावना ही प्रगट की और सर्व को सहयोग दिया। बच्चों को भी सदा सहयोग देने का पाठ पक्का कराया।

यज्ञ में भवन निर्माण आदि का काम करने वाले स्त्री-पुरुष मजदूर भी होते थे परन्तु उनको भी बाबा सदा बच्चे-बच्चे कहकर ही बुलाते थे और उनके भी दुख-दर्द का सदा ध्यान रखते थे। उनके समय के कई मजदूर मिस्त्री अभी भी हैं और उनके विषय में बात करते हुए उनके आंखों में प्रेम के मोती झलक आते हैं।

''निस्वार्थ बन खुशी दो, शान्ति दो, आनन्द की अनुभूति कराओ, प्रेम की अनुभूति कराओ। देना माना स्वत: ही लेना। ... ब्रह्मा बाप को देखा - चलते-फिरते भी अगर कोई बच्चा सामने आया तो कुछ न कुछ अनुभूति के बिना खाली नहीं जाता था।''

अ.बापदादा 30.3.99

## निराकारी - निर्विकारी - निरहंकारी स्थिति के स्वरूप

ब्रह्मा बाबा ने आदि से ही निराकारी स्वरूप में स्थित होने का गहन अभ्यास किया, जिसके फल स्वरूप वे सदैव अपनी निराकारी स्थिति में स्थित रहे, निराकारी स्थिति को स्मृति में रखा, जिससे उनके कर्मों में निर्विकारिता और शब्दों में निरहंकारीपन रहा, जिससे वह वातावरण औरों को भी उस स्थिति में स्थित होने में मदद करता था। ब्रह्मा बाबा की स्मृति और स्थिति, दृष्टि और वृत्ति सदा निराकार आत्मा स्वरूप पर ही रहती थी।

''जैसे ब्रह्मा बाप ने सारे ज्ञान का सार स्वयं धारण कर बच्चों को फॉलो फादर करने की हिम्मत दी, साकार रूप द्वारा अन्तिम महावाक्य (निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी) अमूल्य सौगात दी, उस सौगात को स्वरूप में लाया ? ... इन ही तीन बोल से बाप ने कर्मातीत अवस्था को पाया। फॉलो फादर।''

अ.बापदादा 18.1.79

''स्वभाव बहुत मीठा होना चाहिए। कोई कुछ कहे तो भी मुस्कराते रहना चाहिए, नाराज न होना चाहिए, अहंकार न आना चाहिए। ... भाई, भाई को समझाते हैं, यह स्मृति में रहे ... तीर तब लगेगा।''

सा. बाबा 8.2.69 रिवा.

''प्रेम से ज्ञान सुनाओ। पहले तो अच्छी रीति मंथन करना पड़े। शिव बाबा तो विचार सागर मंथन नहीं करते हैं। यह विचार सागर मंथन करते हैं, बच्चों को देने के लिए। फिर भी हमेशा ऐसे समझो कि शिव बाबा समझाते हैं। इनका भी यह नहीं रहता कि मैं सुनाता हूँ, शिव बाबा

सुनाते हैं। इसको निरहंकारीपना कहा जाता है। याद एक शिव बाबा को ही करना है।''

सा. बाबा 3.3.72 रिवा.

''जब सम्बन्ध-सम्पर्क में आत्मिक स्वरूप की स्मृति रहती है तो सदा निराकारी और निरहंकारी रहते हैं। ब्रह्मा बाप के लास्ट के तीनों शब्द याद रहते हैं? निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी। जो निराकारी और निरहंकारी है, वही निर्विकारी है। अच्छा, फॉलो फादर पक्का रहा?... फॉलो फादर का अर्थ ही है कि ये तीन शब्द सदा स्मृति में रहें। ठीक है।''

अ.बापदादा 30.11.2002

बाबा का निराकारी, आकारी, साकारी स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास जीवन का स्वरूप बन गया था और वे बच्चों से बात करते करते-करते भी इस देह से गुम हो जाते थे और बात सुनाने वाले की बात के रहस्य को भी पूर्णतया समझ लेते थे क्योंकि उनका अभ्यास सेकेण्ड में अशरीरी बनने और सेकेण्ड में शरीर में आने का स्वभाविक बन गया था।

* अहंकार आत्मा का बहुत बड़ा शत्रु है और परचिन्तन का मूल कारण है, ये परचिन्तन आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होने नहीं देता। ब्रह्मा बाबा ने इस अहंकार को जीतकर निरहंकारी बनकर सदा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव किया। ऐसे बाप समान सत्य ज्ञान की धारणा से इस महाशत्रु पर विजय प्राप्त कर सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो। यही संगमयुग की परमप्राप्ति है।

## सदा निराकारी-आकारी-साकारी स्थिति के सहज अभ्यासी

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को उनके आकारी स्वरूप का साक्षात्कार कराया, निराकारी आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराया, उस पर निश्चय दृढ़ होने के कारण उनको तीनों स्वरूपों में समय अनुसार स्थित होने में कोई कठिनाई नहीं होती थी। साथ ही बाबा ने अपने निराकार स्वरूप, आकारी स्वरूप और वर्तमान के साकारी स्वरूप और भविष्य के साकारी देव स्वरूप में स्थित होने का सहज अभ्यास था, इसलिए उनकी बुद्धि में इसके सिवाए और कुछ आया ही नहीं।

''एक घण्टा किसको समझाने ... 15 मिनट में सुनते हुए, बोलते हुए न्यारेपन की स्थिति में स्थित होकर न्यारेपन की स्थिति का वायब्रेशन देकर देखो। जो 15 मिनट में सफलता होगी, वह एक घण्टे में नहीं होगी। ब्रह्मा बाप ने ये प्रैक्टिस करके दिखाई।''

अ.बापदादा 29.12.89

## बेहद की वैराग्य वृत्ति के प्रतिमूर्त

बाबा इस देह और देह की दुनिया में रहते भी सदा इससे उपराम बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहते थे। वे दुनिया में रहते थे लेकिन दुनिया उनमें नहीं रहती थी अर्थात् इस दुनिया में रहते भी उनकी बुद्धि में इस दुनिया की किसी वस्तु या व्यक्ति का चिन्तन नहीं होता था। दुनिया की किसी भी वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ से उनका लगाव नहीं था परन्तु वे ट्रस्टी बनकर यज्ञ की पूरी सम्भाल करते थे। जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए बेहद की वैराग्य वृत्ति परमावश्यक है। अपनी बेहद की वैराग्य वृत्ति के कारण उन्होंने सदैव मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव किया और कराया।

''वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। ... बाबा अण्डरलाइन करा रहे हैं कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना। ब्रह्मा बाप को देखा''

अ. बापदादा 18.1.99

''ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। साधन होते हुए भी दूर रहना, उसे कहेंगे वैराग्य।... सब कुछ होते हुए बेहद के वैरागी बन नॉलेज और विश्व-कल्याण की भावना से बाप को और स्वयं को प्रत्यक्ष करना।''

अ.बापदादा 18.1.99

''बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। ब्रह्मा बाप की अन्त तक यही विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में ... सबसे वैराग्य वृत्ति। आज के दिन बाप समान बनने का पाठ पक्का करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है - ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा।''

अ.बापदादा 18.1.99

''अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा।... समय कराता है तो उसमें मार्क्स कम हो जाती है। ... समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। ... ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा।''

अ.बापदादा 18.1.98

''वफादार ... अगर व्यक्ति की, पदार्थ की, साधनों की संकल्पमात्र भी आकर्षण है तो साधना खण्डित हो जाती है। ... संकल्प मात्र भी झुकाव नहीं। वाचा-कर्मणा की तो बात ही छोड़ो।... ब्रह्मा बाप ने अन्त तक बड़ी आयु होते भी, तन का हिसाब चुक्तू करते हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई।... साधनों को सेवा प्रति कार्य में लगाओ, स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो।''

अ.बापदादा 26.1.95

## दृढ़ संकल्प एवं दृढ़ प्रतिज्ञ

बाबा का सदा ही ये पुरुषार्थ रहा कि जो संकल्प किया या जो लक्ष्य निर्धारित किया, उसको हर हालत में पाना ही है, पूरा करना ही है। किसी भी कीमत पर उससे पीछे नहीं हटना है - ये ब्रह्मा बाबा के जीवन की विशेषता रही और जीवन में सफलता का आधार रहा। उनके दृढ़ संकल्प के लिए ही गायन है - प्राण जायें वरु वचन जा जाये।

''बाप समान बनना है। ... बापदादा ने देखा तीन कोने तो पक्के हैं, एक कोना और पक्का होना है। संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है ... एक कोना मजबूत करते हो लेकिन चलते-चलते ढीला हो जाता है, वह है दृढ़ता।''

अ.बापदादा 25.11.2000

''दृढ़ता उसको कहा जाता है - मर जायें, मिट जायें लेकिन संकल्प न जाये। झुकना पड़े, मरना पड़े जीते जी, अपने को मोड़ना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना पड़े लेकिन संकल्प नहीं जाये - इसको कहा जाता है दृढ़ता''

अ.बापदादा 25.11.2000

## सदा बालकपन और मालिकपन का बैलेन्स रखने वाले

ब्रह्मा बाबा ने यज्ञ सेवा का और स्व पुरुषार्थ का हर कार्य मालिक बनकर किया परन्तु शिवबाबा की हर आज्ञा को बालक बनकर स्वीकार किया। बाबा की जो आज्ञा मिली, उसमें अंशमात्र भी संकल्प नहीं किया, उसको उसी रूप में पालन किया। बच्चों के साथ बच्चे बनकर खेल भी किया और बाप बनकर शिक्षा भी दी। कोई भी कार्य करने से पहले बाबा बच्चों से भी राय-सलाह करते थे, जिससे बच्चों का तन-मन से सदा ही उस कार्य में सहयोग रहता था। बच्चे भी कोई राय देते थे और बाबा को अच्छी लगती थी तो बाबा उसे भी स्वीकार करते थे और बच्चों का उमंग-उत्साह बढ़ाने के लिए उनकी उसके लिए प्रशंसा भी करते थे।

''यह मैंपन धोखा दे देता है। सोचो भले, कहो भले लेकिन निमित्त और निर्मान भाव से। ... ये मालिक और बालक पन की ड्रिल बहुत-बहुत आवश्यक है। सिर्फ बापदादा की शिक्षा के तीन शब्द याद रखो - सबको याद हैं? मन्सा में निराकारी, वाचा में निरहंकारी, कर्म में निर्विकारी। जब भी संकल्प करते हो तो निराकारी स्थिति में स्थित होकर संकल्प करो। और सब भूल जाये लेकिन ये तीन शब्द नहीं भूलो। यह साकार रूप की तीन शब्दों की शिक्षा की सौगात है। तो ब्रह्मा बाप से साकार रूप में भी प्यार रहा है।'' अ.बापदादा 31.12.03

''साकार का मुख्य संस्कार था - सर्वस्व त्यागी। ... साकार रूप में भी देखा ना, जितना ही नॉलेजफुल, उतना ही सरल स्वभाव। जिसको कहते हैं बचपन के संस्कार। बुजुर्ग का बुजुर्ग और बचपन का बचपन।''

अ.बापदादा 17.4.69

## पहले आप का पाठ पक्का रखकर सदा बच्चों को आगे बढ़ाने वाले

बाबा ने सदैव बच्चों को आगे रखा, कभी ये नहीं संकल्प किया कि बच्चों से पहले मैं आगे आऊं। सदैव बच्चों को आगे बढ़ाया। विश्व-नाटक का ये अटल सिद्धान्त है कि दूसरों को आगे बढ़ाने वाला सदा ही आगे बढ़ता है। बाबा सदा ही इस सिद्धान्त के अनुसार बच्चों को आगे बढ़ाने का पुरुषार्थ करते थे और बच्चे सदा बाबा का आदर-सम्मान कर उनको आगे रखते थे। अपने इसी पुरुषार्थ से ब्रह्मा बाबा पहले नम्बर में फरिश्ता बने और भविष्य में नारायण बनेंगे अर्थात् बाबा ने बच्चों को आगे रखा तो उसके फलस्वरूप ड्रामा ने उनको आगे रखा।

## मन्सा-वाचा-कर्मणा अखण्ड महादानी

बाबा का मन्सा-वाचा-कर्मणा हर कार्य विश्व के नव-निर्माण के अर्थ, दूसरों के कल्याण के अर्थ ही था इसलिए हर सेकेण्ड चढ़ती कला का अनुभव रहा और हर कार्य सर्व के लिए प्रेरणादायक रहा, इसलिए हर सेकेण्ड उनका खाता जमा होता रहा, जो उनको सम्पूर्णता के शिखर तक ले गया। बाबा का एक सेकेण्ड भी बिना दान के नहीं होता था। बाबा का खाना खाने का विधि-विधान भी शिक्षा देता था तो खेल खेलने का स्वरूप भी शिक्षा देता था। कोई भी कर्म सदा शिक्षा देने वाला ही होता था। इसलिए उनका हर कर्म एक विधान बन गया, जिसको हम सब फॉलो करके अपने भाग्य को बना रहे हैं।

''चैक करो - सारे दिन में गलती नहीं की लेकिन समय, संकल्प, सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क में स्नेह, सन्तुष्टता द्वारा जमा कितना किया? ... श्रेष्ठ संकल्प द्वारा सेवा का खाता कितना जमा हुआ? कितनी आत्माओं को सुख दिया? योग लगाया लेकिन योग की परसेन्टेज किस प्रकार की रही? आज के दिन दुआओं का खाता कितना जमा किया?''

अ.बापदादा 31.12.2000

बाबा का कर्म द्वारा गुण-दान, वाचा द्वारा ज्ञान-दान, मन्सा द्वारा शक्तियों का दान निरन्तर चलता रहता था। उनका एक भी संकल्प, बोल, कर्म साधारण नहीं होता था। उनको सदा ये ध्यान रहता था कि हमारे हर संकल्प, बोल, कर्म से सर्व आत्माओं का कल्याण हो।

बाबा का मन्सा-वाचा-कर्मणा द्वारा हर कर्म शिक्षा देने वाला था। इसीलिए बाबा के हर कर्म को चरित्र के रूप में याद करते हैं। शिवबाबा के गुणों की अनुभूति भी ब्रह्मा बाबा के कर्मों से ही होती है।

''कोई कितना भी अवगुणधारी हो लेकिन मुझे अपने जीवन द्वारा, कर्म द्वारा, सम्पर्क द्वारा गुणदान करना है अर्थात् सहयोगी बनना है। इसमें दूसरे को नहीं देखना है। ... ब्रह्मा बाप ने सी (See) शिवबाप किया। अगर देखना है तो ब्रह्मा बाप को देखो।''

अ.बापदादा 31.12.2000

''इस नये वर्ष में क्या करना है - ये धुन लगी रहे कि मुझे अखण्ड महादानी बनना ही है। अखण्ड महादानी, महादानी नहीं, अखण्ड। मन्सा से शक्तियों का दान, वाचा से ज्ञान का दान और अपने कर्म से गुणदान।''

अ.बापदादा 31.12.2000

''तुम बच्चों को यहाँ मास्टर प्यार का सागर बनना है। यहाँ बनेंगे तो वे संस्कार अविनाशी बन जायेंगे। ... बच्चों को भी बाप समान बनना है। ... बाप को कितनी भी खांसी आदि होती है फिर भी सदैव सर्विस पर तत्पर रहते हैं।''

सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

## सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ जोड़ने और जुड़ाने वाले एक बाप के साथ सर्व सम्बन्धों के अनुभवों में रह सर्व को अनुभव कराने वाले

ब्रह्मा बाबा ने शिवबाप को सर्व सम्बन्ध से अपना बनाया, जो उनके महावाक्यों से सिद्ध होता है। एक बाप के साथ सर्व सम्बन्धों के अनुभवों में रहकर सर्व को सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया। बाबा सदैव ये इच्छा रखते थे कि बच्चों का सम्बन्ध एक शिवबाबा के साथ रहे, जिससे उनका कल्याण हो और बच्चों को भी यही शिक्षा देते थे कि जिसकी भी सेवा करो, उसका सम्बन्ध अपने साथ नहीं लेकिन शिवबाबा के साथ जुड़ाओ।

''बाबा आये हैं मुरली चलाकर चले जायेंगे। इनकी बुद्धि भी वहाँ रहती है। रास्ता बरोबर पकड़ना चाहिए। नहीं तो घड़ी-घड़ी पट्टे से गिर पड़ते हैं। यह तो थोड़ा समय है, इनमें शिवबाबा ही न होगा तो याद क्यों करेंगे। मुरली तो यह भी सुना सकते हैं। इनमें कब हैं, कब नहीं हैं। कब रेस्ट लेते हैं। तुम याद वहाँ करो। ... बाप का ही परिचय देना है। ऐसे नहीं सिर्फ इनको बैठ देखना है। बाबा ने समझाया है शिव बाबा को याद कर फिर इनकी गोद में आना है। नहीं तो पाप हो जायेगा।''

सा.बाबा 12.11.73 रिवा.

## पवित्रता की धारणा के चरमोत्कृष्ट स्वरूप

शिवबाबा पवित्रता का सागर है, उनके सानिध्य से ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन को भी उनके अनुरूप ही पवित्र बना लिया। पवित्रता का स्वरूप क्या होता है, वह भी ब्रह्मा बाबा के जीवन से ही अनुभव होता था। सभी बच्चे, युवा, वृद्ध, भाई-बहनें ब्रह्मा बाबा की गोद में लौकिक मात-पिता के समान जाते थे और उनकी गोद में मात-पिता के प्यार का सच्चा सुख अनुभव करते थे। शिवबाबा पवित्रता का सागर है, उनका वह गुण भी ब्रहमा तन से ही अनुभव किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रह्मा बाबा का जीवन पवित्रता का चरमोत्कृष्ट था अर्थात् शिवबाबा के समान ही था।

## पूर्वजपन के स्वरूप से विश्व प्रेम की भावना सदा जाग्रत रखने वाले

जब से शिवबाबा ने ज्ञान दिया कि ये ब्रहमा ही कल्प-वृक्ष का फाउण्डेशन है और मनुष्य सृष्टि का आदि पिता है, तब से ही ब्रह्मा बाबा के जीवन में आदि पिता के संस्कार जाग्रत हो गये और आदि पिता के समान ही बिना किसी भेद-भाव के सर्व आत्माओं को अपनी सन्तान समझकर, उनकी बच्चे के समान पालना की। जैसे एक मात-पिता को अपने बच्चों के प्रति प्यार होता है, उनकी उन्नति का ख्याल होता है, उनके लिए अपने जीवन के सुखों का त्याग करते हैं, वैसे ही ब्रह्मा बाबा ने विश्व की सर्वात्माओं के प्रति प्रेम की भावना रखी और उसके लिए जो भी त्याग करना पड़ा वह सब किया। बाबा ने सदा पूर्वज के रूप में सारे विश्व की आत्माओं की सेवा की, सेवा का संकल्प किया, उनके कल्याण का आवाह्न किया, उनके प्रति योगदान किया। सदा ये संकल्प रखा कि सर्व आत्मायें हमारे बच्चे हैं और हमको सर्व का कल्याण करना ही है। सर्व का कल्याण करना अपना कर्तव्य समझा।

''जब बच्चे बहुत याद करते हैं तो बाप भी बहुत याद करते हैं, वह कशिश करते हैं।... यह (ब्रह्मा-तन) बाप और बच्चे का खेल है इकट्ठा। ... कोई समय किसको करेण्ट देनी होती है तो नींद फिट जाती है। यह फुरना लग जाता है कि फलाने को करेण्ट देनी है।''

सा.बाबा 11.3.04 रिवा.

''ब्रह्मा को कहते ही हैं ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर। कितना बड़ा सिजरा है। यहाँ यह मनुष्यों का सिजरा है यह कारपोरियल की बात है।... शिवबाबा सबका बाप है। वर्सा मिलता है दादे से। इनको भी उनसे वर्सा मिलता है।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

''तुम जानते हो अभी हम शिवबाबा के पोत्रे-पोत्रियां हैं, प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं। ब्रह्मा भी वर्सा शिवबाबा से लेते हैं, तुम भी उनसे लेते हो। तुम जानते हो हमने कल्प पहले भी बाबा से

वर्सा लिया था।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

''ब्राह्मणों के संगठन में चलना मुश्किल है... बाप पूछते - आप आत्मा मुक्तिधाम में रहने वाली हो या जीवनमुक्ति में आने वाली हो ?... जीवनमुक्ति में सिर्फ बाबा होगा या राजधानी होगी ?''

अ.बापदादा 15.4.92

## बच्चों को माइक बनाकर अर्थात् आगे करके पीछे से माइट बन शक्ति देने वाले

बाबा ने सदैव मम्मा और बच्चों को माइक बनाकर आगे रखा तथा स्वयं माइट बनकर सकाश देकर उनकी हिम्मत बढ़ाई, उनका मार्ग-दर्शन किया, सहयोग देकर सेवा का कार्य भी सफल किया।

''जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूप में माइट है और आप बच्चों को माइक बनाया है, ऐसे आप माइट बनो और ऐसे माइक तैयार करो।''

अ.बापदादा 20.02.2001

''बापदादा उद्घाटन चाहते हैं कि विश्व की स्टेज पर बाप समान साक्षात् फरिश्ते सामने आ जायें और पर्दा खुल जाये। ... बच्चों की इच्छा है कि बाप को प्रत्यक्ष करें और बाप की इच्छा है कि पहले बच्चे प्रत्यक्ष हों। बाप बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होगा, अकेला नहीं होगा।''

अ.बापदादा 25.11.2001

''आज के दिन को बापदादा यज्ञ की स्थापना के विशेष परिवर्तन का दिन कहते हैं। आज के दिन बाप गुप्त रूप में बैकबोन बन अपने बच्चों को साकार रूप में विश्व के मंच पर प्रत्यक्ष किया।... अभी भी ब्रह्मा बाप हर एक बच्चे की छत्रछाया बन पालना का कर्तव्य कर रहे हैं।... शिव बाप तो साथ में है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा का पालना का पार्ट है।''

अ.बापदादा 18.1.99

''आदि में ब्रह्मा बाप को चलते-फिरते साधारण देखते थे वा कृष्ण रूप में देखते थे ? ... आदि में ब्रह्मा बाप में यह विशेषता देखी, अनुभव की। ... बाप ने सदा बच्चों को आगे रखा। तो आगे रखना यह चरित्र हुआ। ... तो नम्बरवन हर बात में ब्रह्मा बाप ही बना। ... हर कार्य में, संकल्प में भी औरों को आगे रखने की भावना - यह त्याग श्रेष्ठ त्याग रहा।... जैसे ब्रह्मा बाप को देखा अन्त में भी कलियुगी दुनिया के हिसाब में भी महान रहा ना। तो ऐसा महादानी आदि से अन्त तक महान रहता है।''

अ.बापदादा 18.02.86

## सत्यता की शक्ति का स्तम्भ (Authority of Reality & Truth)

ब्रह्मा बाबा ने सत्य शिवबाबा के संग से सत्यता की शक्ति की पूर्ण धारणा की और उस सत्यता का सर्वात्माओं तक अधिकारी बनकर प्रचार-प्रसार किया। निर्भय होकर सत्य बाप के सत्य ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का पुरुषार्थ किया। ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करने में सदा निर्भय रहे। बच्चों को भी सत्य बाप के सत्य ज्ञान को निर्भय होकर सर्व आत्माओं के सामने प्रत्यक्ष करने की प्रेरणा दी। बाबा ने सदा यही कहा कि जब सत्य ज्ञान सिद्ध होगा तब ही ज्ञान-दाता बाप सिद्ध होगा और बच्चों को ये कार्य करना है। गीता के भगवान को सिद्ध करना है। ब्रह्मा बाबा ने सत्य ज्ञान को बड़ी नम्रता और अथॉरिटी से सिद्ध किया, सबके सामने रखा और बच्चों को भी कहा कि सत्यता को सभ्यता से सिद्ध करो।

## सत्यता को सभ्यता और प्रेम से सिद्ध करने वाले

ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान की सत्यता को बड़ी निर्भयता से स्पष्ट किया परन्तु उनके शब्दों में किसी भी आत्मा के प्रति घृणा, ईर्ष्या, अहंकार, क्रोध का अंश मात्र भी दिखाई नहीं देता था। किसी भी धर्म के ज्ञान का, धर्म-शास्त्र का, धर्म-पिता का उन्होंने निरादर नहीं किया अर्थात् उसको हीन भावना से नहीं देखा। उसमें भी क्या सत्य है और क्या असत्य है, क्या अच्छाई है, क्या कमी है, वह सब बताया परन्तु सभ्यता से जिससे किसी को अपमान की महसूसता न आये। हर आत्मा के प्रति प्रेम भाव दिखाई दिया, हर बात की सत्यता को परमात्मा पिता के, स्वयं के और सर्व आत्माओं के मान-सम्मान को रखते हुए स्पष्ट किया। सत्यता को छिपाया भी नहीं और कब किसके प्रति क्रोध या घृणा की भावना भी नहीं जाग्रत हुई।

सत्यता की अथॉर्टी होते हुए भी बाबा ने सत्यता को सदा ही सभ्यता और प्रेम से लोगों के सामने रखा, जिससे सबके दिलों में वह सत्यता घर कर गई और उनके मन में भी ब्रह्मा बाबा के प्रति सम्मान भाव जागृत हुआ।

''झूठ खण्ड में ब्रह्मा बाप को सत्यता की अथॉर्टी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा ना। ... अथॉर्टी के बोलों में स्नेह समाया हुआ है, निर्मानता है, निरहंकार है, इसलिए अथॉर्टी के बोल प्यारे लगते हैं। ... तो सेवा में, कर्म में फॉलो ब्रह्मा बाप है।''

अ.बापदादा 20.3.87

## सम्पूर्णता और सम्पन्नता की प्रतिमूर्ति

मानव जीवन का सम्पूर्ण स्वरूप क्या है और क्या हो सकता है, वह ब्रह्मा बाबा के जीवन को देखने से पता चलता था। भले देवतायें तो सतयुग में होंगे, उनको सतयुग में देखेंगे परन्तु ब्रह्मा बाबा का जीवन परमात्मा के गुणों और सम्पूर्ण देवताई जीवन का साक्षात्कार कराने वाला था अर्थात् मानव जीवन का चरमोत्कर्ष क्या हो सकता है, वह ब्रह्मा बाबा के जीवन से दिखाई देता था। जो गुण-संस्कार हम यहाँ भरकर परमधाम जायेंगे, उस अनुरूप ही गुणों-संस्कारों वाला जीवन सतयुग में मिलेगा।

''जैसे ब्रह्मा बाप को देखा। ... ऐसे बच्चों में भी सम्पूर्णता के समीप आने की निशानी स्वयं भी समीपता का अनुभव करेंगे और औरों को भी अनुभव होगा। व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की अनुभूति करेंगे। जिससे सामने आने वाली आत्मायें व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी। यह है समीपता की निशानी।''

अ.बापदादा 18.11.81

* सम्पूर्णता और सम्पन्नता अर्थात मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए किसी साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है, उसके लिए दृढ़ निश्चय, अटल विश्वास और अथक एवं सतत पुरुषार्थ की आवश्यकता है। ब्रह्मा बाबा ने घास-फूस की कुटिया में बैठकर और पुराने मकान में रहकर अथक पुरुषार्थ के द्वारा अपनी फरिश्ता स्थिति को पाया जबकि हम देखते हैं कि महल-माड़ियों वाले अनेक व्यक्ति यहाँ ही दुख भोग रहे हैं। उनका जीवन इस सत्य को स्पष्ट करता है कि सम्पूर्णता और सम्पन्नता के पुरुषार्थ के लिए किसी भौतिक साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है बल्कि उसके लिए आन्तरिक लगन, दृढ़ संकल्प शक्ति और सतत पुरुषार्थ की आवश्यकता है।

शिवबाबा तो आया ही है सर्व आत्माओं को देहाभिमान से निकाल देही-अभिमानी बनाने, ब्रह्मा बाबा का भी हर संकल्प-कर्म स्वयं को और सर्व आत्माओं को देहाभिमान से निकाल देही-अभिमानी बनाने का रहा अर्थात् सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने का रहा, जिसके फलस्वरूप वे फरिश्ता बनें। देही-अभिमानी स्थिति वाला स्थूल साधन-सम्पत्ति के न होते भी सम्पन्नता और सम्पूर्णता की स्थिति में रहेगा अर्थात् वह बिन कौड़ी बादशाह की स्थिति के अनुभव में होगा और देहाभिमानी बादशाह होते भी भिखारी के समान इच्छा-आकांक्षाओं के वशीभूत दुखी रहेगा। वह स्वरूप ब्रह्मा बाबा के जीवन से अनुभव किया।

## प्रेम और शक्ति के बैलेन्स में स्थित

ब्रह्मा बाबा का सर्वात्माओं के प्रति अगाध प्रेम था परन्तु यज्ञ की मर्यादा, नियम-संयम के पालन में शक्ति रूप भी था। वे कभी भी विघ्न डालने वालों के आगे झुके नहीं और न ही बच्चों को झुकने दिया। सदैव बच्चों को भी शक्ति रूप में रहने की प्रेरणा दी और सर्व आत्माओं के प्रति प्रेम जाग्रत किया, जिससे विघ्न डालने वाले भी अन्त में तो झुक ही जाते थे। ऐसे महापुरुषों के विषय में ही गाया हुआ है - गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट, अन्दर हाथ सहार दे बाहर वाहै चोट।

''जैसे ब्रह्मा बाप को देखा ... सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन स्नेह से बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं - स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स। तो सेवा में इस बैलेन्स को अण्डरलाइन करो।''

अ.बापदादा 20.3.87

## रमणीकता और गम्भीरता के बैलेन्स का साकार स्वरूप

ब्रह्मा बाबा रमणीकता के समय बहुत रमणीक भी थे तो सागर के समान गम्भीर भी थे। हरेक की बात को उन्होंने सागर के समान अपने अन्दर समा लिया, किसी की कमी कमजोरी को फैलाया नहीं। किसकी कमी को भी प्यार और रमणीकता से उसको बताया, जिससे उसने अपनी उस कमजोरी को महसूस किया और उसको दूर करने का पुरुषार्थ भी किया। यज्ञ में बच्चों के लिए मनोरंजन के प्रोग्राम भी रखते थे और साधना के भी प्रोग्राम रखते थे, जिससे बच्चों को पुरुषार्थ भी मनोरंजन ही अनुभव हुआ।

## सदा निर्भय और निश्चिन्त

ब्रह्मा बाबा ने सदैव अपने सामने विष्णु का वह चित्र रखा, जिसमें विष्णु को क्षीर सागर में शेष शैय्या पर पैर पर पैर रखकर निश्चिन्त लेटा हुआ दिखाया है, वैसे ही वे सदा ही निर्भय और निश्चिन्त रहे। चिन्ता का मूल कारण है भय और भय का कारण देहाभिमान और अपने ही विकर्म हैं। जिसकी सर्व के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना हो, सबके प्रति प्रेम होगा, उसको कभी किसी से भय नहीं होगा और जिसका शुभ कर्मों का खाता संचित होगा, उसको कभी अपने अन्धकारमय भविष्य की चिन्ता नहीं होगी। बाबा का न किसी से वैराभाव था और उनका शुभ कर्मों का खाता इतना संचित था कि उनको किसी भी प्रकार के भय और

चिन्ता में किसी ने नहीं देखा। सदा निर्भय और निश्चिन्त स्थिति में देखा। उनको सदा ये अनुभूति रही कि सर्वशक्तिवान परमात्मा हमारा साथी है तो हमको किसी का भय और चिन्ता किस बात की।

## अदम्य साहसी

ब्रह्मा बाबा आयु के हिसाब से वृद्ध होते भी, उनमें अदम्य साहस था। शिवबाबा ने जो प्रेरणा दी, आज्ञा दी, उसके लिए उन्होंने कभी भी ये संकल्प में भी नहीं लाया कि ये कार्य असम्भव है या मैं नहीं कर सकूँगा या नहीं हो सकेगा। सब परिस्थितियाँ विपरीत होते भी सदैव निश्चय रखा और पुरुषार्थ किया कि विजय हमारी निश्चित है, जिसके परिणाम स्वरूप विजय उनके सामने नत मस्तक होकर रही। बाबा का सदा कहना रहा कि सत्य की नॉव डोलती है परन्तु डूबती नहीं। सत्य की सदा ही विजय होती है। जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान। उन्होंने अपने अदम्य साहस और अथक पुरुषार्थ से यज्ञ की नैया को तूफानों के अनेकानेक झोंको से बाहर निकालकर आगे बढ़ाया। बाबा न स्वयं साहसहीन हुए और न बच्चों को साहसहीन होने दिया। बच्चों को भी साहसी बनाया।

''जैसे ब्रह्मा बाप ने माया प्रबल होते हुए भी स्वयं को बलवान बनाया, न कि घबराया। तो ऐसे फॉलो फादर करो। ... बाप के हर बोल में आत्मा के तीनों कालों का कल्याण भरा हुआ है। तब ही विश्व-कल्याणकारी गाये हुए हैं।''

अ.बापदादा 7.6.77

''ब्रह्मा बाप का पहला कदम हिम्मत का है, सब बात में समर्पणता। सब कुछ समर्पण किया। कुछ सोचा नहीं कि क्या होगा, कैसे होगा। एक सेकेण्ड में बाप की श्रेष्ठ मत प्रमाण किया। बाप ने इशारा दिया और ब्रह्मा का कर्म वा कदम। इसको कहते हैं - हिम्मत का पहला कदम।... धन को बिना कोई भविष्य की चिन्ता के निश्चिन्त बन समर्पित किया क्योंकि निश्चय था कि यह देना नहीं लेकिन पद्मगुणा लेना है।'' अ.बापदादा 22.1.88

## धैर्यवान और समय की धैर्य से प्रतीक्षा करने वाले परन्तु पुरुषार्थ में निरन्तर सतर्क

ब्रह्मा बाबा हर श्रेष्ठ कार्य को तुरन्त करने वाले थे लेकिन किसी कार्य को करने में अधैर्यता नहीं थी। हर कार्य सोच-समझकर पूर्ण सुचारु रूप से करना उनका स्वभाव था,

जिससे उसमें कोई कमी या असफलता की गुंजाइश नहीं रहती थी। यज्ञ में अनेक प्रकार के विघ्न आये, अनेक प्रकार के तूफान आये परन्तु ब्रह्मा बाबा कभी भी घबराये नहीं, सदा धैर्य से काम लिया। किसी सेवा की सफलता के लिए भी बाबा बच्चों को भी कहते थे - यदि सेवा करते हो और सेवा की सफलता देखने में नहीं आती तो कभी घबराओ नहीं। कोई बीच तुरन्त फल देता है, कोई कुछ समय के बाद देता है और कोई बीज सीजन आने पर फल देता है। सेवा का अविनाशी बीज है, वह फल अवश्य देगा।

''यहाँ तो फिर समझते - बाप के साथ रहने में मजा है। प्याला (अमृत का) ही बाप पिलाते हैं। बाप के साथ रहना स्वर्ग से भी अच्छा है। किसकी तकदीर में न है तो तदवीर भी क्या कर सकते।''

सा.बाबा 4.1.69 रात्रि क्लास

## निर्मानता से निर्माण के कर्तव्य में निरन्तर संलग्न

बाबा के जीवन में मान-शान की कोई प्यास नहीं थी, उनकी निर्मानता ही विश्व नव-निर्माण के कार्य में सहयोगी सिद्ध हुई। उनका स्लोगन था - मान मांगने से नहीं लेकिन मान देने वाले को मान स्वत: मिलता है। फलो से सम्पन्न वृक्ष झुट जाता है।

''ब्रह्मा बाप को देखा - ब्रह्मा बाप ने अपने को कितना नीचे किया, इतना निर्माण होकर सेवाधारी बना, जो बच्चों के पाँव दबाने के लिए भी तैयार। ... आगे बच्चे, पहले बच्चे, बड़े बच्चे कहा। तो स्वयं को नीचे करना, नीचे होना नहीं है लेकिन ऊंचा जाना है। तो इसको कहा जाता है नम्बरवन योग्य सेवाधारी।''

अव्यक्त बापदादा 26.4.82 टीचर्स

''साकार स्वरूप ब्रह्मा बाप को देखा - सदा स्वयं को वर्ल्ड सर्वेन्ट कहलाया, बच्चों का सर्वेन्ट कहलाया और बच्चों को मालिक बनाया। ... इसलिए ही ब्रह्मा बाप नम्बरवन अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने। ... कभी ऐसे नहीं सोचा कि सम्मान देवे तो सम्मान दूँ।''

अ.बापदादा 1.12.89

## सदा निमित्त और निर्मान भाव वाले

हर कार्य में ब्रह्मा बाबा ने सदा अपने को निमित्त समझा, कभी ये संकल्प भी नहीं किया कि मैं यज्ञ का हेड हूँ, यज्ञ का मालिक हूँ। बाबा ने सदा ये कहा कि यज्ञ शिवबाबा का है, सेठ शिवबाबा है, मैं तो सेवाधारी हूँ, निमित्त हूँ। सदा ही यज्ञ का सेवाधारी समझकर यज्ञ के हर कार्य में मन्सा-वाचा-कर्मणा सहयोग किया। बाबा ने यह भी सदा ध्यान रखा कि मैं निमित्त हूँ तो यज्ञ में कोई नुकसान भी नहीं होना चाहिए। ट्रस्टी बनकर यज्ञ की हर चीज का

पूरा ध्यान रखा। केवल यज्ञ के स्थूल साधनों का ही नहीं, अपने हर कार्य पर ध्यान रखा कि मैं निमित्त हूँ तो जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और सब करेंगे। इस बात को ध्यान रखकर ही मन्सा-वाचा-कर्मणा हर कार्य किया और बच्चों को भी ऐसी ही शिक्षा दी।

''पहले चैक करो। जैसे कहावत है - पहले सोचो फिर करो, पहले तोलो फिर बोलो। ... यह संकल्प करो कि सिवाए बाप के कदम पर कदम रखने के और कोई भी कदम नहीं उठायेंगे। बस, फुट स्टेप। ... जैसे ब्रह्मा बाप सदा निमित्त और निर्माण रहे, ऐसे निमित्त भाव और निर्माण भाव। सिर्फ निमित्त भाव नहीं लेकिन निमित्त भाव के साथ निर्माण भाव। दोनों आवश्यक हैं।''

अ.बापदादा 30.11.2002

''ब्रह्मा बाप के समान बनना है तो ब्रह्मा बाप का विशेष चरित्र क्या देखा ? आदि से लेकर अन्त तक हर बात में 'मैं कहा या बाबा कहा' ? मैं कर रहा हूँ, बाबा करा रहा है। किससे मिलने आये हो ? बाबा से मिलने आये हो। मैंपन का अभाव, अविद्या - यह देखा ना ! समान बनना है तो पहले मैंपन का अभाव हो। ... मुख से ऑटोमेटिकली बाबा-बाबा शब्द निकले। कर्म में, आपकी सूरत में बाबा की मूरत दिखाई दे, तब प्रत्यक्षता होगी।''

अ.बापदादा 31.12.03

## दृष्टि में दिव्यता, कर्मों में कुशलता, वाणी में मधुरता की धारणा-मूर्त

ब्रह्मा बाबा की दृष्टि में ऐसी दिव्यता थी कि जिसको वह दृष्टि मिली, वह अतीन्द्रिय सुख में खो गया। उनका हर कर्म पूर्ण और शिक्षाप्रद होता था। वाणी में इतनी मधुरता थी कि उनका हर वाक्य महावाक्य के रूप में याद किया जाता है। उनका हर कार्य चरित्र के रूप में माना जाता है। उनका हर कर्म यज्ञ के एक लॉ बन गया है और भविष्य नई दुनिया के लिए भी एक लॉ का कार्य करेगा क्योंकि ऐसे ही संस्कारों के साथ हम भविष्य नई दुनिया में जायेंगे। बाबा बच्चों को भी यही शिक्षा देते थे कि तुम्हारा हर कर्म भविष्य नई दुनिया के लिए लॉ बन रहा है, ऐसे समझकर कोई कर्म करो।

## विद्यार्थीपन और शिक्षकपन के बैलेन्स के धारणा-स्वरूप

ब्रह्मा बाबा को सदा ये स्मृति जाग्रत रहती थी कि 'जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और सब करेंगे।' बाबा के जीवन में शिवबाबा के ज्ञान के प्रति सदैव विद्यार्थीपन की भावना रही, उसको धारण करने की तीव्र जिज्ञासा रही, पास होने का दृढ़ संकल्प रहा, साथ ही बाबा का ये भी संकल्प रहा कि हमारे जीवन से सबको श्रेष्ठ जीवन बनाने की प्रेरणा मिले। उनका

स्लोगन था - 'जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे।' बच्चों को भी यही पाठ पढ़ाया कि सदा अपने को स्टूडेण्ट समझो और निमित्त शिक्षक बनकर दूसरों को भी शिक्षा दो।

''कोई कितना भी अवगुणधारी हो लेकिन मुझे अपने जीवन द्वारा, कर्म द्वारा, सम्पर्क द्वारा गुणदान करना है अर्थात् सहयोगी बनना है। इसमें दूसरे को नहीं देखना है। ... ब्रह्मा बाप ने सी (See) शिव बाप किया। अगर देखना है तो ब्रह्मा बाप को देखो।... ब्रह्मा बाप का स्लोगन था- 'जो ओटे सो अर्जुन', ... ब्रह्मा बाप अर्जुन नम्बरवन बना। जो दूसरे को देखेंगे वे नम्बर वन नहीं बनेंगे।''

अ.बापदादा 31.12.2000

बाबा बच्चों को जो भी शिक्षा देते थे, उसको पहले अपने जीवन में धारण करके फिर बच्चों को कहते थे। बाबा की मुरली के प्रति बाबा का अगाध प्रेम था और बच्चों में भी मुरली के प्रति भावना जाग्रत करते थे। वे सदा ही बच्चों को कहते थे कि एक दिन भी मुरली मिस नहीं करनी चाहिए। मुरली का रिगार्ड ही मुरलीधर शिवबाबा का रिगार्ड है। शिवबाबा भी कहते थे कि मुरली पहले ये ब्रह्मा सुनता है, फिर और सभी बच्चे सुनते हैं क्योंकि इनके कान शिवबाबा के सबसे पास हैं।

## तपस्या का निरन्तर जाग्रत स्वरूप अर्थात् निरन्तर तपस्वी स्वरूप त्याग-तपस्या और सेवा के प्रतिमूर्ति

ब्रह्मा बाबा ने तपस्या की कोई समय सीमा नहीं रखी, उनका जीवन ही तपस्वी जीवन था। उनके जीवन का हर कदम और हर क्षण तपस्या का जाग्रत स्वरूप था और सर्व को प्रेरणा देता था। रात को सोते समय भी बाबा के कमरे में कोई जाता था तो उसको लगता था कि बाबा सो नहीं रहा है लेकिन योग में लेटा हुआ है। जाने वाले को उसका वायब्रेशन अनुभव होता था।

''मधुबन में आते हैं तो बाप ब्रहमा के कर्म साकार में होने के कारण भूमि में तपस्या, कर्म और त्याग के वायब्रेशन समाये हुए होने के कारण यहाँ सहज अनुभव करते हैं कि यह संसार न्यारा है।... ऐसे ही जो बच्चा जहाँ भी रहता है, जो भी कर्मक्षेत्र है, हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये, इसको बापदादा कहते हैं - बाप समान बनना।''

अव्यक्त बापदादा 18.1.99

ब्रह्मा बाबा के सम्पर्क में आने से, उनकी दृष्टि से, उनकी गोद में आने से भी उनकी तपस्या की तरंगें अनुभव होती थी। सम्पर्क में आने वाले भी अपने को विदेही अनुभव करके परमसुख-परमशान्ति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते थे।

''स्नेह का साकार स्वरूप है समान बनना। परमात्मा बाप और ब्रह्मा बाप के गुण बच्चों की सूरत और मूरत से दिखाई दें। अनुभव करें कि इनके नयन, इनके बोल, इनकी वृत्ति वा वायब्रेशन न्यारे हैं। ... ब्रह्मा बाप के साकार होने के कारण उनकी तपस्या, कर्म और त्याग के वायब्रेशन इस मधुवन वरदान भूमि में समाये हुए हैं, जिस कारण यहाँ सहज अनुभव करते हैं।''

अ.बापदादा 18.1.99

## निरन्तर चढ़ती कला की स्थिति में

ब्रह्मा बाबा के ब्राह्मण जीवन में आदि से अन्त तक अर्थात् शिवबाबा की प्रवेशता से देह के त्याग के समय तक सतत चढ़ती कला रही, सदा जीवन में उमंग-उत्साह बढ़ता गया। बाबा के जीवन में सदा खुशी, विश्व-कल्याण की भावना चढ़ती कला में रही, गिरती कला या स्थिति के उतरने-चढ़ने का अंशमात्र भी नहीं रहा। उनके अथक पुरुषार्थ से यज्ञ भी सदा चढ़ती कला में आगे बढ़ता रहा। यद्यपि एक समय ऐसा भी आया जब यज्ञ में साधनों की कमी हुई, जिस समय को यज्ञ में 'बेगरी पार्ट' के नाम से याद किया जाता है परन्तु उस समय भी हरेक आत्मा जो यज्ञ में रहती थी और जिसको अपने पुरुषार्थ का यथार्थ ध्यान था, वह बाबा को भी और अपने को भी चढ़ती कला में अनुभव करता था। जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता था। हरेक ऐसा अनुभव करता था कि वह बाबा के संग में अपनी कर्मातीत अवस्था के निकट जा रहा है। बाबा ने किसी को भी भारीपन अनुभव नहीं होने दिया। उनके ऐसे संग के लिए ही गीत है - तुम हो तो पिया सबकुछ है, वरना ये चमन बेगाना है। भले बेगरी पार्ट के समय कुछ भाई-बहनें चले भी गये, उनके जीवन को देखें तो श्रीमत का पालन न करना और पुरुषार्थहीनता ही उनके जाने का कारण बनी। बाकी जिन्होंने ब्रह्मा बाप को अपना आदर्श बनाया, वे उनके समान ही चढ़ती कला में आगे बढ़ते रहे।

## रूप में सादगी और चलन में दिव्यता, भरपूरता और शालीनता

ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन से 'सादा जीवन उच्च विचार (Simple living High Thinking)' के कथन को चरित्रार्थ करके दिखाया। बाबा का सदैव स्लोगन रहा 'मांगने से मरना भला।' ब्रह्मा बाबा ने बेगरी पार्ट होते भी भरपूरता और दिव्यता के संकल्प को नीचा नहीं किया। उनका नारा था 'ब्रह्माकुमारी संस्था इज दि रिचेस्ट इन दि वर्ल्ड।' बाबा ने बच्चों में भी यही भावना जाग्रत की। अपनी ड्रेस भी सादी रखी और यज्ञ वत्सों के लिए भी सादी ड्रेस ही रखी। सादी अर्थात न बहुत ऊंची और न बहुत नीची अर्थात् गरीबी की।

''जो कहते हैं जब जरूरत पड़े तो बाबा मुझे याद करना, हम मदद करने के लिए हाजिर हैं। यज्ञ के अच्छे-अच्छे काम के लिए दरकार हो तो मुझे याद करना। बाबा कहते हैं - हम किसको याद नहीं करते, जो करना है सो करो। हम तो दाता हैं। हम तो आये ही हैं भारत को स्वर्ग बनाने, तुम भी स्वर्ग में जायेंगे। जितना करेंगे, उतना पायेंगे। ... यह तो गायन है - सांवलशाह की हुण्डी सकारी। इनको भी कोई परवाह नहीं है। बाबा कहते हैं हुण्डी आपही भरेगी।''

सा.बाबा 5.10.01
रिवा.

## विश्व-महाराजन बनने का नशा और विश्व-सेवाधारीपन की निर्मानता और कर्तव्य का बैलेन्स रखने वाले

ब्रह्मा बाबा को सदैव ये नशा रहता था कि मैं भविष्य में विश्व-महाराजन बनने वाला हूँ, साथ वर्तमान का कर्तव्य भी ध्यान रहता था कि मुझको सर्वात्माओं की सेवा करनी है। सदैव विश्व-सेवाधारी के रूप में अपने को देखा और कर्तव्य किया। भविष्य में विश्व-महाराजन बनने की खुशी और नशा सदा बाबा के नयनों से और बोल में दिखाई देता था। बाबा को अपने लौकिक जीवन में राजा-महाराजाओं के जीवन का अनुभव था, विभिन्न आश्रमों के जीवन का भी अनुभव था। बाबा कहते थे कि वाइसराय भी हस्ताक्षर करते हैं तो लिखते हैं - Your Obedient Servent. इसलिए बच्चों को भी कहते थे कि तुम बच्चों को भी वर्तमान में सेवाधारी और भविष्य में ताजधारीपन की स्मृति और नशा सदा रहना चाहिए

''बाप आकर सेवा सिखलाते हैं। इतना ऊंच ते ऊंच बाप कितनी सेवा करते हैं। ... इतना निरहंकारी बनना होता है। कायदे के विरुद्ध कब कोई काम न करना चाहिए। जितना हो सके औरों के कल्याण अर्थ सभी कुछ अपने हाथ से करना चाहिए।''

सा. बाबा 15.11.71 रिवाइज

132

## मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि सब में सदा एकरस

परमपिता परमात्मा ज्ञान का सार है, वह ज्ञान अर्थात् विश्व-नाटक के सब राज़ों को जानता है,

इसलिए वह हर दृष्य को साक्षी होकर देखता है और सदा एक रस स्थिति में रहता है अर्थात् उसको विश्व-नाटक की कोई घटना प्रभावित नहीं करती है। वह मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि सब में एकरस रहता है। ब्रह्मा बाबा ने भी शिवबाबा के सानिध्य में रहकर ज्ञान के सारे राज़ों को समझ लिया और वे भी मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय सब में एकरस स्थिति रहते थे। यज्ञ में और अपने व्यक्तिगत जीवन में अनेक कठिन परीक्षायें आई परन्तु बाबा की स्थिति उनसे प्रभावित नहीं हुई। एक बाप पर अटल निश्चय और ड्रामा के सर्व राज़ों को बुद्धि में रखते हुए सदा एकरस स्थिति में रहे और बच्चों को भी एकरस स्थिति में रहने की प्रेरणा देते रहे। बाबा के जीवन में ये प्रत्यक्ष देखा कि बाबा ने हर परिस्थिति को साक्षी होकर देखा और सदा एकरस स्थिति में रहे। बाबा हमारे साथ है, यज्ञ बाबा का है और ये सब ड्रामा है, ड्रामा कल्याणकारी है, इसको साक्षी होकर देखना है और एकरस स्थिति में रहना है - ये बाबा के जीवन में सदा ही देखने में आया।

''इसमें थोड़े टाइम के लिए सुख, दुख, निन्दा, स्तुति सभी कुछ सहन करना पड़ता है। इनसे भी पार होना है। कोई को थोड़ी गर्मी लगती है तो कहते हम ठंडी में रहें। अब बच्चों को तो ठण्डी में वा गर्मी में सर्विस करनी है ना। इस समय का यह थोड़ा-बहुत दुख तो सहन करना पड़ेगा। ये कोई नई बात नहीं। यह है ही दुख धाम।''

सा. बाबा 4.4.70 रिवा.

''कई बोलते हैं - तुम्हारी इतनी बदनामी क्यों होती है। यह तो पाण्डवों और कौरवों का गायन है। पाण्डवों की निन्दा हुई थी ना। पाण्डवपति कृष्ण को कहते हैं, उनकी कितनी ग्लानि की।''

सा.बाबा 30.12.68

## ''न काहू से दोस्ती, न काहू से वैर'' की यथार्थ धारणा वाले निर्भय और निर्वैर

ब्रह्मा बाबा ने आत्मिक स्थिति का ऐसा सफल अभ्यास किया कि उनकी आत्मिक स्थिति स्वभाविक हो गई और बुद्धि में यह धारणा पक्की हो गई कि आत्मा तो अजर-अमर-अविनाशी है इसलिए बाबा किसी भी परिस्थिति में कभी भयभीत नहीं हुए। बाबा की बुद्धि में सदा रहता था कि मैं इस कल्प वृक्ष का आधार हूँ, सभी जीवात्मायें हमारे बच्चे हैं, शिवबाबा के साथ हमको भी सर्व का कल्याणकारी बनना है। इस अभिधारणा के कारण बाबा का सभी जीवात्माओं के साथ अगाध प्यार हो गया। उनके दिल में किसी भी आत्मा के प्रति किसी भी प्रकार का वैर नहीं रहा। इस सृष्टि के नियमानुसार जब हमारा किसी से वैर नहीं होगा तो किसी

का हमारे प्रति भी वैर नहीं होगा और जब हमारा किसी के साथ वैरभाव नहीं है तो भय किस बात का। उनकी सदा ये भावना रही कि शिवबाबा के साथ हमको सभी का कल्याण करना है, जिससे उनकी सभी के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना। बाबा प्यार का सागर है तो हमको भी बाबा के समान मास्टर प्यार का सागर बनना है। ब्रह्मा बाबा के लौकिक जीवन में भी सभी के साथ प्रेम भाव और शुभ भावना का संस्कार था, जो ज्ञान मार्ग में आने के बाद एक फलों से भरे हुए वृक्ष के समान सम्पन्न हो गया।

ब्रह्मा बाबा के मन में कभी भी कोई व्यर्थ या अशुभ संकल्प नहीं रहा, सदा ही सर्व के प्रति शुभ संकल्प रहा, जिसके कारण उनके बोल में भी सर्वात्माओं के प्रति कल्याण झलकता था। जो अन्दर होता है वही मनुष्य के कर्म और बोल से बाहर आता है।

''एक परमपिता परमात्मा में ही कभी खाद नहीं पड़ती, बाकी तो सब में खाद पड़नी ही है। हर एक को सतो, रजो, तमो में आना ही है। यह सब प्वाइन्ट धारण कर बहुत मीठा बनना चाहिए। ऐसे नहीं कि कोई से दुश्मनी, कोई से दोस्ती।''

सा.बाबा 14.10.03 रिवा.

## सर्व के प्रति रहमदिल

ब्रह्मा बाबा का दिल रहम का सागर था। वे दूसरे के दुख को देखकर उसे अपने दुख के समान अनुभव करते थे और उसको दूर करने का भरसक प्रयत्न करते थे। बाबा में ये संस्कार बचपन से ही था। उस रहम के कारण वे सदा विश्व-कल्याण अर्थात् सर्वात्माओं के कल्याण के प्रति संकल्प रखते थे और बच्चों को सर्व के कल्याण के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे।

''अब अपनी बुद्धि में है कि यह सुख-दुख, दिन-रात, हार-जीत का ड्रामा बना हुआ है। तो दुर्गति वालों पर रहम आता है क्यों न उन्हों को भी रचयिता और रचना का ज्ञान मिल जाये तो वे भी बाप से वर्सा पा सकें। जो खुशी अपने को मिलती है वह दूसरों को भी देना चाहिए।''

सा. बाबा 21.4.72 रिवा.

''ब्राह्मण जीवन में, महान युग मे, बापदादा के अधिकारी बन फिर भी मेहनत करनी पड़े, सदा युद्ध की स्थिति में ही जीवन बितायें - बच्चों की यह मेहनत की जीवन बापदादा से देखी नहीं जाती। इसलिए निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनो। समझा!''

अ.बापदादा 6.11.87

''रात में बाबा को बहुत ख्याल चलता है। ख्यालात में फिर नींद का नशा उड़ जाता है, नींद फिट जाती है। समझाने की बड़ी अच्छी युक्ति चाहिए। ... बाबा खुद अपना अनुभव सुनाते

हैं। बाबा को याद करता हूँ, बाबा इस रथ को खिला रहे हैं, फिर भूल जाता हूँ। तो बाबा विचार करते हैं जबकि मैं भी भूल जाता हूँ तो इन बिचारों को कितनी तकलीफ होती होगी।''

सा.बाबा 20.12.03 रिवा.

''ऐसा कोई न समझे कि हमने धन से मदद की है, इसलिए हमारा पद ऊंचा होगा। यह बिल्कुल भूल है। सारा मदार सर्विस और पढ़ाई पर है।... अगर अपने पर और औरों पर रहम नहीं करते तो बाकी बाप को क्या फॉलो करते हैं।''

सा.बाबा 20.1.04 रिवा.

''मास्टर दाता बने हो या दूसरे को देखकर घृणा आती है? रहम आता है, दया भाव आता है, दातापन की स्मृति आती है या क्यों-क्या उत्पन्न होता है? आप सबका टाइटिल है - विश्व कल्याणकारी। तो जो विश्व कल्याणकारी है, उसको हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना होगी ना। उसके अन्दर किसी भी आत्मा के प्रति घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, ग्लानि का भाव उत्पन्न नहीं होगा।''

अ.बापदादा 4.12.91 पार्टी 3

''तुम्हारा धन्धा ही है सबकी मनोकामनायें पूर्ण करना।... बुद्धि में आता है - हम सबकी मनोकामनायें पूर्ण करें अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बतायें।... शिवबाबा द्वारा जगतपिता-जगदम्बा को वर्सा मिलता है, फिर उनके द्वारा बच्चों को मिलता है।''

सा.बाबा 29.3.07 रिवा.

## अपकारी पर भी उपकार करने वाले

ब्रह्मा बाबा की अपकारी के प्रति भी सदा उपकार की भावना रही। यज्ञ की स्थापना में कितने ही बाधक बनकर, यज्ञ के अपकारी बनकर आये परन्तु बाबा ने कब भी किसके प्रति अशुभ संकल्प नहीं किया। सदा सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखी। सदा ही बाबा कहते थे - वे बेचारे अज्ञानी है, अन्जान हैं इसलिए उनका कोई दोष नहीं, समय आयेगा वे भी इस सत्य को अनुभव करेंगे परन्तु टू लेट हो जायेगा। तुम बच्चों को उनको भी ज्ञान देकर रास्ता बताना है, उनका भी कल्याण करना है। बाप आये हैं सर्व का कल्याण करना तो हमको भी सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखनी है।

## मुख द्वारा सदा वरदानी बोल बोलने वाले

ब्रह्मा बाबा का हर वाक्य महावाक्य था, हर एक शब्द एक वरदान था अर्थात् उनका हर शब्द सुनने वालों को प्राप्ति का अनुभव कराने वाला था। उनके हर बोल में सर्वात्माओं का कल्याण समाया हुआ था, वह दूसरों के लिए वरदान के रूप में था और दूसरों के लिए वरदान

सिद्ध होता था। बाबा सदा बच्चों को भी यह शिक्षा देते थे कि तुमको कब किसके अकल्याण का संकल्प नहीं होना चाहिए, तुम्हारा अकल्याण का संकल्प भी दूसरों का अकल्याण कर देगा, जिसका पाप तुम्हारे सिर पर चढ़ जायेगा। तुमको तो सबका कल्याण करना है। जब सबका कल्याण करेंगे तब तो कल्याणकारी बाप के बच्चे कहलायेंगे।

## माया के युद्ध में सफल योद्धा

ब्रह्मा बाबा कहना था कि हम योद्धा हैं, हम सदा युद्ध के मैदान पर हैं, हमारी माया के साथ युद्ध है। योद्धा कम आराम पसन्द नहीं होते, योद्धा सदा अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रहते हैं, उनकी दृष्टि में सदा युद्ध और विजय रहती है। बाबा सदैव कहते थे - दुश्मन वार करे, उससे पहले तुम उसको परखकर सावधान हो जाओ तो तुम्हारी कब हार नहीं होगी। शत्रु से घबराने वाले कभी शत्रु पर जीत नहीं पा सकते, इसलिए जीतने का लक्ष्य रखने वाले कब घबराते नहीं हैं।

''जैसे ब्रह्मा बाप ने माया प्रबल होते हुए भी, स्वयं को बलवान बनाया, न कि घबराया। तो ऐसे फॉलो फादर करो। ... बाप के हर बोल में हर आत्मा के तीनों कालों का कल्याण भरा हुआ है, तब ही विश्व-कल्याणकारी गाये हुए हैं।''

अ.बापदादा 7.6.77

''संगम पर ही देवता बनने का पुरुषार्थ करते हैं। अपने कल्याण के लिए जितना हो पुरुषार्थ करना है। युद्ध के मैदान से कायर होकर नहीं भागना है।''

सा.बाबा 2.8.68

## प्यार के अखुट भण्डार

ब्रह्मा बाबा के दिल में सर्व आत्माओं के प्रति अगाध प्यार था। मनुष्यात्मायें तो क्या पशु-पक्षियों के प्रति भी उनकी सदा प्यार की भावना रहती थी। कभी-कभी सर्प आदि निकल आते थे तो बाबा उनको भी बच्चा कह देते थे और बच्चों को मारने से मना करते थे, उनको बाहर छुड़वा देते थे।

''बाबा प्यार का सागर है तो जरूर प्यार ही करेंगे। मीठे मीठे बच्चे कब भी मन्सा-वाचा-कर्मणा किसको दु:ख न दो। भल तुमसे किसकी दुश्मनी हो तो भी तुम्हारी बुद्धि में दु:ख देने का ख्याल न आये।''

सा. बाबा 3.3.72 रिवा.

## कर्मभोग में भी कर्मयोग का अनुभव करने और कराने वाले कर्मयोग अर्थात् योगबल से कर्मभोग पर विजय पाने वाले

हरेक देहधारी का सतोप्रधानता से तमोप्रधानता तक आने में कुछ न कुछ कर्मों का हिसाब किताब तो बनता ही है और उसको अन्त में कुछ न कुछ भोगना भी पड़ता ही है परन्तु योगी उसको अपने कर्मों का हिसाब-किताब समझकर खुशी से भोगकर समाप्त करता है और भोगी उसमें दुखी होता है। ब्रह्मा बाबा के जीवन में भी अनेक प्रकार के कर्मभोग के हिसाब-किताब आये परन्तु बाबा ने उनको योग में रहकर खुशी से भोग कर पूरा किया। बाबा का कहना था कि ये सब कर्मभोग अपने ही कर्मों का परिणाम हैं और ये आधे कल्प के लिए विदाई ले रहे हैं। इनको खुशी से भोगकर पूरा करना है, इनको खुशी से विदाई देना है। किसी भी कर्मभोग के समय बाबा के मुख पर रिंचक मात्र भी दुख की लहर नहीं दिखाई दी। कर्मभोग को पूरा करते हुए भी कर्मयोग की स्थिति से सेवा की। बाबा को खांसी आती थी तो बाबा कहते थे ये मेरी सखी है। कई बार कर्मभोग के कारण हॉस्पिटल में भी जाना हुआ तो हॉस्पिटल के डाक्टर्स भी उनकी अवस्था को देखकर आश्चर्य खाते थे। बाबा का तो उनके प्रति प्रेम था ही लेकिन बाबा को देखकर डाक्टर्स का भी बाबा के प्रति प्रेम जाग्रत होता था।

''तुम लोग सारा समय तो ज्ञान की बातें नहीं करेंगे। फिर जवान को शान्ति में लाने के लिए याद की रेस करो।... बाबा अपना बताते हैं कि हम भी भूल जाते हैं ... खांसी बन्द कर देगा। परन्तु मैं खुद ही सारा समय याद में नहीं रह सकता तो खंसी कैसे बन्द हो। बाप अपना बता देते हैं परन्तु बच्चे अपना नहीं बताते, लज्जा आती है।''

सा.बाबा 19.8.68

''पुरुषार्थ अनुसार प्रारब्ध बनती है। पुरुषार्थ ड्रामा अनुसार चलता है परन्तु ड्रामा समझकर बैठ नहीं जाना है। खांसी का मिसाल, बिना दवाई खाये ठीक नहीं होगी।''

सा. बाबा 19.7.68

''बुद्धियोग बाप के साथ चाहिए। यहाँ तो बहुतों का बुद्धियोग भटकता रहता है। पुरानी दुनिया के मित्र-सम्बन्धी आदि के तरफ या देहाभिमान में फंसे रहते हैं। थोड़ी बीमारी होती है तो परेशान हो जाते हैं। अरे, योग में रहेंगे तो दर्द आदि भी कम होगा। योग नहीं तो बीमारी आदि कैसे छूटे ? ख्याल करना चाहिए - मात-पिता जो नम्बरवन पावन बनते हैं, वे ही फिर सबसे जास्ती नीचे उतरते हैं। उनको तो बहुत भोगना भोगनी पड़े परन्तु योग में रहने के कारण बीमारी हटती जाती है।''

सा.बाबा 29.11.03 रिवा.

ब्रह्मा बाबा ने अपने योगबल से कर्मभोग पर विजय पायी और सिद्ध करके दिखाया कि कैसे कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय पायी जा सकती है।

''खेल तो सिर्फ 10-15 मिनट का ही था। उस थोड़े से समय में ही अनेक खेल चले। उसमें भिन्न-भिन्न अनुभव हुए। पहला अनुभव तो यह था कि पहले जोर से युद्ध चल रही थी। किसकी ? योगबल और कर्मभोग की। कर्मभोग भी फुल फोर्स में अपनी तरफ खींच रहा था और योगबल भी फुल फोर्स में ही था। ऐसे अनुभव हो रहा था कि जो भी शरीर के हिसाब-किताब रहे हुए थे, वे फट से योग-अग्नि में भस्म हो रहे थे और मैं साक्षी होकर देख रहा हूँ। जैसे अखाड़े में बैठ मल्लयुद्ध देखते हैं। मतलब तो दोनों का फोर्स पूरा ही था। कुछ समय बाद कर्मभोग तो बिल्कुल निर्बल हो गया, बिल्कुल दर्द गुम हो गया। ऐसे ही अनुभव हो रहा था कि आखरीन में योगबल ने कर्मभोग पर जीत पा ली। उस समय तीन बातें साथ-साथ चल रही थी। एक तरफ तो बाबा से बातें कर रहा था... तीसरी तरफ यह भी अनुभव हो रहा था कि कैसे शरीर से आत्मा निकल रही है।... डेड साइलेन्स का अनुभव हो रहा था। देख रहा था कि कैसे एक-एक अंग से आत्मा अपनी शक्ति छोड़ती जा रही है। मृत्यु क्या चीज है, वह अनुभव हो रहा था।''

अ.बापदादा का सन्देश 7वें दिन

''जो नम्बरवन में पुण्यात्मा बनता है, वही फिर नम्बरवन पापात्मा भी बनता है। उनको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि शिक्षक बनते हैं सिखाने के लिए।... कभी भी कर्मभोग से डरना नहीं है, खुशी से पास करना है क्योंकि अपना ही किया हुआ हिसाब-किताब है। प्रायश्चित होना ही है एक बाप की याद से।''

सा.बाबा 14.6.07 रिवा.

## सर्व के प्रति सम-दृष्टि, सम-भावना रखने वाले

ब्रह्मा बाबा के दिल में ऊंच-नीच, धनी-निर्धन, अपने-पराये का कोई भेद नहीं था। सब हमारे बच्चे हैं, हमको सबकी पालना करनी है। सब आत्मायें हैं और परमात्मा के बच्चे हैं। सब इस विश्व नाटक के पार्टधारी हैं, इस सत्य की अनुभूति से ब्रह्मा बाबा का सबके प्रति समभाव रहा। सबका कल्याण हो, ऐसी भावना रही। सभी जाति-धर्म, वर्ग की आत्मायें, जिन्होंने ने पवित्रता की प्रतिज्ञा की और ब्राह्मण जीवन के नियम-संयम को अपनाया, उसको उन्होंने अपनी कल्याणमयी गोद में समा लिया। जो ज्ञान में नहीं आये या जिन्होंने पवित्रता को न भी अपनाया, उसके प्रति भी बाबा ने अपने मन में ऊंच-नीच का भेद नहीं रखा। बाबा का सबके प्रति सम-भाव था, इसलिए सबका भी बाबा के प्रति प्रेम रहता था।

## सहनशीलता और प्रेम की प्रतिमूर्ति

यज्ञ की स्थापना में अनेक विरोधियों ने बाबा को गाली दी, बच्चों के तरफ से भी अनेक प्रकार के विघ्न आये परन्तु बाबा ने सबको धैर्य से सहन किया और सबके प्रति प्रेम की भावना जाग्रत रखी। बाबा न कभी घबराये और न ही किसके अहित का संकल्प किया बल्कि सबके प्रति कल्याण की भावना रखी। ब्रह्मा बाबा ने सब खुशी से सहन किया और बच्चों को भी कहा - धर्म की स्थापना में विघ्न तो पड़ते ही हैं, इसलिए उनसे घबराना नहीं। सोना को साफ होने के लिए आग में तपना ही पड़ता है, मूर्ति को पूजनीय बनने के लिए चोट खानी ही पड़ती है। ऐसी धारणा रखकर बाबा ने सब सहज किया।

## सदा सर्व के प्रति कल्याण की भावना वाले

बाबा के दिल में सदा सर्व के प्रति कल्याण की भावना रही। बाबा के मन में अंशमात्र भी किसके प्रति अकल्याण की भावना नहीं आई। ब्रह्मा बाबा ने सदैव यह स्मृति जाग्रत रखी कि मैं कल्याणकारी बाप का बच्चा हूँ, मुझको सर्व का कल्याण करना ही है।

''औरों को भी रास्ता बताना है। एक को भी छोड़ना नहीं है। शास्त्रों में यह भी कहानी है कि एक रह गया तो उसने उल्हना दिया। तो बाप कहते हैं सबको निमन्त्रण देते रहो।''

सा.बाबा 8.7.71 रिवा.

## विघ्नों को भी परीक्षा समझकर पार करने और पास करने वाले

ब्रह्मा बाबा सदैव कहते थे - विघ्न भी एक परीक्षा को पास करने का साधन मात्र हैं अर्थात् पेपर हैं और उनको पेपर समझकर खुशी से पास और पार करना ही बुद्धिमान ज्ञानी पुरुष का लक्षण है। बाबा के सामने अनेक प्रकार के विघ्न आये परन्तु बाबा ने हर विघ्न को परीक्षा समझकर पार किया अर्थात् उनमें पास होकर दिखाया। बाबा कहते थे कि विघ्न भी अनुभवी बनाता है, जिससे भविष्य में सहज ही विघ्नों को पार कर सकते हैं और उस अनुभव के आधार पर दूसरों को भी मार्ग-प्रदर्शना दे सकते हैं। बाबा का कहना था कि अच्छे स्टूडेण्ट्स इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि पेपर आये और हम उसको पास करके आगे के क्लास में जायें। ऐसे ही बाबा हर विघ्न को पास करके आगे ही बढ़ते गये और अपनी अन्तिम मंजिल सम्पूर्णता और सम्पननता को प्राप्त कर लिया।

## पुराने स्वभाव-संस्कार का एक धक से सम्पूर्ण परिवर्तन करने वाले

ज्ञान में कदम रखते ही ब्रह्मा बाबा के जीवन में एकदम परिवर्तन आया और सारा जीवन परिवर्तन हो गया। जीवन में दिव्यता आ गई और उनका जीवन चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप अर्थात् भूलोक में देवता स्वरूप बन गया। सर्व पुराने मित्र-सम्बन्धियों से बुद्धियोग हट गया। स्थूल हीरे-जवाहरात का धन्धा साझेदार को देकर हिसाब-किताब चुक्तू कर लिया। जो लौकिक धन्धे की निपुणता थी, वह ज्ञान रतनों के धन्धे में लग गयी। लौकिक सम्बन्ध को अलौकिक सम्बन्ध में परिवर्तन कर दिया, स्थूल रतनों का धन्धा ज्ञान रतनों का धन्धा हो गया। ''ब्रह्मा बाप का पहला कदम है आज्ञाकारी और दूसरा कदम है सर्वंश त्यागी।... देह के सम्बन्धों का त्याग बड़ी बात नहीं है लेकिन देह के पुराने स्वभाव-संस्कार का त्याग जरूरी है।... स्वभाव-संस्कार का सर्व वंश सहित त्याग करना, इसको कहा जाता है सर्वंश त्यागी।... 'मैं त्यागी हूँ', इस अभिमान का भी त्याग।''

अ.बापदादा 19.1.95

## अपने जीवन के लिए आवश्यक समय, संकल्प, साधन भी सेवा में लगाने वाले

बाबा ने अपने जीवन के लिए आवश्यक समय, संकल्प और साधनों को भी सेवा में समर्पण कर दिया, अपने तन की भी परवाह न करके सेवा की। इस स्थूल देह का त्याग करने के दिन तक बाबा ने क्लास में जाकर मुरली चलाई। रात को आराम का समय भी सेवा में लगाया, रात को भी सारे विश्व को सकाश देने, ज्ञान का चिन्तन करना, लिखना, जिससे बच्चों को नये-नये प्वाइन्ट्स मिलें। दिन में, रात में किसी भी समय सेवा की बात आई, बाबा सदैव हाजिर रहे और बच्चों को भी अपने जीवन से, महावाक्यों से ऐसी ही शिक्षा दी, जिससे बच्चे भी अथक बनकर सेवा में तत्पर रहे।

''सर्विस में दधीचि मिसल हड्डियां भी दे देनी हैं। यहाँ देना तो क्या और ही सुख चाहिए। तबियत कोई इन चीजों से थोड़ेही अच्छी होती है। तबियत के लिए चाहिए - याद की यात्रा।''

सा.बाबा 7.8.68

''बाप का फरमान है एक भी स्वांस वा संकल्प, सेकेण्ड व्यर्थ नहीं गँवाना। ... ब्रह्मा बाप को देखा - अपना आराम का समय भी विचार-सागर मन्थन कर बच्चों के प्रति लगाया। रात्रि को भी जागकर बच्चों को शक्ति देते रहे।''

अ.बापदादा 26.1.95

## गम्भीरता - रमणीकता का सन्तुलन रख निरन्तर एकान्तवासी स्थिति में स्थित

### सदा एक के अन्त में खोये हुए एकान्तवासी स्थिति में रहने वाले

ब्रह्मा बाबा के जीवन में गम्भीरता और रमणीकता का अद्वितीय सन्तुलन था और निरन्तर एक बाप की लगन में मगन, सदा एकान्तवासी जीवन के अभ्यासी थे। बच्चों को हंसाते-बहलाते भी थे तो एकान्तवासी बनकर एक बाप की याद में रहने का भी पाठ अपने जीवन के कर्मों से और शब्दों से पढ़ाते थे। रमणीकता की बातें करते-करते भी एक सेकण्ड में एकान्तवासी बन शान्त के अनुभव में चले जाते थे और एक सेकेण्ड में बाबा की याद, एकान्तवासी से रमणीकता में भी आकर बच्चों से मिलते थे। वर्तमान में बाबा इसी अभ्यास के लिए जोर देते हैं।

''बाबा को थोड़ेही मालूम था कि बाप स्वयं आकर मेरे में प्रवेश करेंगे। ... पहले तो आश्चर्य खाते थे, यह क्या होता है। मैं किसको देखता हूँ तो बैठे-बैठे उनको कशिश होती है, ध्यान में चले जाते हैं। आश्चर्य में पड़ गये, यह क्या है। इन बातों को समझने के लिए फिर एकान्त चाहिए। अच्छा बनारस जाता हूँ। ... रात को नींद आ जाती थी, समझता था कहाँ उड़ गया हूँ।''

सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

### सदा सर्वशक्तिवान बाप को अपने जीवन से प्रत्यक्ष करने वाले साक्षात् बाप समान अर्थात् बाप का साक्षात्कार कराने वाले

सर्वशक्तिवान परमात्मा का सर्वशक्तिवान होने का गुण भी ब्रह्मा बाबा के कर्मों से ही प्रत्यक्ष होता है। उनका सदैव संकल्प रहता था कि ये तन बाबा को दिया हुआ है, इससे कोई भी ऐसा कर्म न हो जो शिवबाबा के गुण-कर्तव्य के योग्य न हो और जिससे बाप की निन्दा हो। हमको तो अपने कर्मों से शिवबाबा को प्रत्यक्ष करना है। ब्रह्मा बाबा के मुख से किसी ने कब भी शक्तिहीनता अर्थात् कमजोरी का शब्द नहीं सुना। ब्रह्मा बाबा सदैव ध्यान रखते थे - हमारी स्थिति ऐसी हो जो हमारे से बाप का साक्षात्कार हो, बाप के गुण-संस्कारों का साक्षात्कार हो।

''यह तो बच्चों को मालूम है - योग है मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए। सो तो मनुष्य मात्र कोई सिखला न सके।... सर्व का सद्गति दाता है ही एक। यह क्लियर लिख देना चाहिए।... विश्व में शान्ति स्थापन करना वा मुक्ति-जीवनमुक्ति देना बाप का ही काम है। ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करके प्वाइन्ट्स समझानी है।''

सा.बाबा 9.4.68 रात्रि क्लास

''बाप समान बनना है। लक्ष्य ऊंचा रखा है तो लक्षण भी आते जायेंगे। बहुत काल जरूर इकट्ठा करना है, फिर लास्ट में नहीं उल्हना देना कि हमें तो याद नहीं था बहुत काल।... पहले अपने को प्रत्यक्ष करो तब बाप प्रत्यक्ष होगा। क्योंकि आप के द्वारा ही बाप प्रत्यक्ष होना है ना!''

अ.बापदादा 17.3.07

## 'कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होयेगी बहुरि करोगे कब' - के प्रत्यक्ष स्वरूप

ब्रह्मा बाबा को कोई भी श्रेष्ठ कर्म कल करने के लिए छोड़ना अच्छा नहीं लगता था। वे हर श्रेष्ठ कर्म कब पर न छोड़कर अब करने का संकल्प रखते थे अर्थात् उसी समय करते थे और अपने कर्म से बच्चों को भी यही शिक्षा दी अर्थात् उनसे भी कराया। बच्चों को बाबा सदैव कहते थे - बच्चे जीवन का कोई भरोसा नहीं है, कब भी काल आ सकता है, इसलिए कोई कर्म कल के लिए नहीं छोड़ो, अब करना है - यह संकल्प रखो। बाबा कहते थे - कोई शुभ संकल्प आये तो एक सेकेण्ड बाद के लिए नहीं छोड़ो। एक सेकेण्ड के लिए भी छोड़ा तो उसमें माया विघ्न डाल सकती है, संकल्प में माया आ सकती है।

''साकार का भी मुख्य गुण देखा - वह कोई भी बात को पीछे के लिए नहीं छोड़ते थे। अभी ही करना है। ... जैसे हैं, जो भी सामने हैं, वैसी ही हालतों में इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है - यह लक्ष्य रखना है।... यह पुरुषार्थ के सौभाग्य का समय भी हाथ से चला जायेगा।''

अ.बापदादा 17.4.69 संग्रहालय के उद्घाटन के समय

''ब्राह्मण बनना अर्थात् खाता जमा करना क्योंकि इस एक जन्म के जमा किये हुए खाते के प्रमाण 21 जन्म प्रालब्ध पाते रहेंगे। न सिर्फ 21 जन्म प्रालब्ध प्राप्त करेंगे लेकिन जितना पूज्य बनते हो अर्थात् राजपद के अधिकारी बनते हो, उसी हिसाब अनुसार आधा कल्प भक्ति मार्ग में पूजा भी होती है।... जो अष्टबनते हैं, वे ही इष्ट भी इतने ही महान बनते हैं।... यह जन्म वा जीवन वा युग सारे कल्प के खाते को जमा करने का युग वा जीवन है। 'अब नहीं तो कब नहीं'... ब्रह्मा बाप के नम्बरवन जाने की विशेषता क्या देखी ? कब नहीं, लेकिन अब करना है। 'तुरत दान महापुण्य' कहा जाता है।''

अ.बापदादा 24.3.85

## दृष्टि से ही आत्माओं के भाग्य को परखने वाले सफल पारखी

## भृगु ऋषि के समान सर्व की जन्म-पत्री को देखने वाले सच्चे भृगु ऋषि

जैसे हीरे-जवाहरात के धन्धे में ब्रह्मा बाबा की परखने की शक्ति प्रखर थी, वैसे ही ज्ञान मार्ग में भी आत्माओं के भाग्य को परखने की उनमें अपार शक्ति थी। जो भी बच्चा उनसे पहली बार मिलता था, उसके भविष्य के विषय में उनको उसी समय ज्ञान हो जाता था और उनके मुख से कोई न कोई ऐसे शब्द निकलते थे, जिससे उसके भविष्य का आभास होता था। बच्चे भी इस सत्य को अनुभव करते हैं कि बाबा ने उनके भाग्य के विषय में जो कहा, वैसा ही उनके जीवन में हुआ। बाबा हर बच्चे के भाग्य को, उसकी जन्म-पत्री को देखकर उसको श्रीमत देते थे, जिससे वह उसको करने में सफल हो। उनकी इस परख शक्ति के कारण ही ब्रह्मा को भाग्य विधाता भी कहा जाता है।

''मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। सभी देहधारियों से ममत्व मिट जाना बड़ा मुश्किल होता है। बाप समझ जाते हैं, इनका ममत्व मिटना मुश्किल दिखाई पड़ता है, शकल ही ऐसी देखने में आती है।'' सा.बाबा 11.10.03 रिवा.

''शिवबाबा है अन्तर्यामी, यह है बाहरयामी। यह बाबा भी हर एक की शक्ल से, बोल से, एक्ट से सब कुछ समझ लेते हैं।... एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादुर बनकर राम की तरफ जाना चाहिए।... कांटों को फूल, मनुष्य को देवता बनाओ। मास्टर दुखहर्ता सुखकर्ता बनकर यह धन्धा करना चाहिए।''

सा.बाबा 15.5.07 रिवा.

''विशेष साक्षात्कार के पार्ट को देख ब्रह्मा बाप ने बच्ची (गुल्जार दादी को) के सरल स्वभाव, इनोसेन्ट जीवन की विशेषता को देखकर यह वरदान दिया था कि जैसे अभी इस पार्ट में आदि में ब्रह्मा बाप की साथी भी बनी और साथ भी रही, ऐसे आगे चल बाप के साथी बनने की, समान बनने की ड्युटी भी सम्भालेगी। ब्रह्मा बाप समान सेवा में पार्ट बजायेगी। तो वह ही वरदान तकदीर की लकीर बन गये।'' अ.बापदादा 19.12.85

## अचानक के पेपर में सदा पास होने वाले

कब भी कोई पेपर आया तो बाबा ने उसमें सदा ही पास होकर दिखाया क्योंकि उन्होंने हर तरह से हर बात की पहले से ही तैयारी करके रखी थी। अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ आई, किसने शरीर छोड़ा परन्तु बाबा ने संकल्प मात्र भी चिन्ता नहीं की और ड्रामा समझ कर उन सबको पास किया और बच्चों को भी पास करने की प्रेरणा दी। अन्तिम

परीक्षा को भी पास होकर दिखाया। बाबा को अचानक आने वाला पेपर भी अचानक नहीं लगता था, बल्कि बाबा की ये धारणा पक्की थी कि ये तो कल्प पहले भी ऐसे ही आया था, अब भी आया है, मुझको इसमें पास होना है।

''अचानक होना है। आज एक घण्टे बाद भी हो सकता है। इतना एवररेडी रहना है। ... आप समय का इन्तजार नहीं करो, अभी समय आपका इन्तजार कर रहा है।... इन हद की बातों का आधार नहीं लो, एवर-रेडी रहो। निराधार, एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति।... इन्तजार नहीं, सम्पन्न बनने का इन्तजाम करो।'' अ.बापदादा 16.12.2000

''यह बता देते हैं। आर्डर होगा, पूछकर नहीं, तारीख फिक्स नहीं करेंगे। अचानक आर्डर देंगे कि आ जाओ, बस। आर्डर हुआ और चला - इसको कहा जाता है डबल लाइट फरिश्ता।''

अ.बापदादा 12.12.98

## सदा एवर-रेडी

शिवबाबा का जो आर्डर मिले, उसको पालन करने के लिए ब्रह्मा बाबा सदा एवर-रेडी रहते थे। सदा किसी भी कार्य करने के लिए भी एवर-रेडी रहे और अन्तिम परीक्षा के लिए भी सदा एवर-रेडी रहे। अपने उस गुण के आधार पर बाबा ने अन्तिम पेपर को पास किया।

Q. शिवबाबा सदा एवर-रेडी रहने के लिए कहते हैं तो एवर-रेडी के लिए बाबा का भाव-अर्थ क्या है और वह स्थित क्या है?

एवर-रेडी अर्थात् सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी स्थिति।

एवर-रेडी अर्थात् हमारा सेवा का कार्य पूरा हो अर्थात् हमारी कोई भी जिम्मेवारी अधूरी न हो।

एवर-रेडी अर्थात् इच्छा मात्रम् अविद्या अर्थात् हमारी कोई भी इच्छा न हो, जिसके लिए अन्त में संकल्प चले।

एवर-रेडी अर्थात् हमारी बुद्धि में अपना आत्मिक स्वरूप, बाप और घर के अतिरिक्त और कुछ भी न हो।

एवर-रेडी अर्थात् हमारा कोई कर्म-बन्धन या कर्म-सम्बन्ध का खाता बाकी न हो, जो हमको अनत समय अपनी तरफ खींचे।

''ताली बजायें, बोलो तैयार हो? पेपर लेंगे, ऐसे थोड़ेही मान जायेंगे।... जहाँ हूँ, वहाँ ही हूँ - ऐसे एवर-रेडी।... मेरे बिना यह नहीं हो जाये, यह नहीं हो जाये - यह वेस्ट संकल्प भी नहीं करना। ब्रह्मा बाप ट्रान्सफर हुआ तो क्या सोचा कि मेरे बिना क्या होगा।''

अ.बापदादा 12.12.98

## परमात्म-प्रेमी और सर्व को परमात्म-प्रेमी बनाने वाले

'एक बाप दूसरा न कोई' के महामन्त्र के साक्षात् रूप बाबा थे। भक्ति में भी उनका प्रभु-प्रेम सर्वोत्कृष्ठ था और ज्ञान मार्ग में भी परमात्म-प्रेम अद्वितीय था। एक बाप के साथ सर्व सम्बन्ध का जो गायन है, उसका प्रत्यक्ष उदाहरण ब्रह्मा बाबा का जीवन था। ब्रह्मा बाबा के सानिध्य से नास्तिक के मन में भी परमात्मा के प्रति प्रेम जाग्रत हो जाता था, जिसके कारण अनेक नास्तिक आत्मायें भी आस्तिक बनकर परमात्मा के बन गये और अपना श्रेष्ठ भाग्य बनाया और बना रहे हैं।

## दूसरे के दुख-दर्द को अपना समझकर सर्व के दुख दूर करने के संकल्प वाले

बाबा ने दूसरों के दुख-दर्द को अपना समझकर उनके दुख-दर्द को दूर करने का भरसक पुरुषार्थ किया और बच्चों के दिलों में सबके दुख-दर्द को दूर करने की भावना जाग्रत की, जिसके आधार पर ही सेवा की इतनी वृद्धि हुई और हो रही है। बाबा का हृदय अज्ञान काल में भी दूसरों के दुख-दर्द को देखकर द्रवित हो जाता था और वे दूसरों के दुख-दर्द को दूर करने का भरसक प्रयत्न करते थे।

''सर्वात्मायें शक्तियों की भिखारी बन चुकी हैं और आप समर्थ आत्माओं को पुकार रही हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता हमें मुक्ति दो।... अब समय है कि पुकार सुनो... परेशान आत्माओं को सुख-शान्ति की अन्चलि दो, यही है ब्रह्मा बाप को फॉलो करना।... अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो।''

अ.बापदादा 18.1.02

''जैसे ब्रह्मा बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया। स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा। बच्चों की विस्मृति के कारण दुख का अनुभव सो अपना दुख समझा। बच्चों की गलती भी अपनी गलती समझ बच्चों को सदा राइटियस बनाया। इसको कहा जाता है परोपकारी''

अ.बापदादा 12.12.78 दीदी के साथ

''निरन्तर याद करने का अभ्यास करो, नहीं तो माया उल्टा कर्तव्य करा देगी। रांग-राइट की बुद्धि तो मिली ही है। कहाँ मूँझो तो बाप से पूछो।... यह बाप भी है तो धर्मराज भी है। पतित दुनिया में आकर बच्चों को 21 जन्मों के लिए स्वराज्य देता हूँ। अगर फिर कोई विनाशकारी

कर्तव्य किया तो पूरी सज़ाखायेंगे। ... बाबा को तो रात-दिन गाँव की गोपिकाओं का ख्याल रहता है। नींद भी फिट जाती है। संकल्प चलता है - क्या युक्ति रचें, कैसे बच्चे दुख से छूटें।''

सा.बाबा 21.11.03 रिवा.

## अपने स्वमान में रहते सर्व के प्रति सम्मान रखने वाले

ब्रह्मा बाबा ने कभी भी अपने स्वमान को नीचे नहीं किया और किसी के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाई। सबके सम्मान को रखते हुए उसको स्वमान में रहने और स्वमान को बढ़ाने का सहयोग दिया। बाबा का कहना था कि जो अपना सम्मान स्वयं रखते हैं, उनका सभी सम्मान करते हैं। अपने स्वमान में रहना ही अपना सम्मान करना है। ब्रह्मा बाबा ने हर आत्मा को उसके मूल स्वरूप अर्थात् पवित्र स्वरूप में देखकर उसको सम्मान दिया। बाबा के जीवन में हीनता का कोई चिन्ह भी दिखाई नहीं देता था, उनका जीवन सदा स्वमान से भरपूर था।

## गिरे हुओं और गरीबों को भी गले लगाकर गरीब-निवाज को प्रत्यक्ष करने वाले

ब्रह्मा बाबा की दृष्टि में कभी भी गरीब-अमीर का भेद नहीं आया। जो उनके पास आया, उनकी शरण में आया, उसको उन्होंने गले से लगाया और उसको फूल बनाने का पुरुषार्थ किया। बाबा ये भी कहते थे कि ड्रामा अनुसार गरीबों के भाग्य में ही स्वर्ग का राज्य-भाग्य है क्योंकि गरीब ही परमात्मा को पहचानते हैं और पहचान कर समर्पित होते हैं, परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनते हैं। साहूकारों की बुद्धि तो अपने धन्धे-धोरी में बिजी रहती है, इसलिए उनका समर्पित होना कठिन है। कोई बिरला साहूकार ही परमात्मा को पहचान पाता है। बाबा हर बच्चे को किसी भी प्रकार भेदभाव से मुक्त गोद में लेते थे, गले लगाते थे। गरीब और ही उनको प्रिय लगते थे क्योंकि बाबा कहते थे - गरीबों में भावना साहूकारों से श्रेष्ठ होती है। परमात्मा के पास भावना का महत्व है, ऐसे ही ब्रह्मा बाबा के पास भी भावना का महत्व था।

## सदा गुणग्राही और सदा गुणों का दान करने वाले

ब्रह्मा बाबा कर हर महावाक्य, हर कर्म गुण-दान करने वाला था और वे हरेक का गुण ही देखते थे। प्रकृति का ये सिद्धान्त है कि आत्मा जैसा देखती है, वैसा ही उसका चिन्तन होता है और वह वैसा ही बन जाता है। जो गुण देखता है, उसमें उन गुणों की धारणा स्वत: ही

होती है। गुण देखने और गुणों का दान करने के संस्कार के कारण ही ब्रह्मा बाबा सर्व प्रथम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बने।

## सदा सर्व की विशेषताओं को देखने और उनकी विशेषताओं को सेवा में लगाने वाले

ब्रह्मा बाबा की दृष्टि सदा सर्व की विशेषताओं पर ही रहती थी। बाबा को किसी की कमजोरी का ज्ञान भी होता था तो भी उसकी विशेषता का वर्णन करके उसको उस कमजोरी का आभास कराते थे, जिससे वह सहज उसको समझ लेता था। बाबा सर्व की विशेषताओं को देखकर उनको सेवा में लगाकर, उनकी विशेषता से उनका भाग्य बनाकर और भाग्यशाली बना देते थे।

''ब्रह्मा बाप देखते हुए भी और बातें नहीं देखते लेकिन हर एक की विशेषता ही देखते हैं, इसलिए सबसे प्यार है। तो इसमें फॉलो फादर करो।... विशेषता सिर्फ देखना नहीं लेकिन देखकर अपने में धारण करना और धारण करने के साथ-साथ उनकी विशेषता से सेवा लो, उनको भी महत्व बताकर सेवा में लगाओ तो दुआयें मिलेंगी। ... आपको भी शेयर मिलेगा।... अभिमान में नहीं आना क्योंकि विशेषता बाप की देन है। बाप का दिया हुआ वरदान है। इसमें अगर अभिमान किया तो विशेषता गायब हो जायेगी।''

अ.बापदादा 31.12.89 पार्टी

## जाति-पाति, धर्म, भाषा भेद से ऊपर सर्व प्रति समान दृष्टि और सर्व को गले लगाने वाले

ब्रह्मा बाबा की दृष्टि में कभी किसी आत्मा के प्रति जाति-पांति, धर्म, भाषा आदि के कारण भेद या घृणा नहीं आयी और न किसी के प्रति विशेष राग रहा। उन्होंने कोई भी आत्मा जो ब्राह्मण बनी या ब्राह्मण बनने की जिज्ञासा दिखाई, उसके प्रति प्रेम दर्शाया और गले से लगाया, उसको ऊंचा उठाने का पूरा पुरुषार्थ किया, उसको पूरा सहयोग दिया। उनके इस कर्तव्य के लिए ही रामायण में गायन है कि राम ने शवरी के जूठे बेर खाये अर्थात् हर आत्मा के प्रभु-प्रेम का उन्होंने सदैव सत्कार किया।

''मेहतर का भी उद्धार होना है। भीलनी का भी गायन है। कहते हैं राम ने भीलनी के बेर खाये। वास्तव में राम भी नहीं है तो शिव बाबा भी नहीं है। हाँ हो सकता है इस ब्रह्मा को खाना

पड़े। भीलनी आदि आयेंगी, समझो टोली ले आये तो अंगीकार करना पड़े ना। भीलनी-गणिकायें ले आयेंगी तो तुम भी खायेंगे, हम भी खायेंगे। शिव बाबा कहते हैं मैं तो नहीं खाऊंगा, मैं तो अभोक्ता हूँ।... गवर्मेन्ट भी मदद करेगी कि इनको उठाओ। तुमको भी ऑटोमेटिकली प्रेरणा होगी।''

सा.बाबा 25.6.71 रिवा.

## विश्व-नाटक के ज्ञान को यथार्थ रीति धारण कर सर्व के प्रति निर्दोष दृष्टि वाले

ब्रह्मा बाबा को ड्रामा का ज्ञान भी शिवबाबा के समान ही पक्का था। बाबा सदैव कहते थे कि जो हुआ वह ड्रामा अनुसार हुआ, हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है, उसमें उसका कोई दोष नहीं है। इस धारणा के कारण बाबा की सर्व के प्रति निर्दोष दृष्टि रही। ''यह है ही न्यारा मार्ग। कोई भी समझते नहीं। कोई ने कब सुना नहीं है।... उन बिचारों का भी कोई दोष नहीं है। कल्प पहले भी ऐसे ही विघ्न डाले थे। यह है भी रुद्र ज्ञान यज्ञ।''

सा. बाबा 8.6.72 रिवाइज

## सर्व के दिलों को जीतने वाले मास्टर दिलाराम

बाबा के दिल में सर्व आत्माओं के प्रति अगाध प्यार था, जिस प्यार के कारण हर आत्मा के दिल में उनके प्रति प्यार था। हर आत्मा जो उनके सम्पर्क में आती थी, उसके मुख से यही शब्द निकलते थे कि मेरा बाबा। ब्रह्मा बाबा के इसी गुण के कारण दिलवाला मन्दिर का दिलवाला नाम पड़ा। बाबा सर्व के दिलों पर राज्य करने वाले थे। किसी कारण या संस्कार वश बाहर से शत्रुता का व्यवहार करने वाले भी दिल सम उनको प्यार करते थे। उसका कारण यही था कि ब्रह्मा बाबा को किसी से घृणा नहीं थी, सबके प्रति प्रेम था।

## निस्वार्थ और निष्काम सेवाधारी

ब्रह्मा बाबा ने जिन आत्माओं की सेवा की, उनसे कभी भी किसी प्रकार के रिटर्न की इच्छा नहीं रखी। सदा शिवबाबा के समान निष्काम होकर सेवा की। उनकी सदा ये भावना रही कि लेना एक शिवबाबा से है और सर्व आत्माओं को देना ही है। हम दाता के बच्चे हम किसी से कुछ ले नहीं सकते। बाबा कहते थे - जो कामना रखता है, वह माया का सामना नहीं कर सकता है। जो कामना या स्वार्थ रखकर सेवा करता है, उसकी सेवा सफल नहीं होती है।

''आकार रूप भी साकार समान ही पालना दे रहे हैं। ऐसे अनुभव करते हो ना! ... जैसे ब्रह्मा बाप के विशेष संस्कार क्या देखे! सेवा के सिवाए रह सकते थे ? तो विदेश में दूर रहने वालों को यह विशेष पालना का सहयोग होने के कारण सेवा का उमंग ज्यादा रहता है। स्व सेवा और विश्व सेवा के बैलेन्स का अटेन्शन जरूर रखना।''

अ.बापदादा 12.3.85

## निन्दक को भी गले लगाने वाले अर्थात् अपकारी पर भी उपकार करने वाले

ब्रह्मा बाबा की सदा ये अभिधारणा रही कि निन्दक भी हमारे मित्र है। निन्दक भी हमको हमारी कमी-कमजोरी को उजागर करके हमको उसको दूर करने में सहयोगी हैं। अपनी इस अभिधारणा के कारण ब्रह्मा बाबा ने निन्दक को भी निन्दक न समझकर मित्र के समान गले लगाया। शिवबाबा आया है सर्व आत्माओं का कल्याण करने, मैं बाबा का रथ हूँ तो हमको भी सर्व का कल्याण करना है। निन्दक का भी कल्याण करना है तब तो सर्व के कल्याणकारी गाये जायेंगे। बाबा कहते थे - यदि एक आत्मा के प्रति भी आपकी शुभ-भावना, शुभ कामना नहीं है तो भी आप सर्व के कल्याणकारी नहीं कहे जा सकेंगे। यदि निन्दक के प्रति हमारी भावना परिवर्तन हो गई तो कहा जायेगा कि हमको ड्रामा का सही ज्ञान नहीं है।
''यह ड्रामा है, इसमें किसी का भी दोष नहीं है। किसकी निन्दा करते तो ज्ञान पूरा बुद्धि में नहीं बैठा है।''

सा.बाबा 27.9.97 रिवा.

## अथक पुरुषार्थी, अथक सेवाधारी और निद्राजीत / गुप्त पुरुषार्थी

जो भी भाई या बहनें बाबा के सम्पर्क में रहते थे, हरेक ने ये अनुभव किया कि जब भी वे बाबा के कमरे में गये, तो बाबा को जागते हुए, चिन्तन में खोये हुए ही देखा। बाबा या तो बैठकर चिन्तन में होगा या लेटकर विष्णु के समान लेटे हुए चिन्तन में होगा। किसी को भी बाबा के लेटे हुए भी सोने का आभास नहीं होता था। उनकी नींद भी जागते के समान थी।

ब्रह्मा बाबा अथक और गुप्त पुरुषार्थी थे। बच्चों के कल्याणार्थ बताते भी थे कि मैं कैसे पुरुषार्थ करता हूँ परन्तु वे कभी दिखाने के लिए उसका वर्णन नहीं करते थे। बाबा का जो आन्तरिक पुरुषार्थ था, वह तो अवर्णनीय है क्योंकि बाबा का जीवन ही पुरुषार्थमय था, हर पुरुषार्थ में था।

''3-4 बजे उठो। फर्स्टक्लास समय वह है। शान्ति रहती है, सब अशरीरी बन जाते हैं। उस समय सन्नाटा बहुत होता है। अमृतवेले की याद अच्छा असर करती है। बाबा बहुत करके रात को जागते रहते हैं। सूक्ष्म सर्विस में थकावट नहीं होती। कमाई से तो खुशी होती है।''

सा.बाबा 20.6.2001 रिवा.

''बाबा कहते हैं रात को मेहनत करो। तुम्हारा सारा थक उतर जायेगा, अगर तुम योगयुक्त होकर विचार सागर मंथन करते रहेंगे तो। बाबा अपना अनुभव बताते हैं - कब और बातों तरफ बुद्धि चली जाती है तो माथा गर्म हो जाता है। फिर उन तूफानों से बुद्धि को निकालकर इस विचार सागर मंथन में लग जाता हूँ तो माथा हल्का हो जाता है। ... बाबा ने जो विचार सागर मंथन किया, वह भी बतलाया। यह पहला नम्बर में है, इनको पूरे 84 जन्म लेने पड़ते हैं।''

सा.बाबा 20.12.03 रिवा.

''यह बाबा भी बूढ़ा है, फिर भी योग में खड़ा है। खांसी आदि होती है फिर भी सर्विस पर रहते हैं। बुद्धि की कितनी सर्विस करनी होती है।... ख्यालात चलती है। अगर कोई बच्चे की बद्चलन होगी तो नाम बदनाम करायेंगे।''

सा.बाबा 9.3.07 रिवा.

''यह भी अभ्यास करता होगा। फिर कोई बच्चे आकर कहते है - बाबा गुडमॉर्निंग। तो इनको नीचे उतर गुडमॉर्निग करना पड़े, आवाज़ में आना पड़े। यह तो पुरुषार्थ करते रहते हैं वाणी से परे होने का क्योंकि इससे ही पाप कटेंगे।... जिसका बहुत अच्छा पुरुषार्थ होगा, वही कर्मातीत अवस्था को पा सकेंगे। बहुत मेहनत करने से पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है।''

सा.बाबा 18.1.07 रिवा.

## कर्मयोगी जीवन के प्रत्यक्ष स्वरूप

ब्रह्मा बाबा कर्मयोगी जीवन के प्रत्यक्ष स्वरूप थे। कर्म करते भी कैसे बाबा की याद रहे, उसका वे स्वयं भी अभ्यास करते थे और बच्चों को भी प्रेरणा देते थे। बच्चों के कल्याणार्थ कभी-कभी बाबा ये भी कहते थे कि बच्चे मैं भी बाबा को भूल हूँ, फिर याद करने की कोशिश करता हूँ। परन्तु बाबा ये बच्चों को शिक्षा देने अर्थ ही कहते थे। वास्तविकता तो ये थी कि किसी को भी कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि ब्रह्मा बाबा अभी शिवबाबा की याद में नहीं हैं।

''जैसे साकार को देखा कि जितना ही अति कर्म में आना, विस्तार में आना, रमणीकता में आना... उतना ही न्यारे बन जाना। जैसे सम्बन्ध व कर्म में आना सहज है, वैसे ही न्यारा होना भी सहज हो। ऐसी प्रैक्टिस चाहिए''

अ.बापदादा 23.1.76

''बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं

सुनो। ... वह यहाँ-वहाँ कभी नहीं देखेगा। वह सदा मंजिल की ओर देखेगा। फॉलो किसको करना है ? ब्रह्मा बाप को क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है।''

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 4

''जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। ... कोई कर्म छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की। न्यारापन हर कर्म में सफलता सहज अनुभव कराता है।''

अ.बापदादा 29.12.89

## कर्म में सदा एक्यूरेट और पुरुषार्थ में सदा अलर्ट

ब्रह्मा बाबा का सदैव ये ध्यान रहता था कि जो भी कर्म किया जाये, वह एक्यूरेट हो। बच्चों को भी ऐसी ही शिक्षा देते थे कि जो भी कर्म करो, वह सही हो। एक्यूरेट कर्म करेंगे तो एक्यूरेट बनेंगे। कर्म आत्मा का दर्पण है। बाबा को उठते-बैठते कभी भी ढीलाढाले साधारण रूप में नहीं देखा। उनका ये गुण इतनी बड़ी आयु होते भी सन्दली पर बैठे हुए उनके चित्र से स्पष्ट होता है। उसमें कुछ कहने की भी मार्जिन नहीं है। ब्रह्मा बाबा सदैव कहते थे - बाबा की याद में कर्म सदा अच्छा होता है। यदि कभी कोई कर्म खराब होता है तो सिद्ध है कि उस समय बाबा की याद नहीं है।

''सदा शान में रहने का, सदा प्राप्ति स्वरूप स्थिति में स्थित होने का सहज साधन है - 'फॉलो फादर'। ... सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही बात है - 'फॉलो फादर'।... कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को चुक्तू करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने।''

अ.बापदादा 19.12.85

## दूरांदेशी बुद्धि वाले

ब्रह्मा बाबा बहुत ही दूरांदेशी बुद्धि वाले थे। चित्र बनाने में भी उन्होंने बहुत विशालबुद्धि और दूरांदेशी बुद्धि से कार्य किया। विदेशियों की सेवा का बाबा ने बहुत पहले से ही आवाह्न किया। मकान आदि बनाने में भी बहुत दूरांदेशी बुद्धि से बनवाये। ब्रह्मा बाबा सदैव कहते थे - बच्चे कोई भी कर्म करो तो त्रिकालदर्शी होकर कर्म करो, तो कर्म का फल सदैव अच्छा होगा। यज्ञ की स्थापना में बहनों को आगे रखा, सेवाकेन्द्र पर टीचर के लिए भी बहनों को ही निमित्त बनाया।

''यह विष्णु है पालनकर्ता, प्रजापिता ब्रह्मा है स्थापन कर्ता।... जिससे स्थापना करायेंगे, उससे ही पालना भी करायेंगे। स्थापना कराते हैं ब्रह्मा से। ब्रह्मा के साथ सरस्वती आदि बहुत बच्चे हैं। ... बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुग पर आता हूँ, भ्रष्टाचारी दुनिया को श्रेष्ठाचारी बनाने। जगदम्बा गॉडेज आफ नॉलेज गाई हुई है।... ब्रह्मा को गॉड आफ नॉलेज नहीं कहा जाता है, सरस्वती का नाम गाया हुआ है। माताओं का नाम बाला करना है। कई गोपों को बहुत देह-अभिमान है। समझते हैं हम ब्रह्माकुमार गॉड आफ नॉलेज नहीं हैं क्या! अरे, खुद ब्रह्मा ही अपने को गॉड आफ नॉलेज नहीं कहते। माताओं का बहुत रिगॉर्ड रखना पड़े।''

सा.बाबा 18.12.03 रिवा.

''बाप ने बच्चों के लिए घोंसला बनाया है। जैसे चिड़िया अपने बच्चों के लिए घोंसला बनाती है, तो बाप भी तुम्हारे लिए, तुम्हारे द्वारा ही आखेरा बनवाते हैं।''

सा.बाबा 17.12.03 रिवा.

## सदा संकल्प, दृष्टि-वृत्ति, संग से देह और देह की दुनिया से न्यारे, मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने और कराने वाले

ब्रह्मा बाबा सदा ही मुक्ति और जीवनमुक्ति के अनुभव रहते थे, जो उनकी दृष्टि-वृत्ति और कृत्ति से अनुभव होता था। बाबा को देखते थे तो देखने में आता था कि बाबा अभी-अभी देखो तो निर्संकल्प होकर मुक्ति में खोये हुए, अभी-अभी देखो तो जीवनमुक्ति की खुशी और नशे में मगन। ये बाबा का स्वभाविक जीवन बन गया था और जो भी उनके सम्पर्क में आता था, वह भी उनके अनुरूप मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता था और यही अनुभव उस आत्मा के पुरुषार्थ के लिए प्रेरणा-स्त्रोत बन जाता था।

## स्वयं भी सदा मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में रह और औरों को भी उस स्थिति का अनुभव कराने वाले

ब्रह्मा बाबा सदा ही मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहते थे और जो भी उनके सम्पर्क में आता था, वह भी उनके योग-युक्त वातावरण के प्रभाव के कारण, उनके सम्पर्क से, उनको देखकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता था। अनेक बच्चे अपने मन में अनेक प्रश्न लेकर बाबा से पूछने के संकल्प से उनके पास आते थे और वे बाबा के सामने आते ही संकल्प-विकल्प से परे हो परम शान्ति अर्थात मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में खो जाते थे

और अपने प्रश्नों को ही भूल जाते थे या उनको अपने प्रश्नों का उत्तर अपने अन्दर से ही मिल जाता था।

''बाप का वर्सा है - मुक्ति-जीवनमुक्ति, गति-सद्गति।... बाप तुम बच्चों को अनेक राज़ समझाते रहते हैं। तुम अभी स्वर्ग का वर्सा पाते हो।''

सा.बाबा 9.10.03 रिवा.

''बाप की याद के साथ, बाप ने जो दिया वह भी इमर्ज करो। ... जीवनमुक्त भविष्य में होंगे लेकिन जीवनमुक्त के संस्कार अभी से ही इमर्ज करने हैं और निरन्तर कर्मयोगी, निरन्तर सहज योगी, निरन्तर मुक्त आत्मा के संस्कार अभी से अनुभव में लाओ।''

अ.बापदादा 30.3.98

''वैसे तो आप जब साकार से साकार रीति से मिलते थे तो आपकी आकारी स्थिति बन जाती थी परन्तु अब जितना-जितना अव्यक्त आकारी स्थिति में स्थित होंगे, उतना ही अलौकिक अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 25.1.69

## सर्व पर दया करने वाले

शिवबाबा दया के सागर हैं, ब्रह्मा बाबा भी शिवबाबा के साथ से शिवबाबा के समान दया के सागर बन गये थे। उनका हृदय सदा दया से भरपूर था, जो दूसरे के दुख को देखकर द्रवित हो जाता था और उसके दुख को दूर करने का प्रयत्न अवश्य करते थे। उनकी यही भावना विश्व-सेवा के लिए निमित्त बनीं, जिसने ब्रच्चों को प्रेर कर विश्व-सेवा में लगाया।

''आप सब मुक्त हो जाओ तो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भक्त मुक्त हो जायेंगे। तो मुक्त बनो और मुक्ति का दान देने वाले मास्टर दाता बनो। ... आप इसके लिए जिम्मेवार हो, बाप के साथ मददगार हो। क्या आपको दुखी आत्माओं पर रहम नहीं आता।''

अ.बापदादा 30.3.98

## स्वयं धारणा कर दूसरों को शिक्षा देने वाले योग्य शिक्षक

ब्रह्मा बाबा केवल शिक्षा देने अर्थ ही कोई बात नहीं कहते थे बल्कि वे स्वयं भी उसका जीवन में धारणा करते थे। बाबा कहते थे - जब मैं अनुभव करूँगा तब तो बच्चों को भी बता सकूँगा, जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे।

''हर एक बच्चे को अपने से पूछना चाहिए कि बाप से सभी कुछ मिला है ? किस किस चीज में कमी है ? हर एक को अपने अन्दर में झाँकी पहननी है। जैसे नारद की मिसाल... अपने अन्दर जो खामी हो, वह सर्जन को बतानी चाहिए। फिर बाबा युक्ति भी बतायेंगे और करेण्ट भी देंगे, जिससे खामी निकल जायेगी, नहीं तो बढ़ती रहेगी''

सा.बाबा 11.12.68

''वाणी के साथ-साथ शक्ति भरने का कोर्स भी हो, जिससे अच्छा-अच्छा कहें नहीं लेकिन अच्छा बन जायें।... पहले अपने को कोर्स कराकर फिर कहो। तो सुना बापदादा क्या चाहते हैं ? लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ।... तो बाप समान सहज बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 15.12.02

''आप श्रेष्ठ आत्मायें सृष्टि के आधारमूर्त हो, ऐसे आधारमूर्त, समय के व किसी भी प्रकार के आधार पर रहें तो अधीन कहेंगे व आधारमूर्त कहेंगे ? तो अपने आपको चेक करो कि सृष्टि के आधारमूर्त किसी भी हद के सहारे के आधार पर चलने वाली आत्मा तो नहीं हैं ?''

अ.बापदादा 12.6.77

''आदि में जो जगदम्बा की पालना थी, उसमें उनकी विशेषता रही कि किसकी कड़ी भूल भी है तो पहले आने से ही कचहरी के रूप शिक्षा नहीं देती थी लेकिन उसको ऐसे प्यार से दो शब्द बोलती थी कि उसमें शिक्षा को धारण करने की शक्ति आ जाये फिर शिक्षा देती थी। साकार बाप की ये विशेषता रही कि शिक्षा देकर बाद में प्यार की दृष्टि रहती थी, जिससे वह शिक्षा भी प्यार लगता था।''

अ.बापदादा 8.10.02

''बापदादा सदा टीचर्स को इसी नज़र से देखते हैं कि हर टीचर के फीचर्स में बापदादा के फीचर्स दिखाई दें। फेस में ब्रह्मा बाप के फीचर्स और भृकुटी में ज्योतिर्बिन्दु के फीचर्स। ... टीचर्स आधारमूर्त हैं। जैसे बाप के लिए कहते हैं कि ब्रह्मा बाप का सदा यही स्लोगन रहा कि 'जो कर्म मैं करूँगा, वह सब करेंगे', ऐसे हर टीचर को यही स्लोगन याद रहता है ?''

अ.बापदादा 31.12.2001 टीचर्स

''बापदादा के आज के बोल का एक शब्द नहीं भूलना, वह कौनसा ? 'परिवर्तन'। मुझे बदलना है। दूसरे को बदलकर नहीं बदलना है लेकिन मुझे बदलकर औरों को बदलना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ। नहीं, मुझे निमित्त बनना है। मुझे हे अर्जुन बनना है, तब ब्रह्मा बाप समान नम्बरवन लेंगे।''

अ.बापदादा 15.12.03

''कोई पूछते हम स्वाहा कैसे हों ? बाबा कहते - बच्चे, तुम इस बाबा को देखते हो ना। यह खुद करके सिखा रहे हैं। जैसा कर्म हम करेंगे, हमको देख और करेंगे। बाप ने इनसे कर्म

कराया ना। सारा यज्ञ में स्वाहा कर दिया।''

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

## स्वयं भी देह से न्यारे परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप में स्थित और दूसरों को भी उस स्थिति का अनुभव कराने वाले

ब्रह्मा बाबा का आत्मिक स्वरूप का अभ्यास ऐसा पक्का हो गया था कि वे सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित रहकर स्वयं भी परमानन्द के अनुभव में रहते थे और दूसरों को भी उसका अनुभव कराते थे। बच्चों को भी बाबा की यही शिक्षा थी कि जिसको भी ज्ञान देते, जो भी तुम्हारे सामने आता है वह तुम्हारी आत्मिक शक्ति से, तुम्हारे योगयुक्त वातावरण से अपनी देह को भूल जाये और मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करे अर्थात् अपने परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप का अनुभव करे। ये अनुभव ही तुम्हारी सच्ची सेवा है।

## नाम, मान, शान के भिखारीपन से सदा मुक्त

बाबा के जीवन में कभी भी नाम-मान-शान की कोई इच्छा रहीं, बाबा को सदा एक ही लगन रही कि हमको बाप समान सम्पूर्ण बनना है। बच्चों को भी उन्होंने यही शिक्षा दी कि नाम-मान-शान के भिखारीपन से मुक्त रहेंगे, तब ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव कर सकेंगे। जैसे शिवबाबा नाम-मान-शान से न्यारा है, हमको भी वैसे ही बनना है।

''जैसे बाप नाम-रूप से न्यारे हैं तो सबसे अधिक नाम का गायन बाप का ही है। ऐसे ही अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे बनो तो सदा काल के लिए सर्व के प्यारे स्वत: बन जायेंगे। नाम-मान के भिखरीपन के अंशमात्र का भी त्याग करो। ऐसे त्यागी ही विश्व के भाग्य विधाता बन सकते।''

अ.बापदादा 27.11.78

## सदा आशावान

बाबा के जीवन में कभी भी किसी कार्य में निराशा नहीं दिखाई दी। वे सदा स्वयं भी स्वयं से आशावान रहे और बच्चों में भी सदा आशा रखी। न स्वयं कभी किसी भी कार्य के परिणाम को देखकर उसके विषय में निराश हुए और न बच्चों को निराश होने दिया। बाबा ने सदा आशा और दृढ़ निश्चय रखा कि ड्रामा में सफलता निश्चित है, भले वह आज हो या कल लेकिन सफलता होनी अवश्य है।

## सदा सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्ट और प्रसन्नता की स्थिति में स्थित इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में

आत्मिक स्वरूप सम्पूर्ण है, सदा सम्पन्न है और जो सदा सम्पन्न है, वही सन्तुष्ट होगा और जो सन्तुष्ट होगा, वही प्रसन्न रह सकता है। ब्रह्मा बाबा ने आदि से ही अपने सम्पूर्ण स्वरूप को सामने रखा और उस अनुसार पुरुषार्थ किया, जिससे वे सदा ही प्रसन्न मुद्रा में दिखाई दिये।

ब्रह्मा बाबा सदा अपने पुरुषार्थ से, अपनी प्राप्तियों से, यज्ञ की सफलता से सन्तुष्ट रहे और आगे के लिए सदा पुरुषार्थशील रहे। सम्पूर्णता को सामने रखने से उनके जीवन में किसी भी प्रकार की भौतिक सुख-साधनों की प्राप्ति की इच्छा नहीं रही। बाबा का सदा कहना था कि इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी, इसलिए सभी भौतिक इच्छाओं का त्याग करके एक ही परमात्मा को याद करने की इच्छा रखनी है, जिसमें सभी इच्छाओं की सफलता समाई हुई है। इस अभिधारणा से बाबा सदा इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में रहे।

## सदा अपने अभीष्ठ लक्ष्य पर मन-बुद्धि से एकाग्र रखने वाले अर्जुन

बाबा की बुद्धि में सदा अपना लक्ष्य शिवबाबा और अपनी सम्पूर्ण स्थिति ही रही। सदा ये बुद्धि में रहा कि हमको ऐसा बनना है। जैसे अर्जुन को परीक्षा के समय अपने लक्ष्य का ही ध्यान रहता था और उसके कारण ही वह उस लक्ष्य को वेधने में सफल होता था ऐसे ही बाबा की बुद्धि में भी अपना सम्पूर्ण स्वरूप ही रहा और उस अनुसार पुरुषार्थ कर अपने सम्पूर्ण स्वरूप को प्राप्त कर लिया और हम सबके सामने आदर्श बन गये।।

## सदा अपने धर्म-पथ पर अडिग रहने वाले धर्मराज युधिष्ठिर

बाबा ने किसी भी परिस्थिति में अपने धर्म को नहीं छोड़ा। बाबा का कहना था - धरत परिये पर धर्म न छोड़िये। मर जाओ परन्तु अपनी श्रेष्ठ धारणायें जो ब्राह्मण जीवन का आधार है, उनको नहीं छोड़ना। ब्रह्मा बाबा कहते थे - शिवबाबा की याद में, अपने धर्म की रक्षा करते हुए तुम मर भी जाते हो तो भी बाबा से तुमको बहुत श्रेष्ठ प्राप्ति होगी, श्रेष्ठ पद मिलेगा। ये शब्द बाबा बांधेलियों के लिए विशेष रूप से कहते थे।

''यह है युधिष्ठिर, युद्ध के मैदान में बच्चों को खड़ा करने वाला। ... पहली मुख्य हिंसा है काम कटारी की। इसलिए काम महाशत्रु कहा है, इन पर ही विजय पानी है।''

सा.बाबा 19.2.05 रिवा.

''अखबार वालों को पैसा देना भी रिश्वत है। बेकायदे हो जाता है। बन्दर लोग भी रिश्वत दें, तुम भी रिश्वत दो तो दोनों एक ही समान हो जायें। तुम्हारी सारी बातें हैं योगबल की। योगबल इतना चाहिए जो कोई से भी काम करा सको''

सा.बाबा 24.7.68

## सदा सर्व उत्तरदायित्व को निभाते भी विदेही स्थिति में स्थित विदेही जनक

शास्त्रों में राजा जनक का उदाहरण विदेही स्थिति में रहते कारोबार करने का है। परन्तु वह तो एक उदाहरण मात्र है, गायन मात्र है। ब्रह्मा बाबा को तो साकार में देखा कि वे कैसे सदा अपने सभी उत्तरदायित्व निभाते हुए, यज्ञ का सारा कारोबार करते हुए भी विदेही स्थिति में रहते थे। जो उनसे मिलता था, उसको सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्त की स्थिति का अनुभव करा देते थे, जिस अनुभव को पाकर वह उस स्थिति को चिर-स्थाई बनाने का पुरुषार्थी बन जाता था।

''विदेही बापदादा को भी देह का आधार लेना पड़ता है। किसलिए? बच्चों को भी विदेही बनाने के लिए। जैसे बाप विदेही, देह में आते हुए भी विदेही स्वरूप में, विदेहीपन का अनुभव कराते हैं, ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बनकर कर्म कराओ।''

अ.बापदादा 19.12.85

''देह में रहते विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बनकर कर्म कराओ।... इसी स्थिति को विदेही स्थिति कहते हैं। इसी को ही फॉलो फादर कहा जाता है।... बाप को फॉलो करने की स्थिति है सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव। दादा अर्थात् ब्रह्मा बाप को फॉलो करने के लिए सदा अव्यक्त स्थिति भव, फरिश्ता स्वरूप भव, आकारी स्थिति भव।''

अ.बापदादा 19.12.85

## सर्वात्माओं की परमपिता परमात्मा के साथ सगाई अर्थात् सौदा कराने वाले दलाल
## शिवबाबा को अपना रथ देने वाले भागीरथ ईश्वरीय पढ़ाई के क्लास के मानीटर

भक्ति में भी गाते हैं गुरु-गोविन्द दोनों खड़े ... गोविन्द दिया मिलाये। शिवबाबा को सौदागर भी कहा जाता है, सौदा करने के लिए दलाल भी चाहिए। तो ये ब्रह्मा बाबा दलाल के रूप में आत्माओं का शिवबाबा से सौदा कराते हैं। सौदा कराने के लिए इनको भी दलाली मिलती है। इनका अपना भी पुरुषार्थ है और अन्य आत्माओं का भाग्य जगाने के फलस्वरूप उससे भी कुछ अंश इनको मिल जाता है। शिव बाबा शिक्षक है, सर्व आत्मायें पढ़ने वाले हैं, ब्रह्मा बाबा इस क्लास का मानीटर है।

''तुमको ये निश्चय है कि बाप ही हमको पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी पढ़ते हैं। जरूर यह सबसे अच्छा पढ़ते होंगे। यह भी अच्छा मददगार है, शिवबाबा का।... कोई कहे हम शिवबाबा को मानते हैं, ब्रह्मा को नहीं। परन्तु यह दोनों इकट्ठे हैं। बिगर दलाल सौदा हो न सके। शिवबाबा का रथ है, इनका नाम ही है भाग्यशाली रथ। यह जानते हो सबसे नम्बरवन ऊंचा है यह। क्लास में मानीटर का भी मान होता है।'' सा.बाबा 20.1.04 रिवा.

''सत्गुरु पतित-पावन दलाल के रूप में आकर मिलते हैं। इस दलाल द्वारा तुम आत्माओं की अपने साथ सगाई कराते हैं अथवा बच्चों को अपना परिचय देते हैं। बच्चे मैं आया हूँ तुमको शान्तिधाम की यात्रा पर ले जाने और पावन दुनिया में ले जाने।''

सा.बाबा 21.5.07 रिवा.

''बाप सृष्टि रूपी झाड़ के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझा रहे हैं। कोई भी आक्यूपेशन को जानता नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा के आक्यूपेशन को भी जानना चाहिए ना। ब्रह्मा को कोई याद नहीं करते, जानते ही नहीं हैं। ... अभी तुम समझते हो - यह शिवबाबा का रथ है।''

सा.बाबा 29.6.04 रिवा.

''यह दलाल है। आत्माओं की परमात्मा से सगाई कराते हैं।... बाबा कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम पावन बनते जायेंगे। पावन बनने का और कोई उपाय नहीं है।... यह है पियरघर, वह है ससुरघर। पियरघर में जेवर आदि नहीं पहनते हैं। यह कायदा नहीं है। तुम जानते हो हम ससुरघर में जाकर यह जेवर आदि सब पहनेंगे।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

## सदा इन्द्रियजीत

ब्रह्मा बाबा का अपनी सर्व स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण शासन था और सदा ही कर्मातीत स्थिति में रहने के अभ्यासी थे। बात करते-करते कर्मेन्द्रियों से परे कर्मातीत स्थिति के अनुभव में खो जाते थे और बाबा का ये अभ्यास उत्तरोत्तर वृद्धि को पाता गया और अन्त में पूर्ण कर्मातीत स्थिति को पा लिया। दशरथ के रूप में उनका ही गायन है। दशरथ अर्थात्

रथी बनकर सर्व कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों, सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां अर्थात् मन-बुद्धि-संस्कार पर शासन करने वाले अर्थात् उनसे कर्म कराने वाले।

## निरन्तर चिन्तनशील

उठते-बैठते, चलते-फिरते, कोई भी कार्य करते ब्रह्मा बाबा का चिन्तन सदा चलता रहता था। उनके मन में सागर के समान लहरें उठती रहती थीं कि कैसे सभी को बाबा का पैगाम दे दें, जिससे वे आत्मायें भी शिवबाबा से वर्सा ले लें, कैसे ज्ञान के गुह्य रहस्यों को सर्व आत्माओं के सामने स्पष्ट करें। लेटे हुए भी बाबा का चिन्तन चलता रहता था, जैसे विष्णु को शेष शैय्या पर लेटे हुए चिन्तन में मगन स्थिति में दिखाते हैं, ऐसे ही बाबा की स्थिति रहती थी। ब्रह्मा बाबा बच्चों को भी कहते थे - जब तुम निरन्तर चिन्तन में रहोगे तो बहुत खुश रहोगे। तुम्हारा स्वदर्शन चक्र सदैव चलता रहना चाहिए। स्वदर्शन चक्र भले विष्णु को दिया है परन्तु है ब्रह्मा को क्योंकि ब्रह्मा और ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को ही स्वदर्शन चक्र का ज्ञान है। स्वदर्शन चक्र को सदैव घूमता हुआ दिखाते हैं।

''तुम तो यह सब घटनायें देखते रहेंगे। तुम्हारा इन बातों से कोई तैल्लुक नहीं है। यह कोई नई बात नहीं है। यह तो होना ही है। इसमें डरने की कोई बात नहीं। बाकी थोड़ा समय है। पेट को दो रोटी खिलानी हैं। अभी अपने को हॉबी है, बाबा से वर्सा लेने की। ... अभी यह पुरानी दुनिया जैसे कि तुम्हारे लिए है नहीं। ... टॉपिक आदि निकालते रहेंगे तो उसमें माथा और ही भरपूर हो जायेगा। यह बाबा का अनुभव है। तूफान तो बहुत आयेंगे। जितना रुस्तम बनेंगे, उतना माया जास्ती पछाड़ेगी, यह एक लॉ है।''

सा.बाबा 12.1.02 रिवा.

''कितना विचार सागर मंथन करना होता है। रात को ही विचार सागर मंथन हो सकता है। ऐसे विचार सागर मंथन करते-करते बाप जैसा बनते जायेंगे। तुम बच्चों को सारा ज्ञान बुद्धि में रखना है।''

सा.बाबा 10.11.03 रिवा.

''सब कुछ इन माताओं के अर्पण कर दिया। ... यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। जैसे यह बाबा सवेरे उठकर विचार सागर मंथन करते हैं, बच्चों को भी फालो करना है।''

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''यह ब्रह्मा भी तुम्हारे साथ है। वह भी सफेद पोशधारी स्टूडेण्ट है।... बाबा प्रदर्शनी आदि देखते हैं तो ख्यालात चलते रहते हैं।... जो अच्छे पुरुषार्थी हैं, उनकी बुद्धि में ज्ञान टपकना चाहिए। बाबा को टपकता रहता है ना। बुद्धि में सारा ज्ञान रहेगा तो बाबा की याद भी रहेगी, उन्नति को पाते रहेंगे।''

सा.बाबा 17.5.04 रिवा.

## सर्वस्व सफल कर सफलतामूर्त बनने वाले और दूसरों को भी सफल करने की प्रेरणा देने वाले प्रेरणा स्रोत

## बाप पर बलिहार होकर विजय माला के प्रथम विजयी रत्न

ब्रह्मा बाबा का स्लोगन था - सफल करो और सफलतामूर्त बनो। अपने स्थूल तन-मन-धन को तो ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा की प्रवेशता होते ही शिवबाबा को समर्पण कर दिया, उसके बाद भी अपने समय, स्वांस, संकल्प को सफल किया और अन्तिम क्षण तक सफल किया। ब्रह्मा बाबा ने अपना एक भी स्वांस, संकल्प, सेकेण्ड व्यर्थ नहीं गंवाया, सब सफल किया, तब ही सफलता को पाया। बच्चों को भी शिक्षा दी कि जो जितना अपना समय, श्वांस, संकल्प, धन सफल करेगा, वह उस अनुसार ही सतयुग में उसका फल पायेगा।

''याद है ब्रह्मा बाप ने आदि में कितने समय में सब सफल किया ? अन्त तक अपना समय सफल किया। ... लास्ट दिन भी मुख से महावाक्य उच्चारण किये। लास्ट दिन तक सब सफल किया, इसीलिए सफलता को प्राप्त हो गये। तो फॉलो फादर।''

अ.बापदादा 31.12.2002

''तुम शिवबाबा के बच्चे भारत को स्वर्ग बनाते हो, इसलिए तुम्हारी पूजा होती है। शिवबाबा के साथ तुम इतनी सर्विस करते हो, इसलिए सालिग्रामों की भी पूजा होती है।... बाप यह भी समझाते हैं कि यह सन्यासी न होते तो भारत काम चिता पर बैठ एकदम खाक हो जाता।... स्वर्ग में और खण्ड आदि तो होते नहीं हैं, भारत ही होता है।''

सा.बाबा 7.10.03 रिवा.

''कितना बाबा की सर्विस में जीवन सफल करते हैं। ऐसे नहीं कि इस ब्रह्मा ने घरबार छोड़ा है, इसलिए नारायण बनते हैं। ये भी मेहनत करते हैं ना।... तुम बच्चों में जिसने जितना ज्ञान उठाया है, उस अनुसार ही सर्विस कर रहे हैं। मुख्य बात है ही गीता के भगवान की।... यह बाबा भी पुरुषार्थी है, पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है।''

सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

''ऊंच पद कैसे पाना है, वह तो बाप ने समझाया है। फॉलो फादर। जैसे इसने सब-कुछ बाप के हवाले कर दिया। फादर को देखो कैसे सब कुछ दे दिया।... बाप दिखलाते हैं बच्चों को कि देखो, यह मेरे पर कैसे वारी गया। सब कुछ दे दिया।... प्रवेश भी उसमें करते हैं, जो हीरे जैसा था फिर कौड़ी जैसा बना। ... वही सबसे पतित बनते हैं, उनको ही फिर पावन बनना है। यह ड्रामा बना हुआ है।''

सा.बाबा 11.6.04 रिवा.

## सदा लव एण्ड लॉ के बैलेन्स से बच्चों की पालना करने वाले

ब्रह्मा बाबा ने सदा अपने जीवन में लव एण्ड लॉ का बैलेन्स रखा। न कभी किसके प्यार में, आकर्षण में बह गये और न लॉ में इतने कठोर हुए, जिससे किसको भारीपन महसूस हो। दुनिया में किसी कार्य की सफलता में, किसी के साथ व्यवहार में दोनों का बैलेन्स परम आवश्यक है। ब्रह्मा बाबा लव एण्ड लॉ के सिम्बल हैं, आदर्श हैं।

''बापदादा यही चाहते हैं कि वर्तमान समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखना पड़ता है लेकिन लॉ और लव का बैलेन्स मिलकर लॉ नहीं लगे। लॉ में भी लव महसूस हो। जैसे साकार स्वरूप में बाप को देखा। लॉ के साथ लव इतना दिया जो हरेक के मुख से यही निकलता कि बाबा का मेरे से प्यार है, मेरा बाबा है। लॉ जरूर उठाओ लेकिन लॉ के साथ लव भी दो।''

अ.बापदादा 8.10.2002

## सदा न्यारे और प्यारेपन के बैलेन्स वाले अर्थात् कमलासनधारी

ब्रह्मा बाबा को सर्व बच्चों से अगाध प्रेम था परन्तु वे सबसे न्यारे भी थे अर्थात् उनका किसी से विशेष लगाव नहीं था। वे सबके साथ रहते भी सबसे न्यारे थे। जैसे कमल पानी में रहते भी पानी से न्यारा रहता है। बाबा का बच्चों से प्यार था और बच्चों का भी बाबा से अगाध प्यार था।

''कमलासन विशेष ब्रह्मा बाप समान अति न्यारी और अति प्यारी स्थिति का सिम्बल है। आप ब्राह्मण बच्चे फॉलो फादर करने वाले हो। ... देहभान से न्यारा, देह के सर्व सम्बन्धों में दृष्टि-वृत्ति और कृत्ति में न्यारा, देह के विनाशी पदार्थों में भी न्यारापन और पुराने स्वभाव-संस्कार से भी न्यारा - इन चारो बातों में न्यारे बनना है।''

अ.बापदादा 25.10.87

''ब्रह्मा बाप भी कमल-आसनधारी बने तब नम्बरवन बाप के प्यारे बने, ब्राह्मणों के प्यारे बने। ... चारो ओर के न्यारेपन ने विश्व का न्यारा बना दिया। तो ऐसे ही चारो ओर के न्यारे और सर्व के प्यारे बनो।''

अ.बापदादा 25.10.87

''सब प्रश्नों का जबाब ब्रह्मा बाप की जीवन है। ... आप साइलेन्स वालों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्युटर है। इसलिए क्या-कैसे के बजाये जीवन के कम्प्युटर से देखो।... साकार रचना के निमित्त साकार श्रेष्ठ जीवन का सेम्पुल ब्रह्मा ही बनता है।... जगतपिता का टाइटिल ब्रह्मा का ही है। जितना ही जगत का प्यारा, उतना ही जगत से न्यारा बन अभी अव्यक्त रूप में फॉलो अव्यक्त स्थिति भव का पाठ पढ़ा रहे हैं। किसी भी आत्मा का ऐसा

और इतना न्यारापन नहीं होता।''

अ.बापदादा 19.12.85

## स्वयं को इस दुनिया में मेहमान समझकर महान बनने वाले

हम आत्माओं का घर परमधाम है, इस दुनिया में हम मेहमान है अर्थात् ये हमारा घर नहीं है। जो इस सत्य को जानकर यहाँ पर मेहमान समझकर रहता है, वही महान बनता है। वर्तमान में ये दुनिया रावण की है, पराई है, हमको इस दुनिया से मुक्त हो अपने घर जाना है। इस सत्य को समझकर ब्रह्मा बाबा इस दुनिया से उपराम हो गये, उन्होंने अपना लंगर इस दुनिया से उठा दिया। अपने को मेहमान समझने के कारण ही उनमें महानता आई और वे महान बन गये।

## सदा कर्मातीत स्थिति के अनुभव में रहने और दूसरों को भी कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराने वाले

शिवबाबा तो सदा कर्मातीत हैं, ब्रह्मा बाबा ने भी आत्मिक स्वरूप का इतना अभ्यास किया कि कर्म करते भी अपने मूल स्वरूप में स्थित रहे, जिस स्थिति को दूसरे भी अनुभव करते थे। उनका वायब्रेशन इतन शक्तिशाली था कि जो भी ब्रह्मा बाबा की गोद में जाता था, वह भी अपनी कर्मातीत स्थिति का अनुभव करता था। भल बाबा कहते हैं पूर्ण कर्मातीत तो अन्त में ही बनेंगे परन्तु अभी कर्म करते अपने मूल स्वरूप में स्थित हो कर्मातीत स्थिति का अनुभव कर सकते हैं और अपने पुरुषार्थ से निरन्तर उसमें वृद्धि कर सकते हैं। शिवबाबा भी कहते हैं - यहाँ जो जितना अधिक समय कर्मातीत स्थिति में रहेगा, वह उतना ही अधिक समय जीवनमुक्त स्थिति को पायेगा। ये एक हिसाब है।

''जैसे ब्रह्मा बाप को देखा एकदम न्यारा, कर्मातीत अनुभव में रहा। ऐसे आप सभी महारथियों को अभी ऐसे ब्रह्मा समान कर्मातीत अवस्था के समीप आना ही है। फॉलो फादर।... आपके द्वारा साकार ब्रह्मा बाप की अनुभूति बढ़ती जायेगी।''

अ.बापदादा 30.3.99

''संकल्प करो स्टॉप तो स्टॉप हो जाये - यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने की विधि।... कर्मातीत बनकर ही साथ चलेंगे ना।... ब्रह्मा बाप ने भी रोज़ दरबार लगाई है। ब्रह्मा बाप ने भी मेहनत की है, रोज दरबार लगाई तब कर्मातीत बनें।''

अ.बापदादा 15.3.99

''जैसे सेवा में आगे चान्स लेने का संकल्प रहता है, ऐसे ही स्व-स्थिति में आगे बढ़ने का भी चान्स लेते रहना। ... बापदादा विदेशी अर्थात् विश्व-कल्याण करने के निमित्त बनने वाले बच्चों को यही कहते हैं कि अब सेवा और विदेही अवस्था में नम्बरवन विदेशी बच्चों को बनना ही है। ... जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बने तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का बाप को रेस्पाण्ड देना - विदेही बनने का।''

अ.बापदादा 21.11.98

''आज के दिन ब्रह्मा बच्चे ने सारे कल्प के कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त होने का सबूत दिया। ... सेवा में हद की रॉयल इच्छायें भी हिसाब-किताब के बन्धन में बांधती हैं। लेकिन सच्चे सेवाधारी इस हिसाब-किताब से भी मुक्त हैं। इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है।''

अ.बापदादा 18.1.87

## वाणी और मन्सा सेवा साथ-साथ करने वाले

ब्रह्मा बाबा किसको वाणी से ज्ञान देने के साथ-साथ अपनी आत्मिक दृष्टि-वृत्ति से भी उस आत्मा की सेवा करते थे, जिससे आत्माओं को विशेष अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती थी। बाबा बच्चों को भी यही प्रेरणा या शब्दों में शिक्षा देते थे कि मन्सा और वाचा सेवा साथ-साथ करो तो सेवा में सफलता बहुत होगी क्योंकि आत्मायें शब्दों में सुना हुआ तो भूल सकते हैं लेकिन उनको मन्सा द्वारा जो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी, वह चिर-स्थाई होगी।

''वाणी और मन्सा सेवा के बैलेन्स में तो ब्लेसिंग बहुत मिलेंगी। डबल खाता जमा हो जायेगा। पुरुषार्थ का भी और दुआओं का भी। तो संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआयें दो क्योंकि आप दुआओं के सागर के बच्चे हो।''

अ.बापदादा 15.12.2001

''जैसे मुख का आवाज़ साइन्स के साधनों से दूर बैठे पहुँचता है, ऐसे मन का आवाज़ संकल्प भी पहुँचे। जैसे शुरू में साक्षात्कार होते थे, इशारे मिलते थे और उन्हीं इशारों से कइयों को जागृति भी आई। ऐसे जो आदि में हुआ, वह अभी अन्त में भी हो।... वह एक ब्रह्मा बाप ने किया, अभी ऐसी मनोबल की शक्ति आप सबके द्वारा प्रत्यक्ष हो।''

अ.बापदादा 30.3.98 दादियों से

## सदा स्वयं को तन-मन से स्वस्थ अनुभव करने और दूसरों को भी ऐसी ही महसूसता देने वाले

ब्रह्मा बाबा आयु बड़ी होते हुए भी सदा अपने को स्वस्थ अनुभव करते थे। तन के किसी पुराने हिसाब-किताब के कारण तन में कोई अस्वस्थता होने पर भी मन से सदा स्वस्थ होने के कारण किसी को भी ऐसा अनुभव नहीं होने देते थे कि बाबा का तन अस्वस्थ है। भले बाबा के साथ प्यार होने के कारण सभी भाई-बहनें बाबा के तन का पूरा ही ध्यान रखते थे परन्तु बाबा कभी किसी को अपने तन की अस्वस्थता का आभास नहीं होने देते थे। बाबा की चलने, उठने, बैठने से उनके स्वास्थ्य का आभास होता था। अन्त समय तक बाबा सदा ही गद्दी पर सीधे होकर बैठते थे और बच्चों को भी प्रेरित करते थे कि राजयोगियों की बैठक ऐसी होनी चाहिए।

## सदा निष्पक्ष भाव धारण कर सर्व को निष्पक्षता का अनुभव कराने वाले

ब्रह्मा बाबा के दिल में कभी किसी भी प्रकार का पक्षपात देखने में नहीं आया। भले यज्ञ में उनके लौकिक बच्चे, सम्बन्धी आदि भी रहते थे, अमीर-गरीब परिवार वाले भी रहते थे परन्तु बाबा की दृष्टि में सदा यही रहता था कि सभी हमारे बच्चे हैं और सबके साथ निष्पक्ष होकर यथा-योग्य व्यवहार करते थे। यज्ञ की सेवा के दृष्टिकोण से जिसको जैसी आवश्यकता होती थी, उसको वैसी सुविधायें देते देते थे, प्यार देते थे, उसके अनुसार उसका उमंग-उत्साह बढ़ाते थे। यज्ञ की हर आत्मा को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा का मेरे से बहुत प्यार है। सभी को बाबा से अपनत्व की भासना आती थी।

## निर्संकल्प स्थिति के सफल अभ्यास से सदा निर्विकल्प स्थिति में रहने वाले

ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा के समान निराकारी आत्मिक स्वरूप अर्थात् निर्संकल्प स्थिति में रहने का ऐसा सफल अभ्यास किया कि बाबा की निर्विकल्प स्थिति भी स्वभाविक हो गई। ब्रह्मा बाबा के लौकिक जीवन में भी व्यर्थ संकल्प नहीं थे परन्तु लौकिक जीवन के अनुसार लौकिक दुनिया के हिसाब से संकल्प चलना तो स्वभाविक था परन्तु शिवबाबा की प्रवेशता और ब्राह्मण जीवन में प्रवेश करते ही उनके जीवन से वह लौकिकता भी समाप्त हो गई और

उनका जीवन अलौकिक बन गया, जिससे उनकी स्थिति निर्संकल्प और निर्विकल्प सहज और स्वभाविक होगयी, जिससे उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव स्वभाविक हो गया अर्थात् निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि की स्थिति उनकी स्वभाविक हो गई। हठयोग में भी निर्विकल्प समाधि की सिद्धि निर्संकल्प समाधि की सिद्धि के बाद ही होती है, ऐसा वर्णन है और यथार्थ भी यही है। ब्रह्मा बाबा को ये सिद्ध, आदि से ही उनके निराकार आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के दृढ़ अभ्यास के फलस्वरूप मिली।

भूतकाल के पश्चाताप में भी समय, संकल्प, शक्ति व्यर्थ नहीं गंवाना है परन्तु पुरुषार्थ में भी अलबेला नहीं बनना है। पुरुषार्थ ही जीवन है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के सफल अनुभव तथा मृत्यु-दुख से मुक्त होने का एकमात्र साधन है। ब्रह्मा बाप समान इस स्थिति का पुरुषार्थ करके जीवन को सफल करना है।

## परमात्मा के बगीचे के सर्वश्रेष्ठ सुगन्धित फूल और सफल माली

संगमयुग पर विशेष ये ब्राह्मण परिवार और समस्त विश्व एक फूलों का बगीचा है, परमात्मा इस चेतन्य बाग का बागवान है, ब्रह्मा बाबा इस इस बाग़ के माली भी हैं तो परमात्म के इस संगमयुगी बगीचे के सबसे श्रेष्ठ सुगन्धित फूल भी हैं। उनके अथक पुरुषार्थ से ही ये गुलशन गुल्जार है और सारे विश्व में अपनी सुगन्ध फैला रहा है।

''ब्रह्मा कोई मोस्ट बिलवेड नहीं है। बिलवेड मोस्ट वह है, जो सदा पावन है। ... ब्रह्मा ऊंच ते ऊंच भी बनते हैं, फिर नीचे भी उतरते हैं। तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियां भी ऊंच बन रहे हो। ... यह ब्रह्मा बाबा भी नामीग्रामी है। इन द्वारा बाप सभी आत्माओं का गाइड बन मच्छरों सदृश्य वापस ले जाते हैं।''

सा.बाबा 8.8.06 रिवा.

## सदा दर्शनीय मूर्त

ब्रह्मा बाबा ने अपनी चलन और चेहरे से शिवबाबा और शिवबाबा के ज्ञान को प्रत्यक्ष किया, इसलिए शिवबाबा सदा ही ब्रह्मा बाबा का उदाहरण देकर बच्चों को शिक्षा देते हैं। बाबा सदैव कहते हैं तुम्हारी चलन और चेहरे से बापदादा दिखाई दे, तुमको क्या मिला, वह अनुभव हो। ये ब्रह्मा बाबा को देखने से ही अनुभव होता था। ब्रह्मा बाबा को सदा ये चेतना (Conscious) रहती थी कि शिवबाबा मेरे तन में है अर्थात् इस तन का मालिक शिवबाबा है, इसलिए इससे सदा ही शिवबाबा का साक्षात्कार होना चाहिए, अनुभूति होनी चाहिए, दर्शन होने चाहिए।

''अभी बापदादा नम्बरवन की स्टेज चलन और चेहरे पर देखने चाहते हैं। ... आपका चेहरा बताये कि यह दर्शनीयमूर्त हैं।... चैतन्य में भी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, साकार स्वरूप में फरिश्ता तो बाद में बना लेकिन साकार स्वरूप में होते हुए आप सबको क्या दिखाई देता था ? साधारण दिखाई देता था ? अन्तिम 84वां जन्म, पुराना जन्म, 60 वर्ष के बाद की आयु, फिर भी आदि से अन्त तक दर्शनीय मूर्त अनुभव की। साकार रूप में भी की ना! ... अब से आपकी हर चलन से ऐसे महसूस करें कि यह न्यारे और अलौकिक हैं।''

अ.बापदादा 15.12.03

''आपका चेहरा बताये कि यह दर्शनीयमूर्त हैं।... चैतन्य में भी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, साकार स्वरूप में फरिश्ता तो बाद में बना लेकिन साकार स्वरूप में होते हुए आप सबको क्या दिखाई देता था ? ... आपकी हर चलन से ऐसे महसूस करें कि यह न्यारे और अलौकिक हैं। ... फिर बाप की प्रत्यक्षता होगी। आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा। ये भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है लेकिन प्रत्यक्षता तब होगी, जब लोगों को अन्दर में आये कि इनको बनाने वाला कौन! रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।''

अ.बापदादा 15.12.03

''इतने श्रेष्ठ भाग्य सदा स्मृति में रहें - इसमें नम्बरवार हैं।... जो इतने निश्चयबुद्धि हैं कि हम सदा जैसे बाप ब्रह्मा नम्बरवन, ऐसे फालो ब्रह्मा बाप नम्बरवन हैं और रहेंगे, वे हाथ उठाओ। हाथ उठाया, इसका मतलब है कि आपको अपने में हिम्मत है और हिम्मत है तो बापदादा भी मददगार है ही। बापदादा ने देखा कि मन में समाया हुआ तो है लेकिन मन तक है, चेहरे और चलन तक इमर्ज नहीं है। अभी बापदादा नम्बरवन की स्टेज चलन और चेहरे पर देखने चाहते हैं।''

अ.बापदादा 15.12.03

''जो इतने निश्चयबुद्धि हैं कि हम सदा जैसे बाप ब्रह्मा नम्बरवन, ऐसे फालो ब्रह्मा बाप नम्बरवन हैं और रहेंगे, वे हाथ उठाओ। ... अब समय अनुसार नम्बरवन कहने वालों को हर चलन में दर्शनीय मूर्त दिखाई देना चाहिए। आपका चेहरा बताये कि यह दर्शनीयमूर्त हैं। ... चेतन्य में भी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, साकार स्वरूप में, फरिश्ता तो बाद में बना लेकिन साकार स्वरूप में होते हुए आप सबको क्या दिखाई देता था ? साधारण दिखाई देता था ? ... आदि से अन्त तक दर्शनीय मूर्त अनुभव की। साकार रूप में भी की ना! ... अब से आपकी हर चलन से ऐसे महसूस करें कि यह न्यारे और अलौकिक हैं।''

अ.बापदादा 15.12.03

## आलराउण्ड पार्ट धारी

ब्रह्मा बाबा ने इस विश्व-नाटक में आदि से अन्त तक पूरा ही पार्ट बजाया है, इसलिए उनको सारे कल्प का भी अनुभव है और सब तरह के कामों का भी अनुभव है। बाबा को गरीबी का भी अनुभव है तो साहूकारी का भी अनुभव है। इसलिए बाबा कोई भी कार्य होता था तो उसमें पहले अपना हाथ लगाते थे, जिससे बच्चे भी सहज उस कार्य को करने लग जाते थे। यज्ञ का कोई भी कार्य होता था या चीज बनती थी, उसमें क्या एडीशन-करेक्शन करनी है, वह सब समझानी देते थे। बच्चों को भाषण करना भी सिखाया तो गाय के गोबर से उपले भी बनाना सिखाया। बाबा कहते थे - राजा भले ही महल बनाने का कार्य नहीं करेगा लेकिन उसको ये ज्ञान तो होगा, अनुभव तो होगा कि महल कैसा होना चाहिए, तब तो वैसा बनवायेगा। ऐसे ही हर कार्य के विषय में बाबा का अनुभव था।

''ब्रह्मा बाप को साथ ले भी जाना है और साथ रहना भी है। शिव बाप तो साथ ले जाने वाला है, राज्य में वा सारे कल्प में साथ नहीं रहना है। वह सदा साथ रहने वाला है और वह साक्षी होकर देखने वाला है। ... जिम्मेवार दोनों हैं लेकिन फिर भी रचता साकार में ब्रह्मा है इसलिए साकार रचता को साकार रचना के लिए स्वत: ही स्नेह रहता है।''

अ.बापदादा 3.2.88

## सदा दुआयें देने और दुआयें लेने वाले दुआओं के अखुट भण्डार सदा सागर के समान गम्भीर अर्थात सब बातों को समाने वाले

ब्रह्मा बाबा सदा दूसरों के कल्याण का ही सोचते थे, सबके प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखते थे अर्थात् सबको दुआयें देते थे, उसके फलस्वरूप उनको सबसे दुआयें मिलती थी अर्थात् उनके प्रति सदा ही हर आत्मा की शुभ-भावना, शुभ-कामना रही। जो अज्ञानी आत्मायें बाबा के सम्पर्क में आती थी, वे भी बाबा के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखते थे।

''दुआयें दो, दुआयें लो। जो समझते ये सहज है, वे हाथ उठाओ। कोई आपका आपोजीशन करे तो ? तो भी दुआयें देंगे ? इतना दुआओं का स्टॉक है आपके पास ? आपोजीशन तो होगी क्योंकि आपोजीशन ही पोजीशन तक पहुँचाती है। देखो - सबसे ज्यादा आपोजीशन ब्रह्मा बाप की हुई। हुई ना ! और पोजीशन किसने नम्बरवन पाई ? ब्रह्मा ने पाई ना ! कुछ भी हो लेकिन मुझे ब्रह्मा बाप समान दुआयें देनी हैं। क्या ब्रह्मा बाप के आगे व्यर्थ बोलने, व्यर्थ करने वाले नहीं थे ! लेकिन ब्रह्मा बाप ने दुआयें दीं, दुआयें लीं। समाने की शक्ति रखी। बच्चा है, बदल

जायेगा। ऐसे ही आप भी यही दृष्टि-वृत्ति रखो - कल्प पहले वाले हमारे ही परिवार के हैं, ब्राह्मण परिवार के हैं।''

अ.बापदादा

## सदा धैर्य से विघ्नों का सामना कर सर्व को विघ्नमुक्त बनाने वाले

ब्रह्मा बाबा किसी भी आये हुए विघ्न का धैर्य से सामना करते थे, उस पर विजय प्राप्त करते थे और अन्य आत्माओं को भी ऐसी ही शिक्षा देकर, सांत्वना देकर विघ्नमुक्त बनाते थे। वास्तविकता तो ये थी कि उनके सानिध्य में रहते आत्माओं को विघ्न भी विघ्न अनुभव नहीं होता था। बेगरी पार्ट में भी जो सच्चे पुरुषार्थी बच्चे थे, वे उनके साथ अतीन्द्रिय सुख में रहे, अनुभव किया।

## मृत्यु पर विजय पाकर अमरत्व को पाने वाले

वैसे तो आत्मा अमर है, जन्म और मृत्यु एक वस्त्र बदलना है परन्तु दुनिया में हर आत्मा मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से भयभीत रहती है। ब्रह्मा बाबा ने देह से न्यारा होने का ऐसा सफल अभ्यास किया कि उन्होंने मृत्यु पर भी विजय पा ली। साकार जीवन में रहते तो वे मृत्यु-भय से मुक्त रहे ही और अन्त में साकार देह को त्याग कर अमरत्व को प्राप्त किया अर्थात् फरिश्ता स्वरूप को प्राप्त किया, जो मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से सदा मुक्त है। बच्चों को भी सदा यही प्रेरणा दी कि देह से न्यारा होने का अभ्यास करो तो तुम मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से सदा मुक्त रहेंगे, तुमको मृत्यु एक वस्त्र बदलना अनुभव होगा। अभी भी देह में प्रवेश होने और देह से न्यारा होने का स्वरूप दिखा भी रहे हैं और अभ्यास भी करा रहे हैं। उसमें भी विशेष अव्यक्त मुरली के बाद याद-प्यार देने से पहले बापदादा ये विशेष अभ्यास कराते हैं।

## यथार्थ पुरुषार्थी जीवन के एग्जाम्पुल

यथार्थ पुरुषार्थ क्या है, वह भी ब्रह्मा बाबा के जीवन को देखने से अनुभव होता था। बाबा कर्म करते, चलते-फिरते भी अशरीरी बनने का अभ्यास करते थे, जो उनको देखने, उनके सम्पर्क में आने से ही अनुभव होता था। ब्रह्मा बाबा का जीवन ही सबको पुरुषार्थ की प्रेरणा देता था।

''बाप कहते हैं - मैं तुम सभी बच्चों को आप समान बनाने आया हूँ। ... मैं हूँ निराकार, तुम

बच्चों को भी आप समान निराकारी बनाने, जीते जी मरना सिखलाने आया हूँ। बाप को शरीर में रहते भी शरीर का भान नहीं है।... तुम बच्चे भी इस शरीर का भान निकाल दो।... जैसे मैं अशरीरी हूँ, तुम भी जीते जी अपने को अशरीरी समझो।''

सा.बाबा 20.2.04 रिवा.

''जो दूसरों को समझाते हैं तो वे जरूर खुद भी अशरीरी बनने का पुरुषार्थ करते होंगे। उनको भी वाणी से परे घर जाना है। जरूर यह भी अभ्यास करता होगा।... कथनी के साथ फिर करना भी है।''

सा.बाबा 18.1.07 रिवा.

''अशरीरी बनने का बहुत पुरुषार्थ करना है।... यह सिर्फ कहने की बात नहीं है। अगर कोई से दिल लगाई, क्रिमिनल आई गई तो अशरीरी बन नहीं सकेंगे। अशरीरी बनेंगे तो किसकी याद नहीं रहेगी।... शिवबाबा को तो अभ्यास करना नहीं है, इस दादा को करना है।''

सा.बाबा 18.1.07 रिवा.

## त्याग से मिले भाग्य का भी त्याग करने वाले

ब्रह्मा बाबा अपना तन-मन-धन सब त्याग किया, जिससे इस यज्ञ की स्थापना हुई और विस्तार को पाया। यज्ञ में समयानुसार साधनों की भी वृद्धि हुई, बाबा के लिए व्यक्तिगत रूप में भी कई भाई-बहनें प्यार से कोई न कोई वस्तु लाते थे परन्तु बाबा उसको अपने लिए यूज़ नहीं करते थे। बाबा अन्त तक पुराने मकान में ही रहे, जबकि अनेक भवन बाबा के सामने भी बन गये थे और बच्चे बाबा को उनमें रहने के लिए कहते भी थे।

''ब्रह्मा बाप की विशेषता क्या रही! इतने तक त्याग के भाग्य का त्याग किया। अगर कोई प्यार के कारण, प्राप्ति के कारण ब्रह्मा की महिमा करते थे तो उसको भी बाप की याद दिलाते थे। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलेगा, ब्रह्मा का फोटो नहीं रखना है।''

अ.बापदादा 30.3.85

''ब्रह्मा बाप ने तन-मन-धन सब लगाया। तन से भी बेहद का वैराग्य ... मन तो मन्मनाभव था ही। धन भी लगाया लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। ... प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एक्स्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया।''

अ.बापदादा 18.1.98

## स्थूल और अविनाशी ज्ञान रतनों के सफल जौहरी

ब्रह्मा बाबा लौकिक दुनिया में भी स्थूल जवाहरात के सफल पारखी थे और ज्ञान-मार्ग में भी ज्ञान-रतनों के सफल पारखी और आत्माओं को भी परखने में सफल पारखी थे,

जिससे वे अपने लौकिक और अलौकिक जीवन में सफल रहे। अपने स्थूल रतनों के धन्धे को सेकेण्ड में अविनाशी ज्ञान रतनों के धन्धे में परिवर्तन कर लिया और अन्य आत्माओं को भी परखकर ज्ञान रतनों का दान देकर मूल्यवान बनाया।

''तुम तो चेतन्य हीरा हो, तुम अपने फ्लो को निकाल सकते हो। ... यह भी बड़ा पक्का जौहरी है ना। सारी आयु हीरे ही इन आंखों से देखे हैं। ऐसा जौहरी कोई नहीं होगा, जिसको इतना हीरों को परखने का शौक हो।''

सा.बाबा 13.5.04 रिवा.

''विनाश सामने खड़ा है। नेचुरल केलेमिटीज़ आई कि आई, इसलिए तुम अपना पुराना बैग-बैगेज आदि सब ट्रान्सफर कर दो। तुम ट्रस्टी बन जाओ। बाबा शर्राफ भी है। ... बेगर टू प्रिन्स बनाने वाले बाप और वर्से को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 7.4.07 रिवा.

## सदा बाप, टीचर, सत्गुरु के आज्ञाकारी अर्थात् फरमान बरदार, वफादार

शिवबाबा ने कहा और ब्रह्मा बाबा ने किया, ऐसी ब्रह्मा बाबा की धारणा थी। भक्ति मार्ग में भी ब्रह्मा बाबा का यही संस्कार था कि गुरु ने जो आज्ञा की, उसको हर हालत में पूरा करना ही है अर्थात् गुरु की आज्ञा सिर माथे।

''सबको बाप का परिचय दो और बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाओ। ... अब सोचो यह धन्धा करें या जिस्मानी धन्धा करें। ... बाबा का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में बहुत ध्यान देता तो बाप का डिस्गिार्ड हो गया।... जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थै, फिर बड़े बाबा ने कहा - यह अविनाशी ज्ञान रतनों का धन्धा करना है तो उसे छोड़कर इसमें लग गया।''

सा.बाबा 15.5.07 रिवा.

''ब्रह्मा बाप का चौथा कदम - वफादार। कभी भी मन, बुद्धि से, संकल्प से बाप के बेवफा नहीं बनना। बफादार का अर्थ है सदा एक बाप, दूसरा न कोई। संकल्प में भी देह, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ वा देहधारी आकर्षित न करें। जैसे पति-पत्नि... स्वप्न में भी दूसरे की याद न आये।''

अ.बापदादा 26.1.95

''ब्रह्मा बाप का तीसरा कदम - सदा बाप, शिक्षक और सत्गुरु के फरमानबरदार बनें। ... प्रत्यक्ष देखा कि सर्व खज़ाने ज्ञान, शक्तियां, गुण, श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना पहले दिन से लेकर लास्ट दिन तक कार्य में लगाया। ... इसको कहा जाता है फरमानबरदार

नम्बरवन बच्चा। तो स्नेह की निशानी है - फॉलो फादर।''

अ.बापदादा 26.1.95

## ईश्वरीय ज्ञान के प्रत्यक्ष प्रमाण

दुनिया में किसी बात को मानने के लिए मनुष्य प्रमाण चाहते हैं परन्तु बाबा ने कहा है प्रत्यक्ष प्रमाण ही सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है। तुम्हारा जीवन ही प्रमाण है। ब्रह्मा बाबा ने ईश्वरीय ज्ञान को और शिवबाबा गुण-कर्तव्यों को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया।

''यह ब्रह्मा कैसे कुर्बान गया, फालो इस सेम्पुल को करो। यही फिर नारायण बनते हैं। अगर इतना ऊंच पद पाना है तो ऐसा कुर्बान जाना है। सब स्वाहा करना है।''

सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

## विश्व के स्नेही और विश्व के सहयोगी

सारे विश्व की आत्मायें जो बाबा के सम्पर्क में आती थी, उनका बाबा के प्रति जाने-अन्जाने स्नेह हो जाता था क्योंकि बाबा का सर्वात्माओं के प्रति स्नेह का भाव था और वे सर्वात्माओं के प्रति सहयोग की भावना रखते थे।

''विश्व का राजा वे बनेंगे जो विश्व की हर आत्मा से सम्बन्ध जोड़ेंगे और सहयोगी बनेंगे। जैसे बापदादा विश्व के स्नेही और सहयोगी बनें वैसे बच्चों को भी फालो फादर करना है। तब विश्व महाराजन की जो पदवी है, उसमें आने के अधिकारी बन सकते हो।''

अ.बापदादा 2.7 .70

## सर्व धर्मों का आदि पिता / सर्व आत्माओं के आदि पिता

ब्रह्मा बाबा सर्व धर्मों के आदि पिता हैं क्योंकि सभी धर्मवंश की आत्माओं को अर्थात् उनके धर्मपिता को ब्रह्मा के द्वारा ही परमात्मा का सन्देश मिलता है, जिसके आधार पर वे अपने धर्मवंश की स्थापना करते हैं। इसलिए एभी धर्मवाले ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फादर कहते हैं। भले वे नाम ब्रह्मा न कहकर अपने धर्म के हिसाब से कहते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा के मनुष्य तन में आकर नई सृष्टि की स्थापना करते हैं, इसलिए ब्रह्मा मनुष्य-सृष्टि का आदि पिता है।

ब्रह्मा बाबा के दिल में सभी धर्म वालों के प्रति प्यार था, सभी धर्मों का वे सम्मान करते थे और उनके कल्याण का संकल्प रखते थे क्योंकि उनको ये चेतना थी कि सभी धर्म वालों का मेरे से ही कल्याण होना है।

''तपस्या अर्थात् प्योरिटी की पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी का स्वयं भी अनुभव करना और औरों

को भी अनुभव कराना। ... जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा कि प्योरिटी की पर्सनॉलिटी कितनी स्पष्ट अनुभव करते थे।''

अ.बापदादा 4.12.91

''यूँ तो ब्रह्मा की औलाद तो सब हैं परन्तु सब ब्राह्मण नहीं बनेंगे। जो ब्राह्मण बनते हैं, उन्हों के लिए 21 जन्म जीवनमुक्त कहा जाता है।'' Q. जो आत्मायें त्रेता के अन्त में आयेंगी, उनके 21 जन्म तो हो नहीं सकते, तो वे ब्राह्मण बनेंगे या नहीं ?

सा.बाबा 13.4.07 रिवा.

''देह सहित जो भी पुरानी दुनिया के सम्बन्ध आदि हैं, उन सबको भूलना है, अपने को देही समझना है। सभी धर्म वालों को बाप कहते हैं - असुल में तुम सब मुक्तिधाम के रहने वाले हो, अब वापस घर चलना है। मुक्ति को तो सब याद करते हैं।''

सा.बाबा 16.1.07 रिवा.

## साकार में होते अव्यक्त रूप का और अव्यक्त होते भी साकार के समान मिलन का अनुभव कराने वाले

ब्रह्मा बाबा साकार में थे, तब भी उनके अव्यक्त रूप का अनुभव होता था, वे चलते-फिरते फरिश्ता दिखाई पड़ते थे और अभी जब कि वे अव्यक्त फरिश्ता के रूप में हैं तो भी साकार में आकर अव्यक्त मिलन का अनुभव कराते हैं तथा अनेक आत्माओं को अब भी उनका साकार के समान ही अनुभव होता है।

''अभी अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाते चलो। अव्यक्त भी ड्रामा अनुसार व्यक्त में आने के लिए बांधे हुए हैं लेकिन समय प्रमाण सरकमस्टांस प्रमाण अव्यक्त मिलन का अनुभव बहुत काम में आने वाला है।... समय पर यह अव्यक्त मिलन भी साकार समान ही अनुभव हो।''

अ.बापदादा 4.12.91

## सदा समर्थ बन मेहनत से मुक्त होकर, सर्व को समर्थ और मेहनत से मुक्त बनाने वाले

ब्रह्मा बाबा ने एक धक से अपने जीवन से व्यर्थ को समाप्त कर दिया, जिससे वे सहज समर्थ बन गये और मेहनत से मुक्त हो गये। बाबा को बच्चों को मेहनत करते देख, अच्छा नहीं लगता था, इसलिए वे बच्चों को भी ऐसी शिक्षा देते थे, जिससे बच्चे व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ बन सहज मेहनत से मुक्त हो जायें।

''बापदादा बच्चों को मेहनत करते हंए देखते हैं, युद्ध करते हुए देखते हैं तो बच्चों की मेहनत करना बाप को अच्छा नहीं लगता है।... निगेटिव, वेस्ट को समाप्त किया तो यह वर्ष ऑटोमेटिक मेहनत मुक्त वर्ष हो जायेगा।... संकल्प में भी मेहनत मुक्त हो।''

अ.बापदादा 31.12.98

## परमात्मा पिता के साथ रुद्र ज्ञान यज्ञ के रचता रुद्र ज्ञान यज्ञ के प्रथम ब्राह्मण अर्थात् रक्षक अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से वायब्रेशन और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनाने वाले

रुद्र ज्ञान यज्ञ का रचता तो शिवबाबा है परन्तु वह ब्रह्मा तन में आकर ही यज्ञ रचता है और यज्ञ रक्षा के लिए ब्राह्मणों की रचना करता है। ब्रह्मा बाबा इस रुद्र ज्ञान यज्ञ के प्रथम ब्राह्मण हैं, जो अपने तन-मन-धन से यज्ञ की रक्षा करते हैं।

''सुनी हुई बात फिर भी भूल जाती है लेकिन जो वायुमण्डल का अनुभव होता , वह भूलता नहीं है। जैसे मधुवन में अनुभव किया है। ब्रह्मा बाप की कर्म-भूमि, योग-भूमि, चरित्र-भूमि का वायुमण्डल अब तक भी जो वायुमण्डल का अनुभव करते हैं, वह भूलता नहीं है।... यह ब्रह्मा बाप और अनन्य बच्चों के वृत्ति द्वारा और तीव्र पुरुषार्थ द्वारा वायुमण्डल बना है।''

अ.बापदादा 17.3.07

## प्रभावशाली प्रतिभा वाले अर्थात् प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले

ब्रह्मा बाबा का लौकिक जीवन में भी व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था, परमात्मा पिता की प्रवेशता और सत्य ज्ञान की धारणा से वह और प्रभावशाली हो गया, जिससे जाने-अन्जाने सर्वात्मायें उनकी तरफ आकर्षित हो ही जाती थी, प्रभावित हो जाती थी। ज्ञान के विरोधी आत्मायें भी उनके व्यक्तित्व की महिमा करते थे।

''ऐसे रुहानी पर्सनॉलिटी, प्योरिटी की पर्सनॉलिटी, ज्ञानी वा योगी तू आत्मा की पर्सनॉलिटी स्वत: आकर्षित करेगी। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - चाहे बच्चों साथ सब्जी भी काटते रहे, खेल करते रहे लेकिन पर्सनॉलिटी सदा आकर्षित करती रही। ... जिन्होंने साकार रूप में नहीं देखा, उनको बाप अव्यक्त रूप में विशेष अनुभव कराते हैं। साकार आंखों से देखने से भी ज्यादा अनुभव की आंख से देखना श्रेष्ठ है।''

अ.बापदादा 31.12.89 पार्टी

## साधन होते भी साधना के जाग्रत स्वरूप में रहने वाले

ब्रह्मा बाबा सदैव बच्चों को याद दिलाते थे और अभी भी अव्यक्त रूप में याद दिलाते हैं - बच्चे साधन तो तुम्हारी तपस्या के फल स्वरूप बढ़ते जायेंगे परन्तु तुमको अपनी साधना को कम नहीं करना है। ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन से यह अनुभव कराया।

''अभी साधनों ने आराम पसन्द बना दिया है। अपने आदि के पुरुषार्थ को चैक करो -... साधन सेवा के प्रति हैं, साधन स्वयं को आराम पसन्द बनाने के लिए नहीं हैं।... देखो, आदि सेवा के समय में साधन नहीं थे लेकिन साधना कितनी श्रेष्ठ रही। जिस आदि की साधना ने ये सारी वृद्धि की है। ... साधना है बीज, साधन हैं विस्तार। तो साधना के बीज को छिपनें नहीं दो, अभी फिर से बीज को प्रत्यक्ष करो।'' अ.बापदादा 26.1.95

## परमात्मा के वारिस बनने के राज़ को समझकर, परमात्मा पिता के पूरे वर्से के वारिस बनने वाले

परमात्मा आकर सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं अर्थात् सर्व आत्मायें परमात्मा के वारिस हैं अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के अधिकारी हैं परन्तु फिर भी सब नम्बरवार बनते हैं। जो इस वारिस बनने के राज़ को जितना जानते हैं और उसको अपनाते हैं, वे उतना ही परमात्मा से जीवनमुक्ति का वर्सा पाते हैं। ब्रह्मा बाबा ने इस वारिस बनने के राज़ को अच्छी तरह से जाना और उसको जीवन में अपनाया अर्थात् ब्रह्मा बाबा ने परमात्मा को अपना पूरा वारिस बनाया, इसलिए वे परमात्मा के पूरे वर्से के अधिकारी बनें अर्थात् पूरा जीवनमुक्ति का वर्सा पाया अर्थात् सतयुग के प्रथम राजकुमार और प्रथम विश्व-महाराजन बनें। उसके बाद सबने नम्बरवार वर्सा पाया है।

''कहते तो सब हैं - बाबा, हम आपके हो चुके हैं परन्तु यथार्थ रीति हमारे होते थोड़ेही हैं। बहुत हैं, जो वारिस बनने के राज़ को भी नहीं जानते हैं। ... कई बच्चे समझते हैं - हम तो वारिस हैं परन्तु बाबा समझते हैं कि यह वारिस है नहीं। वारिस बनने के लिए भगवान को अपना वारिस बनाना पड़े। यह राज़ समझाना भी मुश्किल है। ... सब मिल्कियत देनी पड़े, फिर बाप भी वारिस बनायेंगे।'' सा.बाबा 5.1.05 रिवा.

## परमात्मा के विश्व-परिवर्तन के कार्य में सदा सहयोगी / स्थापना के कार्य में सदा परमात्मा के सहयोगी

ब्रह्मा बाबा शिवबाबा के साथ विश्व परिवर्तन के कार्य में आदि से ही सदा सहयोगी रहे। सदा अपने को जिम्मेवार समझकर हर कार्य किया और निमित्त समझ सदा हल्के रहे। इसलिए ब्रह्मा के द्वारा स्थापना गाई हुई है।

''ऐसी बाप समान सर्वशक्तियों की अनुभूति वाली ज्ञानी-योगी आत्मायें तैयार करो। ... विश्व-परिवर्तन के लिए बहुत सूक्ष्म शक्तिशाली स्थिति वाली आत्मायें चाहिए, जो अपनी वृत्ति द्वारा, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अनेक आत्माओं को परिवर्तन कर सकें।... बेहद की सेवा अपनी शक्तिशाली मन्सा शक्ति द्वारा शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा होती है। ''

अ.बापदादा 1.4.92

''योरोपवासी यादव भी हैं, जिन्होंने बॉम्बस आदि की इन्वेन्शन की है ... बरोबर अपने कुल का विनाश जरूर करेंगे। ... गाया भी जाता है - ब्रह्मा के द्वारा स्थापना और शंकर के द्वारा विनाश। पहले स्थापना करेंगे।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

## सादगी में रहते शालीनता के सेम्पुल

ब्रह्मा बाबा जीवन सादगी और शालीनता से भरपूर था अर्थात् सादगी में रहते शालीनता के अवतार थे। ब्रह्मा बाबा आदि से अन्त तक भारत की मूल ड्रेस धोती-कुर्ता ही पहना परन्तु उसको पहनते भी वे राजाओं के राजा लगते थे।

## सर्वशक्तिवान बाप पर पूरा बलिहार होकर बलवान बनने वाले

परमात्मा सर्वशक्तिवान है, जो उन पर पूरा बलिहार जाते हैं, उन पर परमात्मा भी पूरा बलिहार जाते हैं। ब्रह्मा बाबा परमात्मा पर पूरा बलिहार होकर महा-बलवान बन गये अर्थात् दुनिया की कोई भी शक्ति उनके आगे कमजोर हो गई। पूरा बलिहार होकर बलवान बनने का उदाहरण बच्चों के सामने रखा, जिससे बच्चे भी उनको फॉलो करके बलवान बन सकें।

''बाप ने समझाया है - जो सबसे ऊंच पावन बनते हैं, वे ही फिर सबसे पतित बनते हैं। इसमें वण्डर नहीं खाना है। ... राजाई के लिए पूरा बलि चढ़ना अर्थात् उनका बनना है। बाप के बने हो तो एक बाप को ही याद करना चाहिए।''

सा.बाबा 15.6.07 रिवा.

## गीता ज्ञान के प्रत्यक्ष स्वरूप

बापदादा सदैव बच्चों को कहते हैं कि गीता का भगवान कौन - इस बात को सिद्ध करके दिखाओ। अब प्रश्न उठता है कि ये कैसे सिद्ध कर सकेंगे। इस बात पर विचार करते हैं तो देखते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने गीता का भगवान शब्दों से सिद्ध नहीं किया बल्कि अपने जीवन से गीता ज्ञान को सिद्ध किया अर्थात् उनके जीवन से गीता ज्ञान सिद्ध होता था अर्थात् गीता ज्ञान का सार नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप उनका जीवन था। उनको देखकर, उनके सानिध्य से आत्मायें गीता ज्ञान के सार रूप में स्थित हो जाती थी और सत्यता को स्वीकार करती थीं।

गीता ज्ञान के विषय में निम्नलिखित कुछ विचारणीय प्रश्न हैं, जिन पर विचार करना अति आवश्यक है -

Q. क्या गीता का भगवान किसी लौकिक न्यायालय में सिद्ध होगा ? या
ये पुरुषार्थ भी सर्व को बाप का सन्देश देने की विधि है ?

''अभी आप लोगों ने बापदादा की एक आशा पूरी नहीं की है। की है ? ... गीता के भगवान पर हिलाकर दिखाओ।... थोड़ा-थोड़ा रिहर्सल तो करो, हिलाकर देखो क्या कहते हैं।''

अ.बापदादा 31.12.03 जूरिस्ट विंग

''बापदादा की एक बात अभी तक कोई भी वर्ग वाले ने पूरी नहीं की है। याद है, कौन सी ? (गीता के भगवान की) ये गीता वाली बात छोड़ो, वह तो बापदादा ने कहा भी है कि यह बात बहुत श्रेष्ठ है परन्तु यह बहुत सम्भाल कर करनी है। पहले एक ग्रुप ऐसा तैयार करो जो आपके साथी बनें। वे माइक बनें और आप माइट बनो।...अभी बापदादा की सभी बच्चों को यही शुभ राय वा श्रीमत है कि ऐसा ग्रुप तैयार करो, जो यह आवाज फैलाये कि यही परमात्म कार्य है। निर्भय होकर, नि:संकोच बाप को प्रत्यक्ष करे। दृढ़ता से बोले, अथॉरिटी से बोले। आजकल के जमाने में स्थूल अथॉरिटी भी काम में आती है। लौकिक अथॉरिटी और परमात्म अथॉरिटी दोनों अथॉरिटी वाले आवाज़ फैला सकते हैं।''

अ.बापदादा 02.02.04

''अपने नॉलेजफुल स्वरूप को प्रत्यक्ष करना है। अभी समझते हैं कि शान्ति स्वरूप आत्मायें हैं, यह स्वरूप प्रत्यक्ष हुआ भी है और हो भी रहा है लेकिन नॉलेजफुल बाप की नॉलेज है तो यही है। अब यह आवाज़ हो।... सबके मुख से आवाज़ निकले कि सत्य ज्ञान है तो यही है।''

अ.बापदादा 9.3.85

Q. क्या कोई लौकिक दुनिया वाला जज ये निर्णय कर सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव है ?

Q. क्या वह समय आयेगा जब कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारी लौकिक दुनिया में किसी उच्च या उच्चतम न्यायालय में जज बनेगा और उसके सामने गीता ज्ञान के विषय में केस जायेगा और वह निर्णय देगा कि गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं निराकार परमपिता परमात्मा शिव है ?

ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को अपने स्वरूप से प्रत्यक्ष किया, उनके कर्मों से शिवबाबा के कर्म प्रत्यक्ष हुए। भगवानोवाच्य - तुम्हारी स्थिति ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करेगी, जब ज्ञान सिद्ध होगा तो ज्ञान-दाता सिद्ध होगा।

जैसे ब्रह्मा बाबा ने अपनी स्थिति से सत्य गीता ज्ञान और ज्ञान-दाता को हमारे सामने प्रत्यक्ष किया, ऐसे हमको अपनी स्थिति से गीता ज्ञान-दाता को प्रत्यक्ष करना है। गीता ज्ञान-दाता कोई कोर्ट में सिद्ध नहीं होगा। लौकिक दुनिया का जज, जो स्वयं ही सत्य गीता ज्ञान और गीता ज्ञानदाता को नहीं जानते, वे 'गीता ज्ञान-दाता कौन' का निर्णय क्या दे सकते। ये जन-साधारण का कोर्ट है, जहाँ गीता ज्ञान-दाता सिद्ध होगा।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो तुम्हारे स्वरूप से वे अपने अपने स्वरूप में स्थित हो जायेंगे और ज्ञान की सत्यता को अनुभव करेंगे। तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो उनको साक्षात्कार हो जायेगा। तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो तुम्हारे स्वरूप में परमात्मा के स्वरूप को देखेंगे।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो वे तुम्हारी दृष्टि-वृत्ति से सुख-शान्ति का अनुभव करेंगे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमको कराया। Son shows Father, बच्चे प्रत्यक्ष होंगे तो बाप प्रत्यक्ष होगा।

परमपिता परमात्मा ने जो गीता ज्ञान दिया है, उसके अनुरूप हमारे जीवन की धारणायें हो जायें, तब गीता ज्ञान सिद्ध होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा ने कर के दिखाया।

गीता ज्ञान की धारणा ही गीता ज्ञान को और गीता ज्ञान दाता को प्रत्यक्ष करेगी। जब हमारी स्थिति गीता ज्ञान के सार रूप में अर्थात् देह सहित देह से सर्व सम्बन्धों से नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप की होगी, हम निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति में स्थित होंगे तो हमारी वह स्थिति गीता ज्ञान दाता को सिद्ध करेगी।

## याद करने और फॉलो करने में अन्तर

याद करने में जिसको याद करते उसका स्वरूप सामने रहता है परन्तु फॉलो करने में फॉलो करने वाला उस स्वरूप में स्थित होता है, जिसको फॉलो करता है अर्थात् शिवबाबा

के समान मुक्त और ब्रह्मा बाबा के समान मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति में स्थित होता है। बाप समान बनना अर्थात् अपने बिन्दु रूप या फरिश्ता स्वरूप में स्थित होना, किसी को याद नहीं करना। परन्तु इस सत्य को भूलना नहीं है कि याद करना, स्वरूप बनने की प्रथम स्थिति है, प्रथम सीड़ी पर चढ़ने वाला ही अन्तिम सीड़ी तक पहुँच सकता है। प्रथम सीड़ी भी आवश्यक है परन्तु उसे ही अन्तिम सीड़ी समझ लेना अर्थात् बाप समान समझ लेना एक भूल होगी। बाप समान बनना अर्थात् बाप को फॉलो करना अर्थात् उस स्वरूप में स्थित हो जाना।

इस सत्य का भी ज्ञान और निश्चय रहे कि हर आत्मा का सूक्ष्म स्वरूप या फरिश्ता स्वरूप सूक्ष्म वतन में है और हर आत्मा को उसको धारण करने के बाद ही निराकारी स्वरूप में स्थित होकर निराकारी दुनिया में जाना है। इसलिए सबको फरिश्ता बनना है, भले ही वह स्थिति एक सेकेण्ड की हो या एक साल की या एक लम्बे समय की। जैसे ब्रह्मा बाबा की है। जब तक याद करते हैं तब तक वह स्वरूप नहीं बने हैं, स्वरूप में स्थित होने के प्रारम्भिक पुरुषार्थ में हैं परन्तु उसमें स्थित होना अन्तिम स्थिति है, वह पुरुषार्थ नहीं लेकिन पुरुषार्थ का फल है। शिव बाबा तो सदा ही उस स्थिति में है, ब्रह्मा बाबा ने पुरुषार्थ कर उस स्थिति को बनाया है। समय सम्पूर्णता की ओर जा रहा है इसलिए हमको अपने सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित होना है अर्थात् बाप समान बनना अति आवश्यक है।

याद रहे बाबा ने याद करने की बात नहीं कही है, न कोई अभ्यास करने की बात कही है बल्कि बाप समान बनने और फॉलो करने की बात कही है। बाप के चरित्र को भी केवल याद या गायन नहीं करना है लेकिन बाप के कर्तव्यों को फॉलो करना है। फॉलो करना याद करना नहीं है लेकिन उस स्वरूप में स्थित होना है। जैसे शिवबाबा सदा अपने निराकारी स्वरूप में स्थित रहते हैं, अपने स्वरूप या परमधाम को याद नहीं करते। साकार में आते भी उसी स्वरूप में स्थित रहते हैं। अव्यक्त बापदादा भी साकार में आते भी अपने अव्यक्त स्वरूप में रहते हैं, ऐसे फॉलो करना अर्थात् उस स्वरूप में स्थित होना।

साकार ब्रह्मा बाबा ने भी अपने आत्मिक स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप में चलते-फिरते, कर्म करते भी रहकर दिखाया और अनुभव कराया, केवल अपने सम्पूर्ण स्वरूप को याद नहीं किया लेकिन उस स्वरूप को साकार में बनकर दिखाया - ऐसे फॉलो फादर अर्थात् सदा काल के लिए वह स्वरूप बन जाये। याद करना तो केवल बनने का पुरुषार्थ है, बनना नहीं है।

तो बाप समान बनना, फॉलो फादर करना अर्थात् सदा अपने निराकारी स्वरूप या फरिश्ता स्वरूप अर्थात् मुक्त-जीवनमुक्त स्वरूप में स्थित रहें। उस स्वरूप में स्थित होकर

कर्म करें, देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहें, न कि उस स्वरूप को केवल याद करते रहें, उसके लिए पुरुषार्थ करते रहें। उनके स्वरूप को याद कर उनके गुणों का चिन्तन करने से उनकी जीवन में धारणा तो होती है परन्तु उस स्वरूप में स्थित होना अन्तिम स्थिति है।

बाबा ने साकार में अनेक बार मुरलियों में चित्र रखने या चित्र पर मन-बुद्धि को एकाग्र करने की मना की है। कब भी फॉलो करने या बाप समान बनने के लिए चित्र रखने के लिए नहीं कहा है। भले चित्र हमको उनकी याद दिलाता है। इसके लिए बाबा ने कहा है चित्र को देखकर चरित्र की याद आये अर्थात् केवल चित्र की याद नहीं लेकिन चरित्र की याद आये।

## मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति को पाने के सिद्धान्त

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है अर्थात् हर आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति परमात्मा से अपने मूलभूत अधिकार के रूप में अवश्य मिलती है, इसलिए हर आत्मा की मुक्ति-जीवनमुक्ति अनुभव करने की मूलभूत इच्छा है और वह उसके लिए सतत प्रयत्नशील रहती है। इस संगमयुगी जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति को पाने या अनुभव करने के दो सिद्धान्त हैं -

**एक है** - शिवबाबा के ऊपर अटल श्रद्धा-भावना के कारण उनके हर शब्द पर विश्वास रखकर बिना कोई संकल्प-विकल्प किये दृढ़ता से आत्मिक स्थिति के अभ्यास के आधार पर अपने मूल स्वरूप में स्थित होने के कारण मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव करना, उसके सुख में रहना और बाद में ज्ञान के राज़ों को समझते जाना तथा समझकर उस अनुभव को बढ़ाते हुए स्थाई बनाना। यज्ञ के आदि के पुरुषार्थियों की प्राय: यही स्थिति रही। वे सब बाबा के प्यार में आकर, साक्षात्कार आदि के आधार पर ज्ञान में आ गये, बाबा के प्यार में खो गये और बाद में ज्ञान के गुह्य राज़ स्पष्ट होते गये तो उनको समझकर उनमें पक्के होते गये।

**दूसरा है** - ज्ञान के राज़ों को अच्छी रीति समझकर, उनमें निश्चय करके बाबा को पहचानना और अपने मूल स्वरूप में स्थित होने का दृढ़ता से अभ्यास करना। वर्तमान के पुरुषार्थियों की प्राय: स्थिति यही है क्योंकि ज्ञान में आते ही अधिकतर आत्माओं की बुद्धि में ज्ञान के मुख्य-मुख्य प्वाइन्ट्स और राज़ आ जाते हैं और उसके आधार पर वे बाबा को पहचानते हैं, निश्चय करते हैं, फिर अपनी मूल स्थिति में स्थित होने का फिर पुरुषार्थ करते हैं और उसको चिरस्थाई बनाते हैं।

शिवबाबा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता कहा जाता है क्योंकि एक बार शिवबाबा सबको अपनी मूल अवस्था का अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अर्थात् सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव अवश्य कराता है, जिसके कारण परमात्मा को सर्वात्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता कहा जाता है। उस अनुभव के बाद उस अवस्था को चिर स्थाई बनाने के लिए हरेक पुरुषार्थी को अपना पुरुषार्थ करना पड़ता है। अभी भी हम देखते हैं कि अव्यक्त बापदादा मुरली चलाते-चलाते मुरली के बीच में ही डेड साइलेन्स या मुक्ति की स्थिति का अनुभव कराते हैं और मुरली चलाते-चलाते हंसाते-बहलाते जीवनमुक्ति का अनुभव कराते हैं। सेन्टरों पर या अपने-अपने स्थानों पर भी पुरुषार्थियों को ऐसे अनुभव बाबा कराते रहते हैं।

दोनों ही प्रकार के पुरुषार्थियों का अपना-अपना अनुभव है, उसका महत्व है परन्तु हमको इस स्थिति का अनुभव करने के लिए जहाँ खड़े हैं, वहीं अनुभव करना है और उस स्थिति को चिर स्थाई बनाने का पुरुषार्थ आरम्भ कर देना है, तब ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। 'अब नहीं तो कब नहीं' का सिद्धान्त ही सफलता का राज़ है क्योंकि बाबा ने कहा है कि सब अचानक होना है। वैसे भी देखते हैं कि मृत्यु का कोई समय निश्चित नहीं है, किसी भी समय हो सकती है तो अन्त भला तो भला है, उसके लिए हमको एवर-रेडी रहना अति आवश्यक है अर्थात् सदा मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति में रहना है।

* बाबा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव तो सबको कराता है परन्तु सदा काल उस अनुभव में रहने के लिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का अपना काम है। जो जितना अथक पुरुषार्थ करके उस अनुभव को चिर स्थाई बना लेता है, उतना ही अपने इस जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करता है और भविष्य जीवन के लिए जीवनमुक्ति का खाता संचित करता है। ब्रह्मा बाबा ने आदि से ही दृढ़ पुरुषार्थ करके उस अनुभव को स्थाई बनाया, जिसके फल स्वरूप उन्होंने सम्पूर्ण पद पाया। आज भी ब्रह्मा बाबा जीवनमुक्ति के सर्वोच्च शिखर पर स्थित हैं अर्थात् उसके अनुभव में हैं।

## संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का महत्व

संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति सर्व आत्माओं को परमपिता परमात्मा का वर्सा है, मुक्ति-जीवनमुक्ति आत्मा की आदि-अनादि स्थिति है और आत्मा की मूलभूत प्यास है। सभी आत्माओं को दुख-अशान्ति के समय मुक्ति-जीवनमुक्ति की खींच होती है और वे उसके लिए परमात्मा को पुकारती हैं। संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति का क्या महत्व है,

वर्तमान में मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का भविष्य की मुक्ति-जीवनमुक्ति से क्या सम्बन्ध है - इस सत्य का ज्ञान और अनुभव जब हमको होगा तब ही हम ऐसा पुरुषार्थ कर सकेंगे, जिससे हमको अभी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव हो सके।

''क्यों बापदादा बार-बार याद दिलाता है, कारण ? समय को देख रहे हो, ब्राह्मण आत्मायें स्वयं को भी देख रही हैं। मन जवान होता जाता है, तन बुजुर्ग होता जाता है। समय और आत्माओं की पुकार अच्छी तरह से सुनने में आ रही है ?''

अ.बापदादा 25.11.2000

ज्ञान मार्ग में समझ कर जो स्थिति बनाते हैं, वह स्थाई होती है और हठ से जो स्थिति बनाते हैं, उसमें अनुभव तो होता है लेकिन वह अस्थाई होती है। अनेक भक्तों और हठयोगियों ने भी हठ से ऐसी स्थिति का अनुभव किया फिर भी समय की गति के साथ उनकी वह स्थिति लोप हो गयी और वे नीचे गिरते गये। लक्ष्मी-नारायण जीवनमुक्ति की सर्वोच्च स्थिति में होते हुए भी नीचे आ गये अर्थात् समयान्तर में तमोप्रधान बन गये। इसलिए हर बात की वास्तविकता को समझकर उसे स्वरूप में लाना है।

* संगमयुग महान है, उसकी प्राप्तियाँ महान हैं, संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव महान है। जिसको इन प्राप्तियों का ज्ञान हो जाता है, अनुभव हो जाता है, उसको ये जीवन अवश्य ही परम सुखमय अनुभव होगा। वह कभी भी इस जीवन से ऊब नहीं सकता। वह सदा अपने भाग्य को देखकर सुख का अनुभव करता है अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में रहता है, जिससे उसका जीवन दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है।

ब्रह्मा बाप समान अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाओ तो अभी ही सुर-दुर्लभ मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव करोगे और आपकी स्थिति लाइट हाउस बनकर सर्व आत्माओं को भी इस परम सुख का अनुभव करायेगी, जो तुम्हारे भविष्य सुख का आधार है। इस श्रेष्ठ पुरुषार्थ में 'आम के आम गुठलियों के दाम' वाली कहावत चरितार्थ होती है अर्थात उससे दोनों ही लाभ होंगे। ये अनुभव ही इस जीवन की सच्ची प्राप्ति है और जीवन की सच्ची सफलता है और इस अनुभूति में सदा रहना ब्राह्मण जीवन का यथार्थ कर्तव्य है।

करावनहार करा रहा है, मैं निमित्त करनहार बन कर रहे हैं - यह स्मृति रहने से सहज देह-अभिमान से मुक्त बन जाते हैं और जीवनमुक्ति का सुख अनुभव करते हैं। भविष्य में जीवनमुक्ति तो प्राप्त होनी ही है लेकिन अब संगमयुग पर जीवनमुक्ति का अलौकिक आनन्द और ही अलौकिक है। भविष्य सतयुग की जीवनमुक्ति का आधार संगमयुग की जीवनमुक्ति है क्योंकि यहाँ के संस्कार ही वहाँ के जन्म का आधार बनते हैं।

''सिर्फ एक बात करो - अपने नैनों में बिन्दी को समा दो, बस। एक बिन्दी से तो देखते हो और दूसरी बिन्दी भी समा दो। तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जैसे आत्मा, आत्मा को देख रही है। आत्मा, आत्मा से बोल रही है। आत्मिक वृत्ति और आत्मिक दृष्टि बनाओ। समझा - क्या करना है?''

अ.बापदादा 17.10.03

**75 परसेन्ट मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थित रहने का मापदण्ड क्या?**

प्रश्न - बाबा ने 6 मास में कम से कम 75 प्रतिशत तक मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति को बनाने के लिए कहा है तो 6 मास में 75 प्रतिशत स्थिति का अर्थ क्या है? उसका मापदण्ड क्या है? उसके लिए पुरुषार्थ का स्वरूप क्या है? क्या कोई सीमा रेखा ऐसी है, जिससे हम समझ सकें कि अब हमारी सम्पूर्णता की स्थिति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति की 75 प्रतिशत स्थिति है?

इसके दो मापदण्ड हैं -

एक समय के आधार पर - अनुभव ऐसा कहता है या तो मुक्त स्थिति का अनुभव होगा या बन्धन का अनुभव होगा। अब जो 75 प्रतिशत की बात है, उससे ऐसा समझ में आता है कि अभी हमको जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कुछ सेकेण्ड, कुछ मिनटों, घण्टों का होता है, उसकी सीमा को बढ़ाते हुए उसको दिन-रात अर्थात् 24 घण्टे में कम से कम 18 घण्टे तक अनुभव करें तो कहा जायेगा कि अभी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव 75 प्रतिशत तक है या अवस्था 75 प्रतिशत तक हो गई है। ये मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव तो अभी ही होता है और हो सकता है, उसके लिए 6 मास की प्रतीक्षा की बात नहीं है, प्रतीक्षा है उस अनुभव को बढ़ाने की और 75 प्रतिशत तक ले जाने की।

दूसरा कलाओं के आधार पर - जैसे चन्द्रमा की कलायें बढ़ती हैं और बढ़ते-बढ़ते सम्पूर्ण बन जाता है ऐसे ही अपनी अवस्था को सम्पूर्णता के शिखर तक ले जाना है। परन्तु इसका मापदण्ड क्या होगा और कैसे हम समझेंगे कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं, वह भी अनुमान ही करेंगे। हमारे जीवन से जितना व्यर्थ और नेगेटिव खत्म होता जाता है और समर्थी आती जाती है, उससे समझा जा सकता है कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं।

''बाबा का रात्रि को ख्याल चला कि मनुष्य 21 जन्म कहते हैं, गायन भी करते हैं। अभी यह ईश्वरीय जन्म एक अलग है। आठ जन्म सतयुग में, 12 जन्म त्रेता में, 21 जन्म द्वापर में, 42 जन्म कलियुग में। यह तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सबसे ऊंच जन्म है, जो एडॉप्टेड जन्म है। तुम ब्राह्मणों का ही यह सौभाग्यशाली जन्म है।''

सा.बाबा 11.11.03 रिवा.

# मुक्ति, जीवनमुक्ति और जीवन बन्ध का सम्बन्ध

मुक्ति, जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है अर्थात् एक का अनुभव दूसरे के अनुभव का आधार है। जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए जीवनबन्ध का अनुभव होना अति आवश्क है अर्थात् जिनको जीवनबन्ध का अनुभव है, वे ही जीवनमुक्ति का भी अनुभव करेंगे परन्तु ये आवश्यक नहीं कि वह अनुभव इस एक जन्म में ही हो। आत्मा अविनाशी है, उसमें संस्कार और स्मृतियां भी अविनाशी रहती हैं। आत्मा जो एक बार अनुभव करती है, वह सारे कल्प सूक्ष्म स्मृति में अर्थात् बीजरूप में आत्मा में संचित रहता है और समय आने पर उसकी स्मृति जाग्रत हो जाती है। जैसे संगमयुग पर आत्मा परमात्मा के सानिध्य का, उनके प्यार का अनुभव करती है, वह दुख-अशान्ति के समय आत्मा को याद आता है और आत्मा उसके निवारण के लिए उनको याद करती है। आत्मायें जब इस धरा पर पहले पार्ट बजाने आती हैं, तब पहले-पहले जीवनमुक्ति का अनुभव करती हैं और जब जीवनबन्ध में आती हैं अर्थात् दुख-अशान्ति में आती हैं तो उनको पहले अनुभव की हुई जीवनमुक्ति को याद आती हैं और उसके लिए आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं, उसके लिए भक्ति आदि करती हैं। ऐसे ही जब परमात्मा से आत्मायें मिलती हैं, उनसे जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है अर्थात् अनुभूति होती है, तो आत्माओं को उसकी अनुभूति जीवनबन्ध की अनुभूति के आधार पर ही होती है अर्थात् जिन्होंने जितना जीवनबन्ध का अनुभव किया होगा, उतना ही जीवनमुक्ति का अनुभव होगा। परमात्मा भी कहते हैं - जिन आत्माओं ने बहुत भक्ति की होगी, उनको ही ये ज्ञान अच्छा लगेगा, उनको ही यहाँ सुख भासेगा।

जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए मुक्ति का अनुभव होना भी अति आवश्यक है अर्थात् पहले मुक्ति का अनुभ्व, फिर जीवनमुक्ति का अनुभव होता है। पुरुषार्थ में भी जो मुक्ति का अर्थात् निराकार स्थिति का अर्थात् बीजरूप स्थिति का अर्थात् निर्संकल्प स्थिति का जितना सफल अभ्यास और अनुभव करता है, उसको जीवनमुक्ति का अनुभव भी उतना ही श्रेष्ठ और सहज होता है। हठयोग में भी पहले निर्संकल्प समाधि के सिद्ध होने की बात कही गई है, फिर निर्विकल्प समाधि की सिद्धि सिद्ध होने की बात कही गई है अर्थात् जिनकी निर्संकल्प समाधि सिद्ध होगी, उनकी ही निर्विकल्प समाधि सिद्ध होगी। सृष्टि-चक्र को भी देखें तो पहले आत्मा मुक्ति में जाती है, फिर जीवनमुक्ति में आती है और जीवनमुक्ति के बाद जीवनबन्ध में आती है। जीवनबन्ध के बाद परमात्मा पिता उसको मुक्ति में ले जाते हैं।

इस प्रकार हम विचार करें तो देखेंगे कि मुक्ति, जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध का

परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है अर्थात् एक-दूसरे पर आधारित हैं अर्थात् एक-दूसरे का आधार हैं। ''जब बाप अभी मिला है तो वर्सा भी अभी मिला है। ... प्रैक्टिकल जो वर्सा है, वह अभी प्राप्त होता है। जीवन-बन्ध के साथ ही जीवनमुक्त का अनुभव होता है। वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं, वहाँ तो सिर्फ उसकी प्रारब्ध में होंगे।''

अ.बापदादा 11.7.72

''मुक्ति की अवस्था का अगर अनुभव करते हो तो मुक्त होने के बाद जीवन-मुक्ति का अनुभव ऑटोमेटिकली हो जाता है। ... मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अभी करना है न कि भविष्य में। ... वह है श्रेष्ठ कर्मों की प्रारब्ध लेकिन श्रेष्ठ कर्म तो अभी होते हैं ना, तो प्राप्ति का भी अनुभव अभी होगा ना।''

अ.बापदादा 11.7.72

## मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति में स्थित आत्मा की परख

किसी आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव हो रहा है अर्थात् कोई आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में है, उसको कैसे जान सकते हैं, उसके लिए भी बाबा ने अनेक बातें कही हैं अर्थात् बताई है, जिससे हम समझ सकते हैं कि कोई आत्मा कितना मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में है। उन बातों से कुछ का यहाँ वर्णन कर रहे हैं:-

उस आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का अर्थात् परमशान्ति, परमसुख की अनुभूति होगी।

उसको ये ब्राह्मण जीवन परमानन्दमय अर्थात् सफल हुआ अनुभव होगा।

वह राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त स्थिति का अनुभव करेगा।

उसको ये जीवन सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न अनुभव होगी।

वह इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखेगा।

उसमें कृत्य का संकल्प स्वत: उत्पन्न होगा, इसलिए उसके संकल्प बहुत कम होंगे।

उसमें अपने-पराये, शत्रु-मित्र की भावना नहीं होगी अर्थात् उसको सब अपने अनुभव होंगे और सब उसको अपना अनुभव करेंगे।

उस आत्मा को स्वयं भी मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् परमशान्ति-परमसुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी और अन्य भी उसके सानिध्य से उसका अनुभव करेंगे अर्थात् अन्य आत्मायें भी उसके सानिध्य से मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगी। जैसे ब्रह्मा बाबा के सानिध्य से होती थी।

वह बाप समान मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, सुख-दुख ... सब से परे होगा, दोंनो में उसकी स्थिति समान अर्थात् एकरस होगी।

वह सदा निर्भय होगा, मृत्यु का भय भी उसको नहीं होगा। जीवन और मृत्यु उसके लिए समान सुखदायी होंगे।

ये विश्व-नाटक परम कल्याणमय है - इस सत्य को जानकर वह परमसुख का अनुभव करेगा। विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखेगा और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायेगा।

मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति के निकट पहुँचने वाली आत्मा स्वयं को दैहिक, दैविक, भौतिक सर्व प्रकार के बन्धनों से मुक्त अनुभव करेगी। जो इन सबसे मुक्त होगा वही इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर जीवनमुक्ति के सच्चे सुख का अनुभव कर सकेगा। कर्म करते भी ऐसी अवस्था में रहें, उसका अनुभव करें।

जीवनमुक्त आत्मा की स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की होती है अर्थात् उसको सर्व प्राप्तियाँ समय पर स्वत: प्राप्त होती हैं, उसको उसके लिए इच्छा करने की भी आवश्यकता नहीं होती है। उसको परमपिता परमात्मा ने जो दिया है, उसे ही देखेगा और उसका लाभ उठायेगा और सदा खुशी का अनुभव करेगा। दूसरों के पास क्या है वह उसको देखते हुए भी नहीं देखेगा क्योंकि जो अपनी प्राप्तियों के सुख में तल्लीन होता है, उसके पास दूसरे की प्राप्तियों को देखने का न समय होता है और न ही उसको दूसरों की प्राप्तियों को देखने की इच्छा होती है। वह इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में होता है। जो अपनी प्राप्तियों को भूला हुआ होता है, वही दूसरों की प्राप्तियों की ओर देखता है और उनकी ओर लालायित होता है। जो अपनी प्राप्तियों को भूल दूसरों की प्राप्तियों को देखता है वह सदा दुखी रहता है क्योंकि वह अपनी प्राप्तियों का भी सुख नहीं ले पाता और दूसरों की प्राप्ति के सुख मिलने का तो प्रश्न ही नहीं। ये वैरायटी विश्व-नाटक है, सर्वात्माओं को वैरायटी प्राप्तियाँ हैं। इसमें सबको एक जैसी प्राप्तियाँ हो ही नहीं सकती हैं।

मुक्ति के निकट पहुँचने वाली आत्मा को परमधाम घर की तीव्र आकर्षण होती है और जीवन-मुक्ति के निकट आत्मा को स्वर्ग की आकर्षण होती है। वह इस दुनिया से उपराम होता है।

''यह आज और कल का खेल है।... जो ज्ञानी तू आत्मा हैं, उनके लिए आने वाला कल इतना ही स्पष्ट होगा, जितना आज स्पष्ट है।''

अ.बापदादा 31.12.2000

''योग की रिजल्ट है - योगयुक्त, युक्तियुक्त बोल और चलन।... योगी अर्थात् योगी जीवन

का जीवन में प्रभाव।'' अ.बापदादा 31.12.2000

* देह से न्यारा होने का ऐसा अभ्यास हो कि जीवन की सब इच्छायें-आशायें-आकांक्षायें धूमिल हो जायें तो संकल्प करते ही एक सेकेण्ड में इस देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने अनन्त में खोकर परमशान्ति और परमानन्द का अनुभव करेंगे अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगे। यही जीवन की सच्ची सफलता है और वर्तमान और भविष्य सुखी जीवन का आधार है।

* इस ब्राह्मण जीवन में सर्वशक्तिवान, ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा के साथ विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, बाप के इस ज्ञान-यज्ञ में रहते, ईश्वरीय परिवार में रहते दुखी होना भी महापाप है। ये जीवन तो परम सुखमय है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुर-दुर्लभ सुख के अनुभव के लिए है। जो इस सत्य को समझ लेता है, वही मुक्ति-जीवनमुक्ति इस सच्चे सुख को अनुभव करता है।

''कर्मातीत अर्थात्

1- लौकिक और अलौकिक कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त,

2- पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब और वर्तमान जीवन के कमजोर स्वभाव-संस्कार... इस बन्धन से भी मुक्त,

3- पुरानी दुनिया में इस पुराने अन्तिम शरीर में किसी प्रकार की व्याधि, जो श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये, उससे भी मुक्त।''

अ.बापदादा 18.1.87

## आदि सनातन देवी-देवता धर्म की जीवनमुक्ति और अन्य धर्मों की जीवनमुक्ति में अन्तर

आदि सनातन देवी-देवता धर्म की जीवनमुक्ति और अन्य धर्मों की जीवनमुक्ति में महान अन्तर है, जिसका आभास मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता परमात्मा ने हम सभी को कराया है। परमात्मा पिता ने जीवनमुक्ति का ज्ञान भी दिया है तो उसका अनुभव भी कराया है, साथ ही हमको इस सत्य का अनुभव भी कराया है कि तुम आत्मायें कितनी महान हो, तुम्हारी जीवनमुक्ति कितनी महान है। अपनी महानता को जानो और उसका अनुभव करो तथा उसके अनुरूप कर्म करके इस जीवन को सफल करो।

''आप डायरेक्ट परमात्म-वंशी आत्मायें हो। द्वापर से भक्ति भी करते हो तो बिना पहचान के

भी पहले शिव बाप की ही भक्ति करते हो। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर सूक्ष्म देवताओं की पूजा पीछे शुरू होती है। ... डायरेक्ट रचना को अनेक जन्मों के लिए जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है।''

अ.बापदादा 8.4.92

''नशे में भी अन्तर है तो प्राप्ति में भी अन्तर है। ... डायरेक्ट रचना को अनेक जन्मों के लिए जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। ... आपकी जीवनमुक्ति आधा कल्प चलती है परन्तु अन्य आत्माओं की जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध आधा कल्प के अन्दर ही मिलता है।''

अ.बापदादा 8.4.92

''आपकी जीवनमुक्ति अर्थात् गोल्डन-सिलवर एज, चक्र के भी गोल्डन-सिलवर समय पर प्राप्त होती है। आपकी गोल्डन एज तो युग भी गोल्डन एज का और प्रकृति भी गोल्डन एज में है।... तो उन्होंकी गोल्डन एज और आपकी गोल्डन एज में कितना अन्तर हुआ।... इतना नशा है कि हम डायरेक्ट परमात्मा की रचना हैं।''

अ.बापदादा 8.4.92

## मुक्ति-जीवनमुक्ति और भारत भूमि

शिवबाबा सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है। सारी दुनिया को बाप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है परन्तु भारत को विशेष जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है क्योंकि जब भारत जीवनमुक्त होता है तो यहाँ की हर आत्मा जीवनमुक्त होती है और यह सृष्टि स्वर्ग कहलाती है। भले बाद में आने वाली आत्मायें भी जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती हैं परन्तु उस समय सारी दुनिया जीवनमुक्त नहीं होती है। द्वापर से जीवनमुक्त और जीवनबन्ध स्थिति साथ-साथ चलती है। भारत जीवनमुक्त भी बनता है तो भारत ही जीवनबन्ध में भी जाता है।

भारत में जीवनमुक्त देवी-देवताओं के मन्दिर बनाकर पूजा होती है। ऐसे मन्दिर बनाकर किसी देश में किसी की भी पूजा नहीं होती है।

''जितनी भारतवासियों की चढ़ती कला और उतरती कला होती है, उतना और कोई की भी नहीं होती है। भारत ही श्रेष्ठाचारी और भ्रष्टाचारी बनता है। भारत ही निर्विकारी और भारत ही विकारी बनता है।... अभी भारतवासियों की चढ़ती कला है। मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे।''

सा.बाबा 4.5.07 रिवा.

''भारत का धर्म-शास्त्र है ही एक गीता। ... गीता की महिमा तुम एक्यूरेट जानते हो। जिस गीता से बाप आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ... गीता का भगवान कौन था, उनको न जानने

के कारण झूठा कसम उठाते हैं। अब उनको करेक्ट करो।''

सा.बाबा 22.5.07 रिवा.

''भारतवासी जीवनमुक्त थे, बाकी सभी आत्मायें निर्वाणधाम में बाप के पास रहेंगी। ... स्वर्ग में जीवनमुक्त सभी को कहेंगे। बाकी उसमें जिन्होंने जितनी मेहनत की, उतना पद पाया।... बाप यह नॉलेज देते हैं, और कोई भी इस सृष्टि-चक्र की नॉलेज दे न सके।''

सा.बाबा 19.5.07 रिवा.

''तुम प्रतिज्ञा करो - हम विकार में कभी नहीं जायेंगे। पवित्रता की मदद करो तो मैं भारत को पवित्र बनायेंगे। हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। याद नहीं आता है - कल्प-कल्प हम यही धन्धा करते हैं, भारत को स्वर्ग बनाते हैं। जो स्वर्ग बनाने में मेहनत करेंगे, वे ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 23.5.07 रिवा.

''अभी भारतवासी दुर्भाग्यशाली हैं, भारतवासी ही सौभाग्यशाली थे, कितने साहूकार थे।... बाप पावन बनने का उपाय बतलाते हैं, जिससे तुम सब पापों से मुक्त हो पुण्यात्मा बन जायेंगे। पुण्यात्माओं की दुनिया थी, सो फिर से स्थापन हो रही है।''

सा.बाबा 16.6.07 रिवा.

## विविधि प्रश्न

Q. अमरत्व क्या है और उसकी अनुभूति क्या है? मृत्यु क्या है और मृत्यु-विजय क्या है? मृत्य-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त होने का पुरुषार्थ क्या है?

आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है और देह विनाशी है। आत्मा परमधाम से आकर यहाँ देह रूपी वस्त्र धारण कर पार्ट बजाती है और पार्ट बजाते हुए कर्मो और पार्ट के अनुसार सुख-दुख को अनुभव करती है। अज्ञानता के वश जब आत्मा अपने मूल स्वरूप को भूलकर देहाभिमान के वश हो जाती है तब वह मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय के दुख को महसूस करती है और उससे मुक्त होने का पुरुषार्थ करती है। वास्तविकता को देखें तो परमधाम में जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में रहती है तब उसको अमरत्व की कोई महसूसता नहीं है। मृत्यु-अमरत्व के दुख या सुख की महसूसता का प्रश्न तो जब यहाँ देह में आती है, तब होता है। अभी जब इस सत्य को जानकर और परमात्मा से मिले यथार्थ ज्ञान को धारण कर इस देह और देह की दुनियां को भूलकर आत्मा जब अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है, देखते हुए भी न देखने की, सुनते हुए भी न सुनने की स्थिति होती है, तब आत्मा को जो सुख की महसूसता होती है, जिसे परमानन्द कहा जाता है, वही अमरत्व है और परम-सुख है। वह परमानन्दमय स्थिति परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति के अनुभव से पद्मापदम गुणा श्रेष्ठ है। वह स्थिति ही मृत्यु-दुख और भृत्यु-भय से मुक्त परमानन्दमय स्थिति है। ये स्थिति ही यथार्थ अमरत्व की स्थिति है और मृत्यु-विजय की स्थिति है, जिसको अनुभव करने का समय ये संगमयुग ही है। सतयुग में भल आत्मा मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त जीवनमुक्त होगी परन्तु वहाँ अमरत्व का और मृत्यु-विजय का नाम नहीं होगा।

Q. स्वेच्छा से देह त्याग की प्रक्रिया क्या है?

सेकेण्ड में देह में आने और देह से न्यारे होने का सतत अभ्यास हो। तब ही अन्त समय में मृत्यु-दुख से मुक्त होकर स्वेच्छा से देह का त्याग कर सकेंगे और अभी मृत्यु-भय से मुक्त रहेंगे।

जैसे अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी के तन में आते हैं, मुरली चलाते हैं, बच्चों से मिलते हैं और चले जाते हैं। कर्तव्य करते हैं परन्तु किससे मोह नहीं है। विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनकर साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना ही स्वेच्छा से देह त्याग के लिए मूलभूत आधार है। इस स्थिति में स्थित रहने का लम्बे समय से और गहन रूप का अभ्यास हो, तब ही हम समय पर स्वेच्छा से देह

त्याग कर सकते हैं। अभी के अभ्यास के फलस्वरूप ही सतयुग-त्रेतायुग में आत्मायें स्वेच्छा से देह का त्याग करती हैं।मृत्यु-दुख महान दुख है, देहाभिमान मृत्यु-दुख का मूल कारण है। आत्मिक स्वरूप के दृढ़ अभ्यास से देहाभिमान को समाप्त कर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। जीवन एक खेल है और मृत्य-जन्म इसमें एक वस्त्र बदलना है। इस सत्य को जानकर अभीष्ठ पुरुषार्थ करके इस दुख से मुक्त होना है। अव्यक्त बापदादा की प्रवेशता इस प्रक्रिया का सर्वोत्तम उदाहरण है। फालो फादर।

''अमर लोक में कैसे अमर रहते हैं - यह भी वण्डर है ना। वहाँ आयु भी बड़ी रहती है और समय पर आत्मा आपेही शरीर बदली कर देती है। जैसे कपड़ा चेन्ज किया जाता है।''

सा.बाबा 9.4.68 रात्रि क्लास

Q. कर्मातीत स्थिति क्या है और कैसी है ?

वास्तविक कर्मातीत स्थिति तो परमधाम में ही है परन्तु जीवन में रहते कर्मातीत स्थिति का अनुभव भी अपना विशेष है। जब आत्मा की आत्मिक स्थिति इतनी प्रगाढ़ हो जाये कि कर्म हो परनतु कर्म करने का आभास न हो, इन्द्रिय सुखों की आकर्षण समाप्त हो जाये और परमधाम घर की आकर्षण बलवती हो जाये तब ही कर्मातीत स्थिति का अनुभव होगा, यही जीवन में रहते मुक्ति का अनुभव है।

मानव जीवन का लक्ष्य क्या है ?

कर्मातीत स्थिति और विकर्माजीत स्थिति में क्या अन्तर है ?

Q परमपिता परमात्मा का वर्सा क्या है और आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य क्या है ?

पवित्रता, सुख-शान्ति, प्रेम, आनन्द, मुक्ति-जीवनमुक्ति सर्व आत्माओं का अभीष्ट लक्ष्य है, जो सर्व आत्माओं को परमात्मा का वर्सा है और वह देश-काल के अनुसार सर्वात्माओं को मिलता है। परमपिता परमात्मा द्वारा यह वर्सा संगमयुग पर ही प्राप्त होता है। स्थूल साधन-सम्पत्ति, पद तो निमित्त मात्र हैं, जो इन संगमयुगी प्राप्तियों की परछाई मात्र हैं।

''जो पूरा बलि चढ़ते हैं, उनको 21 जन्मों का वर्सा मिलता है। पूरा बलि चढ़ने का मतलब है- बुद्धि उसकी तरफ ही रहे। ... गृहस्थ व्यवहार में रहते, यह सब कुछ बाप का समझो, कदम-कदम पर बाप से राय लेते रहो।''

सा.बाबा 14.4.07 रिवा.

# जीवन की पहेली का हल

मुक्ति-जीवनमुक्ति को प्रापत करना हर आत्मा का लक्ष्य है, इस पहेली का हल ही जीवन की पहेली का हल है। इसको पाने के इस सत्य को समझना अति आवश्यक है कि इस जगत में न कोई अपना है और न कोई पराया, न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है, न कोई कुछ दे सकता है और न कोई कुछ ले सकता है, न किसी ने कुछ दिया है और न किसी ने हमारा कुछ लिया है, दाता एक बाप है, उसने जो कुछ दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। बाबा ने कहा है - बच्चे, तुम देह नहीं आत्मा हो और परमधाम के रहने वाले हो। संसार एक नाटक है, जहाँ आकर तुम पार्ट बजा रहे हो। अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ परमानन्द का अनुभव करो, साक्षी होकर विश्व नाटक को देखते और पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। इस जगत में जो हुआ, वह बच नहीं सकता और जो नहीं हुआ है, वह हो नहीं सकता। परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि कर्म-फल-कर्म पर आधारित ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और परम कल्याणकारी है।इस विश्व-नाटक में हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और उसका फल पा रही है। आत्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है।

पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति और आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ पर सर्व प्राप्तियां होगी, सर्व सुख होंगे,

इच्छामात्रम् अविद्या होगी। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होगी, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होगी। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होगा। शुभ में अभिरुचि, अशुभ में अरुचि स्वत: होगी, समय पर कृत्य का संकल्प आपही उत्पन्न होगा, इसलिए सोचने की भी आवश्यकता नहीं। सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना शुभ-कामना होगी, परिणाम स्वरूप दूसरों की भी हमारे प्रति शुभ-भावना शुभ-कामना अवश्य ही होगी, इसलिए जीवन सदा निर्भय होगा।

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया, न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है, न कोई कुछ दे सकता है और न कोई कुछ ले सकता है, न किसी ने कुछ दिया है और न किसी ने हमारा कुछ लिया है। दाता एक बाप है, उसने जो कुछ दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। बाबा ने इस सत्य का ज्ञान दिया कि ये विश्व एक नाटक है, जिसमें हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रहीं है, अपने अनन्त स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा करते हुए परमानन्द का

अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। परम कल्याणमय ये विश्व-नाटक कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है, इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं। निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

इस सत्य को जानने, अनुभव करने वाला और निरन्तर अपने आत्मिक स्वरूप का अभ्यास वाला ही सेकेण्ड के अन्तिम पेपर में पास होगा।

# साराँश

''सब जाग जायें और मुख से या मन से कहें 'अहो प्रभु', कहें और मुक्ति का वर्सा लेवें, तब समाप्ति हो। जब जागेंगे तब तो मुक्ति का वर्सा लेंगे।''

अ.बापदादा 31.3.88

परमात्मा सदा मुक्त है और श्रीकृष्ण की आत्मा जीवनमुक्त है। श्रीकृष्ण ही अपने अन्तिम जन्म में ब्रह्मा बनते हैं, इसलिए ब्रह्मा बाबा की आत्मा को जीवनमुक्त और जीवनबन्ध दोंनों का पूरा अनुभव है अर्थात् उनकी आत्मा में जीवनमुक्त और जीवनबन्ध दोनों के अनुभव के संस्कार हैं। परमात्मा ने ब्रह्मा तन में प्रवेश किया है, इसलिए ब्रह्मा बाबा का जीवन दोनों अर्थात् परमात्मा और श्रीकृष्ण की आत्मा के गुणों-संस्कारों का संगम है। इसलिए परमात्मा और ब्रह्माबाबा के गुणों और विशेषताओं का जितना अच्छा अनुभव होगा, उनके गुण-संस्कारों और विशेषताओं को धारण करेंगे, उतना ही अच्छा मुक्ति और जीवनमुक्ति का अनुभव इस जीवन में होगा। इसलिए मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के लिए परमात्मा और ब्रह्मा बाबा दोनों के गुणों, कर्तव्यों और विशेषताओं का ज्ञान परमावश्यक है।

सदा मुक्त निराकार शिवबाबा की ब्रह्मा तन में प्रवेशता है, वह मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा आत्माओं को ब्रह्मा द्वारा दे रहे हैं, इसलिए शिवबाबा के सभी गुण-संस्कार ब्रह्मा बाबा के जीवन द्वारा अवश्य प्रत्यक्ष होंगे। ब्रह्मा बाबा पुरुषार्थ कर श्रीकृष्ण बनेंगे। श्रीकृष्ण सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण है, तो वे सभी गुण और कलायें भी ब्रह्मा बाबा के जीवन में अभी ही होंगे। इस सत्य को हम अनुभव करें तो ब्रह्मा बाबा का जीवन निराकार परमात्मा और साकार श्रीकृष्ण दोनों के जीवन के बीच की कड़ी है। इसलिए उनका जीवन मुक्ति-जीवनमुक्ति का सर्वश्रेष्ठ दर्पण है। जो आत्मायें उनको फालो करती हैं, उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज ही अनुभव होता है और उनका वह पुरुषार्थ उनको सहज ही सम्पूर्णता और सम्पन्नता के उन्नत शिखर पर पहुँचा देता है।

शिवबाबा के ज्ञान की एक प्वाइन्ट की यथार्थ धारणा, शिवबाबा का एक कदम अर्थात् एक गुण-कर्तव्य का यथार्थ रीति अनुसरण और ब्रह्मा बाबा के एक कदम अर्थात् एक गुण-कर्तव्य का यथार्थ रीति अनुसरण भी आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करा सकता है।

* परमपिता परमात्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है परन्तु वह मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देता है, ब्रह्मा बाबा के द्वारा। जो ब्रह्मा बाबा के गुण, कर्तव्य, नियम-संयम, स्वभाव-संस्कार को यथार्थ रीति जानते हैं, वे ही उसका अनुसरण करके परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त कर सकते हैं।

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा की मूलभूत प्यास है, जिसके लिए आत्मा सतत प्रयत्नशील रहती है परन्तु उसका यथार्थ अनुभव जब संगमयुग पर परमात्मा आकर सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं और मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का रास्ता दिखाते हैं तब ही अनुभव करते हैं।

योग शास्त्र पातन्जलि योग-दर्शन में भी निर्विकल्प समाधि अर्थात् जीवनमुक्ति को निर्संकल्प समाधि अर्थात् मुक्ति से श्रेष्ठ माना गया है। निर्संकल्प समाधि की सिद्धि के बाद ही निर्विकल्प समाधि सिद्ध होती है। शिवबाबा की श्रीमत अनुसार पुरुषार्थ करने से अभी हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों का अनुभव साथ-साथ होता है।

* आज और अब तक ड्रामा अनुसार जो हुआ वह अच्छा हुआ। नहीं हुआ तो उसके लिए भी पश्चाताप में समय बरबाद नहीं करना है और हुआ तो उसके अहंकार में आकर पुरुषार्थ को नहीं छोड़ देना है। अभी पावन बनने के लिए पुरुषार्थ की बहुत आवश्यकता है। इस सत्य को परख कर ज्ञान और योग को और प्रशस्त करके बाप समान बनना है अर्थात् बाप समान मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना है।

* देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने अनन्त स्वरूप में स्थित हो जीवन के परम सुख, परमानन्द को अनुभव करो। ये संगमयुगी सुख कल्प की परम प्राप्ति है। सतयुग में इन्द्रीय सुखों की भरमार होगी, दुख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं होगा परन्तु ऐसी परमानन्दमय स्थिति का अनुभव वहाँ नहीं होगा, साक्षी और त्रिकालदर्शी बनकर इस विश्व-नाटक को अवलोकन का परम सुख वहाँ नहीं होगा। इस सत्य को अनुभव कर और इस जीवन की महानता को समझकर जीवन की परमशान्ति, परमानन्द, परम सुख का अनुभव करो। ये जीवन परमानन्दमय है। मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। परमात्मा अभी मिला है तो जन्मसिद्ध अधिकार भी अभी ही मिलेगा अर्थात् मिलता है।

''तुम राजऋषि हो, तुम्हारे भी सुख के दिन यहाँ बीतने चाहिए। अगर बच्चे अपने को राजऋषि समझते हैं और निश्चय अटल-अडोल कायम है तो। ... वास्तव में कृष्ण स्वदर्शन चक्रधारी है नहीं, स्वदर्शन चक्रधारी तो ब्राह्मण कुलभूषण हैं, जिनको परमपिता परमात्मा स्वदर्शन चक्रधारी अथवा त्रिकालदर्शी बनाते हैं। ... सतयुग से तो सीढ़ी नीचे उतरनी होती है। वहाँ यह ज्ञान होता नहीं। वहाँ यह मालूम होता तो तुम राजाई कर न सको, यही चिन्ता लग जाये।... तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि विनाश जल्दी हो तो हम स्वर्ग में जायें क्योंकि यह जीवन बड़ी दुर्लभ है।''

सा.बाबा 17.2.03 रिवा.

* अतीन्द्रिय सुख, मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख संगमयुग की परम-प्राप्ति है, जो ईश्वरीय ज्ञान से प्राप्त होता है, जो ज्ञान संगमयुग पर परमपिता परमात्मा आकर देते हैं। इसके लिए किसी साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है। ये अतीन्द्रिय सुख ही आत्मा की चढ़ती कला का आधार है। सारे कल्प में आत्मा दैहिक सुख ही भोगती है, जो आत्मा के उतरती कला के ही कारण हैं। ये संगमयुगी ईश्वरीय जीवन परम मूल्यवान है, जो इसके मूल्य को समझता है, वही मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को अनुभव कर सकता है। ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन में इसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ किया और मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव किया। जो आत्मायें उनको फॉलो करती हैं, वे ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव कर सकती हैं।

''कैसे भी सरकमस्टांश हों, कैसी भी समस्या हो, स्मृति का स्वीच ऑन करो। यह अभ्यास करो क्योंकि फाइनल पेपर सेकेण्ड का ही होना है, मिनट भी नहीं। सोचने वाला नहीं पास कर सकेगा, अनुभव वाला पास हो जायेगा। तो अभी सेकेण्ड में सभी 'मैं परमधाम निवासी श्रेष्ठ आत्मा हूँ', इस स्मृति का स्वीच ऑन करो, और कोई भी स्मृति नहीं हो। कोई बुद्धि में हलचल नहीं हो, अचल।''

अ.बापदादा 30.11.03

एक सेकण्ड में आत्मा देह से न्यारी स्थिति में स्थित नहीं होती तो ये आत्मा पर विकर्मों का बोझा है, उसका ये लक्षण है। हमारी दृष्टि-वृत्ति-कृत्ति, मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क से अभी भी अनेक विकर्म हो रहे हैं, वह विकर्मों का दरवाजा बन्द हो और दृढ़ पुरुषार्थ से पुराने विकर्मों का खाता खत्म हो और आत्मा ज्ञान, गुण, शक्तियों के अनुभवों से भरपूर हो तब ही सेकेण्ड का अन्तिम पेपर पास कर सकेंगे। देह से न्यारे होते समय ज्ञान का चिन्तन चलना, सेवा का चिन्तन चलना भी आत्मा के ऊपर बोझा होने की निशानी है। यह भी नहीं होना चाहिए। स्टॉप तो स्टॉप। ये चेकिंग हो और उस अनुरूप पुरुषार्थ हो तब ही सेकेण्ड

के अन्तिम पेपर में पास होंगे। बाबा ने भी कहा है - जब बहुत बिजी हो तब ये अभ्यास करके देखो।

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ का उदाहरण हमारे सामने रखा है। ब्रह्मा बाबा बात करते-करते भी देह से न्यारे हो जाते थे। इससे कार्य में कोई बाधा नहीं होती और ही कार्य सिद्ध होता है। ऐसा पुरुषार्थ हो। इस पुरुषार्थ में कोई व्यक्ति, वस्तु, सेवा बाधक नहीं है। ये आत्मा की लगन की बात है। शिवबाबा ने ये भी कहा है - ब्रह्मा बाबा से बड़ी जिम्मेवारी किसकी नहीं है, फिर भी बाबा ने ये पुरुषार्थ करके दिखाया।

एवररेडी अर्थात् मैं हूँ ही आत्मा, इसमें सोचने या संकल्प करने की कोई मार्जिन ही नहीं है। यही आत्मिक स्वरूप के अभ्यासी की स्थिति है।

# विविध बिन्दु

मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव और अभ्यास में व्यर्थ चिन्तन सबसे बड़ी बाधा है। यथार्थ ज्ञान की धारणा ही इससे मुक्त होने का एकमात्र साधन और साधना है। व्यर्थ चिन्तन से मुक्ति स्व-चिन्तन और शुभ चिन्तन वाली आत्मा ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव कर सकती है।

''बापदादा यह सोचते हैं कि चित्र को देख चरित्र तो याद आते हैं ना! याद आते हैं कि नही? सिर्फ चित्र ही देखते हो।... बापदादा और तो कुछ कहते नहीं है सिर्फ एक ही शब्द कहते हैं- फॉलो करो, बस।''

अ.बापदादा 25.11.2000

''अभी बाप कहते हैं - तुम कौड़ियों के पिछाड़ी टाइम वेस्ट मत करो। यह (ब्रह्मा बाबा) भी कहते हैं कि हम भी टाइम वेस्ट करते थे। हमको भी बाप ने कहा अब तुम मेरा बनकर यह रुहानी धन्धा करो, तो झट सबकुछ छोड़ दिया।... पैसे कोई फेंक तो नहीं देंगे। सभी यज्ञ में सफल कर दिया।''

सा.बाबा 28.11.2000 रिवा.

''यह पूज्य था, पुजारी बना फिर पूज्य बनता है, तत्-त्वम्। तुमको भी बनाता हूँ। पहला नम्बर पुरुषार्थी यह है, तब तो मातेश्वरी, पिताश्री कहते हो। बाप भी कहते हैं तुम तख्तनशीन होने का पुरुषार्थ करो।''

सा.बाबा 18.11.03 रिवा.

* फॉलो फादर अर्थात् शिव बाप समान ज्ञान, गुण, शक्तियों में समान और ब्रह्मा बाप के समान निश्चय, त्याग, तपस्या, सेवा, समर्पणमयता, पुरुषार्थ में समान बनना।

''संसार परिवर्तन आप सबके संस्कार परिवर्तन के लिए रुका हुआ है''

अ.बापदादा 16.12.2000

* मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् बाप समान बनना, सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना, इन सबका मूल पुरुषार्थ ही है कि हम आत्मा हैं, देह नहीं और दूसरे भी सभी आत्मा हैं - ये धारणा पक्की करना।

* क्या बनना है और कैसे बनना है - जो बनना है, उसके लिए उससे ही भेंट करना है, अन्य किसी भी भाई-बहन से नहीं तब ही वह बन सकेंगे।

* सदा मुक्त स्वरूप में स्वभाविक स्थित रहें, देह को भूलने का पुरुषार्थ न करना पड़े, स्वत: वह स्थिति हो। हम हैं ही आत्मा, सदा मुक्त। यही एवर-रेडी स्थिति है और यह स्थिति होगी तब ही अन्तिम परीक्षा में विजयी होंगे और संगम का सुख सदा अनुभव होगा और ये संगम सुहावना लगेगा।

* जब संगमयुगी प्राप्तियों का ज्ञान, अनुभव और निश्यचय होगा तब ही संगम का सच्चा

सुख अनुभव होगा। उस अतीन्द्रिय सुख, मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के आगे सतयुग के इन्द्रिय सुख भी भूल जायेंगे।

* जो इन्द्रिय सुखों के आकर्षण से मुक्त और देह से न्यारा होगा, वही मुक्ति का अनुभव कर सकेगा और जो इन्द्रिय सुखों के आकर्षण से मुक्त होगा, वही जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेगा।

* जो इन्द्रिय सुखों के आकर्षण से मुक्त और देह से न्यारा होगा, वही सच्ची स्वतन्त्रता का अनुभव कर सकता है और जो इन्द्रिय सुखों के आकर्षण से मुक्त होगा, वही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर सकेगा।

* अभी बाप से ज्ञान मिला है, उस ज्ञान के यथार्थ स्वरूप में अर्थात् बाप समान स्वरूप में स्थित रहो तो सदा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होगा और यथार्थ पुरुषार्थ स्वत: ही चलेगा, उसके लिए संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं है। पुरुषार्थ तो आत्मा का निजी स्वभाव है। अज्ञान काल में अज्ञान की रीति से आत्म-कल्याण का पुरुषार्थ होता था और अभी जब ज्ञान हो गया है तो उस रीति पुरुषार्थ अवश्य चलेगा। बाप समान बनने के लिए उनके विषय में ज्ञान और उसका निरन्तर अभ्यास परमावश्यक है।

* भगवान ने तुम्हारी इच्छा पूरी की, अब तुमको भगवान की इच्छा पूरी करनी है। ये ईश्वरीय जीवन ईश्वरीय कर्तव्य के लिए ही है, जो उस कर्तव्य को पूरा करता है, वही इस ईश्वरीय जीवन के परम सुख अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख को अनुभव करता है।

मुक्ति की अनुभूति अर्थात् चेतन (आत्मा) हो परन्तु चेतना न हो अर्थात् उसका आभास न हो। कर्म हो परन्तु कर्म करने का आभास न हो। ये है संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति।

''अन्त में फिर वे आदि वाले दिन रिपीट होंगे। साक्षात्कार भी सब बहुत विचित्र करते रहेंगे। बहुतों की इच्छा है ना कि एक बार साक्षात्कार हो जाये। लास्ट तक जो पक्के होंगे, उन्होंको साक्षात्कार होंगे। फिर वही संगठन की भट्ठी होगी, सेवा पूरी हो जायेगी। अभी सेवा के कारण जहाँ-तहाँ विखर गये हो, फिर नदियां सब सागर में समा जायेंगी। ... इसलिए बुद्धि की लाइन बड़ी क्लीयर चाहिए, जो समय पर टच हो जाये कि अभी क्या करना है। एक सेकेण्ड भी देरी की तो गये। ... ऐसे अन्त में भी बाप का आवाज़ पहुँचेगा। जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया, ऐसे आकार रूप में भी बच्चों का आवाह्न करेंगे।''

अ.बापदादा 6.3.85

- संगमयुग पर पुरुषार्थ ही जीवन है, पुरुषार्थहीनता ही मृत्यु है। संगमयुग पर पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है, इसलिए जीवनमुक्ति के 21 जन्म गाये हुए हैं।

## मुक्ति-जीवनमुक्ति का तुलनात्मक दृष्टिकोण

| मुक्ति | जीवनमुक्ति |
|---|---|
| चेतन हो पर चेतना न हो। | चेतन हो, चेतना हो परन्तु चिन्तन और अनुभव शुभ हो, व्यर्थ न हो । |
| आत्मा संसार में हो पर संसार उसमें न हो। | आत्मा संसार में हो संसार भी उसमें हो परन्तु संसार पावन हो, पतित संसार का कोई चिन्तन न हो, बन्धनमुक्त हो, बन्धनयुक्त न हो, कोई आकर्षण न हो। |
| बीजरूप, ज्वाला रूप स्थिति अर्थात् जाग्रत हो परन्तु जाग्रत भी सोये हुए समान हो, देह और देह की दुनिया न हो। | बीज के साथ झाड़ भी हो, फल-फूल भी हों परन्तु सतोप्रधान स्थिति में ..... दैवी सृष्टि की स्मृति हो, दैवी कर्तव्यों में जाग्रत हो अर्थात् देह और आभास देह की दुनिया का आभास भी हो परन्तु स्वप्नमात्र, ड्रामा के पार्ट के समान, उसमें अटेचमेन्ट न हो |
| फॉलो शिवबाबा, बिन्दु रूप स्थिति | फॉलो ब्रह्मा बाबा में मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों समाये हुए हैं क्योंकि ब्रह्मा तन शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों के गुण-कर्तव्यों का संगम है। |

''जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जान-बूझकर माया लास्ट पेपर लेगी। ... एक सेकेण्ड में विदेही बन जायेंगे तो माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे कोई मरा हुआ व्यक्ति हो, उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ... इसमें कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए।''

अ.बापदादा 12.12.98 दादियों के साथ

''कम से कम 108 ऐसे सदा विजयी बनें, जो किसी भी प्रकार के व्यर्थ और नेगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म अर्थात् सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में पास हों। व्यर्थ वा निगेटिव का बोझ सदा काल के लिए डबल लाइट फरिश्ता बनने नहीं देता है।''

अ.बापदादा 12.12.98

''आधा कल्प भक्ति है ब्रह्मा की रात और आधा कल्प ब्रह्मा का दिन।... ब्रह्मा का दिन और रात शास्त्रों में गाई हुई है। विष्णु की रात क्यों नहीं गाई हुई है? विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण को वहाँ यह ज्ञान ही नहीं है। ब्राह्मणों को ही यह मालूम है, इसलिए ब्रह्मा और ब्रह्मा

कुमार-कुमारियों के लिए यह बेहद का दिन और रात है। शिवबाबा का दिन और रात नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

## निश्चय और विजय

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।''

अ.बापदादा 15.4.92

Q. सबसे बड़ी विजय क्या है और उसका आधार क्या है?

देह में रहते देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में या जिस भी स्वरूप में स्थित होना चाहें, उसमें संकल्प करते ही स्थित हो जायें और साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायें, यह जीवन की सबसे बड़ी विजय है। यही सच्चा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव है। देह में रहते देह से न्यारी स्थिति परमानन्दमय है और साक्षी स्थिति परम सुखमय है, जो विश्व के किसी साधन-सम्पत्ति या व्यक्ति से न अभी और न भविष्य में प्राप्त हो सकती। ये प्राप्ति अर्थात् अनुभूति ईश्वरीय ज्ञान की यथार्थ धारणा से ही सम्भव है, जिसके लिए ज्ञान सागर परमात्मा ये ज्ञान दे रहा है। ये अनुभूति न सतयुग के लक्ष्मी-नारायण को हो सकती और न इस विश्व के राजा-महाराजा, पदमपति को हो सकती है।

सतयुग भौतिक सुख-साधनों से परिपूर्ण हैं, आत्मिक शक्ति भी आत्मा में है परन्तु आध्यात्मिक साधन वहाँ नहीं हैं। आध्यात्मिक साधनों से सम्पन्नता का समय ये पुरुषोत्तम संगमयुग ही है, जब आत्माओं के पिता परमात्मा से ये ज्ञान मिलता है और उसका सानिध्य होता है, मिलन होता है।

''आधा कल्प हम जीवनमुक्ति में थे, फिर आधा कल्प जीवनबन्ध में आये।... अभी फिर हम जीवनमुक्त बन रहे हैं। बनाने वाला बाप ही है। सबको जीवनमुक्ति मिलती है। हर आत्मा अपने-अपने धर्म और समय अनुसार पहले सुख देखेंगे, फिर दुख।''

सा.बाबा 22.6.07 रिवा.

''मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता तो एक बाप ही है।... सुख-दुख का खेल तो चलता ही रहता है। इसको सृष्टि-चक्र कहा जाता है वा हार-जीत का खेल कहा जाता है।... मोक्ष के राज़ को कोई जानता नहीं है। मुक्ति और जीवनमुक्ति बाप के सिवाए कोई दे न सके।''

सा.बाबा 27.6.07 रिवा.

''जब तक हम जीवनमुक्ति धाम स्वर्ग में नहीं गये हैं तब तक कोई मुक्ति में जा नहीं सकते।

स्वर्ग-नर्क इकट्ठा रह नहीं सकते। जब हम जीवनमुक्ति का वर्सा पायेंगे तो जीवनबन्ध वाले रहने नहीं चाहिए।... अभी जो एडॉप्ट होते हैं, उनको दोनों जहानों का मालूम पड़ता है।''

सा.बाबा 29.6.07 रिवा.

''बाप सभी को दुआयें देता है लेकिन लेने वाले पात्र हैं तो अनुभव करते हैं और अगर पात्र नहीं हैं तो दाता देता है लेकिन लेने वाला नहीं लेता। पात्र बनने का आधार है स्वच्छ बुद्धि और स्वच्छ मन। ... दुआओं वाला सदा अपने को भरपूर अनुभव करेगा।... अभी भरपूर होने का समय है, खाली होने का समय समाप्त हुआ।''

अ.बापदादा 15.4.92 पार्टियों से

- मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् विश्व-नाटक की यथार्थता को जान अहंकार-हीनता, लाभ-हानि, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय ... की फीलिंग से मुक्त ही जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेगा।

''तुम यहाँ आते हो आसुरी अवगुणों को निकाल दैवी गुण, ईश्वरीय गुण धारण करने। ईश्वरीय गुण और दैवी गुण धारण कराने वाला बाप ही है। ... हम आये हैं फिर से बेहद के बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार 21 जन्मों का स्वराज्य लेने।''

सा.बाबा 3.6.07 रिवा.

''तुम प्रजापिता ब्रह्मा के एडॉप्टेड बच्चे हो। शिवबाबा के एडॉप्टेड बच्चे नहीं कहेंगे। शिवबाबा के बच्चे अर्थात् आत्मायें तो हैं ही हैं। ... ब्रह्मा का ही दिन और रात कहते हैं, विष्णु के लिए नहीं कहते क्योंकि ब्रह्मा ही दिन और रात को जानते हैं।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

''आज तो ब्रह्मा भोजन है। शिवबाबा तो खाते नहीं हैं क्योंकि वह तो अभोक्ता है। ... पक्के योगियों के हाथ का भोजन मिले तो बुद्धि बहुत अच्छी हो जाये। शिवबाबा की याद में रहकर स्वदर्शन चक्र फिराते भोजन बनाये तो बुद्धि शुद्ध हो जाये। पवित्र तो विधवा मातायें और कुमारियाँ भी रहती हैं परन्तु वे योगिन भी हों।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

तुम समझते हो - वह है निराकार परमपिता परमात्मा, यह है साकार प्रजापिता ब्रह्मा। ब्रह्मा को देवता भी कहेंगे। देवता तब कहेंगे, जब सम्पूर्ण फरिश्ता बनते हैं।

सा.बाबा 6.6.07 रिवा.

जब ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को ही देवता कहते हैं, फिर अपने को परमात्मा क्यों कहते हैं। सब परमात्मा के रूप हैं - यह कैसे हो सकता है। यह भी ड्रामा में नूँध है, उनका भी कोई दोष नहीं है।

सा.बाबा 6.6.07 रिवा.

बेहद का बाप परमात्मा प्यार का सागर है परन्तु वह प्रेम, सुख, शान्ति का सागर कैसे है, वह अभी तुम जानते हो। ... यहाँ प्यार के सागर बनेंगे तो वह संस्कार तुम्हारा अविनाशी बन जायेगा।

सा.बाबा 7.6.07 रिवा.

बाप ने रचता और रचना का राज़ समझाया है, जिसको अभी तुम जान गये हो। ... जैसे बाप समझाते हैं, वैसे बच्चों को भी समझाना है। ... यह है सच्ची कमाई। सच्ची कमाई और झूठी कमाई में फर्क तो रहता है ना।

सा.बाबा 7.6.07 रिवा.

# अमृत-धारा

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

## अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org